श्रीः ।

नैषधकाव्य ।

कविवर वरिष्ठ राजकवि गुमान मिश्र विरचित ।

जिसमें

राजरानी महारानी दमयंतीके स्वयंवरकी कथा अत्यन्त रोचक मन भावन परम सुहावन छंद वद्ध दोहा, चौपाई, कवित्तादिमें वर्णित है ।

वही

विद्याविलासियोंके आनन्दार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंबई

स्वकीय "श्रीवेङ्कटेश्वर" यन्त्रालयमें

छापकर प्रगट किया ।

श्रावण संवत् १९५२, शके १८१७.

नैषधकाव्यकी अनुक्रमणिका ।

संख्या	विषय	पृष्ठ

इति

श्रीगणेशायनमः ॥

अथ

नैषधकाव्य ॥

प्रारम्भः ॥

श्लोक–सुमुखश्चैक दंतश्च कपिलो गजकर्णिका ॥
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥ १ ॥

छप्पय ॥ गानसरस अलि करत परस मद मोद रंग रचि ॥ उघटत ताल रसाल करन चल चाल चोप सचि ॥ चिंतामणिमय जटित हेम भूषण गण बज्जत ॥ चलत लोलगति मृदुल अंग नवतंड बसज्जत ॥ लखि प्रणति समय सुख तातको बिहँसि मातु लिय लाइ उर ॥ जय जय मतंग आनन अमल जय जय जय तिहुँलोक गुर ॥ १ ॥

अथ राजवर्णन ॥

कबित्त–भूमिको तिलक द्वीप द्वीपनिके पालिबेको दुष्टनके घालिबेको बाने बिलसतु है॥ चारिहू वरण सुवरण साज साजत हैं सुवरण वाणी शील सुधा वर्षतु है॥सुखनिकी सींव सोहै सुयश समूह फैलो मानो अमरावतीको देखिके हँसतु है ॥ धरमके धाम नर नारी अभिराम जहाँ ऐसो महमदी नाम नगर बसतु है ॥ २ ॥ खलनिको योग जहाँ नाजहींमें देखियत माफ करिबेही माहँ होतु करनाशु है ॥ चौपरही खाली ग्राह हारै सतरल तरवारै बन्ध मुष्टि सेवै कोषनिको बासु है॥ बेलि नहीं फलै फूट केलनहीके संग्रह ताज न लगत जहाँ बाजिन बिलासु है ॥ पवन अगम गामी भीतैं बड़ी भवननही ऐसो गाइयतु महमदीको प्रकाशु है ॥ ३ ॥ छप्पय ॥ नृप प्रथु दशरथ भरत भोज नल नहुष भगीरथ ॥ इन समान सन्मान दान सब सोधि साधु

पथ ॥ उदय अचल रवितेज सुयश शशि सोहत सागर ॥ चातुरता मणि खानि रूप गुण आगर नागर॥ सुरतरु सुर सुमित्रनि निरखि दुवन भीम भीषम चली॥ जहँ राजत नगर नरेश बर खाँ साहेब अकबरअली॥४ ॥ दोहा ॥ देखतही जाको बदन, सदन शिरी अधिकाइ॥ देह न रूपाकि राशि यह, मदनकान्ति यहि भाइ ५॥ काबित्त मनहरण ॥ दुर्ज्जनकी हानि विरधापनोई करै पर गुण लोप होत यक मोतिनके हारही ॥ टूटे मणिमालै निरगुण गायताल लिखै पोथि नही अंक मन कलह विचारही॥ शंकर वरण पशु पक्षिनमें पाइयत अलकही पारैअरु भंग निरधारही॥चिरुचिरु राजौराज अलीअकबर सुरराजेक समाज जाके राजपर वारही ॥ ६ ॥ धर धर हालै धर धर धुंधुकारनिसों धीर नर तजेंगे धरैया बलबाहके ॥ फूटत पताल ताल सागर सुखात स्रात जात है उडात व्योम विहंग बलाहके ॥ झालरि झुकत झलकत झपे फीलनिपै अली अकबर खाँके सुभट सराहके ॥ अरि उर रोर सोर परत सँसार घोर बाजत नगारे नरवर नरनाहके ॥ ७ दिग्गज दबत दबकत दिगपाल भूरि धूरिकी धुँधेरीसौं अँधेरी आभा भानकी ॥ धाम औ धराको माल बाल अबलाको अरि तजत परान राह चहत परानकी॥ सैयद समर्थ भूप अली अकबर दल चलत बजाइ मारू दुंदुभीधुकान्हकी ॥ फिरि फिरि फणनि फणीश उलटतु ऐसे चोली खोलि ढोली ज्यों तमोली पाके पानकी ॥ ८ ॥ विकट मतंग साजि सुभट चलत दल अली अकबरखाँ मुबारिक बखतसों॥ दलत मलत खुरथारनि पहार हय धुंधुरिसों भयो भानु नभमें नखतसों॥ कबहूँ बराहकौहूं कच्छप सुरभि कौहूं कबहूं गहत शेष बासुकि सखतसों ॥ छूटत गहत ज्यों कहार बार त्यौंही धर्‍यो भूमि खंड खंड पातिशाहकि तखतसों९ दोहा ॥ कौनु भयो ऐसो नृपति, को ह्वैहै यहि भाइ॥ जाके डर गजये शकस, दिग्गज देत पठाइ ॥१०॥ कवित्त मनहरण ॥ साँचे अवतार करतार शुभ घरी रच्यो भूपर अनूपरूप देखि जीजियतु है॥ नीति रीति प्रीति अरु नेक न अनीति लागै तेजसों तपतु शीलसुधा पीजियतु है ॥ खान् बलि अली अकबर अद्भुत राज रावरो है अचल सुयश भीजियतु है ॥ आडे आसमान भासमान गजराज दै दै गाडे वै बननि बीच

बाँधि लीजियतु है ॥ ११ ॥ दंडालय छंद ॥ जे बल प्रचंड उदंड शुंड गहि मार्तंड मंडल खंदै ॥ नभ कहलि परत पुरहूत हहलि मजबूत फूत कारै छंडै ॥ मननात भोर भूषण अमोल झननात झबा झूलनि सरसै ॥ रणतेज वारि दिग्गज उदार अकबर नरेश दरबार लसै ॥ १२ ॥ आ-शीर्वाद ॥ छप्पय ॥ गुणं क्षीर निधि ममलय सो बीची परिपूरं ॥ धीर-धर्म रुचि मेरु मुदित तर तेज ससूरं ॥ दान लघूकृत कर्णमुक्ति वर्णित बहु गाथं ॥ अली अकबर खाँ कामतरू द्युतिनाम सनाथं ॥ उदंड चंड भुज दंड युग खंडित पर नृप मंडलं ॥ त्वंरक्षरक्ष भगवति शिवे प्रभुता हसिता खंडलं ॥ १३ ॥ अन्यच्च ॥ वीर समर मागत्य शत्रु कदनं बहु कृतवति ॥ भवति भवस्य भवंति मुंडि माला भुवि कति कति ॥ शिरसि विभर्ति शिवोपि कर्म युगलेपि गले पिच ॥ करमूलेपि करेपि धारपाति शूल फले च ॥ राजाधिराज जगदीश तासु सुरगुरु रपिशंभुस्वयं ॥ अभिलखति शिसो व सर्वदा तव सुमिरे सततंजयं ॥ १४ ॥ अन्यच्च ॥ सुंदर शूर उदार सिंह वर विक्रम साजत ॥ अटल समरभट विकट कोटि गंजन छबि छाजत ॥ शील सत्य सन्मान दान विद्या विनोदमति ॥ मनौ रचे करतार कामतरु मोहन मूरति ॥ आजानबाहुपरकी जरत स्वामिभक्त रसरंगनव ॥ तहँ अति उज्ज्वल मजलिसलसै सोमवंश सरदार सब ॥ १५ ॥ दोहा ॥ पण्डित कबि मंडित लसैं, सभामंडली चारु ॥ गणक चिकित्सक चतुर चित, धर्म धुरंधर सारु ॥ १६ ॥ खाँसाहेबके हुकुमते, मिश्र गुमान विचारि, वरणी नैषधकी कथा, संस्कृतकी अनुहारि ॥ १७ ॥ मिश्र सर्व सुख सुक रबिबर, श्रीगुरु चरण मनाइ ॥ वरणि कथा हौं कहतिहौं, ह्वै हैं वई सहाइ १८ ॥ संयुत प्रकृत पुराणसे, संवतसर निरदंभ ॥ सुरगुरु सह सित सप्तमी, कह्यौ ग्रंथ प्रारंभ ॥ १९ ॥ प्रथम सर्गमें वरणिबो, निषध देश परकार ॥ नगर राज मंदिरन पुनि, नल भूपति अवतार ॥ २० ॥ सोरठा ॥ सोमवंश भूपाल, सकल पुहुमिमें तेजधर ॥ बीरसेनि गुणमाल, निषधदेशपर प्रीतिकर ॥ २१ ॥ हरिगीत ॥ सब देश मनि गुणखानि गनि धनि धनि सरा-हत हैं सबै ॥ सुखबास सीयनिवास संयुत शोभि ज्यौं रवि छबिफबै ॥ कछुकरी यों करतूति विधि निज ज्योति सुरपुरको हँसै ॥ जगमगत जाहिर

जगतपर बर निषध देश सदा बसै ॥ २२ ॥ **तारक** ॥ उत्पत्ति थली जनु चातुरताकी ॥ विषम मही जनु है तपसाकी ॥ सित सागर ते छबि उज्वल जाकी ॥ जनु बैठक सोहतहै कमलाकी॥२३॥अन्यच॥तहँ सोहत है सरिता कारी ॥ जनु क्षीर पयोनिधि भेदिनि कारी ॥ युत पद्म सुनील कुबेर थलीसी ॥ द्विज गावत हैं महिमा शिवकीसी ॥ २४ ॥ **दोहा** ॥ मीन मिथुन करकट मकर, चलत सुग्रह सुखपाइ ॥ राशि मालसी देखिये, उदित शोभ सरसाइ ॥ २५ ॥ **तारक** ॥ लहरी अति चञ्चल लेत लसी है ॥ तनु शीतल मानहु साँपडसी है ॥ विषुप्याइ जियावति है सबहीको ॥ रस बैदिनिसी विलसै जगतीको ॥ २६ ॥ **अन्य** ॥ तहँ सोहत है यकु शैल सोहायो ॥ जनु मेरु मही द्युति देखन आयो ॥ बहु बंशबड़े सुरगावत जामें ॥ बिलसै हरि हेम मई परभामै ॥ २७ ॥ **तोटक** ॥ क्षिति केशरिके उपमा बिलसै ॥ अति सुन्दर कानन फूल लसै ॥ बहु रीक्षनकी सबही अवली ॥ शशिलोक विराजत भाँति भली २८ **अन्यच** ॥ बहु राजत हैं गजराज बड़े ॥ नभ आडत विंध मनौ उमडे ॥ चहुँधा चमरी चम चौर करैं ॥ बट बंजुल मंजुल छत्र धरैं ॥ २९ ॥ **अन्यच** ॥ सब ओर पराग विभूति लसै ॥ बहु कोश निमें आलि आनि बसै ॥ क्षिति नायककी उपमा उपजी ॥ घनकी धुनि दुंदुभि दीह बजी ॥ ३० ॥ **गवय** ॥ सुरभीकेसरि बसै नील बन माँह ॥ मनौ नगर सुग्रीवको सोहत सुन्दर छाँह ॥ ३१ ॥ **छप्पय** ॥ त्रिभुवन भूषण भूमि भूरि बर नगर शिरोमणि ॥ झलझलात छबि अच्छ अच्छ लखि भाषति धनि धनि ॥ सोहत विक[illegible] कपाट जटित पुरद्वार फटिकमय ॥ मनौ रच्यो कैलास शंभु निज[illegible] बास भक्त दय ॥ जनु सजत सुमेरु प्रदक्षिणा चहुँ सुवरण प्राकार पर ॥ सरिवरि जहानको करिसकै सब नर बर नव नगरकर ॥ ३२ ॥ **कवित्त मनहरण** ॥ तीनौ लोक रचना रचत हैं विरंचि यासौ अचल खजानौ जानौ राख्यौ गुण गचिकै ॥ रूपकी उपज सुखसुकृतको विस्तार पारावार जाको कौन पावै पारु सचिकै ॥ याहीते कहायो अद्भुत करतार विधि भूतल नगर नरपर ऐसो रचिकै ॥ लखत

बनतु है सहस नयननहीं सों कछु वर्णत न बनै सहसाननसों पचिकै ॥ ३३ ॥ हरिगीतिका छंद ॥ दशकोश ते जहँ देखियत अवली पताकनकी भली ॥ सबसौंधसीसनियै लसै बिच बीच मोतिनकी कली ॥ सुर आपु गाहि हित मानिकै पै बिंदुगण फबिसों फली ॥ जनु क्षीरसागरते कढ़ी दिवि ओर जललहरी चली ॥ ३४ ॥ कलिकालको भय मानि जहँ युग सत्य आनि सदा बसै ॥ अति पुण्य पावन जानि शील सनेह साँचु सुधालसै ॥ जनु भूमिमें सुरबास उत्तम बासु बासवको रच्यो ॥ बहु रत्न राजत श्री विराजत क्षीरसागरसों सच्यो ॥ ३५ ॥ अन्यच्च ॥ मणि हेमके कलशानकी द्युतिरातिहू दिन होति है ॥ शिर ओक ओकनिमें रह्योरमि सूरलोक उदोतु है ॥ अति स्वक्ष सुंदर हेमफाटिक की शिला गसि कै गली ॥ शशिको समाज लग्यो मनौ तल चांद्रिका चहुँधा चली ॥ ३६ ॥ प्रद्धटिका छंद ॥ बहुभाव संघ सोहत बजार ॥ नवद्वीप चित्र चीजै हजार ॥ जनुहै कुबेर नगरी उदार ॥ मणि हेम चीर हय गज सुठार ॥ ३७ ॥ सुनि सोर परत नहिं बैनकान ॥ जनु भूपति बैठो कारि दिवान ॥ छुटि चलतु कौन लहिये न छोर ॥ जनु मायाके बंधन अतोर ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ अचल अंग जोई जहाँ, लखतु तहाँ तेहि भेव ॥ मानौ साधि समाधि सब, ध्यावत पूरण देव ॥ ३९ ॥ भुजंगप्रयात ॥ तहाँ राजको धाम यों शोभ साजै ॥ तिहूँ लोकमें रूप वैकुंठ राजै ॥ बने वेषरूरे घने तेज पूरे ॥ सजीसंजमीलोग संग्रामसूरे ॥ ४० ॥ तोमर ॥ मुक्तानकी नव पाँति ॥ रचिद्वारपै बहुभाँति ॥ सब सिद्धिको मुख येहु ॥ मुसुक्यात सुन्दर गेहु ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ सुघर नीलमणिसों रचे, जालरंध्र रुचि ऐन ॥ निरखतु निज शोभा मनौ, राजशिरीके नयन ॥ ४२ ॥ सवैया ॥ खिरकीनके आनन सुंदर सोहत नयन गवाक्षनके अति नीके ॥ रोसनदान मकान लसैं शुभ नासिका कोष सुरंग मनीके ॥ लालपनारेनकी रसना चहुँ ओर त्वचा रचि पुंज हँसीके ॥ सुन्दर देहनिगेहवने सुघने परिवारैहैं राजशिरीके ॥४३॥ दोहा ॥ चहूँ ओर नौबति बजति, स्वर्ण शिखर बरजोर ॥ मेघ घने गरजत मनौ, कनकाचल चहुँओर ॥ ४४ ॥

॥ हालिक ॥ लालमणीन रची मुड़वारी ॥ रांजशिरी जावक अनुहारी ॥ फैलिरहीं किरणै अतितासू ॥ केसरि फूलिरही सविलासू ॥४५॥ चौपाई ॥ बँगला गजदंतनिके रचे । श्याम लाल मणिबेलिन खचे ॥ मनौ हाँस रसके घर आजू । न्योति बोलायो रति रतिराजू ॥ ४६ ॥ दोधक ॥ आँगन हीरन साजि संवारो ॥ छज्जनि में करिदंत सिधारो॥ ऊरधहू अधते उनई है। श्वेत प्रभा पुनिरुक्ति भई है ॥ ४७ ॥ अन्यच॥ दोउनको प्रतिबिंब दुहूँमें ॥ होत नहीं गहिरी छविदूमै ॥ साध मनौ उपकार सयाने । आपुसमाहँ करैं हित माने ॥ ४८ ॥ तारक ॥ बहु बेलिन बूटन संयुत सोहैं ॥ परदा सिदरीनलगे मन मोहैं ॥ हैं नव धूप सुगंधितनीके ॥ जनुबाग बिराजत राजशिरीके ॥ ४९ ॥ नाराच ॥ चबूतराजराइके जहाँ तहाँ बने घने ॥ रचे विचित्र चारु रंग अंग संग सोसने ॥ लसै प्रभात रंगसौं न नीठि दीठिकै परै ॥ अपार भूमिदार सूर आरसी मनौहरै ॥ ५० ॥ अन्यच ॥ रचे विचित्र चारु रूप व्यौम भूप तारके ॥ अनेक चित्रसारिका अगार हैं विहारके ॥ निहारिकै प्रभात रंग मोहि मोहि कैरहै ॥ मनौ त्रिलोक जीवहै विनीत बास संग्रहै ॥५१॥ दोहा ॥ होत रंग संगीत गृह, प्रति ध्वनि उड़त अपार ॥ अरज करत निकरत हुकुम, मनौ काम दरबार ॥ ५२ ॥ कामतंत्रकी देवता, मोहन मंत्र स्वरूप ॥ नारीमय त्रैलोक जनु, राज तुरावर भूप ॥५३॥ रोला ॥ ताने विशद वितान लाल झालरि झुकि झूमै ॥ मनौ सुधाधर बिंब प्रात रविकी छबि चूमै॥बँगला बने अनेक लालसित श्याम सोहावन ॥ गृह द्युतिसागरमाहँ मनौ फूले सरोज बन ॥ ५४ ॥ दंडालय ॥ गाहैं गज गाहैं पगनाहि ठाहैं गढ़ गिरि दुग्गन दाविदरैं ॥ डारैं गहि डारैं ऐंचि उखारैं तरुन तरुन संहार करैं ॥ सब द्वारन ठाढे संगर गाढे कद बल बाढे बिंद मनौ ॥ चौकी निज साजत दिग्गज लाजत गज राजत लखि लखत घनौ ॥ ५५ ॥ दोहा ॥ तिनहीकी अनुसार रथ, हय ढलै तकी भीर ॥ सजे सबैलनयुद्ध थिर, रहत धुरंधर धीर ॥५६॥ छप्पय ॥ कहूँ लरत गजराज बाघहरना कहुँ जूझत ॥ मल्ल युद्ध कहुँ होत मेष वृष महिष अरूझत ॥ कहूँ नटत नट कोटि भाट बरखावत गुण मानि ॥

कहूँ यज्ञके ठाट वेदगावत मुख मुनि भनि ॥ कहुँ गनक गनत योगी जपत यन्त्र मन्त्र मत विरत नित ॥ कहुँ करत चारु चरचा भली कबित चित्रकी चतुर्चित ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ चहूँ ओर सब नगरके लसत दिवालय चारु ॥ आसमान तजि जनु रह्यो, गीरवानु परिवारु ॥ ५८ ॥ मनौ रची निज बासको, और भूमि भगवंत ॥ खाईं मिस चहुँ ओर जनु, सोहत सिंधु अनन्त ॥ ५९ ॥ प्लवंगम् छंद ॥ होमन जहँ धूम कुटिल मति देखिये ॥ जहँ मणि मालनि माहँ भेद अवरे खिये ॥ कोकनके द्विजराज विरोध बखानिये ॥ मूलहानि तिथि पत्र प्रगट पहिचानिये ॥ ६० ॥ गोपल ॥ दथा बेलिकी ललित निकुंज ॥ गुंजत सुख पक्षिनके पुंज ॥ गुरुकी हानि मिठाई माह ॥ पाप रचित भोजनकी चाह ॥ ६१ ॥ तोटक ॥ सिगरी क्षिति हीरन जोरिगसी ॥ तिनमें शशिकी प्रतिमा बिलसी ॥ चलनयननके मुख देखि डरयो ॥ नभते जनु भूतल टूटि पर्‍यो ॥ ६२ ॥ अन्यच ॥ सुर लोकनकी उपमा छहरी ॥ उठती सब ओर सुधालहरी ॥ परनारि मनौ छबि भार छई ॥ बहु भीतर है अनुराग मई ॥ ६३ ॥ कबित्त घनाक्षरी ॥ नीलमणि भवननिमें तम गहि राखि मनौ मोतीके महल मिली तारेन बनाइकै ॥ फटिक भीतिनमें जोन्हाईसों जटित मिली धुज पट क्षीर धिति रंगनि समाइकै ॥ सुंदर वदन युवतीनके मिलत लह्यो प्रफुलित पंकज पराग सुख पाइकै ॥ लाल कलशानिमें लहत निजरससे सुसूरकी किरण प्रात परती लखाइकै ॥ ६४॥ दोहा ॥ सदा नीलमणि भवनमें, बसत निडर तमराज॥ प्रगटत रसना गतानिको, अभै-दानके साज ॥ ६५ ॥ छप्पय ॥ तिनो भुवन विख्यात नामबर कीरति मूरति ॥ दया क्षमा शुचि शील दान धीरज सुधर्मरति ॥ सकल देव व्योहार विदित बोलत मुखहँसि हँसि॥ निडर समरडरलोक लाज साजत मुख गसि गसि ॥ रामानुराग लक्ष्मण मनौ मित्र मुदित सब दिवस सब ॥ जहँ बसत मुनेश्वरसे सकल आनंदमय संयम नियम ॥ ६६ ॥ अन्यच॥ धर्म धुरंधर वीर धीर कलिकाल विहंडन ॥ तपत तेज बरवंड साधु गन मंडल मंडन ॥ पुण्य सलोक पवित्र चित्रमति मित्र मोहतम ॥

रूप मनोहर राशि वेदपरकाशित हरिसम ॥ नृप वीरसेनि नंदन नवल सोमवंश सब गुण सच्यौ ॥ क्षिति भाग्य प्रजाके पुण्यफलनि नलराजा करता रच्यो ॥ ६७ ॥

इति श्रीमत्प्रचंड दोर्दंडप्रतापमार्तंडभूमंडलाखंडलश्रीखाँ साहब अली अकबरखाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचितेकाव्यकलानिधौनलावतारो नाम प्रथमस्सर्गः॥ १ ॥

दोहा–सर्ग दूसरेमें कथा, वर्णन नल अनुराग ॥ मिलिबे हेम मरालको, लीलासों बिचबाग ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ जासु कथा करि पान, विबुध सुधानहिं आदारिहि ॥ तेजराशि बलवान, श्वेतछत्र मंडल सुयश ॥ २ ॥ **वंशतिलक** ॥ जाकी कथा रसभरी निदरै सुधाको ॥ सोई नरेश नलराजत सम्पदाको ॥ साजे सुवर्ण नवदंड सितातपत्री ॥ पूरेप्रतापागनसों धरित्री ॥ ३ ॥ **हरिगीतिका** ॥ जगमाहँ जे छिन चिंतिये कलिकालकी महिमा घटी ॥ अघ ओघ धोवत ज्यों कथा जिमि दिव्यसाबुनकी बटी ॥ निज सेवनी पहिंचानिकै वहई अनुग्रह आनिहै ॥ करिहैं पवित्र चरित्र मेरी जींभ अवगुण बानि है ॥ ४ ॥ **तारक** ॥ करि अंशदिगीशनिके इक ठौरे ॥ विरची नलमूरति रूप न थोरे ॥ तिसरी ऋषि आशिष वेद मई है ॥ सब लोक देखावन काज भई है ॥५ ॥ **दोहा** ॥ घालतु है कुल मदनमद, वहै आँखि सुखपाइ ॥ मन लै तिलोचन अवतरचौ यहौ बतावत आइ ॥ ६ ॥ **चंद्रमाला** ॥ चारो चरणा समेत सुखी करि धर्म धरामें थाप्यो ॥ चारौ वर्ण सुखी जहँ विकसैं पाप पुंज तहँ काँप्यो ॥ एकपाँइ छिगुनीसे क्षितिछ्वै निराधार होइ गाढ्यो ॥ तनु अनूप दुर्बलसों दीसत मनौ तपोबल बाढ्यो ॥ ७ ॥ **घनाक्षरी** ॥ बिकट कटक सजि नलके चलत दल धुन्धुरि प्रताप शिषी धूम मलिनाई है वहै परिपूरणपयोनिधि सुपंक भई अंक ह्वै शशीमो दरशतु बहु धाई है ॥ दिपत धनुष घन आसुगबराषि अरि तेज तेप्रचंडचंड अनल बुझाई है॥ लगत अमैनक अशुभ अति शत्रुनको कोइ लासो कुयश लुल तुव बहु

धाई है ॥ ८ ॥ **दोहा** ॥ ईति भीति राखी न नल, जग न लहै कहुँ अयन ॥ अतिवर्षा छोडति न छिन, अरि रमनिनके नयन ॥ ९ ॥ **मनहरण** ॥ संगर धरामे जाके रंगसों सुभट निज निज चातुरीसों यश पटनि बुनत हैं ॥ करि करबाल व्योम कोरि कोरि जोरि जोरि चन्द्रते विशद जाके गुणन गनत हैं ॥ अमल अमोल ओसु डोल झल झल होत कबहुँ घट न जन देखत सुनत हैं ॥ आठौ दिशि-रानी राजधानीके शृँगारिबेको आठौ दिगराज जानि चीरन चुनत हैं ॥ १० ॥ **तारक** ॥ जिमि वैरिन छोंडि विरोध दयो है ॥ तिमि धर्म विरोध नहीं उनयो है ॥ जित मित्र अमित्र प्रताप प्रहारी ॥ दृगचारि विचारि दृगै निरवारी ॥ ११ ॥ **तोटक** ॥ नलके यश तेज विराजत हैं ॥ शशि भानु वृथा छबिछाजत हैं ॥ जबहीं जबयों विधि चित्त धरै ॥ तब छेकनको परिवेष करै ॥ १२ ॥ **अन्यच** ॥ विधि भाल दरिद्र लिख्यो जेहिके ॥ नहिं कीजत अंक वृथा तेहिके ॥ नल येतिकु ताहि तुरंतदयो ॥ जिमि टारि दरिद्रको दूरि कियो ॥१३ ॥ **अन्यच** ॥ कवितान सुमेरुन बाँटि दियो ॥ जलदानन सिंधुन सोंकि लियो ॥ दुहुँ ओर बँधी जुलफैं सुभली ॥ नृप मानतुओ यशकी अवली ॥ १४ ॥ **अन्यच** ॥ कवि औ बुध जासु समीर रहें॥ सब वंदनकै जयदेव कहें ॥ दिनही दिन ओज उदय बिलसै ॥ रविकी सिगरी छबि आनि बसै ॥ १५ ॥ **स्वागता** ॥ अंबुजात द्युति मूगन दूखै ॥ राज शीशमणि ऊपर मूखै ॥ हेतु जानि विधि मंगल वेषा ॥ साजि भूपपद ऊरधरेषा ॥ १६ ॥ **दोधक** ॥ जीतिलिये जग शत्रु घनेरे ॥ सातौद्वीपनके नृप चेरे ॥ गाइनमें मिलि बाघ बसै जू ॥ चोरनमें मिलि साह हँसै जू ॥ १७ ॥ **हरिगीत** ॥ नवरंग संगर माहँ दिग्गज अंधकार समेटिकै ॥ छतधार दुरदिन घोरमें भटकौंच दुर्गम भेटिकै ॥ करवाल निर्मल दूतिका वश जोर योबन सों भरी ॥ अभिसारिका सम आइकै जगजीयकेसिय पाँपरी ॥ १८ ॥ **दोहा** ॥ लसत सुमित्रो पेत नृप, दशरथके परभाइ ॥ क्षमा भार गुरुसे सज्यो, मधु सुगंध सरसाइ ॥ १९ ॥ **घनाक्षरी** ॥ पूरुब पुनीत उदयाचल अवधिबासी उत्तरहू सेतुबंध पारानि परत हैं ॥ पश्चिम

अमंद मंदराचल चलत नीके दक्षिणजे अंत गंधमादन तरत हैं ॥ जोरि जोरि कोरि कोरि शीशन छुवत क्षिति भूपति अनेक झुंड मंडल भरत हैं॥ कहि कहि देत दूरिहीते चोपदार निज गहि गहि नामनि प्रणामनि करत हैं ॥ २० ॥ **तोमर** ॥ तेहि राजको यहु राज ॥ वरणै सुसाधु समाज ॥ मुकुरै सकै समुहाइ ॥ गिरि है विपच्छ बनाइ ॥ २१ ॥ **अन्यच्च** ॥ दुर्गानिको सतसंग ॥ इक ईश राखति अंग ॥ इक मेघ धारत चापु ॥ ध्वज वीर उन्मत आपु ॥२२ ॥ **अं०** ॥ जहँ पाग बाँधन योग ॥ दुख दीहका तन लोग ॥ असिधार तीक्षण जानु ॥ मधुपान भौंरन मानु ॥२३॥ **दोहा** ॥ हस्त श्रवणको नाश यह, पत्राही में होत॥ दानहानि यक करिनमें, रवि शशि ग्रसत उदोत ॥२४ ॥ बढन न पावत हैं जहां, फेस करज मलदीन ॥ वरषके बासर धरतही, अंबर अधिक मलीन ॥ २५॥**तारक**॥ इमि राज्य लयो सबुलै सबही में ॥ जय रूप थप्यो सिगरी धरणी में ॥ ऋतुराज मनौ वनमें उदयो है ॥ तनुयो बनको परबेसु भयो है ॥ २६ ॥ **दोहा** ॥ पद छबि लव पल्लवनही कमल मलीन बनाइ॥ ताके मुखको दासु है, शरदशशी न लखाइ॥२७॥ **प्रद्धटिका**॥ मिसि रोम राज रेषा सुवेष ॥ विधि गनत मनो गुण गण अशेष ॥ थल रोम कूप लखिकै प्रभाव ॥ जनु दिये विंदु दूषण अभाव ॥ २८ ॥ अरि दुर्गलूटि अरगल अखंड ॥ जनु धरी बडाई बाहु दंड गोपुर कपाट विस्तार झारि ॥ गहि धरचो बच्छ थलमें सँवारि ॥ २९ ॥ **घनाक्षरी** ॥ लीला विहँसनि सो हरायो हिमिकर ज्योंहीं कोलनिकी कांति हरी नयन रतनारेसों ॥ अमल कपोल गोल आरसी अमोल ओप उपरे रहति श्रुति भूषण सितारेसों ॥ ताकी समताकी कहूँ उक्ुति युगति होति उपमा बनति कैसे सुकवि विचारेसों॥ दूसरो न कमल मुकुर शशिजेतबारु वदनसों वदन बखानतु निहारेसों ॥ ३० ॥ **लक्ष्मीधर** ॥ भूपको देखिकै बामकी काँतिसों ॥ आपने अंगके रूपकी भाँतिसों ॥ तीनहु लोकनकी सुन्दरी सबै ॥ मोहिकै आपुते प्रीतिको संभवै । ॥ ३१ ॥ **चौपाई** ॥ मोही इमि देवनकी नारी । इकटक देखत तन-मन वारी ॥ वही टेव अजहूं लागि धारै ॥ निशि दिन अनिमिष नयन

निहारै ॥ ३२ ॥ अ० ॥ नलको सुनत जन्म फल लेखै ॥ रूप लखे बिन अफल विशेषै ॥ उरगीनेहरगी इमि धरैं ॥ स्तुति निन्दा नयनाकि करैं ॥ ३३ ॥ अ० ॥ मनुजवधू नयनन सुख गहैं । धीरज धारि विलोकत रहैं ॥ मोहि मोहि तनमय ह्वै जाहीं । पलक विघ्न पारत कछु नाहीं ॥ ३४ ॥ अ० ॥ जवनि नारि सपने कछु देखै ॥ तब नल भूप रूपरस पेखै ॥ जब जब भूलि कछू मुख कहै । तबै नाम नलही को गहै ॥ ३५ ॥ **दोहा** ॥ निजनायक सँग सुरतिमें, ध्याइ ध्याइ नलरूप ॥ नयन मूँदि बनिता सबै, करतीं केलि अनूप ॥ ३६ ॥ **तोटक** ॥ निज बदन द्युति समता लखति ॥ नल देखि दर्पणमें तकति ॥ लजि रहहिं तिय निज रूप बिन ॥ इक भीमकी तनयाहि बिन ॥ ३७ ॥ **दोहा** ॥ देश विदर्भ नरेश वर, भीम भीम अनुहारि ॥ दमयंती कमनीय तन, ताकी राजकुमारि ॥ ३८ ॥ सुनि सुनि नलके शील गुण, दान स्वरूप पवित्र ॥ दमयंती मनु मिलिगयो, क्षीर सुक्षीर विचित्र ॥ ३९ ॥ **चौबोला** ॥ तात सदन जब जाइ सयानी, वंदि पढ़ति नल गुणनिघने ॥ सुनि सुनि मदन पीर सरसानी, तनु क़दम्बके तूल बने ॥ ४० ॥ **दोहा** ॥ नरहूके परसंगमें, कहै सखी नल कोइ ॥ सुनि शरीर पीरी परै, पलमें पीरी होइ ॥ ४१ ॥ **सवैया** ॥ रंगकोभौन फुहारेनके ढिग नेक खड़ी तहँ आनि भई ॥ काहूसों काहू सहेली कहो नल देइ मिलाइ तबै चितई ॥ सब अंगमरोरि मुरी मनमें झरि पूरि रही रस मैन भई ॥ दृगछाइ रहे मुक्ताजलके नलके सुनतै कुम्हिलाइ गई ॥ ४२ ॥ **तारक** ॥ सब चित्र चितेरनसों रचवावै ॥ तिनमें जुव सुंदररूप बनावै ॥ लखि कामको चित्र कहै यहु कैसो ॥ नहिं भावत और लिखै किन कैसो ॥ ४३ ॥ **दोहा**—ऐसे छलबलकै लखत, नल मूरति लिखवाइ ॥ दुसह प्रथम अनुरागहै क्यों हूं कह्यो न जाइ ॥ ४४ ॥ **चौपाई** ॥ चरचा निषध देशकी करै । नरवरकी वाणी मुख धरै ॥ बीरि सदा नरवर की खाइ ॥ ४५ ॥ नलको नामुलेत मुसुकाइ ॥ कवि पण्डित याचक जे आवें ॥ ते निज नरवर नगर बतावें ॥ तिन्हें देइ अनगन धनभारा ॥ सुनत सुयश नलकेर सुखारा ॥ ४६ ॥ **सारावती** ॥

चित्र लिये नलको करमें ॥ भवन अकेली व्है भरमें ॥ संग सखीनहुसों चंकिकै ॥ यों समता मिलवै तकिकै ॥ ४७ ॥ सवैया ॥ रतिको सुख स्वादु नयो उनयो पति सोवति नयनन आनि अरै ॥ करु झारि झुकै नरहै हँसिहेरि हरे करुलै छतिया पधरै ॥ बरजोरी करै जब और कछू करमीजि पसीजि चलै थहरै ॥ अनुमानती है सखि आवतही तजिसेज जहीं अकुलाइ परै ॥ ४८ ॥ प्यारे बढे पहिले अनुरागके कांति हजार गुणी सरसानी ॥ याहू कि ऐसी चली चरचा परवीननलै तिहुँलोक बखानी ॥ कौनु न रीझि गयो सुनिकै पुनि रूप चितै न भयो अभिमानी साँसन सांट मनोभवकी नवला नलके हिय माहँ समानी ॥ ४९ ॥ दोहा ॥ निज छबिकी रतिकी विमल, मुक्तावलिके योग॥ दमयन्तीके गुणसुने, नल वर्णत बुधलोग॥५०॥तोमर॥तब पाइ औसर काम॥ नलसों रह्यो कछु बाम ॥ करि ताहि मूरति आपु ॥ किय जीतको परतापु ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ दमयन्तीके गुण जबै, कानधरे नृप आनि ॥ काम आपने चापको, कान धरयो गुणतानि ॥ ५२ ॥ मनहरण ॥ ऐसे धीर साहसीके जीतिबेको ठाढो भयो संकित मदन मन धीर न धरतु है ॥ तीनि लोक जीतके सुयशडभरे हैं दई सोहे ह्वै सकतु नाहीं लाजन मरतु है ॥ जाको योग जासों करयो चहतु करतु तासों विधिको वि- लास कछू कह्यो न परतु है ॥ धीरजको कौच याको फूलनिके बातनि सों टूक टूक डारयो करि कौतुक करतु है ॥ ५३ ॥ सवैया ॥ सोइ रहै उठि जाइ अटापर मीतनसों न मिलै छलकै ॥ चौपरिकै सतरंज रचै कबहूं रस रंग लखै बलकै ॥ थल एक लगै न कहूँ चितयों हितकी सरिता उमडी ललकै ॥ खरकै छबि आनि गडी उरमें नृपरावरमैन रमै कलकै ॥ ५४ ॥ मोदक ॥ लोगनसों विरहागिनि गोवत ॥ धी- रजको सजि कानन जोवत ॥ जानत जागतके गुण साथिनि ॥ सेज शशीकर सुन्दर यामिनि ॥ ५५ ॥ सवैया ॥ मैनके बान लगे तनमें न बच्यो तिल अंग अभेद बनाइ कै ॥ पै नृप भीमसों आपनी ओरते व्याहकी बात कहै न चलाइ कै ॥ भूपति माननकी यह रीति है याँचतही किन जाहि पराइकै ॥ आपनी ओरते माँगत नाहिं न माँगतही सबु देत लु-

टाइ कै ॥ ५६ ॥ **मोदक** ॥ छूटत हैं मुख साँसनके गन ॥ भूप बतावत आ-लसहै तन ॥ पीत भई छबि है सब अंगन ॥ डारत टेर कपूर बिलेपन ॥ ५७ ॥ **दोधक** ॥ बोलि उठ्यो दमयंति कहाँ है ॥ कोऊ न वैन सुन्यो न तहाँ है ॥ पंचम राग कलाँवत गायो ॥ राज समाज सबै समुझायो ॥ ५८ ॥ **तुंगाछंद** ॥ परिजन सब ठाढे ॥ लखत विपति बाढ़े ॥ कछु न मन विचारै ॥ नयननि जलढारै ॥५९ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ ज्यों खु-लत जात मन्मथ विकार॥ त्यों लहत भूप लज्याअपार ॥ सब धर्म धाम धीरज निधान॥ जेहि शिवसमान गावत जहान ॥ ६० ॥ गुण निफलभये सब वेद वैन ॥ अनुराग रह्यो भरिपूरि ऐन॥रति संग पाइ मन्मथ अराल अनिरुद्ध तहाँ उपजतु विसाल ॥ ६१ ॥ **अन्यच्च** ॥ विन मैन चिह्न बैठ्यो न जाइ ॥ करि यत्न भूप मनमें लजाइ ॥ जब लगन लगी मजलिस उदास ॥ तब चित विहारकी करी आश ॥ ६२ ॥ **प्रद्ध-टिका** ॥ सब कामरूप मित्रानि समेत ॥ मनु करौ बगीचाके नि-केत ॥ परिजनन ओर देख्यो कनेखि ॥ साजौ तुरंग यहु हुकुमलेखि ॥ ६३॥अ० ॥ करि करि प्रणाम दौरे अपार ॥ तुरतै तुरंग साज्यो शृंगार॥ छबिश्वेत जासु जिमि तरुनिहाँस॥जबमान अधिक पौरुष प्रकाश॥६४अ० अतिचपल पुष्ट पुटटाय टोर ॥ जो खूंदत मंदर सकल छोर॥ थिररहत न छिन जिमि तरुणि नयन॥ठहरत नडीाठि जिमि मुकुर नयन ६५॥ **सोरठा** केसरिरूप अनूप, झल झलात द्युति वदनतल ॥ लसताहिये शुभरूप मनौ देवमाणिकी किरानि॥६६॥ **मरहट्टा छंद**॥ चंचल खुरखूंदै गिरिगण गूंदै लसत रेणुकणजाल ॥ सीखति गति वेगनि लगे अनेगानि जनु जनि चित्त रसाल ॥ मुख ओंठ चलांकी निजगति बांकी नृपसों कहत सुनाइ। यहु जानत हयके सब गुण रयके यासों रहत चुपाइ॥ ६७॥ **रसिक**॥ परम पुरुष नल चहत ॥ जनु रवि रथ हय सहत ॥ यहि सुयशहि जग लहत ॥ दशनि किराणि मुख लहत ॥ ६८ ॥ **तोटक** ॥ सित केसर चंचल पूंछ लसै ॥ मुक्तागण गूंदानि सों सरसै ॥ नीको हय राजु बतावतु है ॥ जनु चौर दुहूँकरवावतु है ॥ ६९ ॥ **घनाक्षरी** ॥ महाराज नलको विदित वरबाजी सुख गीरवान पति अभिमानिन गिरावई ॥ गरुड

समान गर्व कहा कहौं मन गति दौरतमे तेज गवन पौनही सिखावई ॥ मेरी जानि गहनु नहोइ जो ये वारवार भानु महताब माँगि रथन लगावई ॥ अंबरके खेतय उदेत नेक बाग लेत राहु केत नाहि कहूं छांह छुइ पावई ॥ ७० ॥ दोहा ॥ आस्त्रय ऊंचो थल विना, छुवत न जाकी पीठि ॥ बाजिसाजि ठाढो कियो, मुख सन्मुख नृप दीठि ॥ ७१ ॥ दौरि चले परिजन सकल, वंदि सोरु संभार ॥ बाजि उठे इकबार ही, दुंदुभि दीह हजार ॥७२॥ तारक ॥ सँगसाजि चले बहु भूपति भारे॥ रवि किंकर ज्यों रवि संग निहारे ॥ तुरकी हय साजि चले नृप आगे ॥ सब दूरिहि देखति पाँयनि लागे ॥ ७३ ॥ दल संयुत भूपति बाहिर आयो ॥ सम भूमि विहार बिनोद बनायो ॥ असवार तुरंगन दाबि घनेरे ॥ छलसों परिहास करैं बहुतेरे ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ दौरावत चहुँ ओर हय, देखत बात लजात ॥ छूटत मानौ फुलझरी, जरी जीन सरसात ॥ ७५ ॥ दौर हमारीको धरा, अल्प अधिक यह जानि ॥ मनौ करत अंभोधि थल, खुरन खूँदि रजसानि ॥७६॥ दौरत शत्रु दिगंत लौं,लंघत सिंधु सुजासु ॥ ता नृपके हय जानि यह, करत मंडली लासु ॥ ७७ ॥ प्रद्धटिका ॥ यह लखत ललित लीला विलासु ॥ नृप गयो बाग जहँ सुख निवासु ॥ वनपास पहुँचि सब नगर लोग ॥ फिरि चले मुदित मन योग योग ॥ ७८ ॥ सँगके नरेश उतरे समीप ॥ तेद्वार खड़े राखे महीप॥ गहि एक एक मित्रनि अनूप॥ माधि बाग गयो अनुराग भूप ७९॥ तोटक ॥ वनपाल प्रधान प्रणाम करै ॥ करजोर विलोकत प्रेमधरे ॥ फल फूलनकी महिमा विनई ॥ वनकी सब शोभ दिखाइ दई ॥ ८० ॥ तोमर ॥ फल फूल पत्र प्रकासु ॥ जनु है वसंत निवासु ॥ चहुँधासु जासु हजार ॥ जनुहै सुगंध बजार ॥ ८१ ॥ बहु भाँति फूलत फूल ॥ अलि संचरै रसमूल ॥ सजिकै धरे ऋतुराज ॥ मनमत्थ आयुध साज ॥ ८२ ॥ चौपाई ॥ कहुँ तरुवर पण्डितसे राजैं ॥ फैले पत्र पुराण विराजैं ॥ कहूँ महीपति शोभा धरै ॥ नवदलसे सबको मन हरै ॥ ८३ ॥ उडत पराग धुंधि चहुँ ओरी॥ ऋतुराजा खेलत जनु होरी ॥ कल गाननि कोकिल कुल गावैं॥भवन बीन परवीन बजावैं॥८४॥

दूत विलंबित ॥ छूटत हैं जलयन्त्र तहाँ बने ॥ गरजि कै जल चादरि सों सने ॥ परम मोरनिको जहँ लासु है ॥ मानहु साँवन भादौं मासु है ॥ ८५ ॥ लसत केतकिके कुल फूलसों ॥ रमतु भँवर भरे रसमूलसों ॥ शिव सुपूजन माँह मने करे ॥ मनहु सो अपकीरति सों भरे ॥ ८६ ॥ **मौक्तिक दाम** ॥ दुरव्यो हिय केतकि देखत भूप ॥ करचो तब तापर रोष अनूप ॥ वियोगिनिके उरभेदतु रोजु ॥ करै तुमको निजबाण मनोजु ॥ ८७ ॥ सकंटक रूप न काटन योग ॥ गिरै विरही तिहि लागत लोग ॥ महेश यही तुमको निदह्योजू ॥ आरासम पत्रनिह्वै विदरचोजू ॥ ८८ ॥ **दोहा** ॥ मधुसों गीले हाथ ह्वै, ऐंचो धनुष न जाइ ॥ ते पराग मालि कुसुम शर, बेधत मोहिं बनाइ ॥ ८९ ॥ **सुखदायक** ॥ देखे फल सँभारि सुहाये दाडिमनि ॥ धूपे तललै धूपनवाय आननिन ॥ चहै समता होन दमयंतीके कुचनि ॥ छूटै घटै धूँम मानौ हू काननि ॥ ९० ॥ **दोहा** ॥ लखी वियोगिनि दाडिमनि, कंटक अंग निदान ॥ फुलत नविन दरको लग्यो, शुकमुख किंशुकबान ॥ ९१ ॥ **मनहंस** ॥ विरहनिके पल खातहौ यहि नामसों ॥ यहिते पलाश प्रसिद्ध हौ गति वामसों ॥ कछु फूल लागत लाल हैं तेहि हेतसों॥इमि दूखिकै पुहुमी पुरंदर चेतसों ॥९२॥ **नील** ॥ नव लता पुनि सुंदर नृप दीठि परी॥ चुंबित मंद समीर सुसीकर सों भरी ॥ कंपित अंग अनूप कलीमुख हांसु लसै ॥ कूजत कंठकपोत विलोकत जीव त्रसै ॥ ९३ ॥ चंपपकी कलिका लविलोकत जानि परी ॥ भँवरनकी अवली उमहीं सिगरी ॥ पूजत काम बसंत सुदीपक वारि धरी ॥ चित्त वियोगिनके सुपतंगम तूलकरी ॥ ९४ ॥ **कबित्त** ॥ बांचति कोकिल हैं विरहीनकी दुःखदशा अलि देत हुकारै ॥ फूलि रह्यो करुणारसबाग वियोग संयोग विहार बिहारै ॥ या जगमें कछु नाहिनहै कहती सबसौं कर फूल पसारै ॥ देखत है टरि भूप तहां भरि नयनन आंब गुलाबकी डारै ॥ ९५ ॥ **भुजंगप्रयात** ॥ विलोके तहां आंबके शाखि मौरे ॥ चहूंधा भ्रमैं हुंकरैं भौंर बौरे ॥ लगै पवनके झूंक डारै झुकावैं ॥ विचारे वियोगीनको ज्यों डेरावैं॥९६॥**शशिवदन**॥पिक

द्विज देखे ॥ कुपित विशेषे ॥ नयननिराते ॥ वचननिताते ॥ ९७ ॥ दोहा ॥ दिन दिन तनु तनुतागहै, लहौ मूरछा तापु ॥ पिकद्विज ये बोलत न जनु, विरहिनि देत शरापु ॥ ९८ ॥ सोरठा ॥ लसत धूम अलिशीश, चम्पकके गुच्छा दिपत ॥ धूमकेतु बिसवीस, ज्यो वियोगिनिको अहित ॥९९॥ दोहा॥ चहुँ दिशि मिटत पराग कन, शीश लगी अलिपाँति ॥ लखी नागकेसरि चलित, मदन सानकी भाँति ॥ १०० ॥ तोमर ॥ चहुँओरते अलिधाइ ॥ नलके सुगन्ध लोभाइ ॥ तजिदेत फूल बनाइ ॥ सब ओर गुंजत आइ ॥ १०१ ॥ दोहा ॥ बारनारिके कुचन सम, तके पके फलबेल ॥ पवन चलित कंटक दलित, चन्दन सुरभि समेल ॥ १०२ ॥ सवैया ॥ गूँदि रहे गन गुच्छनिके नवरंगित रंग सुरंग बखान्यो ॥ मोहन बान बसी करके औ उच्चाटनको बहु ठीक ठिकान्यो ॥ नृप मयनको अक्षय बाण निषंग बन्यो निहिचै पचिमै पहिंचान्यो ॥ विरहीनके हीय हुलास विडारन पाँडर डारन देखि डरान्यो ॥ १०३ ॥ दोहा ॥ कोरक सहित अगस्तिया, लख्यो राहु अवतार ॥ कला कलाधरकी गिली, जनु उगिलत यहि बार ॥१०४॥ चंद्रमाला ॥ सित तुषार दलबसन दूरि करि हठसों अंग उघारै ॥ कंपतु तनु लै नवल लतासों सुघर समीर विहारै ॥ झरिझरि परत कुसुम श्रम सीकर सुखसनेहसों सो हैं॥ लोचन मूँदि रह्यो पुहुमी पर निरखतही मनमो हैं १०५ सवैया ॥ शीतल डोलत मंद समीर भयो तेहिते अति शीतल नीको ॥ फूलनके रससों मिलिके प्रगट्यो सबु स्वादु सुधाधरहीको ॥ केतकीके नव पीत परागसों पीत भयो रँगु सोहनोजीको ॥ द्यौसहुमें विरहाकुल भूप लह्यो सुख तोहूँ सजी रजनीको ॥१०६ ॥ दोहा ॥ विरहबिथाहू में लख्यो, भूपति आनन चन्द ॥ कुहूकुहू टेरन सरिस, कोकिलदै दुख द्वंद ॥ १०७ ॥ प्रमाणिका ॥ अशोकनाम जानिकै ॥ लख्यो सुसाखि आनिकै॥ लसै सुरंग फूलसों ॥ मनौ जवान तूलसों ॥ १०८ ॥ सवैया ॥ बावली विभ्रम वीचिनसों तटलागि चढी मिरदंग बजावै ॥ गावतु हैं पिक पञ्चमताननि मोर मिले वनितान चलावै ॥ रंग बन्यो वनमें सब अंगनि चोपसों भूपहि मोरि रिझावै ॥ भागके भाजन जात

जहाँ चहुँ कोदनि माँह विनोदनि पावै ॥ १०९ ॥ तारक ॥ फहैरें नवपात निसान घनेरे ॥ नृप आवतु हैं जनु मयन अहेरे॥ गुलक्यारिनमें अलि बोलत मानौ ॥ वह काम नफीरिनिकी ध्वनि जानौ ॥११०॥ दोहा ॥ शिवपूजन हित कनकके, कुसुमरसत अलिजाल ॥ मयन नृपति जगजीतकी, बजी मनौ करनाल ॥ १११ ॥ दोधक ॥ जो गुलकेसके फूल सराहैं ॥ मयन तुरीनके जीन झवा हैं ॥ सोहतु रौसनिमें गुल्लाला ॥ मानहुँ कामके आशव प्याला ॥ ११२ ॥ सवैया॥ अलि कोकिल बीन बजे बजने बन वेलिन केलिसों नाच रचायो ॥ संगम मंत्र मनोज महा ऋतुराज लस्यो गुललालन मायो ॥ तजि मान मिलै मनभावन को तिय यों लिखि आइ सुबागनि आयो ॥ आमिल हू छिन पौन प्रबीनलै ना फरमा फरमानु पठायो ॥ ११३ ॥ संयुत ॥ शुक सारिका गुण उच्चरैं ॥ नृपकी सुकीरति सुंदरैं ॥ सुनि होत ही न हुलासु है ॥ दमयंति प्रीति प्रकाशु है ॥ ११४ ॥ विरहागि ह्वै दुगुनी जगै॥ मन बाग देखत नालगै ॥ पग नेकु आगुहिको दयो॥ इक ताल देखत मोहियो ॥ ११५ ॥ दोहा ॥ लैकै सब संचित रतन मंथनको भयमानि ॥ मनौ बगीचा बीच गृह, वस्यो क्षीरनिधि आनि ॥ ॥११६ ॥ जलतल विषधर दंड बहु, झलक श्वेत सरसात । मनौ बसत वासव दुरद, रदनावलि संघात ॥ ११७॥ चंचल तरल तरंग तट, प्रतिबिंबित जल होत ॥ लगत वीचि ता जन मनौ, सुर वाजिनके गोत ॥ ११८ ॥ पुंडरीक विकसत लसत, बसत कलंक मलिंद ॥ मनौ उदित यामें मुदित, दिपति अनेकानिचंद ॥ ११९ ॥ चलत चक्र करकमल बल, मधुकर द्युति दरशाइ ॥ विषधर पै राजत सदा, सवरण हरिके भाइ ॥ १२० ॥ लपझी अंग तरंग बहु, सरिता रंग अनूप ॥ नव पंकज अंकुर जहाँ, धरत प्रबाल स्वरूप ॥ १२१ ॥ सित सरोज फूले उतै, इत इंद्रिय बरनोर॥ शशि मंडल उहि ओर जनु, विष मंडल यहि ओर१२२ चलती लता सिवारकी, चलत रंगके संग ॥ बडवानलको जनु धरयो, धूमधूमरे रंग ॥१२३॥ मित्रसंग कंटकित तन, सीग्रहपै परवीन॥ जासु कमलनी अपूसरा, शुचि सुगंधसों लीन ॥ १२४ ॥ जाके जलमें

प्रति फलत, सब तट तरु इक आंक ॥ पर्वत परचो सपच्छ है, मनौ लसत मैनाक ॥ १२५ ॥ गीत ॥ मणि दीह दर्पण है मनौ जलदेवता रमणीनकी ॥ मुकुतानि हीरनिसों रच्यो घरु धौजलेश प्रवीनको ॥ जनु सात सिंधुनको यहै उत्पत्तिको थलु मानिये ॥ जलराशि रूपधर्‍यो मनौ शशि जोन संयुत जानिये ॥ १२६ ॥ चौपाई ॥ मुनि जन मन सज्जन गुण जेते॥सुकृतपुण्य शुचि सत्व समेते॥ सुधासार चंदन घनसार॥इनसौं मनौ कर्‍यो शृंगार ॥ १२७ ॥ चक्र कमल कर चिह्नानि धरै ॥ महापुरुषकी शोभा भरै ॥ नीलकंठ पीवत विष याको ॥ सागर मंथन समय सुताको ॥ १२८ ॥ सोरठा ॥ तेहि तडाग तट ओर, अद्भुत देख्यो स्वर्ण तन ॥ कलहंसन शिरमौर, मोहि गयो भूपाल तब ॥ १२९ ॥ चोंच चरण युग लाल, अंकुर दल द्वौ रागके॥ नवल प्रगलभावाल ॥ तिन तिनके अनुरूप जनु ॥ १३० ॥ लक्ष्मीधर ॥ देखि ता रूपको भूप मोह्यो महा॥ देहमें मैनकी पीर रोकी हहा॥ आजुलौं मैं न ऐसो विलोके उँकहूं॥देवके लोक कोहै यहै सांचहूं॥१३१॥दोहा ॥ चलत देव इच्छा प्रबल, जितै तितै समुझाइ॥ दौरत सुर नर नाग मुनि, ज्योति नगन बसत्राइ ॥ १३२ ॥ निशिपाल ॥ एकु धरि पाइँ इकु पाँइ उरमें लयो॥ घीच फिरितोकि शिर टाकि छदसों दयो ॥ तीर सर आइ अरसाइ खगुसो दयो ॥ दूरि टुकलाइ नल भूमिपति जोइयो ॥ १३३ ॥ दोहा ॥ निज मुख छबि जीत्यो नयो, मनौ स्वर्ण जलजात ॥ किधौं वरुण जलराज को, हाटक छत्र सोहात ॥ १३४ ॥ प्रद्धटिका ॥ उतरचो तुरंत हयते नृपाल ॥ पग दिपाति जरी जूता रसाल ॥ वनके प्रबाल सह अंबुजात ॥ जनु युद्धकाज सन्नद्ध गात ॥ १३५ ॥ छलसों स्वरूप बावन बनाइ ॥ दुरि चलत हरे नाहिं बजाति पाँइ ॥ पहुँच्यो समीप जब भूमिपाल ॥ करझंपि झपटि पकरचो मराल ॥ १३६ ॥ तब तरफराइ फरकै अतूल॥ उठि चल्यो चहतु नाहिं चलतु मूल ॥ तब कंठ फारि बोल्यो अराल ॥ कर काटत चोंचनि सों मराल ॥ १३७ ॥ भ्रमरावली ॥ तबहीं भहराइ भजे खग सरसों॥ बहु सोरानि साजत हैं मिलिकै डरसों॥लगिमारुत चंचल पंकज सुंदर सों ॥ सर मानहु भूपतिको बरजै करसौं ॥१३८॥

दोहा ॥ जाको पति निरद्वैतही, वास योग नहिं भूमि ॥ यहै कोसि मानहु चले, गगन विहंगम घूमि ॥ १३९ ॥ चौपाई ॥ निरखि भूप बोल्यो हँसि यही ॥ हाटक हंस अनूपमसही ॥ तब बोल्यो धरि धीर मराल ॥ उक्ति अनूपम वैन कराल ॥ १४० ॥ अ० ॥ कौन चाल भूपाल तिहारी ॥ निरखि गह्यो हाटक छदधारी ॥ कनक रत्न धनभार तिहारे ॥ सागर सीक रहोत सुखारे ॥ १४१ ॥ मेरे वधे एकु वध पापु ॥ पुनि विश्वासघातको तापु ॥ तोहिं देखि सज्जन ढिँ आयो ॥ हौंसोयो संताप सतायो ॥ १४२ ॥ जो कछु करयो पराक्रम बूझ्यो ॥ तौ किनजाइ सु समर अरूझ्यो ॥ हमसे अबल वधेको नामु ॥ सब संसार हँसै कहि बामु ॥ १४३ ॥ फलदल वृत्ति मूल वन फरै ॥ स्तुति निंदा सम चित धरै ॥ मुनि समान खग तिनहि सतावत ॥ पति कहाइ पुहुमीह लजावत ॥ १४४ ॥ दोहा ॥ कहि कहि ऐसे वचन तब, चकित किये भूपाल ॥ करुणारस में सरस वर, बोल्यो हेममराल ॥ १४५ ॥ सवैया ॥ हौंही भयो विरधापनमें इक बालक सों जननी अति जीरन ॥ हैं अबहीं चिकुला जनमे वरटा तनमें छिनु धारत धीरन ॥ हौं प्रतिपालक हौं तिनको नहिं आजु अहार मिल्यो अरु नीरन ॥ मेरी भई यह आनि दशा निघरे विधि तोहि अरे यह पीरन ॥ १४६ ॥ चौपाई ॥ पुनि पुनि निजतरुणी सुधिकरै ॥ कहै वयन करुणारस भरै ॥ चिकुलनको कैकै पछितायो ॥ नयन मूँदि परवाह वहायो ॥ १४७ ॥ नायकाप्रति-सवैया ॥ मैं फरमायसिकीने मृणाल सुलावतु है मगमें अरि हैगी ॥ बूझहिंगी पुनि साथिनसों निज नयननीर नदी भरि हैगी ॥ उत्तरही कि अचान कमेस सवाइके धीर नहीं धरिहैगी ॥ वे जब देइँगे रोय महा तो हहा मृगनयनी कहा करिहैगी ॥ १४८ ॥ कबित्त ॥ यहि शोकसों प्राण तजैगी बरांगिनि तौ निहचै पतिको व्रतुपारै ॥ नहिं नयननते कबहूं छिन ओट भई मिलि जोट विहार विहारै ॥ आजु लग्यो इकवारही आनि बड़ो दुखदानि सुभाग्य हमारे ॥ तौ मारेहूं पर मारे उदै मरिहैं चिकुला लफिकै सब बारे ॥ १४९ ॥ दोहा ॥ बडे मनोरथसों लहे, पूजि पूजि ब्रजनाथ ॥

ते चिकुला व्हैहैं दई, कैसे आज अनाथ ॥ १५० ॥ **चम्पकमाला ॥** ज्यों करुणाको वैन सुनायो ॥ भूपतिके जीमें दुखछायो ॥ छोडि दियो ताको कहि ऐसो ॥ देखिलियो तेरो तनु जैसो ॥ १५१ ॥ **दोहा ॥** जाइ मिल्यो निज गोतमें, आनँदरव सरसाइ ॥ घेरि लियो चहुँ ओरते सब हंसन मिलि आइ ॥ १५२ ॥

इति श्री मत्प्रचंडदोर्दंड प्रतापमार्तंड भूमंडलाखंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबरखांप्रोत्साहित गुमान मिश्रविरचिते काव्यकलानिधौ हंसग्रहणोनाम द्वितीयस्सर्गः॥२॥

दोहा ॥ सर्ग तीसरेमें कथा, हेमहंसको गवनु ॥ वर्णन देश विदर्भको, कुंडिनपुर नृप भवनु ॥ १ ॥ **सोरठा ॥** पाइ मुक्ति द्विजराज, प्रभु पुरुषोत्तमसों सुगति॥ लह्यो ब्रह्म सुखसाज, बनत न वर्णत वचनसों ॥२॥ **दोहा ॥** पांख हलाइ फुलाइ तन, चोंचुनिचुनि सुख ज्वाइ ॥ गयो दौरि उड़ि नीडको, मिल्यो सबनि सुखपाइ ॥ ३ ॥ परचो पाँइ तब माइके करवायउ आहार ॥ पुनि निज तरुणीसों मिल्यो, बाढेउ विविध विहार ॥ ४ ॥ चिकुलनिकी सब खबरि लै, समाधान करि माइ ॥ उड़ि आयो पुनि ताल तट, मिल्यो हंस समुदाइ ॥५॥ **प्रद्धटिका॥** बहु सैं बल क्षमताको निधान ॥ युत रुद्र अक्ष मधुकर निधान ॥ जनु कमल जानि उड़िकै मराल ॥ बैठ्यो भुवालके कर रसाल ॥ ६ ॥ विश्वास पाइ पहिलो निदान ॥ मनमुदित हंस बैठ्यौ सुजान ॥ बोल्यो पियूष समचारु वैन ॥ मनुकान लग्यो नृपको सुऐन ॥ ७ ॥ **हंसदोधक ॥** राजन काज शिकार बनायो ॥ खेलनि में नहिं दोष बतायो ॥ भूपति जो तुममो कहँ छाँडेउ ॥ तौ निज धर्म दया पर माड़ेउ ॥ ८ ॥ जे अपने कुलदीन निहारैं ॥ ते निजकाज अहार विचारैं ॥ मीननकी यह रीति बखानी मारत होत न दोष निसानी ॥९ ॥ जापर जे निज बासु सँवारै ॥ तात रुपै मल मूत पखारै ॥ ते खग खेल अखेटक मारैं ॥ राजनिको नहिं दोष विचारैं ॥ १० ॥ जे तिनुकान चरैं विन दोसे ॥ आपुरहैं तिन संग भरोसे ॥ वेझतहैं नृपते मृग ऐसे ॥ लागत पाप तिन्हैं न अनैसे॥११॥

मैं तुमसों कटु बोलनि बोल्यो ॥ सो अपराध चहौं अब छोल्यो ॥ चाहत हौं कछु काज सँवारयो ॥ जो हिय आपने होइ विचारयो॥ १२ ॥ आपनते शुभ आवत जाने ॥ तौ न अनादर देत सयाने ॥ जो विधि देत कछू फल जीसो ॥ तौ जगजीवहिके करही सो ॥ १३ ॥ हो प्रभु हौं बलहीन पखेरू ॥ हौ तुम राजन माँह सुमेरू ॥ अंतर आपुसमें अवगाहौ॥ पै उपकार करयो कछु चाहौ ॥ १४ ॥ जो उपकार करै जग माँही ॥ तौ बदलो सजिये निज याही ॥ आपुनके बलके अनुसारै ॥ नाहिन घाटि न बाढ़ि विचारै ॥ १५ ॥ भूप सुनौ विनती बहुतेरी ॥ यद्यपि मूरुख है मति मेरी ॥ ज्यों शुकवैन स्वहावन जानौ ॥ त्यौं यह बात करौ परमानौ ॥ १६ ॥ देश विदर्भ सुवेद बखान्यो ॥ सुन्दरता मणि आकर मान्यो ॥ है रमणीय रमा परभासों ॥ सुन्दर सौध सुधा वसुधासों ॥ १७ ॥ मयन मनौ निज लोक बसायो ॥ भूप शृँगारको देश सुहायो ॥ पद्मिनि जाति जहाँ सब नारी ॥ मानहु बैठि विरंचि सँवारी ॥ १८ ॥ **दोहा॥** जहँ दुर्वासा तप करयो, कंटक लाग्यो पाँइ ॥ शापादियो ता देशते, डारयो दर्भ नशाइ ॥ १९ ॥ सुखसों विहरत वननमें, विद्याधर सुर सिद्ध ॥ तबते त्रिभुवनमें भयो, देश विदर्भ प्रसिद्ध ॥ २० ॥ **तोटक ॥** जगतीपति भीम तबै तेहिको ॥ अरि काँपतनाम सुने जेहिको ॥ जिन षोडशदान अनेक दिये ॥ बार महा हयमेध किये ॥ २१ ॥ रणजीति शिरी बहु वार वरी ॥ सँगकीरति नौल सखी सुथरी ॥ भुजदंडनसों जिन दैत्यहने ॥ पठये उपहार शची सघने ॥ २२ ॥ कुल भोज सरोजनको रविहै ॥ लखतै तमजात महादवि है॥ सत मारगसों विचलावत है॥ द्विज चक्रनि चैन बढावतुहै२३ **दोहा॥** वीति गयो बहुकाल कछु,भयो न ताके बाल॥ जऊ सुचित सब दुखनिसों, दुचित भयो भूपाल ॥ २४ ॥ पटरानीसों कैमतो, लैपरिजन कछुसाथ, आश्रम गयो नरेश तब, जहाँ दमन मुनिनाथ ॥२५ ॥ **प्रमिताक्षरा ॥** जहँ वेद घोष नितपाप हरैं ॥ शुक सारिकानि मुख ब्रह्मररैं ॥ बक हंस सारसनि वाद परैं ॥ मत द्वैत भेद निर्वेद करैं ॥ २६ ॥ **सवैया ॥** बाघ बछानिको गाइ जियावत बाघिनिपै सुरभी सुत चोषै ॥

न्योरनिको सहरावत सांप अहारानि दै बेडहै प्रतिपोखै ॥ व्याधिकथा नहिं मैं सुनिये अपलोक सबै जल कुंडनि बोखै ॥ नयननिराग भई पिकके अरु विग्रह वैन शरीरके घोखै ॥ २७ ॥ बंधनहै मनहीको जहीं अरु संयममें यमको यमुना है ॥ दैत्यकथा अघकी सुनिये जहां सीग्रह-सों अलि राखतु कामुहै॥ ढेर विभूतिनके चहुँ ओर रजोगुणयो अभिराम विराम है॥आश्रम देखि मुनेश्वरको अति पावन पुण्य कर्‍यो परणामु है२८ चौपाई ॥ कहूं बिछे सोहत मृगछाला ॥ कहुं गूंदति मुनि अच्छानि माला ॥ कहूं मूलफल दल मिलि कूटत ॥ कहुँ कहुँ पके निवारनि जूटत ॥ २९ ॥ सुकुमारी तन मुनि जन नारी ॥ घट भरि भरि सींचततरु वारी ॥ थकी जानि मारुत गतिमंद ॥ परसि परसि तनु करत अनंद ॥ ३० ॥ वल्कल चीर चुनै दिन मूदे ॥ कोउ फूलनिलै अलकानि गूदे ॥ भूषण तन फूलनिके करै॥ देखतही मुनिजन मनहरै ॥३१॥ श्रुति नाघत तिनहींके नयन ॥ चिकुरै वक्रगतिनके ऐन । खेलत मुनि कुमार छविछाया ॥ मानहुसत्यलोकते आया ॥ ३२ ॥ मुनिजन निज संयम जप साधै ॥ धरि धरि ध्यान ब्रह्म आराधै ॥ चम चमात रुचिके तनजाल ॥ बनत न देखत रूप विसाल ॥३३॥ घनाक्षरी ॥ बलकलौ धरैं तजैं बरत अनेक भरैं जनपद गहत लहत मंत्र मतहैं ॥ येसे बलतपै परलोकनते अरियाते कोसनि अचलतैते केबरो लगत हैं ॥ सुवसनभामै साधैंपौन नय तन आनि अदभुत मुकुतौ करनकौ सजतहैं॥ दंड विगहत है सबन एक मंडललै राजशी रहित राजै तापसी जगत हैं ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ एक एकते सरस सब, तप पवित्र अवतार ॥ तिनमें राजत दमनमुनि, जनु जगको करतार ॥ ३५॥ हरिगीतिका ॥ शिरते छुटी छिटकी जटा मृदुवेलि ज्यों शुचि शीलकी ॥ जनु शृंगशैल सुमेरुते बहु धार गंगसलीलकी ॥ तिरपुंड राजत भालपै शुभभस्मको रचिकै कियो ॥ जनु हेमकी नव पट्टिका तिहुँ देवका आसन दियो ॥ ३६ ॥ चहुँ ओरते लपटी छटा छवितेज पुंज समानसों ॥ जनु सूर मण्डल में लसै तडितानके शुभ साजसों ॥ असरापकी रसनावली समरेष भ्रूयुग पाँति है ॥ गुणतीनि तीनिहु देव तिहु मनु काललोचन काँति है ॥३७ ॥ वि·

ज्जूहा ॥ पुण्यके पालहैं ॥ दीनके घालहैं ॥ सीयके हेतहैं ॥ नयनसों भेतहैं ॥ ३८ ॥ **सवैया** ॥ पुण्यनिके जल घोरिघने घनसार मिलें मृगमेह दहावत ॥ कंजनिके किधौं पुंजनिसों नखते शिख अंगसबै सियरावत ॥ बोरत स्वादु सुधारसमें बसुधा महँ सो द्विज धन्य कहावत ॥ जापर नेक दया दृग आवत तातनके त्रयताय नशावत॥ ३९ ॥ **सुलक्षण** ॥ अति ललित लंबित कानहैं ॥ जहँ सुनत मन्त्र विधान हैं ॥ चहुँ श्रुतिन जनु युग तनुधरे ॥ मुनि मुखहि सेवतु हैं खरे ॥ ४० ॥ शुभ वंश उन्नत नासिका ॥ तपकी ध्वजा द्युति हाँसिका ॥ जहँ छुटत पवन सुह्रा सुहै ॥ तिल फूल के तन त्रासु है ॥ ४१ ॥ **दोहा** ॥ इडा पिंगला सुषुमणा नारिनको रंग भौनु॥ पूरक कुंभक रेचकनि, मिलि रमती रसरौनु॥ ४२॥ **लीलाछंद** ॥ कमल सों मुसुक्यात आनन पूरि दंत मयूष ॥ स्वच्छता हियकी मनौ प्रगटी पवित्र मयूष ॥ स्वर्णको उपवीत राजित कंध लंघित बाम है ॥ सकल इंद्रिय जनु सुचंचल रोकिबेकी दाम है ॥४३॥ **दृढ़पद** ॥ बाहु बंध कर मूलमें आछावलिराजै ॥ लपटे फणि श्रीखंडकी लतिका जनि राजै ॥ कुंड जुरच्यौ सुहोमको जनु नाभि सोहाई ॥ रोमावली मिसि धूमकी रेखा चलि आई ॥ ४४ ॥ धोती सोहत श्वेत है जनु जोन्ह सोहाई ॥ मनहु जरा दुगुनी करी तनुकी छबि छाई ॥ कैधौं कटि लौंन्हात हैं गंगाजल ठाढ़े ॥ किधौं चरण नख अंसुके पटसों द्युति ठाढे ॥४५॥ **दोहा** ॥ सकल भूप शिर मुकुट मणि, मिलत ओप सर सात ॥ चरण कमल मुकुतावली, लसत नखनकी पाँत ॥ ४६ ॥ **घनाक्षरी** ॥ विकसत सुंदर अशोकतर वेदिकापै मृदुल सु दर्भ नयो आसनु सँवारयो है ॥ तापर विराजत दमन ऋषिराज आस पास ऋषिराजनको मंडल सुधारयो है ॥ सनक सनंदनसे विदित परम तत्त्व नरम कठोर वैनयाके विबवारयो है ॥ देखतही मुनिनको जन्म फल लह्यो भूप उमह्यो उदधि उर आनंद में पारयो है ॥ ४७ ॥ **दोहा** ॥ फटिक माल कोपीन पट, दंड कमंडलु चारु ॥ आनि सत्वगुणको बस्यो, सुखपा परिवारु ॥ ४८ ॥ अति दुर्बलतनहूँ बढ्यो, झलक पुंज परकाश ॥ सेवन हित जनु ब्रतिनि मिलि, करयो शरीर निवास ॥४९॥ **त्रिभंगी** ॥ स

न्मुख तब आयो क्षिति शिरनायो टेरिसुनायो करजोरे ॥ मुनि भूपति जान्यो उठि सनमान्यो गुणनि बखान्यो मनु भोरे ॥ सादर उरलायो आसन लायो बैठायो सुखमानि सही॥ हँसि पुनि बूझी प्रेम अरूझी तपबल लूझी कुशल सही ॥ ५० ॥ **दोहा** ॥ न्हान उपासन कै सकल, वंदि यज्ञ थलबास ॥ कंद मूल फल सरसदै, भोजनके सविलास ॥ ५१ ॥ आगम कारण भूप तब, मुनिसों कह्यो सुनाइ ॥ मुनिवर दई उपासना, परम दयालु दयाइ ॥५२ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ तब विष्णुभक्ति दीन्ही दयाल ॥ तुम नारिसंग लेवौ भुआल ॥ सब होत तुरत अभिलाष सिद्ध ॥ यह विष्णुभक्ति देवन प्रसिद्ध ॥ ५३ ॥ गहि पाँइ चल्यो घरको नरेश ॥ ह्यां आइ कऱ्यो व्रतको विशेष ॥ तब प्रगट भये भय भूरिहारि ॥ वरदयो दुहूंको मन विचारि ॥ ५४ ॥ नृप धऱ्यो पुत्र मनमें सुधारि ॥ रानी सुलई कन्या विचारि ॥ ता गर्भ युगल जन म्योस्वरूप ॥ यक तनय चारु तनया अनूप ॥ ५५ ॥ दम कऱ्यो नाम दमघोष आनु ॥ सुंदरु वोदारु बलको निधानु ॥ दल मल्यो रूप तिहुं लोक वाम ॥ दमयंति कऱ्यो तनया सुनाम ॥ ५६ ॥ तेहि सरि न और तिय तीनिलोक ॥ मैंदेखि फिऱ्यो सब ओक ओक ॥ अब है कुमारि बयमननवीन ॥ कछु वर्णत ताकी छवि प्रवीन ॥ ५७ ॥ **तारक** ॥ वह सांचेहु रूपवती लक्ष्मी है ॥ गुणसिंधु धराधिपते न नमी है ॥ सब लोगन चारु कथा चरचाकी ॥ जिमि मेघ छपी छवि चन्द्रकलाकी ॥५८॥अ०॥ तिन केशनिकी समता कत पावै ॥ केतिकौ किन चामर चित्त चलावै ॥ शिर राखत दंछ सनेह भरे हैं ॥ पशु जीवनि पीठिन दै निदरे हैं ॥५९॥ **दोहा** ॥ नयन मृगनको बागुरा, मन मीननको जाल ॥ काम अहेरी केलसै, चाबुक नील बिसाल ॥ ६० ॥ हारे हरिनीके नयन, लगे पलक मुरझाइ ॥ समाधान तिनको करत, मनौ खुरन खुज्वाइ ॥६१॥ **पद्धता**। ताके दोनों कुल गनिये ॥ औ दोनो लोचन मनिये ॥ जोते नारी गुण गनियौ ॥ सो हैं लागे श्रुति सुनियौ ॥ ६२ ॥ **सोरठा** ॥ नलिन मलिन ह्वै जात, हरिन होत छबिहीन तब ॥ खंजन गंजन गात, अञ्जन रञ्जन मंजुछबि ॥ ६३ ॥ **बिंब** ॥ फल अधर बिंबजासो ॥

कहि अधर नामतासों ॥ लहत द्युति कौन मूँगा ॥ वर्णि जग होत गूँगा ॥ ६४ ॥ रोला ॥ दमयंतीके बदन काज शशिसों हरि लीन्हो ॥ सुधासार महँ चाहि विविधविधि परम प्रबीन्हो॥बडो भयो विल बीच झलकनभ साँवलताई ॥ हरिन कहत कोउ ताहि शशा कोउ भूमि सोहाई ॥ ६५ ॥ मुख ॥ तामे कहा तिरछी दृग कोर अँभोंह मिरोरनिकी चतुराई ॥ गूँदि चुनीन कनी रमनीनसिमै न कहा अलकै छहराई ॥ ओढनिको सुक हा रसुमै जुकडयुत एक सुधाकी बडाई॥ वा मुखकी सर चाहत चंद्रमा क्योंन कलंक पलै बहुधाई ॥ ६६ ॥ कमल ॥ भ्रुकुटी कुटिल धनुष मानौ रति मनमथहित बनौ ॥ सकति सहित जगलसो सरधि तिलकसो शुभकसो ॥ ६७ ॥ नीलस्वरूपक ॥ रावरेके सभहै बाह बालौ ॥ जीतति है द्युतिवंत जहाँलौ ॥ जो गिरि दुर्गनि माहँ बसैजू ॥ जाभुज चंदन डार त्रसैजू ॥ ६८ ॥ सवैया ॥ कंचुकी सूही कसे मोहरा अति फैलि चली तिगुनी परभासी ॥ माणिकके भुजबंद चुरी मणि कंचन कंकन वोप प्रकाशी॥ रावरे कंठकी माल मनौ निचुरयो जनु रंगभिली मृदुतासी ॥ बाल अबाल मयंकमुखी की लसै भुजबाल प्रबाल लतासी ॥ ६९ ॥ दोधक ॥ कमल वसै जल कोटिन माही ॥ लेतशिरी करसों चितचाही ॥ मित्र प्रताप सहाइनि आनै ॥ पय तिहिसों सब होत डिरानै ॥ ७० ॥ दोहा ॥ रोम रेखदै बीचमें, बाँटिलयो निज अंग ॥ तऊ दबावत तरुणई, लरिकाँईको रंग ॥ ७१ ॥ सुपथ ॥ जासु देह द्युति सागर माही ॥ खेलिकोलि सजिके बहु धाही ॥ काम जोव नु दुऔ नृप आय ॥ कुंभ स्वर्ण कुच गोल बनाय ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ झरतप्रभा चहुँओर झर, झमझमात छविजाल ॥ रचत चक्र धरि कनक घट, मानौ काम कुलाल ॥ ७३ ॥ लालकंचुकी में लसत, कुच कंदुक नारंग ॥ फैली प्रभा तरंग जनु, अंग अनूप सुरंग ॥ ७४ ॥ सुमुख ॥ उदर मनोहर सुक्षमकै ॥ झलझलात सुखमा झलकै ॥ विधिकरि मूति सुमायनिको ॥ त्रिबलीप्रवली उपजीतनको ॥७५॥ कटि ॥ झीनीसितानि कानानि में रसनावतसी रसना झननातै ॥ नाचत सी लहकै चलते मृदु सीखति सी विपरीतिकी वातै ॥ देखतही कटि लोचन जात गई

घटिकै कटि आडत यातै ॥ छाइरही छवि घाँघरो छानि पिछानि लही उलही छातियातै ॥ ७६ ॥ **सोरठा** ॥ बिंब नितंब सडोर, छहरत छवि पट ऊपरहु॥रचे चक्र रथ जोर, जनु जगजीतन कामके॥७७॥ सुसमा रंभा तरुको जंघा निदरै ॥ रंभातरु नीकेही विदरै ॥ लज्जा करि हस्ती के ललना ॥ शुँडागहि धारहि कुंडलना ॥ ७८ ॥ **सोरठा** ॥ गुंजन मणि मंजीर, चरण लसत सेंदूररंग॥बोलत हंस अधीर, शरदभोर अंभोज जनु ॥ ७९ ॥ सरिता सरनि अन्हाइ, एक पांइ रविको विनय ॥ लही सुगति तब आइ, दमयंती पगह्वै कमल ॥ ८० ॥ **सवैया** ॥ छूटत वार न भारसहै लचकै कटि औ भ्रुकुटी चढि आमै ॥ छूटी अ-भूषणकी किरणैं जनु राजत दामिनिके पिंजरामै ॥ लोचन कोरनसों तिरछे लखि टोननकी करतूति बतामै ॥ सोकुशची रति रंभ हजारन खालन लच्छि लखी नहि भामै ॥ ८१ ॥ **अमृतग-ति** ॥ सरवर गाहत नितही ॥ चतुर रहो बहु तितही ॥ तब देखी दृग भरिकै ॥ सफल सजीवन करिकै ॥ ८२ ॥ **इन्द्रवज्र** ॥ देखी जबै वह राजरानी ॥ भूली सबै शुद्धि चलै न बानी ॥ येहो विधाता यह जो बनाई ॥ ह्वै है कहाँ या पति सुंदराई ॥ ८३ ॥ **अन्य०** ॥ देख्यो तुम्हें अद्भुत रूप शाली ॥ आई हमैं शुद्धि वाहौ भुआली ॥ ता रूपके लायकु एकु तोही ॥ छोड़ेउ सबै संशय आजु मोही॥८४ ॥ **दोहा** ॥ दमयंतीको रोष रस, हँसी मान तुम योग ॥ नवल वधूतन पैदिपति लालमाल मणि भोग ॥८५॥ **गंगाधर** ॥ भूपरूप नव सुन्दरतेरो॥ ता विहीन नाहिं रोचतुहेरो ॥ यामिनिहीमिलि चंद्र विराजै ॥ बिज्जु संग घनकी छवि छाजै ॥ ८६ ॥ **अ०** ॥ चित्तचारि सुरराज सराहै ॥ और देवगण वात कहाहै ॥ तो सँग योग जु सहज नहानो ॥ भेघवोट शशिरेख प्रमानो ॥ ८७ ॥ **प्रमाणिका** ॥ समीप जाइ तासुके ॥ कहौ सो यों प्रकाशिके ॥ तुम्हैं धरै सुचित्तमें ॥ टरै न बात नित्तमें॥ ८८ ॥ **अ०** ॥ जो इंद्रमेटिहूचहै ॥ नतौ मिटै सही रहै ॥ यहै सुकाज मैं गन्यो ॥ जो होइ आपहू मन्यो ॥ ८९ ॥ **दोहा**॥ तुमसों बूझतुहौं वृथा, निजपौरुष परिमान ॥ काजहि सों कहि देतहैं, जेहैं जगत सुजान ॥ ९० ॥ अमृत

वचन द्विजराजके, पीवत भूप अघाइ॥ लई मनौ उदगार तिहि, मृदु विहँसानि मिसि आइ ॥ ९१ ॥ बना ॥ करकमलनपोंछो पच्छ अँगौछो बार बार मनुहारि करी॥ पीयूष निसानी यों मृदुवानी बोल्यो अंतर धीर धरी ॥ ९२ ॥ नल ॥ कुंडलिया॥ तेरी आकृति की नहीं, उपमा या जगहंस ॥ वर्णत नहिं बाचा बनत, तेरो शील प्रशंस ॥ तेरो शील प्रशंस अवतरयो आइ आनिहारि ॥ किधौं हंसके नाम रहे रवितेज पुंजभारि ॥ जहँ जहँ शुभ आकार तहाँ शुभगुणकी ढेरी ॥ सामुद्रिकको उदाहरण पायो तनु तेरी ॥ ९३ ॥ सुलक्षण॥ तनुहै न इक सुवरण मई ॥ तुअ वचनद्युति तैसी भई॥ नहिं पच्छपात शरीरसों । तू करति है परपीरसों ॥ ९४ ॥ मदलेखा ॥ मैं संतापित देही ॥ तैं पायो नवनेही ॥ जैसे मारुत लागे ॥ अंभो बिंदुनि पागे ॥ ९५ ॥ अ० ॥ द्रव्यै और बखानै ॥ ताहीको निधि जानै ॥ साधूको सतसंगा ॥ साधूको निधिरंगा ॥ ९६ ॥ सवैया॥ बार हजार सुनी हम हूँ वह मोहनी मूरति जीवन ऐसी ॥ पै अब तेरे कहे निजकै पुनि देखतिहौं निज नयनन जैसी ॥ मित्रनिकी निज हीयकी आँखिन देखति दूरि भली यों अनैसी ॥ तीरहू सूक्षमको नलखै इन आँखिनते मुख माहँ लसैसी ॥ ९७ ॥ दोहा ॥ चर्चा ताके रूपकी, निपटि परी मम कानु ॥ आग्नि ऋचा जनु प्रज्वलित, जासो काम कृशानु ॥ ९८ ॥ यम युवती दिशिते चल्यो अहि फुकार विषघोरि॥ लगै पवन विरहागि जागि, तन ईंधन गन जोरि॥ ९९ ॥ कमल ॥ दरश मिलत रबिसों ॥ तपति गहत छबिसों ॥ परसि परसि हमको ॥ शशि बढ़वत तमको ॥ १०० ॥ तोटक ॥ रति नायक केसर फूल बजे ॥ विषकी लतिका नित नव उपजे ॥ उर लागत मोहत है मनको ॥ आति तापित आनि करै तनको ॥ १०१ ॥ चामर ॥ हौं वियोग सिंधुमें अथाह बूड़िकै रह्यो ॥ भाग्यसों लह्यो तुही जहाजबाँहसों गह्यो ॥ तोहिं प्रेरणा करौं जो पिष्टको सुपीसनो ॥ आपुही सुजानि जाहि ज्ञान जो थुरौ घनो ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ तो मगमें सब सुभग सुख, तुरित मिलन पुनि सोहि ॥ सिद्धि करौ अभिमत लहौ, समय सुमिरियो मोहि ॥१०३॥ विदा कियो नृप हंस तब, नृपकीरति ध्वज वंश ॥ वचि

बगीचाके महल, दाखिल भयो प्रशंस ॥ १०४ ॥ **सोरठा** ॥ सुफल करों दिन आज, लखि दमयंतीको वदन ॥ उड़्यो हंस शिरताज, महि मंडल कुंडिननगर ॥ १०५ ॥ **सवैया** ॥ हाटक हंस चल्यो उड़िकै नभमें दुगुनी तनु ज्योति भई ॥ लीकसों ऐंचि गयो छिनमें छहराइरही छवि सोनमई ॥ नयननसों निरख्यो न बनाइ कै कै उपमा मन माहँ लई ॥ साँवल चीर मनौ पसरयो तेहि पै कल कंचन वेलि नई ॥१०६॥ **मोदक** ॥ दीठि परयो प्रथमै मग सोहन ॥ नीर भरयो कलसा मन मोहन ॥ ता कहँ कारज सिद्धि बतावत ॥ भागनसों समुंहे लखि पावत ॥ १०७ ॥ **दोहा** ॥ भयो पक्ष झंकार रव, झमकि चल्यो खगराज ॥ लसि लसि नीचे खग लखत, ऊपर जान्यो बाज ॥ १०८ ॥ मगमे लखि वन बाग नग, खग विलंब नहिं कीन ॥ जाको मन जासों लग्यो, तासों रुकत प्रवीन ॥ १०९ ॥ पहुँचो देश विदर्भमें, हेमहंस समुहाइ ॥ रजधानी नृप भीमकी, नगिचानी तब आइ ॥ ११० मोहि रह्यो द्युति देखिकै, कुंडिनपुर पुर राज ॥ वचन रचनसों चतुर वर, वर्णत शोभ समाज ॥ १११ ॥ **उल्लल** ॥ गृह फाटिक रचे शशिखण्ड सम फैलि रही छबि शित सरस ॥ निज कंत संग क्षिति युवति जनु करत मुदित चितहाँसरस ॥ ११२ ॥ **तारक** ॥ मणि लालनसों रंग भौन बनायो विच वीचहि नीलम गेह सोहायो ॥ रविके चित नेह मनो अधिकायो ॥ निज लोकहिमें सुत लोक बसायो ॥ ११३ ॥ **लँगडी** ॥ साज आलै अवजमें, तेहि प्रकाश चहुँ ओर ॥ सब तिथि निशिमें, आतिथि सी राकी कऱ्यो प्रकाश ॥ ११४ ॥ **वसंततिलक** ॥ न्हाती जहाँ सुनयना नित बावलीमें ॥ छूटे उरोज तल कुंकुमनीरहीमें ॥ श्रीखंड चित्त दृग अंजन संग साजै ॥ मानौ त्रिवेनी घरही विराजै ॥ ११५ ॥ **तोमर** ॥ चहुँ ओर कंचन कोत ॥ रचि योग पट्ट अंगोत ॥ छिन एक नीर बहोत ॥ लखि भौन जागत जोत ॥ ११६ ॥ अ० ॥ सब ओर खांइ तेहि मांह ॥ प्रतिबिंबकी छवि छांह ॥ जनु आइ लोकं अकासु ॥ सुखु जाानि माानि सुपासु ॥ ११७ ॥ **दोहा** ॥ तुंग पताका पटल गत, चाबुक चलत सुगाम ॥ रवि रथके बाजी जहाँ,

अरुण लहत विश्राम ॥ ११८ ॥ **लक्ष्मीधर** ॥ तीनिहू लोकके वास वासी जिते ॥ दीठि आमै भले काज साजै तिते ॥ देहधारी मनौ विश्व-रूपी यहै ॥ वेदगाई बड़ाई बडी जो लहै ॥ ११९ ॥ **चौपाई** ॥ मुड-वारी रवि मणिन सँवारी ॥ अनल झार छूटी छबिवारी ॥ दिनमें अति अद्भुत गति रहै ॥ बाणासुर पुर शोभागहै ॥ १२० ॥ अ० ॥ शंख शुक्ति मुक्तामणिभरे ॥ अम्बुज रंग चीर बहु धरे ॥ सागरसों जहँ लसत बजार ॥ मुनि सोख्यो सब सलिल अपार ॥ १२१ ॥ **सवैया** ॥ शशिकी मणि उच्च अगार पगारनि चन्द्रहि छू श्रवती जल धारै ॥ पूर प्रवाहनसों सुरसिंधु बड़ी उमड़ी तरुतोरि किनारै ॥ सागर इंदु उदोत बढै यह मानि मनौ पतिके अनुसारै ॥ धन्यातिहूँपुर वे रमणी तजि जे ऋतु आन पतिव्रत पारै ॥ १२२ ॥ **चुलिआल** ॥ अस्तसमय सूरय तजत निजरुचि पुंज सुरंग सुहावन ॥ केसरिके बाजारमे रहत इक अंग रुचिर तन ॥१२३॥ **सरसी** ॥ गुंजत भौंर मिल्यो केसरिमें तोलत सहज सुभाई॥ जहँ बजार जनसोर संग गाहक है शुद्धि भुलाई ॥ दिनमणि मणि गसि गली सँवारी तपत दिवस सरसाई ॥ ता मारग सब शिशिर शीतमें चलत भले सुख पाई ॥ १२४ ॥ **अहीर** ॥ मुख लोचन करि पाइ ॥ कमलन रचे बनाइ ॥ चम्पकके दल अंग ॥ दमयंती तनरंग ॥ १२५ ॥ अ० ॥ स्मर अरचाकी हित माल ॥ ताको कहत विसाल ॥ तेरे कंठ सुयोग ॥ देत सकल रस भोग ॥ १२६॥ **दोहा** ॥ शिखर नील मणि कीर्तिमिलि, श्यामध्वजा पट ज्योति ॥ दिन-करकी गोदी चपल, जहँ यमुनासी होति ॥ १२७॥ **मनहरण** ॥ आपने महल रंग अटासों विलोकि वाम तडित छटासी करचो चहै अभिसारको नीचे नीचे चलत विपुल जलधर देखि तापे चढ़ि चलिगहे पीतमके प्यारको ॥ गतिकी तरलतासों नयन न लगत पल झल मल होत रूप विमल विहारको ॥ सोहत शचीसी बैठी जलद विमान आसमान ते उतरि आई नगर उदारको ॥ १२८ ॥ अ० ॥ केलिके महल दमयंतीके शिखर वर मर्कत किरण छूटी ऊपरको छरीसी॥ लागी ब्रह्मांड खण्ड खण्ड कैन डारचो याते नीचेके वदन फिरी मानौ लाज भरीसी ॥ ऊ-

रथ मुखी ह्वै चरतहै सुर सुर भाँति सुनिके वदन परी झावै द्युति हरी-सी ॥ पुण्यको वगर धन्य कुंडिननगर जग जगर मगर कीर्ति जाकी सोन जरीसी ॥ १२९ ॥ **दोहा** ॥ विधु रतननि कर हाँरचे, रजनि नीर भरि होत ॥ विफल सींचनो लखि रच्यो, भैमी बाग उदोत॥१३०॥ **मालिनी** ॥ उपवन विच देखी राजपुत्री विराजै ॥ सरिस वय सहेली वै चहूँ ओर छाजै ॥ दिपत नखत माला मध्य ज्यों चन्द्ररेषा॥ ललित सुर मृगाक्षी लक्षिज्यों चारु वेषा १३१॥**दोहा**॥ इंद्रानी निज सखिन सँग, नंदनबनमें आइ ॥ क्रीड़ति ह्वैहैं ऐसही, ऐस यही दरशाइ ॥ १३२ ॥ बैठक हित थल लखनको, कनक पंख फहराइ ॥ प्रभाचक्र भूपर लसत, ऊपरही मड़राइ ॥ १३३ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड पंडित भूमंडलाखंडल श्री खाँसाहब अली अकबर प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचित्ते काव्यकलानिधौ हंस गमनं नाम तृतीयस्सर्गः ॥ ३ ॥

दोहा—चौथे सर्ग मराल औ, दमयंती संवाद ॥ आगमढिग निषधेशके, मेट्यो विरह विषाद ॥१॥ **सोरठा** ॥ बाजू दुऔ समेटि, नभते उतरचो जूठसो ॥ दमयंती ढिग भेंटि, बैठ्यो पाँख हलाइ क्षिति ॥ २ ॥ भयो अचानक सोर, लगत जोरसों पंखक्षिति, फिरि चितई ओहि ओर, कहा कहा यह कहतही ॥३॥ **दोहा**॥ दमयंतीकी सहचरी, छोडि विषय रस ओर ॥ देखिरही तारूपको, मुनि ज्यों हरि सब ठौर ॥ ४ ॥ **चंचला**॥ हंस देखिकै अनूप आपके शरीरतीर ॥ लेनकाज तासुके यहौ भई अकंपधीर ॥ ज्यों मुनीश चित्त चारु लै समाधि साधि आनि॥ हंसके मिलापको हलै चलै न ध्यान मानि ॥ ५ ॥ **पृथ्वीछंद** ॥ विलोकि दमयंतीको गहन घात आकारसों ॥ उड्यो न नभको तबै कनकहंस संचारसों हरेहराषि हेत सोँ कर चलाइलायो चहै॥ तबै फरकि फूलसो तनिक जाइ आगे रहै ॥ ६ ॥ **त्रिभंगी** ॥ ज्यों ज्यों सँगधावै गहन न पावै झपटि

चलावै हाथ जहीं॥ आली दै ताले कुहँकि रसालै सरस उतालै हँस तहीं॥ ॥ दम०॥ चहती उचटायो सोरु मचायो सब मिलि यासों बीचु हरै ॥ पीछे जनि आयो तेज न गायो कहा खिझावो जाहु घरै॥ ७ ॥ दोहा ॥ कपट कोपसों सखिनको, विदाकरी सुकुमारि ॥ छायासी पाछे लगी हाटक हंस निहारि ॥ ८ ॥ स्वागत ॥ एक एक पगपै यह जानै ॥ हंस हाथगत होत सुजानै ॥ दूरि दूरि छलसों यहु धायो ॥ अंधकार कुंजनलै आयो ॥ ९ ॥ संग आइ पहुँची न सहेली ॥ देखि राजतनयाहि अकेली ॥ अंगमाहँ जलबिंदु विराजै ॥ फूल लोल लतिका जनु छाजै ॥ १०॥ अ०॥ वैन चारु नर लौ तब बोल्यो ॥ ज्यों पियूषरसको मग खोल्यो ॥ राजपुत्रि जनि दौरो ऐसो ॥ पाँइ कमलपखुरी नवजैसो ॥ ११ ॥ अ० ॥ येसरोज मुखि यौबन देखे ॥ क्यों न डरै हिये कौन विशेषे ॥ पात कंप करसों तरु जेते ॥ तोहिं बार राखत जनु तेते ॥ १२ ॥ द्रुतविलंबित ॥ चलति तू गजगामिनि भूमिमै ॥ धरणि औ नभ आवत घूमिमै ॥ गहन चहति मोहिं कहा करमें फसै ॥ अहहबालपनो अजहूं लसै ॥ १३ ॥ कमल आसन वाहन हंस है ॥ स्वर्गलोक निवास प्रशंस है ॥ चरत हाटक कंज मृणालहै ॥ धरतदेह सुवरण विशाल है ॥ १४ ॥ प्लवंग ॥ विधिको आयसुपाइ मराल विहारको ॥ नभतजि आये भूमि सरोवर चारको ॥ नल नृपलीला ताल न्हाइगे ओकमै ॥ कौतुकसो हो एक भ्रमतु भूलोकमै ॥ १५॥ दोहा॥ बाग तडागरु जगत, सों, देत देव फल भोग ॥ ज्यों तरुवर दोहद दिये, विना समय फल भोग ॥१६॥ पद्धटिका ॥ हम देवलोकवासी मराल ॥ नहिं पकरत हमको फांसजाल ॥ नल एक मोहिं पकऱ्यो अनूप ॥ सुरलोक भोगके भाग रूप ॥ १७ ॥ जब करत केलि लीला विहार॥ जिमि चलत चौर चहुंधा अपार॥तिमि करत जाइ हम पक्षवात॥ सुरसिंधु सलिलसों शीतगात॥१८॥दोहा॥साधु विभक्ति विचारमें, प्रथमा व्यक्ति सुजासु ॥ सुऔ यसै मिलि शुभ समै, साधन क्षमा प्रकासु॥१९॥ उपेंद्रबज्र॥दरिद्रदिवान बोरिडारै॥अमोघ वरषै सुनीर धारै ॥ तासोंनको याचक हाथ ओडै॥ कहूं पपीहा घन संग छोडै ॥२०॥ अन्यच॥ सुनी

जु मोसों नलरूप बानी।। भई सुरंभा रसरंग सानी ।। सुन्यो जो ताको नल नाम जैहीं ।। मिली सु येती नलकू बरैहीं ।। २१ ।। **मनहंस** ।। हम भूमिते सुरलोकको पगु देतहैं ।। नलकेलिके कलगानतौ सुनि लेत हैं ।। जब इंद्र किन्नर गीत गावत चोजके ।। हमको न भावत नेकहू सुर ओजके ।। २२ ।। **दोहा** ।। हाहाकारि निदरचो तबै, हम हरि गा-यन हेरि ।। तबते ताको नाम जग, हाहा भाषत टेरि ।। २३ ।। **घननंद** ।। नलके गुण अभिराम सुनत सकाम होत शची कंटकिततन।। लखत न बासव तास पुण्य प्रकाश प्रेमसलिल पूरित नयन ।। २४ ।। चितदै सुनत महेश वर्णत शेष नलके गुणगण मन हरन ।। करि कंडू मिसि आन मूदत कान तब गिरिजापति व्रत धरन ।। २५ ।। विधि सजि धरम विधान सब परिमान रोकतवीमिहि मौन मिस ।। मिलि कंठ लगि तासु जग परकाशु जानतु ता जड़ वेदातिस ।। २६ ।। अ० ।। लक्ष्मी मिलि सुभाइ हिय अकुलाइ नृपाति व्रतकी विरति ।। समय करत निवास निज परकाश गति अद्भुत अति तासु पति।। २७ ।। **सवैया** ।। सो विधिको कर कूर कहावत पूरण चंद्र रच्यो द्युति हीनो ।। जो नलको मुख देखि तज्यो शिवशीशपै आधिकसो परवीनो ।। निज जीतन हार सुन्यो हमसो तबते अति इंदुरहे भय भीनो ।। चलि सूरयसागर मोहिं छपै कतहूं घन पुंज परै नहिं चीनो ।। २८ ।। आपने वाहनको हरि आयसु देत यहै रसरंग मचावत ।। आपने मीतनसों नलको मुखकीरति के गुणक्यों नर चावत।। ज्यों वरणो हम चोज़ु कछू मुदि नाभिसरोजगयो सकुचावत बूडि विरंचि गये उतआपु गहे उर माह रमा लल चावत२९।। अ० ।। नलको मुख कोलमें केसरिसे शुभवंति सदा तनुके छबि छाजै ।। रचि मानौ करी गुणकी गणना करतार सुकंचनरेष विराजै ।। हीरनकी कलपैं तलपैं यहि भाँति न काँतिकी ज्योति समाजै।। चौदह और अठारह भेदसों विघननकी पदवी सुखसाजै ।। ३० ।। सो० निरखि शिरिद्धै तास, काम पुरंदर तनकसे ।। द्वै विधि क्षमा निवास, जिय न लगत अहि शेष जिन ।३१ ।। **चंचरी** ।। पाँखसों इक हीन है बिनतातनूज प्रमान है । रूप देत नयनसों परिय समीर समान है ।।

देह दीप्ति दीपै महामणि मानिये गति रूपके॥ कौन दिशि जो न जातहैंजू अश्व नैषध देश के ॥ ३२ ॥ शत्रुके रमणीनकी हग अश्रुकी सरिता चली ॥ युद्ध भूमिनमें भई उत्पत्ति अंननकी भली ॥ बाण पन्नग जासुके फहरातहैं जहँ दोसुसो ॥ वैरि प्राणन पौनसों छकि जात हैं निरजोसुसो ॥ ३३ ॥ **शार्दूलविक्रीत** ॥ तीनौलोकनिवासी जे जन घने ते जोगमै ज्ञातसो ॥ आयुर्दाय घटै नहीं सुनिनको जो बुद्धिके मानसो ॥ बाडै आनि परईसों जुगननी क्यों हूँ वनै आइ कै ॥ तौ ताके गनकी चलौ सुगनना संसारमें गाइकै ॥ ३४ ॥ **तारक** ॥ तहँ पक्षिनको नहिं रोवत द्वारे ॥ हम मंदिर भीतर जात सुवारे ॥ तिनकी रमणी गणको सिखरामै ॥ गतिके कछु मंजुल भेद बतामै ॥ ३५ ॥ तिन संग शृंगार कथा हम भाषें ॥ रतिरंभ शची सुखमा अभिलाषैं ॥ नवकाम प्रतीति धरोहरि धारी ॥ यह जानि खरीदतहैं नवनारी ॥ ३६ ॥ **दोधक** ॥ देखतुहौं नलको मुख जौलौं ॥ जीवनको फल जानतु तौलौं ॥ मोहि रही युवती रसभीनी ॥ नयनन लाज विदाकरिदीनी ॥ ३७ ॥ **सवैया** ॥ कौलसे नयननसों विहँसै झमकै तनु भूषणकी परभासी ॥ विद्रुम रंग तरंगलसै अधरान मिली मुसक्यान सुधासी ॥ वैननिमें निज मोहनीके कछु आखरसे पढि आवतहासी ॥ प्राणनवारि निहारि रहे सब मोहि रहे सब नागरिवासी ॥३८॥ तेरे लसै शिररंगित ओढनी ऐसिय वाकी लखी हम पागै ॥ जैसी बुटी तुव कंचुकी पै इमि पैंधतु है उरमें मृदुबागै ॥ ऐसिय रीझ सुभाव सबै रुचि ऐसोई वाहूको सोहतु बागै ॥ है समता अतिही उनते तुम क्यों न तिन्हैं सुनते अनुरागै ॥ ३९ ॥ तेहि राज्ञके योग रची हि तुही विधि ऐसी न और तिलोक सँवारी ॥ कै रबिनी बिन कौन लसै शशिइंद्रलहै यह मैं निरधारी॥ जो कबहूं नलसों न मिलौ फलहीनतौ रूपकी राशि तिहारी ॥ भौंरनको सुख संगन तौ लगि नूतन तान वसंत शृंगारी ॥ ४० ॥ अ० ॥ व्याह किधौ नलही सों रच्यो विधिको चित पैठिके कौने निहारो ॥ व्याहके योग्य भई अबहौ अरु भूपर रूप अनूप तिहारो ॥ श्रीहरिको गिरिजा हरको रतिकाम कोयों

जिन योग सँवारो ॥ योगसों योग मिलावनको मति संचित हो तु विरंचि विचारो ॥ ४१ ॥ **दोहा** ॥ पंकज मुखि नलराज विन, और न योग लखाइ ॥ को गूंदत गुणदर्भसो, माल मालती पाइ ॥ ४२ ॥ जो जडता वश विधि तुम्हैं, नाहिं मिलवै नलराज ॥ जग कलंक सागर तरन पावै कहा जहाज ॥४३॥ **सवैया** ॥ नाहकही वकवाद बक्यो सुकहा रसमों कह या चरचामें॥ राजकुमारि थकायो तुम्हैं मैं सरोजसे पांइ कठोर धरामें॥सो अपराध अगाध गन्यो अब ताकहँ कैसेहु मेट न यामें॥जो कछु आपुनके मनमें अभिलाष कहौ तुरतै करि आमैं ॥ ४४ ॥ **सोरठा** ॥ हेम हंस नरनाह, गह्यो मवन ये वचन कहि ॥ दमयंती मनमाह, अभिप्राय जान्यो चहत ॥ ४५ ॥ **सवैया** ॥ लोचन ऐंचि लजाइ गई तिरछी मुरिकै मुसक्याति छबीली ॥ राजकुमारि विचारि कछू मनबोलि उठी मृदुबात रसीली ॥ आपुनको धृगमानाति हौ खगचापलता वशह्वै गरबीली ॥ तोहि उड़ाइ दियो तटते जिमि बात लगे लहरी झुकिझीली॥ ४६ ॥ **चर्चरी** ॥ स्वच्छराजत रावरी तनु आरसी परभाइकै ॥ है लग्यो अपराध मोतन माँह यो सरसाइकै ॥ रावरे समुहे भई जब हौं नहीं चितलाइकै ॥ सोपरयो प्रतिबिंब ता महँ पाप है नसुभाइकै ॥ ४७ ॥ **मल्लिका** ॥ पाप मैं करयो विचारि ॥ जानहीनहौ कुमारि ॥ सो क्षमा करौ मराल ॥ देव रूपसी विसाल ॥ ४८ ॥ **सवैया** ॥ तेरे स्वरूप सुधारस पानते प्रीति न ओर बड़ी जिय मेरे ॥ ज्योंजगके सिय रावत लोचन चंद्र पियूष मयूषन हेरे ॥ जो जियते निकसै न मनोरथ सो न कह्यो परबैन घनेरे ॥ कौन कुमारि कहै द्विजराज सों ब्याहकी बात निलाजके घेरे ॥ ४९ ॥ **मालाधर** ॥ वचन सुनिकै तहीं कनक हंस मोह्योमहा ॥ सरस नहिं दाखयो पिक नवीन वाणी कहा ॥ बदनलचिलाजसों नृप कुमारि जानी जहीं ॥ मुदित मन ह्वै तहीं चतुर चारु वाणी कही ॥ ५० ॥ **हंस** ॥ **सोरठा** ॥ अति दुर्लभ जगजानि, धरयो मनोरथ तैं जो मन ॥ परत नमोश्रुति आनि, श्रुति अक्षर अंतिमवरण॥५१॥ जहँ चित पहुँचत आनि, होत लाभ ताको सुचित ॥ जहँ न चित्त पहिचान, वहौ ब्रह्मयोगी लहत ॥ ५२ ॥ **सवैया** ॥ सुंदर सोन स-

रोजमुखी तिरजंच सों लाजै सजै विनकाजै ॥ ब्रह्मपुरी महँ वास करै शुचि सत्य विलासिनिके रस्र राजै ॥ प्रेम महा परकै उपकारमें नेमवहै छलकै बल भाजै ॥ जो चरचा चित माहँ धरै किन प्राणटरै मुखसों नहिं साजै ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ मृगलोचनि तजि सोच चित, औ सकोचु कछु नाहिँ ॥ कहहु मनोरथ करि कृपा, त्रास त्यागि मन माहिँ ॥ ५४ ॥ सोरठा ॥ यह कहि हेम मराल, मौन-गह्यो गुण भौन तब ॥ बोली बैन विसाल, हरष लाज लीला ललित ॥ ५५ ॥ दमयंती ॥ दोहा ॥ सखि जे मनसों मिलि रहीं, लखि न रहै मोजीय॥ सो तोसों कैसे कहौं, और न चाहौं हीय ॥ ५६ ॥ सवैया ॥ कुल शील सुशैलते छूटि चली उत लाज नदी उमडी अति भारी ॥ जहँ मज्जतु नाग अनंग बली लहरी जहँ सोच सँकोच सँवारी॥ बूडि गये नखते शिखतामें रही चपिकै चुपि भूपकुमारी ॥ हाट-कहंस हरै हँसिकै निज चोंचसों चोज कथा विस्तारी ॥ ५७ ॥ हंस ॥ सवैया ॥ हौ चतुरे चितकी कविता असलेष विशेषनकी रचनामै ॥ जानि गयो हौं मनोरथ रावरो उत्तरकी गति व्यंग्य दशामै ॥ राजसों व्याहकी बात भली नलहैं जियमें यह भेद बतामै ॥ तो हियकी थि-रता निहचै बिन क्यों तिनसों हम जाइ जतामै ॥ ५८ ॥ यौवनकी यह वानि वनी छिनही छिन ज्यों बदलै बहुधाई ॥ चाहत हैं तुमको सुर पन्नग राजकुमार चितै चतुराई ॥ औरसों व्याह करै तुअतातु जो कै चलिकै तुमही ललचाई ॥ ठीक करे विन क्यों कहि ये सरदारसों बूझि गवाँरकी नाई ॥ ५९ ॥ दोहा ॥ और न या संसारमें, लाज हँसीके योग ॥ ठीक करत निज बदनसों, फेरि टरत जे लोग ॥ ६० ॥ जो जाकोकीवे कहत, काज न कीजै सोइ ॥ जीतबभरि ताके कहौ, कौनु सामुहे होइ ॥ ६१ ॥ तैं अधीन निज बापके, आप तरुण वै बाल॥ महाराज नलराजके, हमहैं मीत मराल ॥ ६२ ॥ सब-विधि है असमंजसै, हिय संशय नहिं जाइ ॥ और काज जो कछु सुमुखि मोहिँ देहि फरमाइ ॥ ६३ ॥ शिर कँपाइ कुँहकी कपी, कोमल राजकुमारि ॥ मनौ परे श्रुति कटु वचन, तिन्हैं निकारत झारि॥ ६४ ॥

दमयंती ॥ हरिप्रियाछंद ॥ वीर हेम हंसराज धीरबुद्धिके समाज मोहिँ और राजयोग कल्पना जुतेरो ॥ याहि जानि वेद थाँभ रविसों निशि संग आनि संशय पहिचानि ताहि प्रणव पाठ पेरौ॥ ज्यौँ सरोजिनी विहाइ रविको शशिसों मिलाइ गिरिजा तजि गिरीश जाइ तौ यहै बनि-आवै ॥ मेरे जिय है अँदेश तोसों चातुर सुदेश ऐसो बलि विरस वैन कैसे कहि आवै ॥ ६५ ॥ सवैया ॥ साँच विचार करी तुमहूँ खग झूँठ न तेरो कहो करिहौंगी॥ जो न मिलैं नल मोहिं अबै तजिदेह तबै अनलै बहिहौंगी॥ गातको पालकहै इकतात जो औंर सों व्याहै न तौ डरि हौंगी आनको पीतमहै वह राज हिये धरि जीतब क्यौँ करिहौंगी ॥ ६६ ॥ सोरठा ॥ यहै मनोरथ सार, दासी हौं नलराजकी ॥ चित चिंतामणि छार, वहै सकल निधि पदुम मुख ॥ ६७ ॥ सवैया॥ भूपको रूप अ-नूप मनोहर श्रौन सुधारस पान करचो॥ चित्रमैं बारहजारलख्यो अब तौ रहतै चहुँ ओर खरचो ॥ तब हौंहूँ भई तनमै धनमै छनमै मनमै अर-राइ परचो॥ अब ताको सँयोग औ प्राण वियोग तिहारि दुहूँकर माहँ धरचो ॥ ६८ ॥ दीपक ॥ हैं दीनमो प्रान॥ देमोहिं जीदान॥ सो छोड़ि जं-जाल ॥ संदेशकी चाल ६९ जो काज आवश्य ॥ तामें न आलस्य॥ हेहंसभू-पाल ॥ आधीन हौं बाल ॥७०॥ ककुभ ॥ जानति हौं यहि भूमि लोक बसिं मोह बुद्धिं सरसाईहै ॥ पर उपकार रीति तौ जानी जहँ ऐसी चतु-राईहै ॥ प्राणदान दीबेको पनमें कहा सूमह्वै बैठ्यो है ॥ वचन अधीन एक तेरेहौं कौन दोष ह्वै पैठ्यो है ॥ ७१॥ सोरठा॥ देत आपने जीव-सब सज्जन आरतन हित॥ कहाहोत गुण सीव, मोज्यो मोको देत तुम॥ ७२ ॥ सारंग ॥ जो जीवके दानको देत संसार ॥ तौ आपनो जीव देहौं तु उद्धार॥ तू देतुहै मोहिको जीवते बाढ़ि॥हौं देउँका तोहिं दारिद्रसों डाढ़ि ॥ ७३ ॥ सवैया॥ मोललै जीव तैं मेरो मराल जु और न लाभ तौ पुण्यमहा है॥पीतम प्राणको दानि तुहीं यश गान करौंगी सुजान सरा है ॥ एकहू कौड़ीके मोल सुने नहिं अज्ञ कृतज्ञनको चित चाहै । प्राण दै मोल खरीदत साधु तिन्है सहते तबहूं निरबाहै ॥७४॥ कटुक ॥ वहे भूपहै आठ लोकेशको अंश ॥ धरचो बुद्धिसों ध्यान मैं चित्तमें हंस ॥

करीयों कृपातें मिल्यो मोहिं आचान॥ भयो आनि मध्यस्थ मो ज्यों समाधान ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ करौ न और विचार, बासर नाहिं बिलंब को ॥ कहा समय निरधार, जे आरत आसकत हित॥ ७६ ॥ मनहरण॥ निज रमणीनसों करतुहै बिलास जब तब ये वचन खग भूलहूं न भाषने॥ जलसों अघात ताहि अमृत सोहात नाहिं दूजे कोई कलह करन लागै ताखने ॥जब काहूं दोष रोष करै नलराज तबहूं ये रसराज बैन चित्त रोकि राखने॥ मोहित गरज ऐसें भूपसे अरज बड़ी बरजत याते हंसमौसमकुराखने ॥७७॥ प्रमिताक्षरा॥ बहुविज्ञ आपु तिहिलोक गैन॥ शुभकाल पाइ करिये सुवैन ॥ कहुंहै बिलम्बकारि सिद्धि जहां ॥ बरहै असिद्धिसन जानि तहां ॥ ७८ ॥ दोहा ॥ कहे वचन ये लाज तजि, नाहिं अचरज जिय जानि ॥ काम साखि उन्मत्त करि, जो कहवावत आनि ॥ ७९ ॥ सोरठा ॥ लहत जबै उन्मत्त, गहत चैन तब ढर समर ॥ प्रथम पुहुप अनुरुत्त ॥ विरह विथा युत दूसरो॥८०॥ सुनि ये बैन विसाल, दमयंती के प्रेम दृढ ॥ फांसी नल गुण जाल, तब बोल्यो सुर हंस हँसि ॥८१॥ हंसमोदक ॥ जो यह सांचिय बात बखानति ॥ तौ वह संदेश व्रथा उर आनति ॥ जो तुमको नलको तनु तापतु ॥ काम यहै सुसंयोगु बतावतु ॥ ८२ ॥ तो संग बांधिदई गति ओमति ॥ भोजन भूषणकी नरही रति ॥ ध्यावत तोहिं कहै उपहासनि ॥ ओठ सुधारस आस हुलासनि ॥ ८३ ॥ दोधक ॥ सुंदरतासम मूरति मेरी ॥ जारि सुछार करी हरटेरी ॥ क्यों नल मूरति यों सुख पावै ॥ तो सह पाइ अनंग सतावै ॥ ८४॥ दोधक ॥ तेरिये मूरति एक लिखावै ॥ सो कुचि तेरेनको सिखरावै ॥ देखत आंसुनकी झरिलावै ॥ सो छवि देखतही बनिआवै ॥ ८५ ॥ सवैया ॥ तेरे वियोग भयो कछु ऐसो उदासी नलै न परै नाहिं चीनो ॥ तेरोइ चित्र लिये निशि वासर बैठो रहै रंग भौन प्रवीनो ॥ चानक भूमि झुक्यो तकिया लगि घूमि गिरचोत्यों खवासिसि लीनो॥पाटि लयो घनसारनित्यों यकवारही नाइ गुलाबनिदीनो ॥८६ ॥ दोहा ॥ लसत कमल दृग अधखुले, अचल अंग टकलाइ ॥ तेरी चिंतासों रह्यो चिंताहरण भुलाइ ॥ ८७ ॥ सवैया ॥ राहै विचारनकी चालि दौरत

साजि मनोरथ तैं सरसाइकै ॥ श्वासनिको वरषै बहु भूपति ध्यानसों तेरो स्वरूप मिलाइकै ॥ जागतही सब वीतत रैनि रचै किन सुंदर सेज बनाइकै ॥ तेरे वियोगते नयनन लागत नवल बहू जिमिनींद न आकि कै ॥ ८८ ॥ **दोहा** ॥ ज्यों ज्यों अति कृशता बढति, त्यों त्यों द्युति सरसात ॥ दृग दगात त्योंहीं कनक, ज्योंहीं दाहत जात ॥ ८९ ॥ **मनहरण** ॥ तेरे पाइबेकी सोय यतन करतु तामें पाप न गनत कछू ऐसो आसक्त है ॥ व्याह चरचामें तेरो नाम कहि कहि उठत ऐसो महाराज कहूँ ऐसो मसकतु है ॥ मयनके लगत पैने बान सुलगत विरहागिनि जगत जरी लाज ससकतु है ॥ भौन भौन याहीके करत अफसोस सब कौन कौन देखत करेजो कसकतु है ९० ॥ **सवैया** ॥ बोलत जानि कहै कछु उत्तर डोलत मोहिं लखै तित धावै ॥ आवत जानिकै आगे चलै उठि गावत तोहि गनै मिलि गावै ॥ रूसती हौ विनकाज कहा बलि या कहि वारहि वार मनावै ॥ वीरसों तोहिं न पीर अरी सुनि तीरखरी हँसिकै वहरावै ॥९१॥ ॥**सोरठा**॥ तेरो विरह अपार, जनु यम अनुजाकी लहरि ॥ पंक मूरछा सार, हायपरचो कुंजर नृपति॥ ९२ ॥ **दोहा** ॥ दुहुँकर छोड्यों पंचशर, भई दशा दश ताश ॥ सदा जाइ दशईं दशा, वैरी सदन निवास ॥ ९३ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ जब भयो काम तापित महीप ॥ तब मोहिं पठायो तो समीप ॥ किय सफल काज गजगौनि तैंजु ॥ मुख उदित भयो नल संग मैंजु ॥९४॥ धनि धन्य देवि गुरतन रवानि ॥ जेहि करचो भूप नल वश सुजानि ॥ यह बडो बडाई चन्द्रिकाहि ॥ अति तरल होत लखि सिंधु जाहि ॥ ९५ ॥ **सवैया** ॥ नलसों विलसों मिलि चन्द्र ज्यों यामिनि त्यों तुमसों मिलि सो सुखपै है ॥ बलिये रचना कुच कंचुकीपै सब वेलिनईकर कौल वनै है ॥ निज लोचन चारु चकोरनिसों जब वा मुख चन्द्र सुधाहि अचै है ॥ तब और सबै सुधि भूलि हैगी परि नेसुक मे रोकह्यो सुधिपै है . ॥ ९६ ॥ अ० ॥ नलके तपको तुम कामलता नव अंकुर सों नखराजतु हैं ॥ द्वैदलनीलनई भ्रुकुटी नव पल्लव ओंठ समाजत हैं ॥ हाँसलसै कलिका मुख भूषण फूलनकी छबि छाजत हैं ॥

सोहि रहे कुच कंचनके फल पेखसीके फल लाजत हैं ॥ ९७ ॥ **दोहा** ॥ स्वेद सलिल मधुसोंसने, नल कर कमलनि भेटि॥ तो कुच रचना जितरची, ले हैं वये समेटि ॥ ९८ ॥ **चौपाई** ॥ नलको मन तेरे मन माही ॥ हिलिमिलिके सेवत बहुधाही ॥ मनौ मदन तन फिरि विधि साजै ॥ द्वैपरमान जोरिकै राजै ॥ ९९ ॥ **सवैया** ॥ फूलनके धनु सौं नलको जब जीति सक्यो नहिं मयनमवासी ॥ चापलता तुमको नवकै शुभवंश भये गुणराशि विलासी ॥ फूल हराके झवा झुकि झूमति पीठि सुरंगित रेख प्रकासी ॥ ईंगुर रंग रँगी विलसै कढ़ि मूँठि दिये तनुतोल क्षमासी ॥ १०० ॥ **मनहरण** ॥ तेरी कंठशिरीके नवल मुकुता फलैं तिनके गिलोला काम करतु बनाइकै ॥ तेरी तनु सुलगि लतासी लहलही मंजु लसतु धनुष बेलि वाके करलाइकै ॥ रोम रेख बलित पनचहै ललित नाभि सोहत गिलोला थल गहिरे सुभाइकै ॥ नलराज हंसको अहेरो करि करि रोज हनति मनोज निज ओज सरसाइकै ॥१०१॥ रूपके समर नल राजसों समर जब सरवरि करिकै सक्यो न समुहाइकै ॥ तेरे चिकुरनिके शरनिकरे वान धरचो भालमें धनुषटूकद्वै करि बनाइकै॥ हरके नयन कुंड अनल बरततामें आपनो शरीर धीर होम्यो हरषाइकै ॥ सुवरण शैल कुच रावरे मकर पत्र ताही की परणशाला रही ठहराइकै ॥ १०२ ॥ **पद्मावती**॥ बातन रस भीनो हंस प्रवीनो सरस भेद निज भाषि कहै ॥ त्योंहीं सब आली अतिचल चाली आइ गई पग खोजगहे ॥ **हंस** ॥ मैं वार लगाई देह विदाई निषधराज ढिग जान चहौं ॥ सबसुखानि विलासौ प्रेमप्रकाशौ राजकुँआरि तो चरण गहौं ॥ १०३ ॥ **सवैया** ॥ मोहन मयनके बाननके मधुसों मिलये अतिही सरसाइकै ॥ माखनसे कहे वैन मराल वे काननि बाल पिये न अघाइकै ॥ स्वादही स्वाद विषाद बढ्यो बहु वाद पऱ्यो पियकी रुचि पाइकै ॥ तापर रंग चढ़ी तनमाहँ रही मनमें छन मूरछा छाइकै ॥ १०४ ॥ **सोरठा** ॥ गयो गगन मग खूंदि, छिनमो हाटक हंस तब ॥ ऊरध मुख दृग मूंदि, रही सबै छबिकी चमक॥१०५॥ **मोदक** ॥ पांखनि अग्र उठावति आवति ॥ कारजकी जनु सिद्धि बतावति ॥ यों नल पास बतावनको खगु ॥ नैषधदेश चल्यो गहिकै

मगु ॥१०६॥ ॥ **सोरठा** ॥ घोरि सखी सब साथ, दमयंतीको लै चलीं॥ गहे हाथसों हाथ, दुर्गमलखि झखती खिझी ॥१०७॥ **अन्यच्च** ॥ लख्यो हंस नृप आनि, वही बगीचा बीच गृह॥ नेकु न परत पिछानि, नव कि-सलय दल तलपपर ॥ १०८ ॥ **मालिनी** ॥ जलजनयानि मोंको देहि संभोग नीको ॥ तुम विन सब लागै राजके साज फीको ॥ बकतु विरह मातो आउरे हंस भाई ॥ तबहीं प्रणति करिके हंसवाणी सुनाई ॥१०९॥ नृप उठि उर लायो चूमिकै चोंच पोछ्यो । निज कमर दुपट्टा छोर लैके अंगोछ्या ॥ बचन सब प्रियेके बार बारै कहाये ॥ सुनि सुनि अपनेहूं कंठसों राज गाये ॥ ११० ॥ **सोरठा** ॥ गईं सखी लै गेह, दमयंतीको विकल ह्वै ॥ परवश करी विदेह, नेह सिंधु बूड़ी बड़ी ॥ १११ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यकालानिधौ हंस समागमो नाम चतुर्थस्सर्गः ॥ ४ ॥

दोहा ॥ सर्ग पाँचयेमें विरह, दमयंती संताप॥ राजनको बोलै पिता-ब्याह उछाह प्रताप ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ विलखि सखी मुरझाहि, दमयं-तीको विरह लखि ॥ तनु सँभार कछु नाहिं, कहहिं परस्पर दुखवचन ॥२ ॥ नलको गुण गण आनि, सुयश कुसुम धनु रूप शर॥ श्रुतिसँयोग सों तानि, मारेउ याहि अनंग हठि ॥ ३ ॥ **द्रुत विलंबित** ॥ अतनु तापतई ततमें रहै ॥ प्रिये कथा रस मज्जनको चहै ॥ अहहदाह परै तेहिरंगमें ॥ विषम आनि चढ़ै सब अंगमें ॥ ४ ॥ मुख न शुद्धि करै कहुँ हाँसकी ॥ चितरही नहिं हाँस हुलासकी ॥ करत दारुण दुःख अनंगुहै ॥ नयन खंजनकी गति पंगु है ॥ ५ ॥ **तोमर** ॥ छिनही छिन काम सँतापतयो ॥ मुख पंकज सों कुम्हिलाइ गयो ॥ नहिं देखत हू पहिंचानि परै ॥ दिनके शशिकी समता निदरै ॥६॥ **अहीर** ॥ तरनि तरुन बयकीन॥ घट उरोज दृढ़पीन ॥ अनल संग करि हाल ॥ तपवत कामकुलाल ॥ ७ ॥ **दोधक** ॥ उरूदुऔ बिरहानल दूखी ॥

ऊषरकी कदली जनु सूखी ॥ हाथनकी उपमा परकाशे ॥ ओज तुषार सरोजपतासे ॥ ८ ॥ तोटक ॥ जब कामं सँताप भरचो उरमाहीं ॥ नाहिं होत जु टूक हियो बहुधाहीं ॥ जनु गाढ़ उरोजनि दाबिदयो है ॥ मुखलागि रह्यो अपराध नयो है ॥ ९ ॥ सोरठा ॥ गड़त पाँइ जब आइ, बड़ी विथा सीकुरकरत॥ क्यों न पीर सरसाइ, याके हिय भूपाति चुभ्यो ॥ १० गीतिका ॥ तनु माँह पीतमके विलोकन काजको अकुलाइकै ॥ जनु जातहैं उलटे विलोचन चित्त अंतर पाइकै ॥ समुहे खरी सखिया रहैं निशि दिवस यों सरसाइकै॥ नहिंनेक जानि पिछानि मानत यों रहैं लटकाइकै ॥ ११ ॥ करकमल राखि कपोल सुन्दर सोचुसों आननयो दृगनीर पूर परचो तहाँ प्रतिबिम्बसों छतिया छयो॥ हियमा हँराजत राजहै प्रियप्राण इहि आनँद भयो ॥ निकस्यो मनौ तेहि भोंटिकै हुलस्यो मनौ चुम्बन कियो ॥ १२ ॥ तारक ॥ विरहानलसों मंन मान मिताई ॥ नित पवन बढावत आनि सहाई ॥ हियजात न रूप कछू दिखरावै ॥ जब आवत संसनि वेगिबढ़ावै ॥ १३ ॥ चन्द्रमाला ॥ ज्यों ज्यों विरह व्यथा तनु कोमल बाढ़त ताप समाजै ॥ छिनहीछिन रँग पीत श्याम सित हरित लाल छबिछाजै ॥ चहूँ ओर किरणें सरसाती दीपातिपुंज उजेरे॥मनौ लिखी चहुँदिशि में है पियमूरति चित्र चितेरे॥१४॥ दोहा कुच अञ्चल काँपत रहत, मयन दशा उरदेखि ॥ कौन दुखी जग होत है निजआश्रय दुखपेखि ॥ १५ ॥ शोभन ॥॥ आनन लोचन कर पग मोचन सजे कमलमें सरस बने॥ ताप बढ़ाभें ज्यों अकुलाभें रविसंयोगसों धामसने ॥ बाणनिमारै हियो बिदारै निरदै मन्मथ बैरपरचो ॥ अंगनि डाढ़ै त्यों त्यों वाढ़े यहि अनीतिसों फूलि फरचो ॥१६ ॥ भुजंगप्रयात ॥ बिसानाथ पून्यो लखे भानुजानै ॥ करै दीह संताप सों अंग मानै । नहीं टूकद्वै होतुहैं क्यों कछूतै ॥ वियोगीनको ज्यों खरोवज्र हूतै ॥१७॥ विमलासखी ॥ सोरठा ॥ अहो अहो रतिनाथ, तीनि भुवन तुमसों तपै॥ अति अद्भुत गुणगाथ, जिन छिनमें ऐसी करी॥१८॥ सवैया॥ हाइ दई न विछोहकरै छिन जीवत क्यों न रहै हरषान्यो॥ कौनसहै सखिया-की दशा यह आवतहै लखि जीवकुलान्यो । चन्दनसों छतियाँलागि बोरि

उरोजनि मांदि सरोजनि आन्यो ॥ लागि रही विरहागि चहूँ दिशि सेजपै सोवति है रति मान्यो ॥ १९ ॥ विरहागिनिकी महिमा अजहूँ लगि जानति है न हियो अनुरागी ॥ निज आननिको तिन तूल तहाँ करि ताहि बुझावनके रसपागी ॥ जहँ फूलकी साँट नहीं है लगी चित कोमल राजकुमारि सभागी ॥ तहँ कामके शूल सहै समुहे उर गाढ उरोज सरोजनि आगी ॥ २० ॥ मूँदि दरीचिनदै परदा सिदरीन झरोखन रोंकि छपायो ॥ नेकु परै न कहूँ लसिकै शशिकी किरणै परवेशुन पायो ॥ भौनके भीतर आवनको विषहारनिके मिस रूप बनायो ॥ लावत ही तनमें जुरझार विकार हजार गुणी सरसायो ॥ २१ ॥ तोटक निशि द्योसरहैं यह ग्रीवनये ॥ अरि तुंग उरोजनि अश्रु छये ॥ प्रतिबिंबित लोचनि ओट भये ॥ जनु काम सुरंगित बान हये ॥ २२ ॥ अन्यच्च॥ अँसुआ दृग उज्ज्वल जात ढरे॥ अति लाल कपोलनि आनि परे प्रतिबिंबित होततहाँ शशि है॥ अपनो सम जानि रहो वसि है ॥ २३ ॥ नाराच ॥ कपूर चूर छानिकै मलैजपंक सानिकै ॥ करचो सुअंग राग खेत शीत हेत मानिकै ॥ छुटे रहैं महाघने भुजंग केश साँवरे ॥ मनो मनोजसों डरे महेश स्वाँगको करैं ॥ २४ ॥ गल्यो सरोज हाथसों चल्यो उरोजपैधरै ॥ लहीं उसाँस सों जरचो सुछार ह्वै गिरो परै ॥ नरेश प्राणनाथके सु हाथलागि हैं जहीं ॥ प्रलेपुसे कुसोहिये सँतापु जाइ गो तहीं ॥ २५ ॥ मोदक ॥ हौं हियहू नाहि चाहति ॥ एक नलै मनराखि उमाहति ॥ सौंह करै विरहागिनि में तापि ॥ शुद्ध शरीर सचौटी करी कँपि ॥ २६ ॥ दोहा ॥ विरह ताप तनुमें लगत, कमल कली है त्रात ॥ मानौ भरि मूठिन विथा, गहि डारत सरसात॥२७॥ रूपमंजरीसखी॥ सोरठा ॥ अरी कहौ कित जाहिं, कहा करैं कैसरहैं॥ जिय आशा कछु नाहिं, देखतही याकी दशा॥ २८ ॥ लगि अनंग अहि बान, विष फैलो तनुमें बिवस ॥ देखत रहंत न प्रान, करुणासिंधु बूडतनको ॥ २९ ॥ सवैया ॥ पिक बोलत काँपत है हियरा तहँ लोल सिवार लता लपिटाई ॥ हिय कामके केत धऱ्यो तनु मानहु कै तेहि तापर धूम मचाई ॥ मुख साँचु शशीमणिसों वरणो यह भूपतिकी तनया

छबिछाई ॥ लखि होत उदोत सखी जबही तब नयननंसों जलधार बहाई ॥ ३० ॥ आजुलौं आशरही हुतीजो अबतौ कछु सांस चलै ढँग औरै ॥ नेकु परै न रह्यो घरमें यह देखि दशा भरमै मति बौरै ॥ ऐसी भई नित आन महा चलि हेरि हहा कछु मोहिय औरै ॥ ठाढ़ी करै परि चारिकतौ घरि चारिक लौं पियरो रँगुदौरै ॥ ३१ ॥ **मान मंजरी दोहा** ॥ ज्यौं रति पतिको बान, त्यों मोहन यह नृपसुता ॥ चाहत कऱ्यो निदान, यहू याहुकी पंचता ॥ ३२ ॥ **सोरठा** ॥ कीजै दौरि गोहारि, समर करन आयो समर ॥ लीजै याहि उबारि, याके जीवत जीवनो ॥ ३३ ॥ **सवैया** ॥ पावक बाण कऱ्यो शशिको पहिले करि ओज मनोज चलायो ॥ त्यों जलधारनिको अँशुआ इन अंबुद बाणनि बोरि बहायो ॥ वारुन बाण चल्यो नवनीरद ज्यों उतते इतको झुरि आयो ॥ दीरघ सांसनिसों इनहूं तजि तीर समीरनि मारि भगायो॥ ३४॥ **दोधक** ॥ दक्षिण पवन चली तरवारे ॥ टूकहि टूक हियो करि डारै ॥ ताकहँ सांप मृणाल धरे हैं ॥ पौननके जिन कौर करे हैं ॥ ३५ ॥ **चौपाई**॥ द्वैदुख दुस्सह दै विधि याको ॥ विरह एक औ जीतबताको॥ ऊपर दाबि दये कुच ठाढे ॥ वेनट सांस गडे उरगाढ़े ॥ ३६ ॥ **दोहा** ॥ दीन्हे तीर चलाइ सब, समर समर धरि धीर ॥ गहि मारे द्वैताल फल, तब छाती पर वीर ॥ ३७ ॥ **नेहमंजरी सखी**॥ **सोरठा** ॥ सुनि सुनि सखिकलाप, विकल सखी जन जे करहिं ॥ बरी विरह संताप, पल उठाइ चितई कुँअरि ॥३८॥ बार बार शशिहेरि, करन लगी ताको कुयश ॥ राहु बड़ाई देरि, बोली उभकौहें नयन॥ ३९ ॥ **दमयंती** ॥ **तोमर** ॥ सखि नेह मंजरि लेह ॥ शशिसों तपीसबदेह ॥ नहिं रैनि अंतु लखाइ । युग चारिसों छिनु जाइ ॥ ४० ॥ नरगीरबान विरंचि ॥ युग होतु है जिमि संचि ॥ रमियुक्तको छिनु जौनु ॥ युगहै वियुक्तानि तौनु ॥४१॥ हिमवान मो जनु लीन॥ गिरिजा तहाँ तप कीन ॥ उर कामको डरुमानि ॥ नहिं सैलकी शुचि जानि ॥ ४२ ॥ शिव भालपै नहिं आँखि ॥ जैहैं तहाँ सबु साखि ॥ विरहागि जागत जोर ॥ विछुरी प्रिया तेहि ठौर ॥ ४३ ॥ **नेहमंजरी**॥ **द्रुतविलंवि-**

त ॥ अग्निकी लपटैं इमिहैं नहीं ॥ विरहकी झार विषमें ज्यौं कहीं ॥ विरहसों युवती अतिही डरैं । मृतक लैहँसि पावकमें जरैं ॥ ४४ ॥ दमयंती ॥ सोरठा ॥ राखी हिय घरघेरि, कलाकलुष विरहिनित-पन ॥ दई निकारि नवेरि,जे जग उज्ज्वल पाप शशि ॥४५॥ लक्ष्मीधर ॥ दौरिकै चंद्र सों बूझि आली इहा ॥ दाहके दानकी शक्ति पाई कहा ॥ सिंधुमें कालकूट मिली है जहीं ॥ बाड़वाअग्निसोंकै शिखी तैयही ॥४६ ॥ दोहा ॥ दै मारचो विधि चंद्र को,श्याम शिलान मझोर ॥ फैलि रही किरणैमनौ, तारागण चहुँ ओर ॥४७॥ दमयंती ॥ दोहा ॥ अरी जरी सब अंगमें, घरी वरष ज्यों जाइ ॥ चहूँ ओर दौरी फिरैं, जोन्ह पिशाची धाइ ॥ ४८ ॥ शृंगार वेलि सखी ॥ सवैया॥ चंदन चारु चवारेन माँह तुषार मिलै घनसार निसानो ॥ मेह महा बड़िसे वर्षै चहुँ ओरनि नीर गुलाब निसानो ॥ कैगच गीरिनके नियरे सियरे नव कमल पतान वितानो ॥ लैचलि राखहु याहि इहाँ राचि माहकीरै निनयोनसखानो ॥ ४९ ॥ लक्ष्मीधर ॥ जाइकै बासको साज साज्यो जहाँ ॥ याहिलै हाथही हाथराख्यो तहाँ ॥ मैनके बानको ल्यो निसान्यो भयो ॥ सूरज्यों धाइ पैधाइ सामूलयो ॥ ५० ॥ दमयंती ॥ सोरठा दौरि सखी समुझाइ, चंदहि मेरी ओरते॥येरे कूर सुभाइ, कहा करत ऐसे करम॥५१॥सवैया॥ सागरमें गिरि मंदर सों दाबिक्यों न कलंकित चूर भयो ॥ कुंभज क्यों न तुरंतहि तै जलघोरि गेंदौरासों लीलिलयो ॥ मन मेरेको चाहति है अपनायो मैं प्राणपयान विचारि ठयो ॥ नलके मुख चन्दहि जाइ मिलौं यह पंडित काम बताइ दयो ॥ ५२ ॥तारक॥ जगमें यशको बजवाइ नगारो ॥ करि सागरके कुलको उजियारो ॥ बध पौरुष लेगहि प्राण हमारो ॥ शशिलक्षणदै अबकै निरवारो ॥५३ ॥ यौबन बोलि सखी ॥ सुलक्षण ॥ जब चंड अंसु अथोत हैं ॥ तब आनि ये रबि होत हैं ॥ अतिताप अंगनि करत हैं ॥ दिन होत रविछवि हरत हैं ॥ ५४ ॥ दमयंती ॥ दोहा ॥ करान भरत तमाल दल शशिकुरंग मुख देह॥ ताहि चरण लागत थकै, तनक सम्हारो नेह॥५५॥ यौबनबेलिसखी ॥ सोरठा ॥ समय चूकि माति होइ, आइहाथ

कोगहसखे ॥ गहिराखौ अब सोइ, शशिको मुख नहिं देखिये ॥ ५६ ॥ दमयंती तोमर ॥ कर एकमें धनु लेह ॥ इक आइ आरसि मेह प्रतिबिंबमें विधु देखि ॥ गहि मारु ताहि विशेषि ॥५७ ॥ मधुमालती सखी ॥ द्रुतविलंबित ॥ करत पूरणचंद्र बड़े परतापको ॥ शुभ गभाषत ज्योतिष पापको ॥ उहतु नाहिन छीन सुधा करौ ॥ गनत पाप कुबुद्धि न आदरौ ॥ ५८ ॥ दमयंती सोरठा ॥ लियो राहु जब लीलि छोरचो निज रुचिसों न यहु ॥ पहियासों ढुरि ढीलि गिरचो गरेके छिद्र ह्वै ॥ ५९ ॥ रूपमालती सखी ॥ झूलना ॥ चक्र कर आयुधरि राहुशिरकाटि हरि पायु यह आनि विरहीनदीन्हो ॥ जउर विनसतासुके पंचतनहि जासुके त-वहीं यह आनि इत दै उदै लीन्हो ॥ ६० ॥ दमयंती ॥ गगनंग ॥ सहचरि बूझौ जरासो विनति वचन मम सुनिये ॥ जैसे जरा-सिंध तनु तमसिर सिखि युत गुनिये ॥ ६१ ॥ दमयंती ॥ सोरठा ॥ कहि तमसों शशि टेरि, ब्राह्मण गणि वैरिहि तजतु ॥ पतितु शशिहि निरवेरि, नितप्रति सेवत वारुणी ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ द्विजपति ग्रसि कोढ़ी भयो, श्वेत राहु यहु ऐनि ॥ विरहिनि मुख शशि ग्रसनको, भ्रमतु न शशि भ्रम मैनि ॥ ६३ ॥ काममालती सखी ॥ सोरठा ॥ उवतु इंदु अति दूरि, उपालंभ ताको कहा ॥ निकट काम हिय भूरि, ताहीको कहिवो उचित ॥ ६४ ॥ दमयंती ॥ नाराच ॥ भले मनोज कौन चालि रावरी कही बनै ॥ रहौ हिये जहाँ तहाँ सुदाह देत हौ घने ॥ सुजात वेद ज्यों सुआनि आसरो करै जहाँ ॥ रजाइ देत ताहि नाशु आपहूं गहे तहाँ ॥ ६५ ॥ तोटक ॥ रतिके सह-चारि सदा तुमहौ ॥ परि मोतन मै रति क्यों न लहौ ॥ विरही तनको अति तापितहौ ॥ तियहूँ यह जानि सराहित हौ ॥ ६६ ॥ झूलना ॥ हर नयनसों छुटि ज्वालसों जुटि जरत जब तन देखि ॥ तब दौरिकै विरहीनके हिय पैठि जात विशेषि ॥ मिलि ताहि दाहत हौ तहाँ तुम ये मनोज कठोर ॥ पल एकहूँ न परै कहूँ कल पीर जागत जोर ॥ ६७ ॥ चित्रतीसखी ॥ सरसी ॥ फूलनिके करि बानि लरे

तुम शिवसों सो फलु लीन ॥ फूलहूंको समर मने है नीति प्रकाशित कीन ॥ पियो पियूष सकल देवनमें अमर भये क्यों नाहिं ॥ रतिके अधर स्वादुरसमात्यो पियो नतें चित चाहि ॥ ६८ ॥ दोहा ॥ देत न मीचु अनंग शठ, गिरत धनुष नहिं पानि ॥ मृतक मूँठि ज्यों द्रढ गही, मूँठि रह्यो गुण तानि ॥ ६९ ॥ दमयंती ॥ सरसी ॥ ज्योति हेतु दृगमीचु बचै तनु रूप प्रकाशित होइ ॥ काहू सुर सेवाके कीन्हे तुरत यहै फल सोइ ॥ धनि धनिदेव तिहारी सेवा फूटिजात चषचारु ॥ अतिविरूप द्युति देहमें अरु चलत मीच परिवारु ॥७०॥ चित्रकलासखी॥ तोमर॥ विधि जानि तोहिं नृसस ॥ किय फूल आयुध अंस ॥ दृढ़चापसों शरहोत ॥ तब तीनि लोक निसोत ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ हर ज्यों हारे तीन पुर, तीनौं लोक मनोज ॥ जानिपरै विधि जानिशर, मधुसों सींचतु रोज ॥७२॥ सवैया ॥ रावरे बाणनके विषमेषु विरंचि रच्यो छजि कै सुनिसान्यो ॥ ज्यों विरही जनको परमानु दयो अति चंचलता सरसान्यो ॥ ताकहि टूक हजार कऱ्यो छिन एकहि में करि क्रोधरिसान्यो॥केसरिसी मृदुमेरी सखीरी भई छतिया छतिया उपमान्यो ॥ ७३ ॥ मधुनार ॥ विधि पुहुप आन ॥ दिये पंचबान ॥ तेहि जरत जोइ ॥ सब जगतरोइ ॥ ७७ ॥ दमयंती ॥ सोरठा ॥ तेरे देखि सुभाइ, छीनि लयो धनु दै विधिहि ॥ कुटिल भ्रुकुटि नल पाइ, फेरि धनुर्द्धर तैंभयो ॥७५॥ द्रुतविलंबित ॥ छ ऋतुसों तुम माँगतु जाइकै ॥ पुहुपलै यकु यकु बनाइकै ॥ करतु बान तिन्हैं तुम पंचसों ॥ धनुष एकु कऱ्यो परपंचसों ॥ ७६ ॥ अतनुहौ जो तुम हरके किये ॥ परम आनंदसोँ सबके हिये ॥ सतनुह्वै जो धनु धरते कहूँ ॥ शरनितौ को सकतो कहूं ॥ ७७ ॥ गिरीश पै रिसकै शर जो तजौ ॥ तुम समेत सुभस्मदशाभजौ ॥ करतु मोहनमंत्र विधानु है ॥ अपिक स्वर पंचमबानु है ॥ ७८ ॥ विमुख होत शशी लखिकै उयो ॥ विरहिनी जन जे हियरातुयो ॥ लगतु दक्षिण मारुत वाम है ॥ पनच ऐंचति जो भुजकामु है ॥ ७९ ॥ मदन अंध वियोगिनि मीचु है ॥ वज्रसोँहियो निरदै नीचु है ॥ तुमै एकै जीति शिवै लयो ॥ मदन अंधक मृतु

जैमी भयो ॥ ८० ॥ **मोहनमाला सखी ॥ सवैया ॥** एकतौ अति कोमल हुती बिरहागिनिसौँ अतिछीन भई हौं ॥ पुनि बारहि बारके बाद किये अधरामृदु सूखि गये कुँभिलाइ गई हौ ॥ चौर करौ उत बीजनटो रोरी घोरौ तुषार कहा सुठईहौ ॥ बोलौ न आपु कहौ कर जोरिकै देखति हौ कछु मैनमई हौ ॥ ८१ ॥ पाँइ परौं बलिजाउ हहा तुम ऊपरलै इन प्राणन वारौ ॥ क्यों न कठोर फटै छतिया यह तेरी दशा निज नयन निहारौ ॥ ज्यों अकुलाइ उठै अतियों उठिकै नभ नैषधदेश सिधारौं ॥ सौ छलके बलसों नलको गहि चांदनी सों तुअपायन पारौं ॥ ८२ ॥ बैठी कहा चहुँ ओर सबै उठि मंजुल कंजनसेज विछावौ ॥ चन्दनसों लिपिरावटी दै परदा चहुँ ओरन चंद दुरावौ ॥ बीजनकी इतडोरीगहौ उत बोरि गुलाब सिसी ढरकावौ ॥ फूलन काज पठै उनको तुम बैठि इतै तरवा सहरावौ ॥ ८३ ॥ एक अली नल वेष करी रंग केसरिसों सब अंगन बोरी ॥ एक दमयंती स्वरूप बनी चुनि रंगित चीर सजी चहुँ ओरी ॥ लै पिचकारी चले इतते उतते लै गुलाब मुठी वह दौरी ॥ हेरि हहा सखि तो मनभावतो भावतीके संग खेलत होरी ॥ ८४ ॥ **सवैया ॥** छिनही छिन सेज हजार सजै छिनही छिन सेज करै चरचाको ॥ छिनही छिन बीजन वै हरिकै छिनही छिन स्वांगनकी चरताको ॥ छिनही सखियां सिगरी सिगरी गहि पायन लौटि पलौटतीवाको ॥ उपचारनको न सरै कछु काजु कहूँ न परै कल नेकहूँ वाको ॥८५॥ ढूँढ़त सेजपै जानि परै पहिंचानि परै नहिं आंखिन आगे ॥ दौरि उपाउ करें सखियाँ सब भाइ खरी निशि वासर जागे ॥ पानी उतारि उतारि पियैं उर धाइ बलाइ लै लै यह मागे ॥ जीवनमूरि तू मेरी जिये यह तेरीदशा लखि मोहिय लागे ॥८६॥ **अनंगमाला सखी॥दोहा॥** राजकुँआरि सुनि हित वचन, यतनन जीवो राखि ॥ **दमयंती॥** जीतवु मेरो शत्रुहै ताकी कुशल न भाखि ॥ ८७ ॥ **कंचन लता सखी ॥ दोहा ॥** अमृत किरणि सखि है उयो, यासों कहा डिराइ ॥ **दमयंती ॥** होइ कहूं जो मृत किरण, तौ न ताप नियराइ ॥ ८८ ॥ **रंग विरंगिनी सखी ॥ दोहा ॥** विधि विरोध तिथिको रटै, पिकसों दिक

वानि लेह ॥ **दमयंती** ॥ कहा अर्थ टूटे यहै, बोलि जरावत देह ॥ ८९ ॥ **रंगिनी सखी** ॥ **दोहा** ॥ तेरो मन भावन अहै, है तेरे उर माँह। **दमयंती** ॥ यहै बड़ो सन्ताप नहिं, मिलति गरे गहि बाँह ॥ ९० ॥ **सोरठा** ॥ लागे देह उसास, मन मन्मथ पावक बन्यो ॥ बड़ी मूरछा तास, कहत कहत आधे वचन ॥ ९१ ॥ **सवैया** ॥ आनन श्वेत हरो पियरो रँग नयनन रूप रहै विलखानी ॥ अंगन तोरि मरोरि मरी अलकैं खुलि फैलि रहीं सरसानी ॥ ज्यों तकिया ते झुकी उतको इत हाथही हाथ लये ठकुरानी ॥ सेजपै पारि कुमारि सबै तब टेरि उठी अति आरत वानी ॥ ९२ ॥ **पद्धटिका** ॥ कोउ दौरि सलिल मुख सींचिदेइ ॥ कोऊ सरोज दल झाँकि देइ ॥ कोउ गहे विजन कर करत पौन ॥ कोउ सहरावत कर चरण तौन ॥ ९३ ॥ **अ०** ॥ बहु किये सरिस उपचार शीत ॥ सखियाँ विलाप अति करैं भीत ॥ कछु कर्म कर्म कै देव योग ॥ तनु भयो चेत निज भाग भोग ॥ ९४ ॥ **सखी** ॥ **सवैया** ॥ देखि कले कछु साँस चलै मुख नयन हने सु चले पहिचानौ ॥ काँपत ओठ तके तुम मेनके बोलति कोमलते सुनि कानौ॥ चारुमती तनु अंचर झाँपहि कोसिनिकेसनिको गहि आनौ ॥ पोंछि तरंगिनि नयननिसों जल धार बहै सरिता शरतानौ ॥ ९५ ॥ **सोरठा** ॥ कमल कली सरसात, आली जन आरत करत ॥ सुनत विकल भोगात, भीम भूप भीतर चल्यो ॥ ९६ ॥ **मनहरण** ॥ द्वारिका महल द्वार ड्योढीपै अचल रहें भूरि दोष दूरि द्रोष करतु बनाइकै ॥ एकुरहै नाजिर औ दूसरो सुअंगकरु भूपतिपै एकै बात कही शिरनाइकै ॥ सुश्रुत चरकताकी उकुति युगुति जोर जानत हैं हम सबभेदनि सचाइकै ॥ नलद सौं याकी बिथा जाइगी छिनकमाहिँ सुनि चितुलाइ राजुरह्यो अकुलाइकै ॥९७॥ आवत हैं तात यों कहत दौरि पौरि जन सुनत ही तौहीं राजकुँअरि सकाइकै ॥ दूरिहि सों धरणि छुअत तसलीमकरि सीम कुलकानि विरहागिनि छपाइकै ॥ चितकी चलनि चरचतु हैं चतुर तिन जानी-ब्याह योग यों उछाह सरसाइकै ॥ आशिषयाँ दीन्ही नख शिखते सुखि

तरहौ लहौ अभिमत रहौ सुमन सुहाइकै ॥ ९८ ॥ **दोहा** ॥ सुनि आशिष नृप जो दई, ब्याह उछाह उमाह॥ आनँद अंबुधिमें में भई, मगन सखी चितचाह ॥ ९९ ॥ बाहर आयो भूप पुनि, बूझि मंत्र वरवेगि ॥ राज बोलावन काजको, भेजे चारन नेगि ॥ १०० ॥ नव द्वीपन पति पुरिन पति, सकल देशपति जौन ॥ अमर पच्छ अहिराज सब, बोलि पठाये तौन ॥ १०१ ॥

इति श्रीप्रचंड दोर्दण्ड मंडित भू मंडलाखंड श्रीखाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ दमयंती विरहवर्णनं नाम पंचमस्सर्गः ॥५॥

दोहा—छठे सर्ग नारद मिलन, बासव सदन समाज ॥ नल मारग छलसाज सुर, दूत काज सुरराज ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ जौलौं राज समाज, जुरै आइ कुंडिननगर ॥ तबही श्री ऋषिराज, नारद सुरपति गृह गये ॥ २ ॥ पर्वत चल्यो सपक्ष, तेहि पछार अचरज नहीं ॥ नारद गुरु जग अक्ष, अति अद्भुत नभ जो चढ्यो ॥ ३ ॥ **प्रद्धटिका** । मुनि चल्यो गगन बिनही विमान ॥ बहु भयो भानु ज्यों भासमान ॥ जन और चहत साधन बनाइ ॥ तपसीन होत तप सिद्धि आइ ॥४॥ मुनि चल्यो नघत सुरपर विमान ॥ तिनकरी प्रणति बहुधासमान ॥ किय अतिथि हेत आदर अपार ॥ नाहिं करचो तहाँ कछु अंगिकार ॥ ५ ॥ लिय ऐंचि तेज जितनो दिनेश ॥ मुनिदेह लगत नहिं घामलेश ॥ रवि हरीसोभ मुनिराजलेखि॥ द्विजराज हरी रवि सोभ लेखि ॥ ६ ॥ **तारक** ॥ सुरसिंधु तहीं बहु आदर कीन्हो ॥ तट दूबनि दर्भनि आसन दीन्हो ॥ जलसों चरणोदक दै सुखपायो ॥ सरसीरुहको मधुपर्क बनायो ॥ ७ ॥ सुनतै सुरनायक जू उठि धाये ॥ बहु दूरिहि सोय गये शिरनाये ॥ मुनि सादरही हँसिकै उरलाये ॥ गहि पाणि दुऔ प्रभु आसन आये ॥ ८ ॥ **मौक्तिकदाम** ॥ सिंहासन उच्च तहाँ मुनिनाथ ॥ करे थिति पूजन की विधि साथ ॥ गह्यो लघु

आसन और सुरेश ॥ करी विनती कर जोरि सुदेश ॥ ९ ॥ मिलैं जब मित्र समाज अनूप ॥ चलै तब चारु कथा बहु रूप ॥ न आवत क्यों इत सूर महीश ॥ चहै यह बूझनको सुरईश ॥ १० ॥ इंद्र ॥ दोहा ॥ अब नृप वंशन में नहीं, उपजति बीर करीर ॥ जे परहारिनि सों समर छोडति धीर शरीर ॥ ११ ॥ माटी में गुर देह सो, ऊरध गति नहिं होइ ॥ तजि आवत मेरे निकट, आदर गारव जोइ ॥ १२ ॥ तोटक ॥ अब वे इतको नहिं आवत हैं ॥ रण क्यों नहिं तेज उपावत हैं ॥ नहिं भावत इंद्रपती मनिकै ॥ अपने इक कारज की गनिकै ॥ १३ ॥ बहु संपदते विपदा नितही ॥ निज पूरब पुण्य मिली कितही ॥ जब पानि सुपातरके दिजिये ॥ तबही लक्ष्मी सुखको लिजिये ॥ १४ ॥ दोधक ॥ संशय दूरि करौ प्रभु मेरो ॥ हों नित सेवकहों प्रभु तेरो ॥ वैन मनोहर रावरे ऐसे ॥ पाप हरैं अघमर्षन जैसे ॥ १५ ॥ तोमर ॥ यह भाषि वासव आपु ॥ तब ह्वै रह्यो चुप चापु ॥ दशसै सरूह नयन ॥ मुनि ओर हेरत ऐन ॥ १६ ॥ लखि इंद्रकी मति धीर ॥ सुनि बैन ज्यों गिरिकीर ॥ तबहीं भये मुनिराव ॥ परसन्न शुद्ध सुभाव ॥ १७ ॥ मुनि ॥ तोटक ॥ शत यज्ञनसों तुम इंद्र भये ॥ तिनकें श्रम तौ तुम जानि लये ॥ तेहि पै तुम दानैको उमहौ ॥ धनि धन्य सदा वासव तुमहौ ॥ १८ ॥ तारक ॥ नहिं बैन न आवत ऋद्धि तिहारी ॥ अति आदरकी पदवी निरधारी ॥ सब देखिपरी निज नयनन जैसी ॥ अभिलाषन राजशिरी पर ऐसी ॥ १९ ॥ हंसी ॥ श्रीको चाहौ औरे दीनो अतिथिन पर अति करुण करी है ॥ इच्छाही सों भोगै सागौ नयन सहस सब सिधि सिधरी है ॥ तेरी बातैं मीठी मीठी सुनि सुनि तरल सुचित गति तेरी ॥ तीनौ लोकै पालौ नीकै धनि धनि धनि हरि मति तेरी ॥ २० ॥ सोरठा ॥ समर शस्त्र तनु त्यागि, इत आवत नहिं राज ज्यों ॥ सो सुनिये चित लागि, कारण मैं वर्णन करौं ॥ २१ ॥ चर्चरी ॥ भूमिमें तुमसों लसै यक भीम भूपति भागसों ॥ ऋद्धि सिद्धि विदर्भ देशनि जोग जाग विराग सों ॥ कन्यका तेहिके भई इक ताहि रूप अमोलहै ॥ नाम है दमयंति यौवन बैस

राजति सोलहै ॥ २२ ॥ **लीलागति** ॥ मन माहँ चाहतिहै युवा वह जानिये नहिं कौनहै ॥ परमाणसे नहिं मान राखाति मूँदिकै गुण भौनु है ॥ अब है भई वह व्याह लायक चारु बेलि शृंगारकी ॥ तासु तात चाहत स्वयंवर करचो ठीक विचारकी॥ २३ ॥**पृथ्वी** ॥ मनोज नृप फेरि कै हुकुमराज जीते सबै ॥ भये वश दमयंतिके समर वात चलै कबै॥ सुनै जुरुचिता तासुकी जित गुनै रुआ भूषनै ॥ करे तित अभ्यास यों सकल सिद्धि ताही गनै ॥ २४ ॥ **दोहा** ॥ जे आभूषण दान गुन, वह तिय करै पसंद ॥ तिनमें तनिकौ जो चतुर, सो सबमें सुखकंद ॥ २५ ॥ **तोटक** ॥ जबते वह यौवन बैस भई ॥ रणकी सुधि राजन भूलि गई ॥ तिनमें मनमत्थ सिकार करै ॥ तिनके मृग नयनन बाँधि हरै ॥ २६ ॥ तिनके घर दूतिनकी अरचा ॥ नितही नित ता गुणकी चरचा ॥ यहि ते इहँ भूप न आवतहैं॥ तुमसों नहिं आदर पावत हैं ॥ २७ ॥ **चर्चरी** ॥ भीम भूप सुर दूरिसों अति दूरि अंतर जानिकै ॥ हौं चल्यो इतको इहाँ रण रंग आनँद मानिके॥कोन जानति है तुम्हें बहु युद्ध करत सुभाइसों॥ ह्वै रहे चुप चाप बोलि मुनीश यों सुरराइसों ॥ २८ ॥ **सोरठा** ॥ सुनि ये वचन विशाल, महा मुदित मघवा भयो ॥ होत सुभग रस वास वचन रचनमें प्रभुनकी ॥ २९ ॥ इंद्र ॥ **दोहा** ॥ मुनि ह्याँ राजत हैं सदा, ममसु अनुज दनुजारि ॥ संगरकी चरचानहै, सोवत पाँइ पसारि ॥ ३० ॥ **चौपाई** ॥ विश्व रूपता ताकी ऐसी ॥ रीति रची जैमुनि मुनि जैसी ॥ सुर विग्रह जो सहत न नेको ॥ व्यर्थ करौ मम वचन विवेको ॥ ३१ ॥ विनय समुद्र सुधा रस सानी ॥ चुप कि रह्यो हरि कहि मृदुवानी ॥ तजि उसास मुनि भयो उदासी ॥ तब बोल्यो रण रंग बिलासी ॥ ३२ ॥ **मुनि** ॥ **सवैया** ॥ सुरलोक रसातल युद्धकी आशते भूमि निवासन चैन गहौं ॥ अरु भूमि पतालके संगरसों नभमें नाहिं हौं निहचित रहौं ॥ तुमको लखि मोद लह्यो सुरनायक भूतलको अब जायो चहौं ॥ करिये किरपा करि ओप सुमोहिं बहोरि इहाँ सुख आनि लहौं ॥ ३३ ॥ **दोहा** ॥ दमयंतीके व्याह को, ह्वै है राज समाज ॥ ते करि हैं संग्रामको, भूतलमें मम काज॥ ३४॥

पद्धटिका॥यह भाषि चले तुरते मुनीश॥पगरोंकि रह्यो बहुधा सचीश ॥ गंधर्व फन्यो पर्वत प्रणाम ॥ ऋषि विदा कियो तब शक्र धाम॥३५॥अ० घर आइ कियो इंद्र साँच येह ॥ केहि भाँति होइ दमयंति नेह॥ करगह्यो वज्र अति कठिन जानि ॥ मृदु गह्यो चहत दमयंति पानि ॥ ३६ ॥ नरनाह कामको हुकुम मानि ॥ सुरनाह चल्यो क्षिति ओर आनि ॥ शिरनायशची विलखीं अपार ॥ जनु चहै चल्यो अबहूँ पतार ॥ ३७ ॥ **स्वागत** ॥ इंद्र देखि क्षितिको अनुरांगे॥ रंभ श्याम द्युति आननलागे ॥ श्याम जीभ गति ऊपर भाषै ॥ आपुहानि मनमें अभिलाषै ॥ ३८ ॥ दीह साँस मुख छोडि घृताची ॥ प्राण मुक्तिके मारगराची ॥ मैनका मुख नवावत रूखी ॥ शीत बेलि जनु पंकज सूखी ॥ ३९ ॥ कह्यो तिलोतमहूँ तब ऐसे ॥ गिरेहाथ ते चामर जैसे ॥ सुरपुर बास न योग हमारे॥ सुरपति आपु भूमि पगुधारे॥४०॥अ०॥ काहूसाँ कोऊ योँ कहै॥ बैठी कहा विचारति रहै ॥ कश्यपको सुत इन्द्र कहावै ॥ कश्यपसुता और को धावै ॥४१॥ **दोहा** ॥ अग्नि वरुण यम जो चलैं, तीनौ संग दिगीश॥ चलत एक आगे चलै, पाछे सब बिसवीस ॥ ४२ ॥ **शिखरिनी** ॥ पीछे भेजी दूती सबानि दमयंतीके निकटको ॥ बड़ी भेजी भेंटैं विदरभनाथ सुभटको॥ करैं ऐसे सेवा सकल सुर देवाधिप मिलै॥ चले चारौ भूको हरषि हियहूको मिलि हिलै ॥ ४३ ॥ जबै आये भूमै तरलछन हूमै सुगतिसो ॥ करी ऊँची ग्रीवा रथ धुनि सुनि एक मतिसो ॥ चलै पारावारै चपल लहरी मेघ गरजे ॥ तलै आगे देखो नरपति लसै स्यंदन सजे ॥४४॥ **सोरठा**॥ दयो सारथी टारि, रथहाँकत कौतुक सन्यो ॥ लीन्हो ताहि निहारि, नयन जन्मको फल लह्यो॥ ४५॥ **दोहा** ॥ देखि तरुण वय तासुकी, वरुण भयो जल रूप ॥ जलपतिको यह उचित है सीसम सरस अनूप ॥ ४६॥ **हाकली** ॥ सूरयको सुत ताहि निहारी ॥ श्यामल रंग भयो निरधारी ॥ आजहुलौ तेहिको जग जालू ॥ भाषत ताहि सबै कहि कालू ॥ ४७ ॥ पावक ताप गह्यो तेहि देखी ॥ तासमत्ता अभिलाष विशेषी ॥ रूप निरूपितकै गुणगेह ॥ आजु लगे तेहि तापित देह ॥ ४८ ॥ कौशिक देखतही तेहि रूप ॥ जासन

हारत काम अनूप ॥ कौशिक रूप भयो मन माह ॥ नयन सहस्त्र न सूझत नाह ॥ ४९ ॥ **मोदक** ॥ मूरतिवंत शृंगार सोहावन ॥ सुन्दरता तेहिको मनभावन ॥ विस्मित देखि दिगीश भये सब ॥ सोचि रहे मन माहँ सबै तब ॥ ५० ॥ रूप विशेषणकी परभा जब ॥ भूषण वेश बने सुखमा सब ॥ स्यंदन साजि चल्यो इत आवत ॥ देश विदर्भको समुहावत ॥ ५१ ॥ ॥ **दोहा** ॥ अति उदार सुकुमार वय तरुन नयेसो ओर ॥ कुंडिनपुरको जात हैं, साज स्वयंवर जोर ॥ ५२ ॥ **चौपाई** ॥ धर्मराज सलिलेश हुतासन ॥ भये हर्ष चल ताप प्रकाशन ॥ प्राण रूप जलको नल देखे ॥ आय महा बोले सविशेषे ॥ ५३ ॥ **दुता॥ झूलना॥** लाभ नाहिं दमयंतिको हमको परी यह जानि ॥ छोडि सुन्दर राज भू यहि वरैगी सुर आनि॥ जो वरै तजि याहि हमको तौन वह हम योग ॥ रूप औरु कुरूपको नहिं भेद जानत भोग ॥५४॥ **वरुण॥ कुमार लहरी** ॥ हमै तब वरै यहै ॥ प्रभुत्व जब तौ लहै ॥ न दीठि यहुधौं परै ॥ सुकौन चरचाकरै ॥ ५५ ॥ **यमराज ॥ संयुत** ॥ हमहूँ दुहूँ दिशिते गये ॥ घरके न बाहेरके भये ॥ दमयंति याहि विवाहि है ॥ यहिके स्वरूप सराहि है ॥ ५६ ॥ **दोहा॥** बाहिर पंचनमें हँसी, ह्वैहै आठौ अंग ॥ घरमें नयन न सामुहे, ह्वैहैं रमणी संग ॥ ५७ ॥ **सवैया** ॥ यहि भांति रहे झुकिकै सुरतीनौ कहा करिये कछु और न आवै॥ तब शोचि कछू मनमें मघवा मति सञ्चितसों परपंच बनावै ॥ बोलि उठ्यो छलसों नलसों यह रावरी मूरति मोदबढ़ावै ॥ सो सुखसों तुम क्षेमसोंहौ तुमै देखतही चित इच्छितपावै ॥ ५८॥ **दोहा॥** अर्धासन मैं जेहिदियो, करि आदर संभार ॥ वीरसेनि नरनाहसम, रेखा लसत लिलार ॥ ५९ ॥**तोमर** ॥ तुमहौ सुपूत सुजान ॥ तेहिराजके कुल भान ॥ कितको करयो श्रमआनि ॥ वहु देशहैं गुणखानि ॥ ६०॥ हमहूं चले शुभ काल ॥ जेहिको मिल्यो फल हाल ॥ यहि राह आधिक आनि ॥ तुमसों भई पहिचानि ॥ ६१ ॥ **नल ॥ तोमर** ॥ यहतौ परस्पर बात ॥ गुरुरूप आपु लखात ॥ हम अज्ञहैं बहु भाइ ॥ तुम आपु देहु बताइ ॥ ६२ ॥ **चम्पकमाला** ॥ दण्ड धरे याको यम जा-

नौ ॥ ज्वालबरै याको शिषि मानौ ॥ फांस डरै याको जलनाथौ ॥ शेष रह्यो सो इंद्रसनाथौ ॥ ६३ ॥ याचक ह्वै तेरे हम आये ॥ देखतही चारौ फल पाये ॥ ॥ मारगको आयासु वितामैं ॥ कारज को तौ आपु बतामैं ॥ ६४ ॥ **सवैया** ॥ याचक नाम सुने हर्ष्यो तनु फूलि उठे भुजदंड सोहाये ॥ फूल कदम्बके तूल भयो तिन पाँयन धाइलसो शिरनाये । जो अति दुर्लभ देवनको वहु मेरे अधीन कहौ केहि भाये ॥ जानि विरोधपरै यहिमें तबसंशय यों नलके उर आये॥६५॥**नल**॥ **नील सरूपक**॥जीवितलौं अब अर्थिनदीजै। तामहँ नेकु न नाह करीजै॥ जौ सुर नायक मांगनआवै। तौ कहदेइ हियो सुखपावै॥६६॥ जानिपरै कह चाहत येहैं ॥ तौ विन याँचतही हम देहैं ॥ जानत हूँ रुचि अर्थिन केरी ॥ देत न जे तिनको धिग टेरी ॥ ६७ ॥ अ० ॥ जे अति आप खुशामदि चाहैं ॥ माँगत वार न नेह निबाहैं ॥ निष्ठुर बोलनमें उतसाहै ॥ दातनमें तिन कौन सराहै ॥ ६८ ॥ **दोहा** ॥ तिन समान लै दीजिये जीवन अर्थिन हाथ ॥ दर्भ युक्ति जलदान विधि, वहै बतावत गाथ ॥ ६९ ॥ **सारव** ॥ पंक कलंकित कौल गनै ॥ लच्छि निवास तहाँ न बनै ॥ जांवक पाणि सरोज नयो ॥ आसन ता कहँ आनि दयो ॥ ७० ॥ याचकके मनको भरिकै ॥ देत न जे करणा करिकै ॥ भूतल भार भयो तिनको ॥ पर्वत सिंधु नरूखनको ॥ ७१ ॥ **भुजंग प्रयात** ॥ सबै दान संसारके छोडि दीन्हे ॥ हमै आइकै एक यों याँचि लीन्हे ॥ बडी कीर्त्ति दीन्ही हमैं वेद चारयो ॥ कहा होइगो काजमो सों सँवारयो ॥ ७२ ॥ **सोरठा** ॥ छोंडि जात यहि लोक, दाता धनदै आपनो ॥ अरथि बधू विन टोंक, पहुँचावत परलोक हूँ ॥ ७३ ॥ **गोपाल** ॥ एक गुणो धन दै संसार ॥ देत स्वर्ग पर गुणो हजार ॥ अर्थी सौ अधमन उद्धार ॥ साध करंत तासों वैपार ॥ ७४ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ यहि भाँति भूप सोचत अपार ॥ बोल्यों विचारि मन वच उदार ॥ परसन्न बदन लखिकै दिगीश ॥ अति हर्ष भयो चित विसे वीस ॥ ७५ ॥ ॥ **राजा** ॥ जैसो जाको अन्न तनु, तैसी ताकी होत ॥ आपनकी देखत नयन, सुधा स्वादु उद्दोत ॥ ७६ ॥

चौपाई ॥ मेरो अल्प सुकृत वरु केतो ॥ कहा होत ताको फल येतो ॥ अतिदुर्लभ दर्शन तुम देखो ॥ पुरिखनके ये तप फल लेखो ॥ ७७ ॥ सरवसहन व्रत जो क्षिति राख्यो ॥ ताको आज सफल अभिलाष्यो ॥ जो तुम चरण सरोजनिपूजी ॥ याते धन्य और नहिं दूजी ७८ ॥ गंधाना ॥ जीतबहूते अधिक आप चित जो कछुचाहै ॥ मोकोसेवक जानि कृपा करि मुखहि सराहौ ॥ हौं कह कीवे योग आप समझत सब नीके ॥ पूजौ चर्णन अबहिं होहिं अभिलाष जुहीके ॥ ७९ ॥ चित्रप ॥ भूपतिकी सुनि-वानीं ॥ सत्य सुधारससानी ॥ वासवतौ छल कीनो ॥ कारजमें चितदीनो ॥ ८० ॥ इंद्र ॥ तारक ॥ दमयंति विवाहनको हम आये ॥ सब अंगन माँह अनंग सताये ॥ अब आपुन दूतपनो यह कीजै ॥ सिद्धि-कार्यकरि जगमें दीजै ॥ ८१ ॥ दोधक ॥ भूतलमें नल भूपति भारे ॥ सिंधु तुहीं सब कूप निहारे ॥ जागतहैं नभमें ग्रह जोऊ ॥ भान समान प्रकाशत कोऊ ॥ ८२ ॥ तीनिहु लोकनको हम देखे ॥ तो गुणसिंधु अगाध विशेषे ॥ कारजमें तुमको परचायो ॥ तो हमहूँ चितमाँ सुख पायो ॥ ८३ ॥ सोरठा ॥ शुद्ध वंश गुण थान, सायक सौं राजाकरचो ॥ चहै चलायो आन, शक्र वक्र धनुसो भयो ॥ ८४ ॥ सुनि ये छल बल बैन, जानि भेद भूपति गयो ॥ किये रूखेहिं नयन, कुटिलनमें मृदुता न हित ॥ ८५ ॥ राजा ॥ छप्पय ॥ जगमें जेते जीव चित्त तिनके तुम जानत ॥ निजमति दर्पण माहँ तत्त्व सन्मुख पहिचानत ॥ मुख न मोनु हौं सजो काजनाशै जेहि कीन्हे ॥ जो कहिके नहिं करै लाज ताको मनहीन्हे ॥ जो करन योग नहिं जासुके ताकी फरमायसि करत ॥ तुमही विचारि समुझौ सकल कहा लाभ यामें धरत ॥ ८६ ॥ मनहंस ॥ हम जात हैं तेहि व्याहको उत्साहसों ॥ तेहिसंग दूतपनो करै केहि राहसों ॥ तुमहूं बड़े सुरनाहजू सरसातहौ ॥ हमको छलौ बिनलाभ क्यों न घिनातहौ ॥ ८७ ॥ तोटक ॥ मनमोहत नाम सुने जेहिको ॥ चहुँ ओर न रूप लखै तेहिको । तेहिसंग करौं किमि दूतकथा ॥ केहिभाँति बनै यह योग यथा ॥ ८८ ॥ सवैया ॥ राजे मनोरथमाहँ चढी निशि द्योसरहै तेहिकी छबि देखे ॥ श्वास छुटै मुखपीरीपरै विरहागिबरै स्वरकै सु विशेखे ॥ सो परतीति नि-

हारत ताहिं न ज्यों रहिहै उर एक निमेखे ॥ कौन समर्थ विषैरस जीतत रीतियहै जगकी अनलेखे ॥ ८९ ॥ ज्योंदिनमें छरिया बरजैं जिनके डर जान न पैयत नेरे ॥ जेहौं तिन्हैं हनि भीतर तौ नहिं सो मिलिहै भयके घरघेरे ॥ प्राणनलौं प्रणदान कोहै कहिदेत दधीचिहि आदि घनेरे॥ प्राणनहूंते हजार गुणी दमयंति दिये न चहौं यशहेरे ॥ ९० ॥ यांचतहौं तुमसों करिपूजन मोहिं मिलै दमयंति सयानी ॥ लाज न आवतहै तुमको अब सो विपरीति करौ ममवानी ॥ मोकहँ तो पहिलेहि बरचो तिन जो तुम राजकुमारि बखानी ॥ देखतही हमको लजिहै भजिहै न तुम्हें यह मैं पहिचानी ॥९१ ॥ **दोहा** ॥ ताते खेद न कीजिये, कृपाकरौ सुर नाथ ॥ हँसी होइगी काजनहिं, बिन उपाइ जनसाथ॥९२॥ **सोरठा**॥ सुनि नलके ये बोल, ह्वै अडोल गति देवपाति॥ कपट हरचो अतिलोल, रौरेके मुख देखिकै ॥ ९३ ॥ इंद्र ॥ **दोहा** ॥ कहा कहड ऐसे वचन, चंद्र वंश तुम भूप ॥ अंगीकृत करिकै फिरत, कौन धर्म कोहि रूप ॥ ९४ ॥ **मनोहरण** ॥ यह जो विलोकतु है जगतु ॥ निजकाल नाशहिको भगतु तहँ धर्म यशको को तजत ॥ यहि भाँति तू हमको भजत ॥ ९५ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ जे वंशभये तेरे महीप॥ तिन दान दिये बहु कुल प्रदीप॥ यक इंदु आदि उपज्यो कलंकु ॥ तुम हूँ न गहौ तेहिरीति अंकु॥ ९६ ॥ जोकै कुदीठि मुख मूँदिलेहु ॥ लखि अर्थिन सों मानहु न नेहु ॥ तुमसे महीपको सो कलंकु ॥ जि मिशीत भानुमें शशक अंकु ॥ ९७ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ तैं पढ्यो वर्णन मैनवर्न ॥ कै भूल्यो पढ़िकै भूप कर्न ॥ यहि भाँति अर्थि जन चित्त चार ॥ सो करत आनि दोला विहार ॥ ९८ ॥ इंद्रवज्र पायो घनो यों यश शुभ्र तेंहीं॥ छोडौ न ताको सिखवो जो मैंही कौने लह्यो॥ याँचक और ऐसो ॥ सो देवराजा सुरवृक्ष जैसो ॥ ९९ ॥ **उपेन्द्रवज्रा** ॥ मिटै न क्यों हूँ अभिलाष दैवी॥ करै सदानंद सदा बनैवी ॥ तहू गन्यो है तेहि भाँतिको कै ॥ रहै तहाँ जाइ कोऊ नरोकै॥ १०० ॥ **नामराज** ॥ **दोहा** ॥ वीरसेनि कुलदीप तुम, तहाँ लग्यो तम आनि ॥ सोम वंश उत्पत्ति सम,तहाँ करत पहिचानि ॥ १०१ ॥ कामधेनु पशु कल्पतरु, कठिन महा तेहि पाश ॥ याचक विमुख

न होतहैं, कहा विचारत आस ॥ १०२ ॥ अन्यच्च ॥ मांगतदीजै तुरतही, जीतबमें संदेह॥ खुलत मुदत फल व्यंग्यमें, यहै कहत गुणगेह॥ १०३ ॥ वरुण ॥ सवैया ॥ दाननिके जलधारनिसों मुक्तागण भूषण संयुत जोहैं ॥ पूरण सादर चन्द्रमुखी बहु कीरति नौल बहू तुमसोहैं॥ कँवच अभेद तु चामयहौ अरु वज्रके स्थिन जो अवरोहै ॥ तेउरहे नहिं कर्ण दधीचि कहा तुम धर्महिं त्यागिदियो है ॥ १०४ ॥ दोहा ॥ सत्य पाश गुणसों बँधे, अजहूं चलत न नेक॥ विंध्याचल बलिराजये, धरे धर्म की टेक ॥ १०५ हमपै मांगत और बर, ते हम मांगत तोहिं॥ पूरिमनोरथ एकुनहिं, सुयश सकल दिशि सोहि ॥ १०६ ॥ द्रुतबिलम्बित ॥ चलतबार सुमिरै तुम्हें कहूं ॥ मिलत मंगल ताहि अनेकहूं ॥ अफल गौनु जोहोइ तुम्हें सुनौ ॥ निखिलमंगल तौ अफलै गुनौ ॥ १०७ ॥ मनहरण ॥ इष्टपै हमारी तै जु प्रतिकृत श्रुतिकरी यह श्रुतिके समान ताहि जानिये बनाइकै॥धर्म अर्थ ताहि साजि अब महाराज आज अमितसकत अभिधान पाद पाइकै ॥ कीरति तिहारी तीनौलोकन पुनीतकरै एक सेततइको हुकुम सरसाइकै॥ वस्तुनमें नील पींत हरित सुरुखरंग तिनमांह रही अवतदात छबिछाइकै॥ १०८ ॥ छप्पय ॥ सहसचरण जे भानुपूत तिनको शनि सोहैं। भयो पंक केहिहेत तासु छाबि सुत अवरोहै॥याको उत्तर आजलख्यो हमतोकह देखे ॥ नाघत तेरे तेज भयो रवि पंगु विशेषे ॥ यहि भाँति चाटु वचना वचन मोहि लयो भूपाल मनु॥ वरजोर बिगारी पकरि कै, पेटि धरी शिर पोट जनु ॥१०९॥दोहा॥ अंगीकार करयो जबै, दूत भार नरनाह ॥ तब बोल्यो सुरनाह हँसि, मुदित भयो मन माह ॥ ११० जहाँ तहाँ नृप रावरी, इच्छा ऐसी होइ॥ तहाँ तहाँ सब लोकमें, तुम्हें न देखे कोइ ॥ १११ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडलाखण्डल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचित्ते काव्यकलानिधौ सुर संगमो नाम षष्ठस्सर्गः ॥ ६ ॥

दोहा ॥ सर्ग सातयेंमें कथा, कुंडिनपुर नृप गौन ॥ रतिपति विविध विलास में, दर्शन रावर भौन ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ नैषधपति सुर मित्त, रथ हँकवायो वेगिसों ॥ दूतकाज धरि चित्त । कुंडिनपुर सन्मुख चल्यो ॥ २ ॥ **वसंत तिलक** ॥ रोंके वियोग चल पावक ज्वालही में ॥ आन्यी दिगीश गण कारज साँचजीमें ॥ जैसे अगस्त्य जल सागर पानकीनो ॥ डर्बार दीह वडवानलको न चीनो ॥ ३ ॥ **सवैया** ॥ नलकी परनालि मिल्यो तियको रस पूर सवाद पियूषहि चाहें ॥ अति प्यास भरे तेहिके सुर चारो तहाँ नलको बहुबार सराहें ॥ लाइ रहे टकसी अनिमेष मनोरथ कैकें करैं उतसाहें ॥ भूषण आप भये तेहि देशके आगमकी पुनि हेरत राहैं ॥ ४ ॥ **सोरठा** ॥ कुण्डिनपुर मिस आइ, भूमि इंद्र अमरावती॥रथ पहुँच्यो नगिचाइ, साधु मनोरथ सीधि ज्यों ॥५॥ **हरिगीत**॥दमयंतीके पगनि सो हैं कृतारथ गली यहि ग्रामकी ॥ सुख श्वास छोंडि उदास ह्वै सुधि आइकै सुर कामकी॥चषबाम अश्रु प्रमोद कंटक पक्ष्मनू तनु भोगसोँ ॥ दृग दाहिनो फरक्यो तहाँ पुरदेखि नेहसँयोगसोँ ॥ ६ ॥ रथसोँ तहीं उतरयो महीपति वेगि कुंडिनपुर गयो ॥ जिमि सूर-मंडलते कढ़्यो चपतेज चंदहिमें रयो ॥ नलको स्वरूप अदृश्य ह्वै तब नेक नहिं लखिकै परै ॥ तन माहँ आवत सकल छवि निधि ज्यों अनंग कला धरै ॥ ७ ॥ **चौपाई** ॥ देखि देखि कुंडिनपुरवासी ॥ चातुर सुंदर विविधि विलासी ॥ भाँति भाँतिके भवन निहारे ॥ आश्चर्य नलके उरभारे ॥ ८ ॥ गाहत सुघर नगरकी शोधा ॥ छूटे मणि किरणनिके गोभा ॥ महामुदित मनमें तब भयो ॥ राजा राजद्वार जब गयो ॥ ९ ॥ **लीला** ॥ चोरसोँ छिपिहों चल्यो यह जानि चित्तलजाइ ॥ देखि द्वार ढलैतगण तब रहे मोह चढ़ाइ ॥ लालसा दमयंति संगम मानि होत हुलास ॥ दूतकाज विचारिकै करिलेत चित्त उदास ॥ १० ॥ **मृदुगति** नृपचल्यो सब नाधिद्वार ॥ निरखो न केहूँ तेहिबार ॥ चहुँ ओर देखत जात ॥ मनमें न नेकुसकात ॥ ११ ॥ **सोरठा** ॥ कौन जात यह ले-खि, काहूँ सों काहू कह्यो॥ ग्रीव फेरि तेहि देखि, राजसिंधु विस्मित भयो॥ १२ ॥ **कवित्त**॥ रावरमै उबटावतही इक अंग उघारि कछू मृग नयनी।

देखतही चष मूँदि लिये नृपत्यों इक आइ गयो पिकबैनी ॥ तासों अचानक भेट भई छुटि औरु गह्यो थलुके मति पैनी ॥ लालच सों परस्यो चहेताहि तहाँ बहु बार कढ़ै मृगनयनी ॥ १३ ॥ तारका ॥ सब ओर खरी दमयंतिहि देखे ॥ यह कामप्रपंचनको फल लेखे ॥ तेहिते मन और लगै न कुमारी छवि तासु रही भरि नयनन भारी ॥ ॥ १४ ॥ अ० ॥ तिन ओर निराशकरचो हियराहै ॥ सुरकाजहिको निह चौ चितचाहै॥ विरहागिनसों तनु छीन भयोहै ॥ तेहि देखत स्वाद विषाद लयोहै ॥ १५ ॥ सवैया॥ भ्रमकी दमयंति लखै जबहीं तब देव संदेशनको मृदुभाषै । सुनि वचन अद्रश्य तबै युवती मनमें डरि सोरु सबै करिराखै ॥ लगि मारुत मन्द उड़ै अचरा झमकै कुचकिंकर नैसलखै ॥ मुख फेरिरहै नृप धीर धुरन्धर चोपचितै न चहूँ चष चाखै ॥१६॥ बालनकी अवली गुणसों पुर अन्तरजाल मनोज पसारचो॥ पै नृप नयन दुऔ करसायल फांसिसक्यो न कितीकहि हारचो॥ बांधिके केश हुती तेहिको भुजमूल अतूल खुल्यो झमकारचो॥ लेपति केसरि नाभिलिखी तब मूंदि रह्यो द्दगदूऔ विचारचो ॥ १७ ॥ अ० ॥ इतते इक जातिहुती उतते इक आवतही तिन बीचगह्यो ॥ कुचकंचन डोल अडोल गड़े सुखसिंधु सुवारि समाइरह्यो॥ कछु चेततही अलगाइगयो निज अंगनको परितापलह्यो ॥ पुलकी उत दोऊ मयंकमुखी सब देह प्रस्वेद प्रवाह बह्यो ॥१८॥ तारक ॥ जितही जित भूपति होत खरचोहै ॥ तितही अद्भूत प्रकाश भरचोहै ॥ तहईं तहईं युवती जुरिआवैं ॥ चकि मोहितह्वै कछु भेद न पावैं ॥ १९ अ० ॥ युवती ॥ अलि लागत है गृह आजु सोहायो ॥ जितही तित आनँदसों छबिछायो ॥ नहिं जानिपरै दुरिकै सुर कोऊ ॥ विहरै इत यों कहुँ उत्सव होऊ ॥२०॥ दोहा ॥ मूँदति बनै न खोलतै, नयन रह्यो अकुलाइ ॥ लखि बिलास यह आपनो, आपुहि माँह लजाइ ॥ २१ ॥ तोटक ॥ तिय और जहीं द्दग कोर करै॥ तबहीं शर मारत मार अरै ॥ फलहीन न फूल भयो तेहिके ॥ करि धीरज पूजनको यहिके ॥ २२ ॥ प्रद्धटिका ॥ यहिं नारि संग नहिं भेट होइ ॥ तहँ चल्यो आप थल देखि कोइ ॥ चौपथह मध्य ठान्यो

महीप॥सब साध दरश परसन्न दीप ॥ २३ ॥ **सोरठा** ॥ तरुणी मुख-की ओर, हेर नयन मूँदे दुऔ ॥ प्रगट करी तेहि ठौर, सो शशि आप सरोज जहँ ॥ २४ ॥ **हरि गीतिका** ॥ चहुँ ओरते तरुणी चलें नल कोगहैं न बनाइकै ॥ लगि अंग लौटि झुकत झहरत भाजती डरुपाइकै॥ बहु बार कंदुक सोहन्यो नख रोटलै तिनहूँ तन्यो ॥ तिनहूँ घस्यो कुच चित्र कुंकुम सुरति जनु तेहि संग सज्यो ॥ २५ ॥ **दोहा** ॥ लखो हार हीरा ललित, प्रतिबिंबित नृप रूप ॥ हेरि रही हियरामनौ, करचो प्रवेश अनूप ॥ २६ ॥ **तारक** ॥ नृपके प्रतिबिम्ब न देखत मोहै ॥ रमनी रतिसी सब सुंदर सोहै ॥ उमग्यो तनु आइ अनंग बिलासी ॥ अलसाइ रही थकि नयननहाँसी ॥ २७ ॥ अब तौ तिनको डर छूटि गयोहै ॥ बिन देखतहूँ सब जीव भयो है ॥ चहुँ ओरन दौरत ताहि निहारै ॥ निज प्राणनको तेहि ऊपर वारै ॥ २८ ॥ **दोहा** ॥ जहाँ लखै पद चिह्न सब दौरि जाइ तेहि ठौर ॥ चूमि चूमि आगे कहै, दे दर्शन शिरमौर २९। **सोरठा**॥ भ्रमत भ्रमत गृह माहँ, थक्यो भूप कृश विरह वश ॥ शोधनिपै नर जाह, उच्च शिखर बैठक करी ॥ ३० ॥ **सवैया** ॥ हेम मराल तबै तसबीर दई हि नलै पहले लिखि जैसी॥ आपु अटा पर ही नखसों दमयंति लिखी अति सुन्दर तैसी ॥ लालकी माल उतारि हरे तेहिको पहिराइ दई उर वैसी॥ देखत झुंड जुरे युवती करमीजि पसीजि कहैं यह कैसी ॥ ३१ ॥ **दोहा** ॥ खेलत बालक पूर रज, राजत तहाँ सुवेष ॥ परत चित्र चित दोखि ते, चक्र वराति पट रेष ॥ ३२ ॥ **सवैया** ॥ द्वै तरणी नव आप समें अवलोकि सराहती हैं सुघराई ॥ चानक बीच कढ्यो तेहिके छिन एक भई अति ओट सोहाई ॥ दोखि परचो न कछू तिनको उमडी यक कौतुककी सरसाई ॥ हेरि हँसै हरषैं ससवाहि डेराहि भजैं इमि धूम मचाई ॥ ३३ ॥ अ० ॥ एक खरी उत ओर करी तेहिको इतते यक गेंद चलाई ॥ आनि परचो तेहि बीच महीप गिरी लागि अंगनसों उल-टाई ॥ लागि अकास गिरी यह गेंद रंगी रंगकेसरिसों छबि छाई ॥ हाहा अचम्भो बडो सजनी जन लागत पूर पियूष नहाई ॥ ३४ ॥ **दोहा** ॥ है अदृश्य पुर पुर फिरत, मणि प्रतिबिंब अनेक ॥ योगीसों

राजत तहाँ, बडो वियोगी एक ॥ ३५ ॥ **युवती** ॥ **सवैया** ॥ मैं तौ छुयो सखि कोऊ युवा हम छाँह लखी इत मानुष कैसी ॥ बोलतसो परख्यो हमहूँ मणिमें प्रतिबिंबत मूरति तैसी ॥आपुस माहँ करैं चरचा चित अद्भुत भाँति भई यह ऐसी ॥ बेगि बराइ चल्यों तितही जितहीं जितको रुचि सों मतिपेषी ॥ ३६ ॥ **दोहा** ॥ राजसदन सो नृपसुता, आवतही तेहिवार ॥ हेमछरी कर सहचरी, सोहत संगहजार ॥ ३७ ॥ **सवैया** ॥ कोऊ गुलाबलै लै छिरकाउ करै समुहे मणि मारग झारै ॥ कोऊ करै चहुँ ओर निचोरनि भौंरनकी कोउ भीर निवारै ॥ चोसरिचीरु सुगंधि लिये सखियाँ सँगराज सुता सरदारै ॥ आवें अनूप गलीमें चली तेहि प्राणपियारी अली परवारै ॥ ३८ ॥ देखि समाज छक्यो नृपछैल रहो तेहि गैल लोभाइ अकेलो ॥ देखत है भ्रमको यौ ठाट उचाट करै चितमो अलबेलो ॥ भ्रमको नलदेखि (दमयंति) जहीं निजहार उतारि नयो गहिकैं गल मेलो ॥ बहु आइ छयो नृपके हियमें परि यों तिनमें अति कौतुक फैलो ॥ ३९ ॥ **सोरठा** ॥ साँचमाल हियलागि, सुख अद्भुत भूपति छक्यो ॥ जागि उठी विरहागि, मनौ कुंड आहुति परी ॥ ॥ ४० ॥ लसत एकही ठाम, लसत दुऔ तिसैरतसो ॥ करत अचंभो काम, दइय काम कैसो भयो ॥ ४१ ॥ **सवैया** ॥ दमयंति यही नृपको परस्यो सरस्यो उत अंतरसेकुसोहान्यो ॥ थहरी नवबाल ज्यों ताल मृगी चितई चहुँधा न कहूँ ठहरान्यो ॥ सुखसिंधु अथाह परचो पुहुमी पिउछाह भरचो छिन एक वितान्यो ॥ लखिचेत लग्यो झखकेत जग्यो तब स्वादुभरे उनमादु बखान्यो ॥ ४२ ॥ **दोहा** ॥ साँच मिलहिं झूठो गनहिं, साँची भाँति लोभाहिं ॥ दोऊ है ता बाट रत। टरत तहाँते नाहिं॥ ४३ ॥ **प्रद्धटिका**॥ इमि करतकला अभिराम काम॥ धरि धीर गई वह बाम धाम ॥ नृप भ्रमत लह्यो ताको अबास ॥ मणि लसत कँगूरा लगिअकाश ॥ ४४ ॥ **दोहा** ॥ जरी चंदवाके तरे, मखमल गद्दी विशाल ॥ आस पास झालरि लगी, हीरा मोती लाल ॥ ४५ ॥ उच्चसिंहासन पै शची, सोहत राजकुमारि ॥ खरी खवासैं रसभरी, जनु उतरी सुरनारि ॥ ४६ ॥ **तोटक** ॥ सखियाँ सतलाख तहाँ थितहैं॥ रसरंग

विलासनमें चितहैं ॥ नृप मोहिंरह्यो लखिकै परभा ॥ रतिकी सरसै रनिवास सभा ॥ ४७ ॥ **सवैया** ॥ बाजत तार पखाउज वीन नवीन प्रबीन सबै मदमाती ॥ गावती गीत सनेहसने करिनाच कला अतिही इतराती ॥ भौंहानिमें दृगकोरनिमें मुसक्यानिमें भायनिको सरसाती ॥ डोलत बांह चुरीखनकैं चमकें अचरा झमकै खुलीछाती ॥ ४८ ॥ **तोमर** ॥ पिकवेणु वीन निहारि ॥ यहि कंठसों गहिहारि ॥ धरि तीन रेख अनूप ॥ वरणी तबै यह भूप ॥ ४९॥अ०॥ दमयंति ले नल राज ॥ तुमको मिलै वह आज ॥ सुनि सारिका मुख येह ॥ नलको कँप्यो सब देह॥ ५० हमको लयो इन जानि ॥ नहिंहै मृषा सुरवानि ॥ तहँ बैठिकै नृपवीर ॥ तब यों धरयो हियधीर ॥ ५१ ॥ **दोहा** ॥ आलीजन ये सीखये, मेरो नाम सुनाय ॥ समाधान यों करतहैं, वेई बैन पढ़ाय ॥ ५२ ॥ भानमती मालिनितबै, आइ बेलि शृंगार॥ दूरिहिते क्षिति शीशछ्वै, किये हार उपहार ॥ ५३ ॥ **सवैया** ॥ स्वांग स्वयंवरको सखियां करि एकहि लै नल वेष वनाई ॥ एक करी दमयंति खरी सुथरी किनहूं नलकीरतिगाई ॥ मोहितह्वै उमड़ी उतको वह ह्यां यह राजकुमारि लजाई ॥ घूंघटही मुख फेरिं हरे झिझिकातही माल पियै पहिराई ॥ ५४ ॥ **दोहा** ॥ शशिबदनी अभरक तिलक, कह्यो शशी तिय एक ॥ लखत सखी मुख चन्दु जहँ, राजत चंद्र अनेक ॥ ५५ ॥ **मालिनी** ॥ अति चतुर चितेरी चित्रनी नारि राजैं ॥ सब मिलि दमयंती रूपको चित्र साजैं ॥ कर लिखत न आवै कोलको लेखि डारैं ॥ कुबलै लिखि पारै नयन के लाखहारैं ॥ ५६ ॥ नित नित परबीनै किन्नरी साजि आवैं ॥ मिलिमिलि दमयंती संग वीणा बजावैं ॥ रचि रचि ञिखरामै नाचकी चाल चोखी ॥ कुहँकि कुहँकि गावैं रागिनी लै अनोखी ॥ ५७ ॥ **दोहा** ॥ अरध चंद नखचुंबिकुच, लखी सखी यकतासु ॥ बन्यो नेवारा काम जनु, छतिया सब रसबासु ॥ ५८ ॥ **लक्ष्मीधर** ॥ कामके चापको योगु पामें जहीं ॥ आनिकै आलिको ह्यो बिदारैं तहीं ॥ हारके व्याजसों फूल आने जिते ॥ सूचिसों भेदि डारै सहेली तिते ॥ ५९ ॥ **तोटक** ॥ दमयंति उरोजनपै रचना ॥ यक आलिकरै मतिकी सचना ॥ नलके करकी

तसबीर नई ॥ लखि पंकजकी उन खैंचि दई ॥ ६० ॥ चर्चरी ॥ खेल चौपरिमें कह्यो हनि सारिका यहि चाइसों ॥ सारिका विनती करी सुनिकै हँसी सब आइसों ॥ पान दान सुवर्णको दमयंतिके अति पासहै ॥ हेमहंसरह्यो इहाँ करि दूतका जु निवासहै ॥ ६१ ॥ दोहा ॥ ललित लुनाई की लहरि, राजत सभा अनूप ॥ दमयंतिहि प्रगटित करै वई अलौकिक रूप ॥ ६२ ॥ तारक ॥ नलकी तसबीर लिखी सब ठाई ॥ तिनमें प्रतिबिम्ब परै बहुधाई ॥ तिनते कछु सुंदर आजुहि सोहै ॥ कहती यह देखि तिया मन मोहै ॥ ६३ ॥ दोहा ॥ दहन शमन सलिलेशकी, दूती दई निकारि ॥ वचन रचनसों तिन जऊ करी बडी मनुहारि ॥ ६४ ॥ देखि अनादर आपनो, दूती भई निराश ॥ नल दमयंती व्याहकी, फेरि धरी चित आस । ६५ ॥ प्रद्धटिका ॥ दमयंति लखी जब सुचित धाम ॥ उठि इंद्र दूतिका किय प्रणाम ॥ कर जोरि करी विनती अपार ॥ मन मुदित भई सखियाँ हजार ॥ ६६ ॥ दूती ॥ अ० ॥ लिपि देवलोककी भूमि थान ॥ पढि सकत कौन ऐसा सुजान॥ यहिते मोहिं पठयो है सुरेश॥ तेरे समीप कहिकै सँदेश ॥ ६७ ॥ करिकै कृपा दृग कोरहेरि ॥ धरि काननेकु यह विनति मेरि ॥ कहि कंठ अंग मिलिकै सुरेश ॥ तुअ कुशल क्षेम बूझी सुदेश ॥ ६८ ॥ तन जग तेरे अनुराग तोम ॥ संदेश कह्यो इक रोम रोम । तुव विरह शचीपति भयो दीन ॥ निशि द्यौसरहै तन मन मलीन ॥ ६९ ॥ सवैया ॥ ज्यों अकुलाइ उठै जबहीं तबहीं लगि आइ कहै यह जासो ॥ भीम महीपतिको चलिकै नहिं माँगत क्यों दमयंतिहि तासो ॥ ह्याँ लगि आइ सकै नहिं लाजसों ह्वै न परै कल बागतमासो ॥ साइ गरो पुरहूतको प्रेमिनि बंधि स्वयंवर फूल हरासो ॥ ७० ॥ दोहा ॥ क्षीरधि मधि सुरसी कढी, या अनुराग निमित्त ॥ फेरि मथन जन वै करैं, याके व्याह सुचित्त ॥७१॥ चंचरी ॥ तीनि लोकनमें बड्यो दिवहै तहाँ सुर जानिये ॥ है बड़ो तिन माहँ बासव वेद बात बखानिये ॥ दास होन चहै चहौ तुव रीतसों अनुरागकी ॥ धन्य राजकुमारितू ठकुरायनी अनु-

रागकी ॥ ७२ ॥ **सोरठा** ॥ शत मखको पदपाइ, करत खुशामदि रावरी ॥ मानिलेहु करि भाइ, भौंहलास लीलाललित ॥ ७३ ॥ **कवित्त** ॥ देवनदीतट नंदनबागमें जाइ सोहाग विहाग विहारौ। घौर जेठानी मिलौ लक्ष्मी तुम पैन्हिके फूलनके बलिहारौ ॥ चातुर सुन्दर चोपभरयो तहां देवरु कान्ह हँसोरु तिहारो ॥ मान मरोरि शचीको अहै तुम ये मुखराज-कुमारि निहारौ ॥ ७४ ॥ **मायाछंद** ॥ लीलाहीसों बासवजीमें अनु-रामौ ॥ तीनौ लोक पालत नीके सुखपागौ ॥ जो जो चाहौ तुम वासों लीजौ ॥ कीजै मेरीओर कृपासो सरभीजौ ॥ ७५ ॥ **प्रमिताक्षरा** ॥ नित पूजि चित्त परणामकरौ ॥ जिनको सुध्यान जियमाहँ धरौ ॥ करिहैं प्रणाम तुमको सुरवै ॥ विधि इंद्रसंग जबतौ जुरिवै ॥ ७६ ॥ **दोहा** ॥ करीविनाति करजोरिकै, रचि रचि बैन बिशाल ॥ गुदरानी तेहिदूरिते, पारिजातकी माल ॥ ७७ ॥ अतिआदरसों नृपसुता, पासै धरी उठाइ ॥ पूरी सब आशासुरभि, नल आशा बहिराइ ॥ ७८ ॥ ॥**दमयंतीकी सखी** ॥ **सवैया** ॥ और विचार करौ न कछू अब आपुबड़ी तुमहौ सुखदायनि ॥ काहूं कह्यो यहुतौ समयोगहै मानु सखीहौं गहौं तुवपायनि काहूकह्यो यह उत्तरहै हँसिकै अबहीं कहिये ठकुरायनि ॥ कोऊ कहै यह मंगलकाज कहा मनमौन गह्योहै गोसायनि ॥ ७९ ॥ **दमयंती** ॥ **इंद्रमाला** ॥ हौंतो वचन अधीन तिहारे मोहिं कहा कहिआवै ॥ सुनिकै मुदित भई सब सखियाँ दूती मोद बढ़ावै ॥ देखत खड्यो तमासा भूपति रूप अनूप लोभान्यो ॥ मिली न प्राणप्रियामोंको सुरदूत काज नहिं आन्यो८०**सोरठा**॥दमयंती मुसुक्याइ, अधरकोर उज्वल करी॥ ऊतरको समुहाइ, मालाको परिणाम करि ॥ ८१ ॥ **दमयंती प्रद्धटिका** ॥ तुअवर्णे बासव गुण उदार ॥ यहु कह्यो परम साहस अपार ॥ को इन्द्र बड़ाई करन योग ॥ कछु देव बखानत वह प्रयोग ॥ ८२ ॥ जोजंतु जालके चित्त होइ ॥ सब जानि जात सर्वज्ञ सोइ ॥ तेहि उत्तरदीजै कौन भाँति ॥ जेहि होइ आनि मम चित्त शांति ॥ ८३ ॥ **दोहा** ॥ जो आई सुरनाहको, नाहिं करै जग कौन॥ मै अज्ञान अपमानवच, कहत समै सुर तौनु ॥ ८४ ॥ **सवैया**॥ दिगपालनके सब अंशमिलैं बहु भू-

पति देव स्वरूप सोहायो ।। तेहिको मिलिहौं करि व्याह उछाह भयो यह वासवको मनभायो ।। कहि चाटु उचाटु करैं कत तैं चित शैल सतीनको कानै चलायो।। नरको बरिहौं डरिहौं न तऊ नलको बरिहौं यह मैं ठहरायो ।। ८५ ।। **रथोद्धता** ।। मैं विचारि पहिलेहि जासुको।। चित्त माहँ पति मानि तासुको ।। इन्द्रव्याह हमको न भावतो।। धीरज सुख जम्र ज्यौं न लावतो ।। ८६ ।। **चौपाई** ।। भरतखंड नव खंडन माही ।। पर पावन वर्णत बहुधाही ।। मैं गृहस्थ आश्रम निरबाहौं ।। पति सेवाको धर्म सराहौं ।। ८७ ।। स्वर्ग लोक केवल सुखसाजै ।। धर्म कर्मकी रीति नराजै ।। घरनि माँह पावत वै दोऊ ।। तजै जानि तिनको नहिं कोऊ ।। ८८ ।। **दोहा** ।। दान दया मष सत्य शुचि, शील साधु संतोष ।। इन हूँ ते सुर मुदित ह्वै, उदित करत नहिं रोष ।। ८९ ।। **संयुत** ।। सुरलोकते क्षितिको गिरे ।। निज छींन पुण्यनिसों घिरे ।। नर भूमिते उतको चले ।। निज वारु कर मणि सों फले ।। ९० ।। **दोहा** ।। गिरत चढत यहि भाँतिसों, सुर नर सब संसार ।। परत दुऔं कर सरकरा, हानि लाभ अनुसार ।। ९१ ।। **प्रद्धटिका** ।। कहि दूति संग इमि अर्ध वयन ।। सहचरिन ओर लखि कोर नयन ।। तब बोलि उठ्यो बातें उदार ।। जनु बाजि उठी वीणा सितार ।। ९२ ।। यह है अनादि संसार सिद्ध ।। तिय पुरुष योग यामै प्रसिद्ध ।। तुम सबै बडी ही हौ अधीन ।। यासों विचारि चित कहा कीन ।। ९३ ।। **तारक** ।। सब जीव अदृष्ट अधीन बखानौ ।। केहिकूमहि काहि उराहन आनौ ।। जड रूप अदृष्ट झुकै तेहि कोऊ ।। सुख के समको फल पावत सोऊ ।। ९४ ।। **मोदक** ।। कोमल ईष न ऊँटहि चाहति ।। ऊँटन कोमल ईष सराहति।। आपनकी रुचि जामहँ पावत ।। प्रीति तहाँ हठिकै उपजावत ।। ९५ ।। **मनहंस** ।। गुण इंद्रके हियेको हरै बहु भाइसो ।। नलको सनेह बढै तऊ चित चाइसो ।। जिमि ब्रह्मको सुखपाइ पूरण मानिकै ।। नहिं चित्त लागत लोगके सुख आनिकै ।। ९६ ।। **दोहा** ।। कीट आदि कैटभ मथन, लगु जगमें यह रीति ।। निज रुचिके अनुसार सब, करति सबनसों प्रीति ।। ९७ ।।

भद्धटिका॥यहि भाँति करचो सबको प्रबोध॥ तजि दयो सब न मनको विरोध ॥ उठि इंद्र दूति शिर धुनि अपार ॥ फिरि चली विलखि मनमें हजार॥९८॥सुनि-छिपे रूप ये वचन चारु॥उर फिरिकि रह्यो नृपको शृंगारु मम मुदित भयो सुखसिंधु न्हाइ॥ दमयंति नेह गुण सों लोभाइ ९९॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड पंडित भूमंडला खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचित्ते काव्यकलानिधौ दमयंती दर्शन नाम सप्तमस्सर्गः ॥ ७ ॥

दोहा–सर्ग आठयेंमें कथा, नख शिखरूप विचारि ॥ वर्णन राज कुमारिको, नल दर्शन निरधारि॥१॥ सोरठा॥ दर्शन मिलन विचारि, प्रथम मनोरथ बल्लवित ॥ देखत राजकुमारि, सो नृप हिय फूल्यो फल्यो ॥ २ ॥ तोटक ॥ पहिले तिय अंगनमें मिलई ॥ पुनि आनँद सिंधु समाइ गई ॥ फिरिकै सुखके अँसुआनि छई ॥ यहि भाँति भई नृप दीठि नई ॥ ३ ॥ मनहरण ॥ भावतीको आनन सुधाधर निहा-रतही उमड्यो उदधि उर भारि अनुरागको ॥ उंचे कनकाचल कुचन चढि गई दीठि पायो अवलंब थलु फलु भाले भागको ॥ मगन भई धौं रूप पानिप पियूष महा उरजद बीच दबी देखि मग्गु लागको ॥ गिरति गिरति चढि तटते गई लिपटि लखत लखत रंगरूपरस रागको॥४॥तोटक कुचके चहुँ ओरन दीठि फिरै ॥ परभा झर चक्रन आनि फिरै ॥ सब ओर लिप्यो मृगमेदमहा ॥ तम हेत भयो दिग भेद कहा ॥ ५ ॥ भ्रमचक्र नितंबिनिसों ढरकी ॥ नलकी तब दीठि हिये उरकी ॥ युग जंघनि रंभ सु थंब बने ॥ थिर ह्वै गहिकै अवलंब घने ॥ ६ ॥ भुजंग प्रयात ॥ धरचोको नाम है नित्र जैसो ॥ कहै मेरहूँ नामयो नेत्र तैसो ॥ मिलै अंगमोसों न क्यों भाति वाकी ॥ लगी पाँइ याते मनौ-दीठि ताकी॥७॥ दोहा॥ नयननसों पीवत छक्यो, आसव रूप अनूप॥ आनँद अद्भुतसों भरचो, तब वर्णन मन भूप॥ ८ ॥ चुलिया ॥ होइ विरंचि मनोज जो कैधौ मेरो चित्त मनोरथ॥ बनै न तौ या भांतिको रूप

अनूपमनो हांस पथ ॥ ९ ॥ गीत ॥ उपजी धराधरसों तरंगिनि है पियूष शृंगारकी ॥ यह पूर योबनको लसै कुच कोकलोक विहारकी ॥ यहि मांहँराजत कामहै निज काय व्यूह बनाइकै ॥ अति अंग मूरति देखिये बहु रंगकी छबि छाइकै ॥ १० ॥ सवैया ॥ कनकाचलकी सरिता सर कंचन कमलके साँचेनसो भरि काढ़ी ॥ सब राकासे अंग अनूप लसैं छहरै छबि एक घटीनहिं बाढ़ी ॥ विधि और स्वरूप तिया जे रची यहि ते तम सौदनिकी मति गाढ़ी॥ तरुणी सुघरै अब जे रचिहै तिन जीतनको यह ऐंठति ठाढ़ी ॥ ११ ॥ सुंदर जे उपमान नये इन अंगनसों सब हारिगये ॥ ये न मलीन भये मनमें तनिकौ अतिही परसन्न ठये ॥ याको बखान करैं कविता द्युतिके रस अद्भुत भाव छये ॥ देहैं बड़ाई बड़ी हमहीं ते यही ते महा सुख मानिलये ॥ १२ ॥ दोधक ॥ देखत मोह करैं बहुतेरे ॥ या उर अवगुण जातन नेरे॥ देखनके भय ठौर नपामै आनि बसै सिगरे गुणयामै ॥ १३ ॥ तोमर ॥ करहाटक काँति कठोर ॥ घिनसी लगै तेहि ओर ॥ केतकी की द्युतिमूल ॥ मुखमेलि छार समूल ॥ १४ ॥ तारक ॥ शिखिपक्षनि सोहत चंद्र घनेरे ॥ याके कच जीतत ताकहँ हेरे ॥ मुख जीतत है शशि एक सोहायो ॥ तेहिते निज ऊपर बास बनायो ॥ १५ ॥ दोहा ॥ याके मुख शशिशोभज्यों, अन्धकार चहुँओर ॥ राख्यो पीछे बांधिजनु, केशपास छलजोर॥ १६ ॥ मनहरण॥ सघन तिमिर घन तार मरकतहार सोहत शृंगारधार सरससमाजके ॥ छहरतछबिछूटि छूटत छुवताक्षिति मोहकैसे मारग विमल सुखसाजके॥ बेलिकी सुवास फैलिरही आसपास दौरि भौंरि गुंजरत पुंज लोभ चोज चाजके ॥ मोतिनसों गूंधे प्राणप्यारीके चिकुरचारु चाबुक लसत तुरि मथन महाराजके ॥ १७ ॥सवैया ॥ कामको चाप कछूक जरचो लखि ईश कह्यो युग टूक नवीने ॥ वेगहि आप विरंचि रची भ्रुकुटी कुटिलै अतिहीं चितदीने॥ कामके चापको कामकरै तिसहूँपर ये तेहिको मत लीने॥ देखतही हियको हठिबेझहि झूमतिघूमि गिरैं परबीने॥१८॥ दोहा॥ या मुखह्वै कर शशितजी, सांवल रेख सुभाइ॥ काम चाप गहि विधु दुऔ, भौंहें दई बनाइ ॥१९ ॥ चर्चरी ॥ तीनिबाणनसों तिहूंपुर

जीतिकै बहुभाइसों ॥ द्वै सरोजनसों रचे दमयंतिके दृग चाइसों॥ भौंहकी धनुपाइ कांड कटाक्षकोरनिसों कढ़े॥ भेदिकै तन त्रान धीरज चित्तमोह महाबढ़े ॥ २० ॥ दोहा ॥ पूरिरहत मोतिमनौ, राते कोर सोहात ॥ याकेसे याके लसत, नयन सांवरे गात ॥ २१ ॥ हरिगीत ॥ जेहिभांति खैंचत रंभकेदल लेत सार सुहाइकै । तेहिभांति कमलनसों लयो गहि रूपसार बनाइकै ॥ तेहिसों रचे यहिके विलोचन लोकनाथ लोभाइकै ॥ २२ ॥ दृग भौंर देखतही रहैं छकि मोह सों सरसायकै ॥ सवैया ॥ या ढिगते जनु नयनशिरी हरिनीन उधार लई सविलासै ॥ मांगिलई तिनको डरपाइ करी कछु चंचल भौंह प्रकासै ॥ ब्याजसों बाढ़ि अनेक बढ़ी तब जाइ चढी लगिदीठि अकासै ॥ कोरनसों विहँसै बतराइ लजाइ करै जुरि जोर तमासै ॥ २३ ॥ दोहा ॥ याके दृग मृग अति चपल, दोरन मिलत सप्रीति ॥ करण कूपकी भीति इत, उतनासीकी भीति॥ २४ ॥ सवैया ॥ सिंसुक फूल न तूललगै शुभ उन्नत वंश जगे गुण भारे॥ छूटि सुगंध रहे चहुँ ओरन भौंरनके गण होत सुखारे ॥ मोरत कोरत चैनथुनी मुक्तागण भूषण संग सितारे ॥ मानिकी वानिसजै अबही यह नासिका देखतही हम वारे ॥ २५ ॥ दोहा ॥ संध्या जनु मुख चंद ढिग, राजत अधर सुवेष ॥ फूलेपंकजमें मनौ, युग ईंगुरकी रेष ॥ २६ ॥ दोधक ॥ ओंठनकी समता नहिं पावैं ॥ विम्बके तीरन चित्त चलावैं ॥ बिंबसदा द्रुम देश विराजै ॥ विद्रुम ओंठनिकी छविछाजै ॥ २७ ॥ सवैया ॥ लालजरी पट ओढ़नी सों सब ओरन बेनी झमी सुथरी है॥ मानहु सूरयकी परभातम पै यक बारहिं आनि परी है॥ मालती माल मिलै मुकुताबिचबीच लरी गुँदिनेह भरी है॥ शीशसुमेर समीप मनौ रस हासशृंगारकी धार अरी है ॥ २८ ॥ शीशते बेनी छुटी यक वारजुसाँवरी नागिनिसी लहकारी ॥ फैलि गयो अँग अंगनमें विष ज्यों मिसुकै हमनेकुनिहारी लालनकी गुँदि मालनसों मन लागत साँचहु हेम निहारी ॥ ज्यों मुख चंद्रसुधा चुहकी कुहकी बतियाँ त्यों भगी भय भारी ॥ २९ ॥ छूटि लिलाट रहीं अलकैं झलकैं विच वीचकली मुकतानकी॥ रैनि अं

ध्यारी मनौ मिलि तारेन चंदपै वारत है सुखदानकी ॥ वेस रिसों उरझी लट एक चलाचल चौर समीर निधानकी ॥ मोर मनौ बरजोर जुरयो गहि ऐंचत नागिनि बैरनिधानकी ॥ ३० ॥ बोरे तँबोलसैं अधरा मनमोहतहै दुगुनी परभाह्वै । आननओप सुधारससागर विद्रुमरंग तरंगचलाह्वै ॥ लालनकी किरणैं सब सूधि सुहावनीरेख सुवेषरही ह्वै ॥ याकी गुणी चतुराई विरंचि विचारिरची अनुरागमईछ्वै ॥ ३१ ॥ ऊपर हाँस लसै झलकै छबि ओंठन भीतर ग्यान तहीसी । हीरनकीद्युति जीरणहोति निहारत सुन्दर रूपवतीसी ॥ माणिकरंग रँगीरसना सुख मानिकै आनि सुवानि वतीसी ॥ दौरति श्वास सुगंधिनसों सब ठौरानि भौंरनि भीर भरीसी ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ सिरस कुसुम कोमल अमल, याके अंग सँवारि ॥ मृदुताकी रचनाकरी, पूरी वचन विचारि ॥ ३३ ॥ सवैया ॥ कंठमें बैठि वजावत वीन प्रवीन सुधारस गावतिवानी । वेईकढैं मुखह्वै अखरा सुवशीकर मोहन मंत्र निसानी ॥ कोकिल मोर मलिंद मराल लजावनकी जुगुतै पहिंचानी । मूरछना उघटैं उतबे इतमोहिय मूरछना सरसानी ॥ ३४ ॥ दोहा ॥ मुखदेख्यो विधु चिबुक गहि, यांकोरच्यो बनाइ ॥ अंगुलिगाड़ गड़ीमनौ, साँवलविंदु सुहाइ ॥ ३५ ॥ सवैया ॥ फूल्यो मनौ परभातको पंकज अंजनबिंदु लग्यो तलताके ॥ रेखकलंक समेटि मनौ शशि बैठिरह्यो हँसि ऊपर वाके ॥ मोहन मंत्र लिख्यो किधौं मैन सुवीच विराजत रूपरसाके ॥ नीलमकी किरचीसम साँवल ठोढ़ीम विंदु लसै नवलाके ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ मोमन मत्त गयंदको, गह्यो चहत चितचाड़ ॥ रूपखेतमें हेतसों, मयन लगाई गाड़ ॥ ३७ ॥ सवैया ॥ श्रवण झुकैं झुमका अतिलोल अमोल जराइ जरे जरबीले ॥ गोलकपोलनपै झमकैं सम कै न सकैं करहाटकुचीले ॥ मोहि गयो मन देखतही उपमा अवरेखत चित्तरसीले ॥ पूरणद्वै शशिसैं मिलिकै उदये जनु द्वै रविरंग रँगीले ॥ ३८ ॥ मनहरण ॥ हेरे सुरति हरत मन मोहितकै मोहनीकै आयरसे बोलत सुभाइकै ॥ हाँसीकी झलक लखियतु है सुभग छबि भरयो अभिमान रह्यो हारन सोहाइकै ॥ श्रुति सुखदेनी गीत गमक प्रवेनी तेरी कंठकी सहज हित ध्वनि सुनि

पाइकै॥ बाणीबीन तोरै तार नरद मिरोरै नहिं बोलै करि सोरै कहुँ कोकिल बनाइकै ॥ ३९ ॥ सवैया ॥ तैसी नचैं भ्रुकुटी लट छूटत साँटचलै मिलि मैन गुनीकी॥ रंगभरी विहँसैं अँखियाँ निरखैं दुरि औ झलकैं वरुनीकी ॥ नेक मिरोरतही थहरैं गतिलै छहरैं छबिलाल चनीकी ॥ वैनन मैनको बैनबजै यह नासिका रासथली नथुनीकी ॥४०॥ कैसे विरंचि रचे कुचये नहिं दीठिसकै तकि पुंज प्रभासों ॥ लालजरी अँगिया पहिरी बरनी न परै गहिरी छबिवासोँ। बाहुलतानमें आनिकसे मोहरान लसैं भुजबंद झबासों ॥ साँझ समय शशिभोरके भान समान छुटैं किरनै छतियासोँ ॥४१॥ बंदन विंदु लिलार लसै रसको बरषै सरसै रँगदून्यो॥भाग सुहागकी लालगदी जगदी विचकुंकुमकी चित चून्यो॥ औरन ऐसी लखीन सुनी रतिसी तरुनी हियमानाति ऊन्यो॥ केशनसोँ उतहोत कुहू इत आनन सों मन लागत पून्यो ॥ ४२ ॥ फूलि रहे दल पंकजपै जनु इंद्रवधूनकी पाँति घनेरी॥ चूनरि चारु मनौ रतिकी रँगि रंग कुसुंम बुटी बहु तेरी ॥ बैठक लाल गदी मनौ कामकी जोरि गुनीन चुनीन चितेरी ॥ बुंदनसों मेहँदी बिलसै मनहाथ रहै नहिं हेरि हँथेरी ॥ ४३ ॥ माणिकसे नख कोरनकी किरणैं सम हीरनके परमानो ॥ विद्रुम अंकुर अंगुरि पानि चुरै रँग सुन्दरता सरसानो ॥ छाप छला मुँदरी झमकैं दमकैं पहुँची गजरा मिलि मानो ॥ जाहिर या कर माँह कर्‍यो रतिको सब जीति जवाहिर खानो ॥ ४४ ॥ गोरे उड़ान रही खुभिकै चुभिकै चित माँह बडी चटकीली ॥ नीलम तार मिही सुकुमार रँगी रचि कंचन बेलि रँगीली ॥ चञ्चल ह्वै मिलि कंकन संग कहै रति पावति यानि रसीली ॥ मूरति सी रसराजकी राजत नवलबहू कि चुरी नवनीली ॥ ४५ ॥ काम विरंचि विचारि रचे सिगरे रँग चम्पक अंग सँवारे ॥ विद्रुम बिम्ब बधूकनसों अधरा नख औ तरवा छबिवारे ॥ कोमल पाँइ मनोहर हाथ औ आनन सुंदर लोचन भारे ॥ फूलेइ फूले सरोजन सों साजि कै कुचमैं कलिका करि डारे ॥ ४६ ॥ फूली रसाल लता तनुता पर पाँति मिलिंदनिकी छबि छाई ॥ कुंदनकी पटुली मृदु ऊपर मानहु अंजन रेख सुहाई ॥ बीस बिशेविषफैलि गयो दृग रोम लता उरमी

दरशाई ॥ पीछे परी छुटि वेणी मनौ उर आरसी में प्रति बिम्बित पाई ॥४७॥चंचल अंचल होत जहीं सजनी जन वीजन पौन डोलाई॥ केसरि रंग तरंग बढ़ी दुहुँ ओर कढ़ी कुचकोर सोहाई ॥ कंचुकी ऊपर जाहिर होति जवाहिरसी छतियाँ छबिछाई ॥ द्वै शशिखण्ड मिले रविमण्डल मानहु फैलिरही अरुनाई ॥ ४८ ॥ चौंसरि हीरनकी उरराजत राछनिसों मुकताविचसाजैं । कण्ठसों हांसी परी छन मानहु फैलिरहे सब बिंदु बिराजैं ॥ छविक्षीरधिते निकसीयह सीतन क्षीरके छीटनकी छबिछाजै ॥ पढ़िमंत्र बशीकरसों छिरके किधौं सीकरमयन स्वरूप समाजै ॥ ४९ ॥ ईश विलोचन पावकसों लपट्यो अँगअंग अनंग परान्यो । नाभि सुधारसकी सरसीलखि झंपिपर्‌यो यहिमांह बुझान्यो ॥ ताते कढ़ी यह धूमलता अति सूक्षम सुंदर रूप बखान्यो। सोइ वरांगिनिके बरनी नवरोमबली मन हेठ हेरान्यो ॥ ५० ॥ बावलीएक अकाशपै राजत कञ्चनतीनि सिढ़ान सँवारी ॥ नीलमणीनकी राहलसै अतिसूक्षम मानहु नागिनिकारी ॥ कंचन कंज कलीयुग तापर है परभा रबिकी छविवारी॥ शारद इंदु समीपरहैं निशि वासर फैलिरहै उजियारी ॥ ५१ ॥ हंसक नाम कहावतहौ तुमपै मधुरीध्वनि बोलि न ऐहै ॥ काननजाइ लगौ विछुआ किति किंकिणियों रसवादु मचैहै ॥ ह्वैरहिहै चपवेरनिकै यहतौ विपरीति कला सरसैहै ॥ श्रवणानिमांह सुधारसनैहै जिती रसना रसना ठहरैहै ॥ ५२ ॥ घांघरे में मखतूल झबाझुकि झूमति डोरि अतूल सुहाये॥ नीबीकी गांठि गुलाबकलीसम सौरभ छूटतहैं सरसाये ॥ छोरनकोर किनारिनकी किरणै चहुँओर छुटैं छविछाये ॥ घूमतघेर घनो गहि फेरत काम मनौ चित चाक चढाये ॥ ५३ ॥ द्वैशशिबिम्ब नितंब बने सु झँपे झमके लहँगा लहकारे। जंघनकी द्युति संघनको लखि कंचनकी कदली गनवारे ॥ चारुकुसुंम पिंडीपिडुरी घन घूँघुर नेवर हैं झनकारे ॥ ईंगुर गोल बढ़ी गुलफैं दुरि दीठिपरें जब नीठि निहारे ॥ ५४ ॥ मोकर कौलनि लाइक जावक बेलि लसै गहिरी परभासों ॥ नूपुरकी ध्वनिको सजिकै सुर गावत गीत सँगीत कलासों ॥ मंदउठाइकै जौलौं छुवै क्षिति छावति तौलौं प्रबाल लतासों॥ राजकुमारिके राजतहैं पद.इंदुकला नख बिंदु सुधासों ॥ ५५ ॥ अं-

बुजचिह्न लिखेबिधिसुन्दर सेवत पांयनको हरषाने ॥ बासरहै सियको निशि बांसर है सरमें सब कमल डेराने ॥ याकहँ तौ पगुकै न गनौं गति के अतिमंजुल भेदवखाने ॥ मत्त गयंद गनौ यहिको यह अंकुश अंकु कहैं सरसाने ॥ ५६ ॥ कमलनके दल सारलिये पुनि रंग कुसुंब घने बहुबोरे ॥ आरसी से उजरे छबिवार विरञ्चिरचे तरवा अतिकोरे ॥ बांधत बाँक न सांकरहै मनौ वाके हिये बहुवार निहोरे ॥ या गजगौनिके पाइँलसैं धुनिपायलकी कहती कछुओरे ॥ ५७ ॥ दोहा ॥ शिखते नखलौं वरणि इमि, धरणि अधीश लुभाइ ॥ निज प्रत्यक्षता होनकी, इच्छा करी बनाइ ॥ ५८ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडला खण्डित खंडल श्रीखांसाहब अलीअकबरखां प्रोत्साहित गुमानमिश्र विरचिते काव्य कलानिधौ दमयंती वर्णनंनाम अष्टमस्सर्गः ॥ ८ ॥

दोहा ॥ नवम सर्गमो वर्णिवो, दूतकाज सुरराज॥ कहिवो सुर संदेशको, रचना चारु समाज ॥ १ ॥ सोरठा ॥ दमयंती टकलाइ, सखी सहित अद्भुत भई ॥ आनँदसिंधु समाइ, देखतही वा तरुणिको ॥२॥ दोहा ॥ देवकाजकोलौ रहै, छिप्यो विरहसंताप ॥ ज्यौँ पलालके जालमें, अनल झारगति आप ॥ ३ ॥ जौलौभैमी नयनशर, नल उर लगैं बनाइ ॥ तौलौं तामें काम शर, शिरलौ गयो समाइ॥४॥ तोमर॥तेहि देखिके दमयंति ॥ नलकी भई मतिवंति ॥ वह ह्याँ कहाँ यह जानि ॥ चुप ह्वै रही पहिंचानि ॥ ५ ॥ दोधक ॥ देखतही केतिकौ सकुचानी ॥ मोहिगई बहुतै मृदुवानी ॥ छाइरह्यो रस अद्भुत ऐसो॥ दीठिपरचो न जुवा यहु जैसो ॥ ६ ॥ तोटक ॥ तुम कौन कहाँ कित आवत हौ ॥ नहिं बूझिसकीभय मानियहौ ॥ लखिकै न रह्यो मनहाथ मुठी ॥ सखियाँ सिगरी भहराइ उठी ॥७ ॥ दोहा॥ बैठी राजकुमारि तहँ, साहस शील सुभाइ ॥ देखि कृतारथ होति नृप, दूत विचारि लजाइ॥ ८ ॥ तारक॥

भरि दीठि लख्यो जहँ प्राणपियाही ॥ लगि दीठिरहै तेहिं अंगन माहीं॥ जब और निहारनको अँगपावै ॥ पहिले निरख्यौं तब अंगलोभावै॥ ९॥ दोधक ॥ छाँडिसकै न लखै अँग जेई ॥ और निहारनको उमड़ेई ॥ देखतही नल होत तमासे ॥ चंचल नयन चलैं नटवासे ॥ १० ॥ दोहा नयननिसाँ पीवत छकी, आशव सुधास्वरूप ॥ आनंदकी लहरी ललित, अवलोकत नल रूप ॥ ११ ॥ तारक ॥ नलकी सुथरी अति सूक्षम भौंहैं ॥ गुणजाल मनौ भवके समसोहैं ॥ तिन माँह, फँसे दृग खंजन वांके ॥ तनकौ न डरें न टरें रस छाके ॥ १२ ॥ प्लवंगम ॥ आनन लोचन पाँइ हाथ जल जोतहैं ॥ नयन मिले अकुलाइ देखि निज गोतहैं ॥ छाइ रह्यो मन मोह महा सुखसों भरचो ॥ जीवत मुक्त अमुक्त स्वाद चितमें धरचो॥ १३॥ सोरठा॥ आवतही उत कोंद, सिंह चालि चातुर नृपति ॥ अद्भुत भरी विनोद, आदरको उद्दित भई ॥ १४ ॥ दोधक ॥ जानत आदरकी परिपाटी । रीतियहै तिन उत्तम ठाटी ॥ जो परणाम करै पग धोवै ॥ सुंदर बैनन ताप बिगोवै ॥ १५ ॥ तोटक॥ निज नयननको तिनुका करिये ॥ तहँ आसन भूमि हिये धरिये ॥ बुझिये सुख बैन भले कहिये ॥ इमि पूजन आगतको लहिये ॥ १६ ॥ दमयंती ॥ संयुत ॥ इत आइ आसन लीजिये ॥ तुम ओर देखत जीजिये ॥ छिन एक ह्यां पगु धारिये॥ श्रमको अयासु निवारिये ॥१७॥ नव कमल कोमल पाँइहैं ॥ कहिये कहाँ लगु जाइहैं ॥ बहु देश पूरण भाग है ॥ जहँ रावरो अनुराग है ॥ १८॥ पतिज्ञारसों वनमें भयो ॥ बहुदेश जो तजिकै दयो ॥ तुमको कहे गुणधामहैं ॥ बहु कौन धन्य सुनाम हैं ॥ १९ ॥ हरि गीतिका ॥ निजबाहुके बलसों तरचो तुम सात सागर चाइसो ॥ सब भाँति भट रक्षित इहाँ पहुँचे तहाँ परभाइसो ॥ यह करचो है अति विमल साहस शूरसार अपारकै॥ वह कौन इच्छित काजहै हमहूं सुनै निरधारिकै ॥ २० ॥ भुजंगप्रयात ॥ फले भाग्यसों पुण्यते नयन तेरे ॥ सुधास्वादुलै रावरी ओर हेरे॥ लख्यो है न यों मयन में देह धारी॥ भई हीन ऐसी भई ज्यों सुखारी ॥ २१ ॥ लख्यो रावरो चारु है रूप जैसो ॥ अदृश्यै

फिरो है पराकर्म तैसो ॥ चहुं ओर छायो तपै तेजनीको ॥ करचो वास है देवके लोकहीको ॥ २२ ॥ सुपथ ॥ दस्र दोइ नहिं एक बखाने ॥ कामदेह नहिं धारण आने ॥ चिह्न चारु तिनते छबि छाये ॥ रूपरा-शि सविशेष बताये ॥ २३ ॥ तोमर ॥ जेहि वंशमें जनु लीन्ह ॥ तेहिको कृतारथ कीन्ह ॥ वहु सिंधुसों अधिकातु ॥ जेहिको भयो शशि तातु ॥ २४ ॥ दोहा ॥ अक्षबन्ध विद्या निरखि, जान्यो देश स्वरूप॥ आदरके कछु वचन कहि, वर्णन करचो अनूप ॥ २५ ॥ आपुहि उठि आसनदयो, करगहिकै बैठारि ॥ अरघादिक पूजन करचो, उदयाचल रविवारि ॥ २६ ॥ दमयंती ॥ गीत ॥ हर नयन कुंड हुतासमै निज देह होमि बनाइ कै ॥ अब मयन ह्वै तुम अवतरे तेहि पुण्यके फल पाइकै ॥ विधिको मनौ द्युति कोष अक्षय येकठो करि-कै धरचो ॥ सियरात देखत रोम रोम विनोद यों उरमें धरचो ॥ २७॥ दोधक ॥ नयन दुऔ कर सायल तेरे ॥ कोटि करैं गतिके अति फेरे॥ राखतहैं शशि आननेरे ॥ वाहनके हित चाहत नेर ॥ २८ ॥सोरठा॥ राशि करी यक ठौर, तुम सब जग परभानकी ॥ भ्रमत भ्रमत चहुँ ओर शिलाबीन विधुकर सजै ॥ २९ ॥ चौपाई ॥ मही सफल नरवर तुम जोहौ॥ स्वर्ग भाग अति जो सुरसोहौ ॥ उर्गवंश भूषण तुम जो तौ ॥ सब ऊपर पाताल गनौ तौ॥ ३० ॥या संसार सिंधुमें दूजो॥नल प्रतिबिम्ब रावरो पूजो दोई एक रूप अति रूरे ॥ विधिके शिल्प अचिंतित पूरे ॥ ३१ ॥ उपेंद्रवज्र ॥ बडे भये संसारव चित्त मेरे॥ तुम्हैं प्रभा पाटल रूप हेरे पीयूष संवाद कछूक बातें ॥ सुन्यो चहैं कान तृषालु यातें ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ दमयंतीके अधर नव, जपा कुसुम धनुतानि ॥ वचन काम शर ये हने, विध्यो भूप मनआनि ॥ ३३ ॥ सरसी ॥ निज अनुराग सुधा श्रवणनसों पीवत रह्यो अघाइ ॥ दुर्जन मुख जो वेणु भावतो हित सुख क्यों न सुहाइ ॥ विरह भार संताप दावि हिय धरम धुरंधर धीर ॥ खोल्यो स्रोतु पियूष सरसरस बोल्यो नल गंभीर ॥३४॥ नल ॥ नीलस्वरूप ॥ देव समाज हते हम आये ॥ चारि दिगीशन ठेलि पठाये ॥ आपुन कोउ संदेश कहे हैं॥ ते हिय माँह बनाइ लहे हैं॥३५॥

जोकिरपा करिके सुनियेजू ॥ मोहिं कृतारथ कै गुनियेजू ॥ आदर एक यहै बहु तेरो ॥ वैन प्रमाण करै जब मेरो ॥ ३६ तोटक ॥ जबते तुम बैस कुमारि भई ॥ सुकुमारि महाराति रूप छई ॥ तबते सुर चारिन चैन गहैं ॥ तुव सेवकता चित माँह चहैं ॥ ३७ ॥ सुरनायक औ सलिलेशसही ॥ यमराज हुताशन प्रीति कही ॥ शर पंच प्रपंचनमें परिकै ॥ अब तौ शरणागति हैं डरिकै ॥ ३८ ॥ तारक ॥ नवयौबनसे सबये नृप दोऊ ॥ अबतो तन राज करैं बलि ओऊ ॥ अवलोकि दुराजु भयो मनभायो ॥तिनको चित धीरज मैन चुरायो॥ ३९॥ अब रावरीय तिनके मन आसा ॥ नाहिं पालत हैं अपनी तिय आसा ॥ तुव यैाबनके संघहीन ज्योंहै ॥ अनुराग बढ्यो अति वासवकोहै ॥ ४० ॥ सवैया॥ इकबार महानिशिमें अकुलाइ गयो दिशि पूरबकी रजधानी॥ पूरणचंद उदोतकरचो चहुँ ओर छुटी किरणैं सरसानी ॥ देखतही विरहागिबही उरसूखत सूरयकी मतिआनी॥ कैकै हजार विलोचनलाल कराल चितौनि तकै अभिमानी ॥ ४१ ॥ दोहा ॥ तीनि नयनके वैरसों, काम भयो यहि भाइ ॥ सहसनयनके वैरसों, कौनदशा ह्वैजाइ ॥ ४२ ॥ स्वागता ॥ इंद्र रीझ नहिं नंदन माहीं । शूल तूल पिकबोल सुनाहीं ॥ भाल इंदु अपराध विचारे । ज्योंडेरात शिवओर निहारे ॥ ४३ ॥ अन्धकार चहुँओरन छायो ॥ काम बाण रजसों उपजायो ॥ ह्वैरही सुरैनि उजेरी ॥ सांचुकीन पिकबानि घनेरी ॥ ४४ ॥ लक्ष्मीधर ॥ शक्रको हाथही हाथराखै जहीं ॥ और ते औरलै सेजसाजैतहीं ॥ औरके दारिदं जेहरैं वातसों॥ तेभये दारिदी रूखहे पातसों ॥ ४५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जबै कामके चाप टंकार छूटैं ॥ तबै आइकै इंद्रके कानफूटैं ॥ प्रबोधै भलीभांतिसों जीव जैसे ॥ सुनै कौन निर्वाण संवाद ऐसे ॥ ४६ ॥ मालिनी ॥ मदन अनलपीड़ा क्षेमको तोरिलीजै ॥ कमल नवकलीलै सेजको साजकीजै ॥ सरस मधुर मैंहूँ स्वर्णदीमें प्रकाशी ॥ शिशिरऋतु सरीखी छाय रीषी उदासी॥ ४७॥ भुजंगप्रयात ॥ सुनासीर यों भांतिहै देहछामें ॥ रहै रोजसंतापसों मूरुछामें॥ न जानै सुखौ दुःख औ शीत घामे ॥ रहै प्राण जोरावरी रीझ यामे ॥ ४८ ॥ दोधक ॥ याचक जा तनुको निजपूजे ॥ मूरति जो

शिवकी कहि दूजे ॥ सोउ दिगीश तुम्है चितचाहै ॥ जाजग पावक नाम सराहै ॥ ४९ ॥ तोकहँपाइ मनोभव ऐसो ॥ ताप करयो तियको तनु तैसो ॥ आपुन तापहिको दुख पावै ॥ वा उर औरन को नसतावै ॥५०॥ दूती ॥ झूलना ॥ हर नयनमें वसि आगिही इन देहह्यो जब मार ॥ तेहि कोपसों तिन शुद्ध ह्वै तब कह्यो वैर विचार ॥ अबरावरे तिरछे-विलोचन में वस्यो सुखसार ॥ तनु जारि छार करयो हुतासन यों भयो उद्धार ॥ ५१ मोदक ॥ काम खस्यो शर फूलन मारत ॥ भेदिहि पोसत टूक न पारत ॥ होमहुमै कोउ फूल चढ़ावत ॥ दीखिशिषी हिय मो ड-रुपावत ॥ ५२ ॥ सवैया ॥ ईंधन कामकरयो हियरा तेहि माहँ मृणाल लता लपिटाई ॥ आगि अनंग मनो सुलगी निकसी नवधूम शिखा छबि-छाई ॥ ऐसे जँजाल परयो विरहावश वेहद व्याकुलता सरसाई ॥ बार हजार करी विनती पर रावरी मैन कछू रुचिपाई ॥ ५३ ॥ नीलस्वरू-पक ॥ चंदनकी दिशिको मन भौंतौ ॥ जासह सूरय है युतरौंतौ ॥ वा यमराज धरयौ चित तोमै ॥ धीरजकामसिखी हम होमै ॥५४॥ सेवत हैं मलयाचल ताको ॥ नील प्रवालनके रचनाको ॥ जे दुखहू नहिं छाँडत सेवा ॥ जानत प्राण तिन्हें नरदेवा ॥ ५५ ॥ अंग सबै तेहिके हित लागे ॥ मानहु काम सुकीरति जागे ॥ कैतेहि बाहु प्रतापनिछाये ॥ तो विरहानल जोर सताये ॥ ५६ ॥ तोमर॥ इमि है भयो यमदीन॥ निशि द्यौस चैन नलीन ॥ अब रावरी मति पाइ ॥ तेहि सों कहे हम जाइ ॥५७॥ सवैया ॥ केसरसी जहँ फूलत साँझको वा दिशिको पति सुंदरु जो है ॥ चेतु प्रचेतहुको तुमहीमें लग्यो निशि वासरही मनमोहै ॥ यों बड़वानल तापकरै न सदा बिच सागरके बसिबोहै ॥ ज्यों परताप करै जल पालक पंक भयो सब सूखत सोहै ॥ ५८ ॥ प्रमाणिका ॥ मृणाल दंड जो धरयो॥ हिये विचारसो करयो॥ मनोज बाण जे भरे ॥ हजार छिद्र ये करे ।५९। हरिगीत ॥ यहि भाँति देव त्रिलोकके पति शरनि आवत रावरी ॥ निज चरण सेवकताचहैं तुव रूप सोभ सुधाभरी ॥ तुव नयन बंक हथ्या-रलै अति दर्प दर्प कुयों करैं ॥ सुरलोक माँह अलोकलागत कौन को न हियो जरै ॥ ६० ॥ चर्चरी ॥ भोर रावरहै स्वयंवर लोकमें

चर्चांचली ॥ सारधार सुधापरी चहुँ देवका नभिमै भली ॥ रावरे मृदु ओठके रस स्वाद लोभहिसों भरे ॥ देवलोक विमान मारग त्यागिकै क्षिति अवतरे ॥ ६१ ॥ है नजीक वहौ जहाँ क्षितिमे विभूषित हैं खरे ॥ मोहि भेजि दयो इहाँ ढिगरावरे निहचे धरे ॥ हैं सँदेश कहे कछू तिनको कहों अब चाइसों ॥ आपहू सुनि लीजिये करि प्रेम पूरण भाइसों ॥ ६२॥ सवैया ॥ पीन उरोजनिसों मिलिकै इक एक करी विनतीहै जुतेरी ॥ मैनकी मूर्छा आनि जगै जब एक तू जीवनमूरि घनेरी ॥ केतक दिवसनि लौं तरसै दृगप्यास स्वरूप रहे भरि तेरी ॥ ह्वै परसन्न भुजागल मेलि सजौ परिवेषकी रेष सुफेरी ॥ ६३ ॥ चर्चरी ॥ काम ताप तुषारसे दृगको रसों हँसि हेरिले ॥ दूरिकै तन तापको उर मैन पीरनिबेरिले ॥ देविराजति है वृथा हम काम बाणनिसों जरे॥ और ठौर नहै हमै अब रावरेतकिपाँपरे ६४।सवैया ॥ यांचतहैं तुमको नृपकांर हजारनकी विनती अनुरागे ॥ पै हमको यह आशरो एक जु आइ तिहारे हैं पाँयनलागे ॥ जो चलचूक गनौं कछु यामहँ तौ यह न्याउ अनंगके आगे॥ ज्योंजियमाँह रही मिलि त्यों अब आइ मिलो छतियाँरसपागे ॥ ६५ ॥ गीतिका ॥ जियमाँह तो कछु हैदया दिवलोकको सुखलीजिये ॥ क्षितिमाहँ जो रुचि रावरी सुखवासतौ क्षिति कीजिये ॥ उपहार फूलनके करौ तुमपै न भावति है हमैं ॥ पग कमल सुन्दर रावरे हम शीश छ्वावनको क्षमैं ॥ ६६ ॥ सोरठा ॥ सुधासरनि कलनाहिं, सुख कैसो अपसरनिमें ॥ रीझै न चन्दनमाहिं, रुचि वन्दन तुव भालपै ॥ ६७ ॥ मदन अचानकमीच, वचि न सकत पीयूषहू ॥ अहे अधर रस सींच, स्वादु सुधासों सौ गुण्यौ ॥ ६८ ॥ घनाक्षरी ॥ केतुसो सहित धरे धनुषमकरजरचोहरके प्रबल नयनानलमें परिकै॥ अब अवतार तेरे मनहींसों पायो पुनि काम तब वेई षटठाढ़े धीर धरिकै॥भौंहनिको चाप गान ताननीके बान तेरे नयनानि सों मीन ध्वजाराखति फहरिकै ॥ कंचन अडोल गोल कुचन गाढ़ोईभयो भेदतु तिलोकजोर जीरन जजरिकै ॥ ६९ ॥ सवैया ॥ शोचतमे निरखी तनुकी द्युति मोहिंरहीं अँखियां अतियेसी॥ गानमें कानि अलिंगनमें तनु नाक सुबासु छुटै मुख जैसी ॥ तुव ओठसुधारसमें रसना गुण

रावरमें मनकी मति येसी ॥ तुम जालकरी करसायल अक्षनि मार शिकारकी रीति अनैसी ॥ ७० ॥ तोटक ॥ यहिभाँति सँदेशनकी अवली । रसना तलमे लिखि मै सवली ॥ फल मोहिं कृपाकरिकै करिये ॥ इनमें सुर एक हिये धरिये ॥ ७१ ॥ दोहा ॥ सुरपति पति ह्वै उचित अति, शमन संग समभोग ॥ अनल अमंगल सों सुमिल, वरुण तरुण तुअ योग ॥ ७२ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ सुर संदेश कथनो नाम नवमस्सर्गः ॥ ९ ॥

दोहा—पंच दूगुने सर्ग में, यह वर्णन उरआनि ॥ उत्तर प्रति-उत्तर वचन, ह्वैहै नल पहिंचानि ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सुनै भौंहके भाइ, प्रगट उदासीको कहत ॥ सुनत तऊ चितलाइ, पिय मुख निकरत सुर गिरा ॥ २ ॥ सुनी अनसुनी कीन, वाणी प्रगट अनाकनी ॥ भैमी परम प्रवीन, नृप सन्मुख नयननिहँसी ॥ ३ ॥ दमयंती ॥ तारक ॥ हमतौ तुमसों कुल नामहि बूझे ॥ तुम औरहि और कथान अरूझे ॥ कहिये यह कौन बडी चतुराई ॥ छलकी रचना रचि आपु चलाई ॥४॥ दोहा ॥ कहूँ प्रगट अप्रगट कहुँ, उत्तर दयो बनाइ ॥ चतुर सरस्वति रावरी, नदी सरस्वति माइ ॥ ५ ॥ तोमर ॥ इमि रावरे सुनि वैन ॥ निहचै भयो चित चैन ॥ अब आपनाम पियूष ॥ तेहिकी रही भरि भूष ॥ ६ ॥ लीला ॥ रत्ननायक हो भये यह कौन है वह वंशु ॥ दूरि भागत है तमोगुण देखि ज्यों रवि अंशु ॥ छाँडिकै छल स्यान ये कहिये कृपा करि हेरि ॥ ह्वै रही चुपचाप आपन नई नयनानि फेरि ॥ ७ ॥ नल ॥ नंद ॥ कुल अभिधान हमारे बूझहि जौन ॥ कहि यतु है नहिं जानि प्रयोजन कौन ॥ ८ ॥ फल न होइ वह वैन कहे बकवादु॥ अल्पवचन फल अधिक सुवाणि सवादु ॥ ९ ॥ नाम जानिकै करियतु

जग व्यवहार ॥ हम तुम यँहं साधारण सनसार ॥१०॥ मेरो जो कुल समल सुन्यो केहि काज ॥ कुल उज्वल हम दूत बड़ी यह लाज॥११॥ मनहंस ॥ यह जानिकै नाहं मैं कही कुलनाम है ॥ तुम हूँ हठो न तुम्हें कहा यह कामहै ॥ रुचिरावरी बहुतै बड़ी निरधारिये ॥ शशि वंशके हम हैं करीर विचारिये ॥ १२ ॥ इंद्रवज्र ॥ आचारकी बात बड़े बतामें ॥ लीजै न क्यों हूँ मुख आप नामें॥राजारह्यो यों अहितापकारी ॥ मानौ शिखी शारद मौनधारी ॥१३॥ दमयंती ॥ सवैया ॥ जो तुम हो शशिवंश विभूषण संशय तौ नटरै चितमेरे ॥ बोलौंगी हौं हूँ नतौ लौं सुनौ नहिं जौ लगि नामके आखर तेरे॥ साधनकी पदवी तुम दोरत ओरत बैन कहे हम टेरे॥ जासन है न पिछानि कछू मिलि ता सँग कौन करै हित हेरे ॥१४॥ तोमर॥ सुनि बैन ये नलराज॥ मनमें लहे सुख साज ॥ दृग सामुहे करिलेतु ॥ मुसुकाइ उत्तरदेतु ॥ १५ ॥ नल ॥ पद्धटिका ॥ सुनि जलजनयानि मृदुसुधावैनि ॥ अनुरागराशि ममवच नयेनि ॥ करिदेवि सफल मेरो अयासु ॥ सजिये दिगीश सँग रम निवासु ॥ १६ ॥ कहिये सँदेश चितमें विचारि॥ जेहि होहिँ मुदित मन दानवारि ॥ चहुँ देवनके मन शाँति होइ ॥ कहिये विचारि अब वचन सोइ१७ सोरठा॥ ज्यों ज्यों लागत ढील, करत खुशामदिरावरी ॥ त्यों त्यों होत कुचील, चारौसुर चिंताविकल ॥१८॥ वासव नयन हजार, हेरत ह्वै हैं मम डगर॥ धिकमोको संसार, परकारज में शिथिलता ॥१९ ॥ तोटक ॥ पुहुमीपति मौन गह्यो रहि कै ॥ सब देव सँदेशनिको कहिकै ॥ दमयंति रही सुनते रसिकै ॥ चहुँ देवनकी मतिको हँसिकै ॥ २० ॥ दमयंती ॥ चौपाई ॥ जलपतिमो ढिग तोहिं पठायो ॥ औ परेत राजा पहुँचायो ॥ अरु कौशिकके कारज काजे ॥ ऊरध मुख सिखके हित साजे ॥ २१ ॥ दोहा ॥ देव कुमति अति व्यंग्यमैं, प्रगट करी सुकुमारि ॥ अब प्रकाश बोली वचन, रचना चारु विचारि ॥ २२ ॥ दमयंती ॥ संयुत ॥ यह कौन सों शुभ योग है ॥ जगमें हँसी अरु सोगहै ॥ जहँ ताल हंसनसों सने ॥ बगुलीनको तहँको गने ॥ २३ ॥ झमकैं जहाँ तिय ईसुरी॥ तहँ मानुषी कत वा पुरी॥नहिं स्वर्णतो जेहिको

जुरै ॥ तहँ पीतह्यो गहनो फुरै ॥ २४ ॥ **तारक** ॥ सुरभाषतही अपनी मन भाई ॥ उपजी मम काननमें वधिराई ॥ समही सम योग संसार सराहै ॥ हरनी कहुँ मत्त गयंदहि चाहै ॥ २५ ॥ **सोरठा** ॥ कहि कछु ऐसे वैन, कह्यो सखीसों कानलगि ॥ दूत ओर करि नयन, कहि सखि मेरी ओरते ॥ २६ ॥ **दोहा** ॥ देवदूत तुम अति चतुर, पतिव्रतकी गति जोइ ॥ लाजभरी मेरी सखी, कहति सुनै अब सोइ ॥ २७ ॥ **तोटक** ॥ मैं तौ विचारि चितमें नल राज राख्यो ॥ चाहौं न और विबुधै यह साँच भाष्यो ॥ येही सतीन महँ रीति चली सुवेषा ॥ जैसी चलै नघन पाथर पुंज रेषा ॥ २८ ॥ मेरो हियो जो कबहूं नल छाँडि औरै ॥ चाहै अयान पनमें जब नींद दौरे ॥ तो जानिकै वरन काज हमै अरूझै ॥ चारौ दिगीश अपनी मति क्यों न बूझै ॥२९॥ **दूतविलम्बित** ॥ करहिं देव अनुग्रह आपनो॥ मनुजदेह करैं हम जापनो ॥ सहिभीख हमहि यह आशही ॥ नलमिलैं हमको सविलासही ॥ ३० ॥ **प्रद्धटिका** ॥ सुनि और प्रतिज्ञा ममकठोर ॥ दृढ़ करी चित्तमे जानि जोर ॥ जो होइ न ब्याह नलसंग माहँ ॥ तनु त्यागकरौं तौ अनल माहँ ॥ ३१ ॥ गल बांधि फांसिकै अन्त लेउँ ॥ कै जलअगाधमें जीव देउँ ॥ जब होत जंतु आपदा बृद्धि ॥ नहिं दोष होत कारज निषिद्धि ॥ ३२ ॥ जब वर्षामें होतहै, मारग जल संयोग ॥ बाटछांड़ि ऊबट चलत सकल सयाने लोग ॥ ३३ ॥ **सारवती** ॥ मैं तियजानि न ज्ञानलहो। का विधि उत्तर देनकहो ॥ हौ तुमही सबभाँतिभले ॥ सो कहिये जेहि माँह फले ॥ ३४ ॥ **चम्पकमाला** ॥ दूतभयो यासों मनहीनो ॥ बोलिकहो तौ बैननबीनो ॥ प्रीतिसमैं तैं रीतिप्रकाशी ॥ आनि कछू तामें रिस भासी ॥ ३५ ॥ नल ॥ **सोरठा** ॥ अहो नारि सुकुमारि, तुम चतुरै सब जगतपर ॥ मैंहूं लई विचारि, जैसी मति कछु रावरी॥ ३६॥ **चर्चरी** ॥ देवता तुमको चहैं निज प्राणसों सरसाइकै ॥ आपहौ उनते उदासिल कौनसों गुण पाइकै॥ दारि दीरघमैं कहूँ निधिजातिहै न बिचारिकै ॥ मूँदिकौन कपाटतामहँ रोंकिलेत निवारिकै ॥ ३७ ॥ **सवैया** ॥ मानुषजाति न देवहि चाहति आप नवीन कही यह वानी ॥ दूरिक-

री गुरुहू हितते नाहिं तो हियते ग्रहदोष निशानी ॥ देवनकीगति पावत मानुष देवकृपा सबहीते बखानी॥ पारसके परसेबिन लोह न हाटक कांतिगहे मनमानी ॥ ३८ ॥ **सर्भ** ॥ सुरपति तजि तुम नलकाचहती ॥ पुनि निजमति तुम अतुरसरहती॥ कदलि तजत मुख धरि बद बदरी ॥ करम सरतु अकुमति निरदरी ॥ ३९ ॥ **मनहंस** ॥ तप आगिमें तनु होमिकै सबसंतहै ॥ सुरलोकके फल लेनको बिलसन्त है ॥ सुरलोकसों तुम ओर आवत चाइसों॥ तुम ताहि क्यों न चहौ कहो केहि भाइसों ४०॥ **सवैया** ॥ जो तुम बंधनके तनुताजिहौ तौ तुम बासवके घर जैहौ ॥ जो जरिहौ किरिआ करिहौ सब अंग हुतासनके सियरैहौ ॥ जो परिहौ जलमांझ अगाध तबै हियरा वरुणै हुलसैहौ ॥ और उपाय कैकैमरिहौ तबतो यमराजहीलै सुखलैहौ ॥४१॥ **दोहा** ॥ हैं निषेधके विधिवचन, यह नहिं जानीजात॥ व्यंग्य वचन सुनि रावरे, चित चिंता सरसात४२॥ तौ सरस्वति रसभौंरपरि, भ्रमतु महा ममचेतु ॥ कहिदीजै अब लाज तजि, केहि दिगीश सन हेतु ॥ ४३ ॥ **चौपाई** ॥ ऐरावत करि कुंभ सयोगी ॥ जो पूरब दिशिको रसभोगी ॥ सहस्र नयनसों देखन लायक ॥ तो समान सुन्दर सुरनायक ॥ ४४ ॥ **सोरठा** ॥ तेरो संगम पाइ, सजै सकंटक अंगहरि ॥ रहे शची बिलखाई, मनौ नयन कंटक लगे ॥ ४५ ॥ **तोटक** ॥ हमतौ अपने जिय जानि लही॥ तुम पावकसों अनुरागि रही ॥ कुल क्षत्रिय तेजवती तुमहौ ॥ तेहिके अति ओजहिसों उमहौ ॥ ४६ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ तनु ताप जानि तासों उदास ॥ जनि होहु सती तुमहो प्रकाश॥ जब लेत परिक्षा वारवार ॥ शिषि होतु सखी करमें तुषार ॥ ४७ ॥ तुम धर्मशील गुण ज्ञान गेहु॥ किय धर्मराजसों अधिक नेहु॥ मैं कह्यो देखि मनमें विचार यह भयो योग संयोग सार ॥ ४८ ॥ **तारक** ॥ मलयाचलमें निज जाइ बसौजू ॥ मृदु चंदनके वनमें बिलसौजू ॥ ऋषिराज अगस्त्य अशीशन पावो ॥ कल या विधिलौ मिलि मीचनशावो ॥४९॥ **सोरठा**॥ सिरस कुसुम सुकुमारि, पति जलपति तोको उचित॥ ज्यों रजनी विरधारि, मिली शीतकरसों हरषि ॥ ५० ॥ **चंद्रमाला** ॥ तजि वैकुंठ

धामै हरिमिलि कमला संगसोमै ॥ सुर नर नाग सिद्ध किन्नर मुनि हाथ बाँधि पग जोमै । तारत्नाकर माहँ रैनि दिन होइहै बास तिहारो ॥ लहरी ललित केलि जल साजौ मिलिकै प्राणपिआरो ॥ ५१ ॥ **भुजंगप्रयात** ॥ कही दूतवाणी महानेहकारी ॥ दमयंती भई नाहि नेको सुखारी ॥ धरै हाथपै आरसी से कपोलै ॥ सुनीकै सुनी नाहिं यों चित्त डोलै ॥ ॥ ५२ ॥ **सोरठा** ॥ दमयंती अति दीन, भई सुनत ये वचन कटु ॥ दीह सांस दुख लीन, करुणाकी तसवीर जनु ॥ ५३ ॥ **दमयंती** ॥छप्पय॥ भेदत हो ममकान बोल बोलत कटु जैसे । कहि कहि सुर संदेश सुई मन लागत यैसे॥ अर्धजीवमै हुती करी ताहूते छीनी॥ साँचे तुम यमदूत दूतता साँची कीनी॥तुव वदन कढ़त अखर।बिरसप्रगट रूप औरे धरै ॥ परकान कीट ज्यों काटिकै अति प्रचंड पीडा करै ॥ ५४ ॥ **सोरठा**॥ अली ओर करि नयन, ता मुखसों उत्तरदयो ॥ फेरि रुखौंहैं नयन, ऐंचिकरी भ्रुकुटी कुटिल ॥ ५५॥ **दमयंतीकी सखी** ॥ **तोटक** ॥ यहिके जिय लाज करी कसना॥ निहचै यहिकी हमहीं रसना सुनिये सुरदूत बनाइ कहें ॥ हमहीँ यहु उत्तर देनचहें ॥ ५६ ॥ **दंडालय** ॥ निहचै चित जानौ ठीक बखानौ भोर स्वयंवरसाजिभले ॥ चहुँ ओर सभागे उत सब लागे ऐंहैं राजकुमार चले ॥ भूपति नलप्यारो निरखतिन्यारो वरन माल तेहि गेरिगरे॥ युगसों दिन बीतत चित चितुचीततु आपुकरत उपहासखरे ॥ ५७ ॥ **चर्चरी** ॥ आपु आजु बसौ इहाँ तुम ओर देखत जीजिये ॥ जाइगो दिनबीतिकै मिस प्रीतिको रस लीजिये ॥ ही लिखी तसबीर ज्यों खगराज जो नलराजकी ॥ सो मिलै छबिरावरी सम एक शीलसुभाइकी ॥ ५८॥ **नीलस्वरूपक**॥ साँचुठगे विधि लोचन तेरे ॥ जो तुव आनन ओर न हेरे ॥ भोर विलोकि नलै फल लेहौ ॥ भूतल चंद्र सुधाहि अचैहौ ॥ ५९ ॥ **हंसगति** ॥ अब देव सँदेश न भाषौ ॥ यह दंतकथा धरिराखौ ॥ हंम माँगत अंजलि जोर ॥ यह बोलिरही मुख मोरे ॥ ६० ॥ **सोरठा** ॥ ज्ञान दया अरु धर्म, तीनि रत्न जिनहूँ कहे ॥ कहौ कवन यह कर्म, ताहि तजे पावे नरक ॥ ६१ सुनत सुधा से वैन, मदन अनल आहुति परी॥ करि सकु-

चौहें नयन, गनत आपुको अदय अति ॥ ६२ ॥ **दोहा** ॥ बिध्यो मर्म आरत वचन, दूत धर्म थिरनेहु ॥ दीह साँस मुख छोडि नृप, कंपुकंटकित देहु ॥ ६३ ॥ **देवदूत ॥ प्रद्धटिका** ॥ सुर रूख रहत सब इंद्रधाम ॥ वे देत सदा अभिलषत काम ॥ तुमको सुरेश माँगै पुकारि ॥ गहि देंइ तुम्हें तौही विचारि ॥ ६४ ॥ हिय तो विवाह अभिलाष आनि ॥ रचि अग्नि यज्ञ विधि साँचु जानि ॥ निज माँह होमि निज अंश भाग ॥ गहि लेइ तुम्हें निहचै सभाग ॥ ६५ ॥ **तोमर** ॥ यमराजकी दिशि ईश ॥ नित हैं अगस्त्य मुनीश॥ वरदानको संभाव ॥ जगमें प्रसिद्ध प्रभाव ॥६६॥ **दोहा** ॥ तुमको याँचत जाइ यम, जो तिनसों कर जोर ॥ ता तोंको ऋषिराज गहि, देहि तुम्हें बरजोर ॥ ६७ ॥ **तारक** ॥ जलपालक सुरभी बहुतेरी ॥ तुमको तह याँचत जो कर जोरी ॥ तबतौ वहिके घरही तुम जै हौ ॥ सुर शोक करे नलको नहिं पै हौ ६८ ॥ जब इंद्र मने करि हैं निजनारी ॥ करिहैं न शची मखकी रखवारी ॥ तब जूझ स्वयंवर में भरि है जू ॥ नहिं माल गरे नलके परिहैजू ॥ ६९ ॥ गनि हैं न अचारजकी बहु फूंकै ॥ कहिये अपनी नहिं आगि भभूंकै ॥ विनहीं शिषि साखि न व्याह बनैगो ॥ नलसों मिलनो केहि भाँति सनेगो ॥ ७० ॥ जलनायक जो यहि भांति रुठै हैं ॥ क्षिति ते सिगरे जल ऐंचि उठै हैं ॥ केहि भाँति संकल्प पिता करिहैगो ॥ करतौ नलके करपै धरिहैगो ॥ ७१ ॥ इन बातनहीं यमराज हठैहै ॥ अपनो इक किंकर मीच पठैहै ॥ तुमही कहँकै नलको हरिलैहै ॥ सबही दुखसागरको भरिदैहै ॥ ७२ ॥ **दोहा** ॥ ताते मो हितकी कही, चित धरि राजकुमारि ॥ करिये आप दिगीश यक, चारौ माहँ विचारि ॥ ७३ ॥ जहांहोत सुर विघ्नकर, करत चित्तमें रोष ॥ करमें धरो न पाइये, है करमेको दोष ॥ ७४ ॥ नल मिलापकी हानि गनि, सुनत दूतके वैन ॥ वर्षावन लागी कुँअरि, सांवन भादों नयन ॥ ७५ ॥ **सवैया** ॥ कमलनसों अलिनी अलि ज्यों दुहुँनयननसों अँसुआ युग टूटै ॥ काजर नीर मिले झमके परिपीन उरोजनपै छबिलूटै ॥ नील मणीन से चंचल चारु लसैं छिन आछिनसों नहिं छूटै॥ द्वै रवि बिम्बधरे

जनु भालपै बालशनीचरसे चितचूटै ॥ ७६ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ चहुँओर भ्रमत जोवतु अपार ॥ अतिधुनत शीश बगराइबार ॥ तनु उठी लपट बर मदनझार ॥ पियराइगई तजिकै सम्हार ॥ ७७ ॥ दृग बैठिगई सूझत न आन ॥ मतिभई मूढ़ जिमि विगतप्रान ॥ नहिंहोत जानि नलको मिलाप ॥ तब करनलगी बहुतै विलाप ॥ ७८ ॥ **दमयंती** ॥ **द्रुतविलम्बित** ॥ अनलमैन करी अभिलाषमै ॥ सजहि बेगि हमै किन राखमै ॥ निषधदेश चलौं उड़ि बायुसों । समैपाइ मिलौं नलपाँइसों॥७९॥ ऐविरंचि बडे तुम धीरहौ । परमनोरथ भंजन वीरहौ ॥ जियहु कोटि बरीषन जाइकै ॥ पियहु मोतन प्राण अघाइकै ॥ ८० ॥ **तारक** ॥ कहि तूहिय जो तुमलौ हम येहौ ॥ विरहागिनसों कुँभिलाइ गये हौ ॥ शर फूलन भेद तुमै न अनैसो॥ अब आपन वज्र केहो तुम कैसो ॥८१॥ भतिता यह मान भयो हिय राहै॥ अजहूँ जिय ताहि न छोड़न चाहै ॥ यह कौन विचार सजोवसनोहै ॥ युग चारि सती ब्रतमै हँसनोहै ।८२॥ **मनहरण**॥ नयन हमारे पूरे पातक अयनसाँचे जिनके मनोरथ विफल भये आईकै॥ अँसुआ प्रवाहनसों धोवत रहत नित तऊ जरत हजार वार वार अकुलाइकै ॥ चारिहूं दिगीशनके दयाको समुद्र सूख्यो जासों मिटि जात ताप तीनहु बनाइकै ॥ जिनके कटाक्ष एक मोहूं ते सरस कोटि तरुणी तुरंग तिन्हें मिले सरसाइकै ॥ ८३ ॥ **सवैया** ॥ ये युगसे छिन बीततहैं दिन मीच मनोहि कहा सहिहौगी ॥ प्राणपियारो छुटै मन ते न छुटैं मन मोरयहै चहि हौगी ॥ अँसुअनके झरसों निशि द्योस बड़ी वर्षाऋतुकै रहि हौगी। ॥ हेरि यहै सुर सोइ गये बिन काज विलाप कहा करिहौगी ॥ ८४ ॥ ये नलराज तुम्हें चितमें धरि दासी भई निहचे-हम तेरी ॥ देखतु हौ निज नयननसों अब होति है ये कछु जात न मेरी ॥ बागके ताल तलायनमें नित ढूँढि फिरी बहुतै करि फेरी ॥ सोऊ विरंचिलये हरिकै खग डारि दई जिन पाँयन बेरी ॥ ८५ ॥ तेरे वियोग गई तजिकै तनु एक तिया दमयंती बखानी ॥ रावरे काननमें परिहै नल यों चरचा चलिकै सरसानी ॥ आप दया तब तौ करिहौ सुनिकै करुणारसकी यह वानी ॥ अंजलि जोरि कहौं

तुमसों सुधिकै सजियो भरि अंजलिपानी ॥ ८६ ॥ अम्बुज नयनि वि-
योग भरी विरहाकुल बैन कहे दुखभीने ॥ सो मुनिकै उरलागि उड़ी
विरहागिनिकी लपटें अतिपीने ॥ वासवकाज सबै बिसरचो नल राजभये
सुमहामनदीने ॥ बैठिरह्यो तेहि ठौर ठग्यो जनु बावरो सों पियरोरँ-
गभीने ॥ ८७ ॥ नल ॥ सवैया ॥ कारज कौन विलाप करै मृग
लोचनि सोचनि को तजिदीजै॥ पंकज सों मुख छाइ रह्यो मुक्तागण आँ-
सुन विंदुन भीजै ॥ आगे खड्यो नल है यह तौ तसलीम करै किरपाकरि
दीजै॥करि तिरछी दृगकोर निहारि सुधारसप्यास बुझै तब जीजै८८दोहा
विंदुमतीकी चातुरी, तैं जुकरी निरधार ॥ तोहीते संसार यह, निहचैभयो
संसार ॥ ८९ ॥ जलजपातपै इंदु ज्यों, करपर धरे कपोल ॥ अँसुअ-
निके मुक्तानि सों, लसत हार हियलोल ॥ ९० ॥ नयनन जल कज्जल
मिलित, हौंपोछौं निजहाथ ॥ पग पराग रजभूरि हौ, नयननसौं घसि-
माथ ॥ ९१ ॥ त्रिपदी ॥ मानकरौ तुम जोपै ॥ दोष कछू लखि-
मोपै ॥ तो बहुतै अनुरागौं॥ हौं तुअपाँयन लागौं ॥ ९२ मनहरण ॥
रूप अभिमान भरी बोली धौं न बोली बैन नयन सौं निहारे होत कौन
सुअयासु है ॥ कलपलता है तैंहीं पावक सपा है सब मोको दीठिदान मैं कृप-
णता निवासु है॥मधुर अधरकोर कीजिये विहँसि सित भौंहकी ललित लोल
लीलागति लासु है ॥ कीजियै हुकुम मोहिं अरज महेशजूकी चरचाको करौ-
नेह चरचा प्रकाशु है ॥ ९३ ॥ सवैया ॥ आसनकी वर्षाऋतुको तजि
सादरकै मुसक्यानि जुन्हाई ॥ लोचन खंजन खेलकरैं मुखपंकज कांति
चढै सरसाई॥ सारसुधारस केलि कथा कहिये ममकाननि मानि मिताई॥
चम्पकसे तनु अंक अभूषण ह्वैमिलि कण्ठकी मालसुहाई ॥ ९४ ॥ काम
नराचनिको ठगिबो सबु तैं मृगनयनि सिख्यो सरसान्यो ॥ ज्योंमिलती
हियभीतर त्यों तनु बाहिर भेंटनको अकुलान्यो ॥ तेरोइ रूप अनूपछयो
मन नयननको बहुकोचु बखान्यो॥ मार न मार लगै किन बाणनि प्राण-
नि मैं नकहूं डर आन्यो॥ ९५ ॥ हंसगति॥ तुअ ओंठनको रस चाहौं॥
मधु सीध सुधाहि सराहौं ॥ गिरिशृंग उरोज बिलासौं ॥ नय इंदुकला
परकाशौं ॥ ९६ ॥ मनहरण ॥ मनमथ मानको निरतु तैं करतिं नित

रोमावलि नवल ललित सूतधारीहै॥ तेरे अंग हारमें सरसरुचि नायककी शीशफूल द्विजैराजहूँको हाँसकारीहै ॥ नवरसभाव अनुभावके भवननीके लोचन अनतगति चतुर सचारीहै ॥ अभरनतार सुकुमार ये बजतवीन मोहत प्रबीन तैं नबीन बैस खारीहै॥९७॥ शोभनसुरेष अठबरगुसुबेष लिख्यो मृदुलअधरपर तेरेविधिचाइसो॥ लगनभली मै लयो तीतनमनोजराज भयो मनभायो काज सरल सुभाइसो॥ लगत दशनछत रोचना तिलक ताहि करोंमें बनाइ सब अंगनि बनाइ सो ॥ जीतिकै सुरतरौनि प्रीति कै मुदित मन गहि गहि पांइ जाइ मिलौ रसराइसो ॥ ९८ ॥ **मृदुगति** ॥ बलि हँसि मृदु वैनि ॥ हम पै करुन करि ऐनि ॥ रस अधर चाखि अभेव॥हम करैं उरसिजसेव ॥ ९९ ॥ **दोहा** ॥ ज्यों गिरिजा गिरि शयनकी, शीत करिनकी रैनि॥ हों नल हौं ताकी तुही प्राणसजीवनिऐनि ॥ १०० ॥ **तारक** ॥ विरहाकुल बोलि चुक्यो यह वानी ॥ पुनि चेत भयो मनमें मति आनी ॥ सुनि ज्यों लगि चित्त विकारही जाने ॥ तब रोंकि रहे मनमें पछिताने ॥ १०१॥ नल ॥ **प्रद्धटिका** ॥ मैं करयो कहा ऐसो अकाजु ॥ यह जानि जाइगोदेव राजु ॥ मैं दयो हाइ आपुन बताइ ॥ बहुभाँति रह्यो अवलोकि पाँइ ॥ १०२ ॥ सुरकाज गयो सिगरो नशाइ ॥ सकिहौं न तिन्हें आनन देखाइ ॥ हनुमान आदि जस सेत दूत ॥ उपहास सेत हमहैं अभूत ॥ १०३ ॥ **झूलना** ॥ नहिं आपनी मतिसों कहे हम बोलि वैन असाध ॥ निज जानि हैं यह देवता निज बुद्धि बूझि अगाध ॥ अब देखिये कहिये कहा जगलोग ये यहि काम ॥ सब कहत पालक सों जनर्दन हरति तेहि शिव नाम ॥ १०४ ॥ **सोरठा** ॥ फट तु हियो भरि लाज, सुरसँचोटि याकीलमें ॥है न ओरसों काज, जन मुख पेकोकर घरे ॥ १०५ ॥ होत ज्ञानसों काम, सोई विधि पहिले हरयो देव होत जब बाम, तब सुरहूँ सो होत नाहि॥ १०६॥**तोमर**॥ यहि भाँति सोचि नरेश ॥ करि चित्तमाहँ कलेश ॥ तिनको प्रबोधन काज ॥ तब आइयो खगराज ॥ १०७ ॥ **दोहा** ॥ भयो पक्ष झंकार तब, ऊपर लख्यो महीश ॥ आयो हाटक हंस यह, सोई है विसबीश ॥ १०८ ॥

हंस ॥ भुजंगप्रयात ॥ महिपाल तोमें न नेकौदया है ॥ निराश करचो याहि ऐसो कहा है ॥ सहै कामके शूल यों अंक ओड़े॥ तिहारे विना साँचेहू प्राण छोड़े ॥ १०९ ॥ सारंगिका ॥ यतन करीही रचिकै ॥ सुरपति काजे सचिकै ॥ तेहि पर यों सोचति हौ ॥ तुमन मृषासों रोचति हौ ॥ ११० ॥ मल्लिका ॥ बोलियो मरालराज ॥ साजिकै दुहूँ सुकाज ॥ माँगिकै विदा विनोद ॥ जातिभो विरंचि कोद ॥ १११ ॥ करहंस छंद ॥ नल सुरानि जानि ॥ किय हृदय मानि ॥ करि करि प्रणाम ॥ लखि मुदित बाम ॥ ११२ ॥ नल ॥ नाराच ॥ दिगीशकाज लागिकै कुबोलमैं महाकहे ॥ सुधन्य धन्य देवितैं विनीत ह्वै सबैसहे॥वियोगकीजु आगिसों वच्यो हिये वनाइकै॥ भलो भयो प्रमादु मोहिं भागसों सुहाइकै ॥ ११३ ॥ सोरठा ॥ दोष होत गुण आइ, काहू मिलि काहूसमै ॥ जो लंघनु सरसाइ, बड़ी बड़ाई, व्रतनमें ॥ ११४ ॥ सवैया॥याँचतु हैं तुमको सुर चारौ बड़ी करिकै मनमैं अनुहारचो ॥ मोहुँकसेवकपाँयनको अब चाहत है करचो चित्त तिहारचो ॥ हौ चतुरै परवीनानिमें तुमसों करिये निरधार विचारचो ॥ शूल अतूल बढ़ै पछितात जबै सहसा कछुकाज सँवारचो ॥११५ ॥ बिंब ॥ सुनत नल वैन ऐसे॥ सरस पिकराज जैसे ॥नृप मुकुटभीमजाके॥ सुकृत तरु फूलपाके ॥११६ दोहा॥ उमडि मोद हर्ष्यो हियो, मधुर बोल सुनि कान ॥ ज्यों मधुऋतु शोभा बढ़ै,कूकत पंचमतान॥११७॥सवैया॥ छूटतही नलके छलको दमयंति तजी चितकी दुचिताई॥जाति भयो भय भूल्यो विराग भई अनुरागहिकी सरसाई॥ ता सँग बैठिहि आननखोलि औ बोलि करी बतियाँनि ढिठाई नारिनबेली कि नारिनई नखते शिख लाजके सिंधु समाई॥ ११८ ॥ दोहा ॥ आनँदके अँसुआनिसों, उमहे रोम अतूल ॥ वर्षाऋतु विकसत भयो, ज्यों कदम्बके फूल ॥ ११९ ॥ दोधक ॥ उच्च उरोजनिपै शिरनाये ॥ कन्धर कन्धन नेक उठाये ॥ जानिगई मनकी मति आली ॥ आपनते चरचा हँसि चाली ॥ १२०॥ दोहा ॥ सकल भूप शिरमुकुट मणि, महाराज गुणभौन ॥ सत्यसिंधु सुखसिंधुशशि, तुम समान जगकौन ॥ १२१ चौपाई ॥ सुनी आप मुखते निजबानी॥ पूरीलाज रावरी

आनी ॥ हौं याकी अब कथों बखानो॥ सो सुनि सुखद साँच मन मा-
नो ॥ १२२ ॥ मूरति लिखी रावरी जहां ॥ खड़ीरहै निशि बासर तहां॥
बार बार पांयन शिरनावै ॥ नयननराखि प्रबाह बहावै ॥ १२३ ॥
पृथ्वी ॥ तुम्है सुरमरालही वराणिबात मेरी कही॥ वियोग दुःखकीदशा
दुसहदीह जैसी रही ॥ सुधानिधि सुवशमै जन्मरावरो है सही ॥ मली
मसनृसंसता कहौआप कासों लही ॥ १२४ ॥ छप्पय ॥ तुमसों हारचो
काम सरसतनु काँति प्रकाशौ ॥ मुखसों हारचो चन्द्र चारु चन्द्रिका
बिलासौ ॥ यह ताकी है तिया मोहिंजानत वै दोऊ॥ देतमीचु नियराइ
तापतन पाप समोऊ॥ यहि भाँति भयो मेरो भलो, मोहि तिहारी कै गन्यो
सब अमर सत्य संकल्पहै तौ बनाव मेरो बन्यो ॥ १२५ ॥ सवैया ॥
मोहिं रजाइ सुधाधर अंशनि राखलै चाहत कालिका मेल्यो ॥
यों अकलंकित ह्वै मिलि है मुख रावरो मै सुवृथ[1] सुख मेल्यो ॥ हौं भरी
हौं सुवधू वध पातक तो मुख माँह कलंक लपेल्यो ॥ जो करै पातकसे
बढती उतपातनिसों नित होत ससेल्यो ॥ १२६ ॥ मनहंस ॥ निज
बानदे परसन्न ह्वै रतिराइसों ॥ बहु आनि मोहिं हनै· तहीं अति चाइ
सों ॥ तुम माँह प्राण मिलाइ कै तजि देहको ॥ तब जीतिहौ तुम रूप
पाइ विदेह को ॥ १२७ ॥ सवैया ॥ देवनके गुण वेद बखानत
भेदिनसों शुचिकी चरचामैं ॥ ये तुमसों अनुरागि रह्यो जनु ताहि
कहातनिकौ मन भामै ॥ प्रातबढाइ करे करजोरि सबै तपसी रविकी
महिमामै ॥ चन्दहि देखि अनन्दित होत कुमुदिनीके कछु कामन
आमै ॥ १२८ ॥ वंशस्थ ॥ हथ्यार धारी व्रत ये सदा धरैं ॥
डरै सुनासीरहुसों तिह्नै भरैं ॥ प्रसून नाराचन काम जो हनै ॥ न
मोहिको राखत हो कहा गनै ॥ १२९ ॥ मनहरण ॥ हमतौ तिहारे
चर्णनकी शरनि गहि ताहि मारचो चहत मदन निर्दई है ॥ ताहि कहा
छोडत हौ देवता स्वरूप जानि देवतानि जानै वा चंडार गतिलई है ॥
ताहीके बनावत विषम ये विशिष मधु कुटिल कठेरो मतितासों मिलि
गई है ॥ दोषी औ अदोषीसों भलाई औ खोटाई करे होत अनरथ बात
वेद निरमई है ॥ १३० ॥ छप्पय ॥ स्वयंवरकी राति आप रुचिसों

अनुरागै ॥ करचो साँच तुम दूत पाप तनिकौ नहि लागै ॥ तुम मोसों मिलि यज्ञ साजि देवन सुख देहौ ॥ पूजन दान विधान गान गुण वेद बनै हौ ॥ यहि भाँति हरषि हिय सकल सुर सुरपुरसहित समाजसों ॥ नहिं देहैं तोहिं उराहनो वदन मौनधरि जालसों॥१३१॥ **शार्दूल विक्रीड़ित** ॥ आवैं क्यों न इहां स्वयंवर बने चारो देवता॥ हौं तोको बरिहौं बनाइ उनकी कैके बडीसेवता ॥ आवेंगे करुणानिधान उनको मोको दुखीजानिकै॥ वेनाहीं तुमहौ काम तिनहो येसी करी खानिकै ॥ १३२ ॥ **प्रद्धटिका**॥ यहि भाँति देखि तेरी सबीह ॥ इमि करति विलापनि दीह दीह ॥ बिच बीच मोन मर्याद ओलि ॥ दियं सुधासार भूषणहिखोलि ॥ १३३ ॥**दोहा** ॥ मन्मथ अनुचर रावरो, साँचो चोर चँडार ॥ वनबासी मधु मित्रकरि, चित्त चुरावन हार ॥ १३४ ॥ भैन उपनिषदमें दयो, याको तुम्हें सुनाइ ॥ आवै इच्छा रावरी, सोई बनै बनाइ ॥ १३५ ॥ **दोधक** ॥ दमयंति यकंत कही यह बानी॥ विश्वास सुधारससों लपिटानी ॥ तुम देवनसंग स्वयंबर आवो ॥ तिनको निहचै करि वैन सुनावो ॥ १३६ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ तब करचो नृपति यह अंगिकार ॥ शिरनाइ सकुचि यह बार बार ॥ पुनि विदाभयो करिकै विनोद ॥ रथसाजि चल्यो सुरपथ निकोद ॥ १३७॥ युग चारिभये सब रैनियाम ॥ अति दुसह विथा तनु करीकाम ॥ यहिते दयाइ मानौ विरंचि ॥ सब रैनि त्रिजामा कीन संचि ॥ १३८ ॥ **सोरठा** ॥ भयो जो कछु व्यवहार, आइ नृपति बिनयो सकल ॥ जानिगये तब सार, भये उदास दिगीश सब ॥ १३९ ॥

इति श्रीप्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडलाखण्डल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचित्ते काव्यकलानिधौ नलपरिचयो नाम दशमस्सर्गः ॥ ६ ॥

दोहा ॥ कथा ग्यारहें सर्गमें, राजस्वयंबर ठाट॥ राजनको आगमन पुनि, नगर ग्राम वन बाट ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ स्यंदन साजि कुमार

सब कुलीन आयेघने ॥ सुन्दर शूर उदार, चतुरस्वयंबरको सरुचि ॥२॥ **सवैया** ॥ कौन न मैनके बान बिँध्यो अरु कौन कुमार चल्यो अकुलाइकै ॥ कौन न मारग पूरि रह्यो हय मत्त गयंदन सों सरसाइकै ॥ कौन पहार न चूर भयो दलिकै न गयो वन कौन बनाइकै॥कौन न सागर सूखि गयो अरु कौन दिगीश उठ्यो हहलाइकै ॥ ३ ॥ **तारक** ॥ तेहि लायक व्याहनको मतिचाली ॥ हठसों हरिलेन चले अपचाली ॥ जन औरतमासेहिकी रुचि दूनी ॥ पहिचानि परे दशहूँ दिशि सूनी॥ ४ ॥ **गीत** ॥ यहि भाँतिसों सबही भरी नृपसैनभीरन सों भली॥छुटै शीशते तिल नाल है तल यों रही गसिकै गली॥ तेहि माहँ जो तनिकौ चल्यो कोउ आगेही सरसाइकै ॥ दमयंति व्याहिलई मनौ वहु यों रह्यो सुख पाइकै ॥ ५ ॥ **दोहा** ॥ नगर बड्यो कौतुक भयो, उठीं नारि भहराइ॥ लखैं दरीचिन में दुरी, तब वर्णे सब भाइ ॥६॥**दोधक**॥ रोंकि रहे मग लोग अगारी ॥ देतधका बहुतै पिछवारी ॥ अंगन अंगगये मिलि ऐसे ॥ यंत्रन बीच चपे जन जैसे॥७॥ **मनहरण**॥ दिशि दिशि हूँ ते दिनकरसे दिपाते दीह राजनिके दल चले कुंडिननगरको ॥ धुँधुरिके पटल सघन परि पूरिरहो समुद्र सुखाने सोच बढ़त सगरको॥ तजिकै दिगीशन दुहागिलकै दीनीदिशि मेले ह्वै वदन सहैं शोककी रगरको ॥ डगर डगर पुरवासिनसों मिलि रहे जाने न परत गये बगर बगरको ॥ ८ ॥ सवैया ॥ भीर भरी चहुँ ओर खरी थकि राजनकी सब फौज घनेरी ॥ उच्च पताकनसों नगरी करु फेरि बुलावत है बहु तेरी॥ हाथिनके हलका गण मंडि भई नभ ज्यों वसुधा घन घेरी ॥ चञ्चल वाजि खुरीन किरे न भयो बसुधातल ज्यों नभ येरी ॥ ९ ॥**दोहा**॥ आखंडल ओ दंडधर, शिषी वरुण दिगपाल गये चारि येई तहाँ, गये न और उताल ॥ १० ॥ **सखीसों सखी** ॥ **सोरठा** ॥ कहो सखी केहि हेत, आये और दिगीश नाहिं ॥ तीनौ लोक समेत, कौन रह्यो उत्सव सुने ॥ ११ ॥ **सखीको उत्तर सखीसों** ॥ **मारक** ॥ नृप भीम पुरोहित जे ऋषि आये ॥ दिग बन्धन के सब मन्त्र सुनाये ॥ बहुतैरनि जो दिग्पाल कहावैं ॥ तब क्यों करि ता महँ वे पहँ आवैं॥१२॥ दमयंति विलोचन देत हरे॥समुहे नसकैं

चलि ये विचरे ॥ मृगवाहन पौन जु हे दिगराजै ॥ यहि हेत तहाँ वह आवत लाजै ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ स्वच्छ शेल माण देखि, अति कुभाँति तन आपनी ॥ पुण्य जने सुविशेषि, नाहिं आयो दिगपाल तहँ ॥ १४ ॥ हटपद ॥ राजत आधे अंगमें बनिता छवि छाई ॥ ताके आगे होति है केहि भाँति ढिठाई ॥ ऐसी भाँति विचारिके नाहिं देखन आये ॥ महादेव परसन्न ह्वै तहँ आशिष गाये ॥ १५ ॥ धरें कहाँ क्षिति भारको अहि शेष सयानो ॥ नागो दिशि दिगपाल ज्यों सब देव बखानो ॥ खोलि विलोचन वीससे उत्सुक अतिभारी ॥ हेतु बनै नाहिंतासुको पुर कुंडिनचारी॥ १६ ॥ सोरठा ॥ लोक वेद मत जानि, आये तहां विरञ्चि नहिं॥ काहू कह्यो बखानि, व्याह पितामह संग करु॥१७॥ नीलस्वरूपक ॥ आलिनके मुखकी सुनि बातें ॥ आप अनादरकी चरचातें ॥ दूखत चित्त गये मुख मैले॥ चारि दिगीश चलेतेहिगैले१८॥ सवैया ॥ नलके भ्रमसों दमयंति कहूँ बरिहै हमको इन आसन यागे॥ सब चातुर चारि दिगीश तबै नलके सम रूप बनावनलागे॥ कोटि उपाय करें श्रमके क्रमके न शिरी तनिकौ तहँ जागे ॥ झूंठनकी छबितौ लगिहै नहिं जौलगि आवत साँचकेआगे ॥ १९ ॥ तोटक ॥ पहिले मुख पूरण चन्द्रकरचो ॥ परफुल्लित पंकजकै निदरचो ॥ तब दर्पणमें लखिकै न बन्यो ॥ सुर चारहुके उर शोचघन्यो ॥ २० ॥ सोरठा ॥ करि करि थाके गोहि, लही न तामुखकी प्रभा ॥ नलमुख कैसे होहि, कहेवेद सुर अनल मुख ॥ २१ ॥ दोहा ॥ देवनकी छविसों बड़ी, नलतन छबि नित नूत ॥ यहै जनावन काजविधि, मनौ करे यकसूत ॥ २२ ॥ चारौ भये अलीक नल, पहुँचे राज समाज ॥ सबै आपनेकाजको, लजत न छोडतलाज ॥ २३ ॥ तारक ॥ पहुँचे सुर वे नलके कछु आगे॥ नहिं नैसिक देखत सुन्दरलागे ॥ परिजात जबै हरिजू हरिलाये ॥ नहिंचारि सुरद्रुम होत सुहाये॥ २४॥ सोरठा॥ महादेव हियहार, आये बासुकि सेत छवि॥करत शोर संभार, सेना अनुचर रंग सब॥२५॥मनहरण॥मदन अनल झूँक झूंकन झुलाये तूला येतूलतुलनआये आनँदके मूलहैं॥ सातौद्वीप द्वीप दीह दीपति अवनीदिपाति अवनीपाति समूह राजभौननके कूलहैं॥

सुन्दर सदन सौंध बँगला विचित्रबाग आसन सँवारे उपबन फूल फूलहैं। आदरसों आगे ह्वै ह्वै लै लैराज भागलोग भागन सथोग राखे मन अनु-कूलहैं ॥ २६-॥ **बंधूक**॥ कुंडिन बासव आपुहि आये॥ राज समाजनको शिरनाये ॥ आदरके विनती बहुकीनी ॥ इच्छित वस्तु सबै भरिदीनी ॥ २७ ॥ **सोरठा** ॥ कीरति तिया सलील, भूप सदन नृप भावती ॥ दान दया शुचि शील ये रखवारे कंचुकी ॥ २८ ॥ **तोटक** ॥ जिनसों पहिचानि हुती पहिली ॥ तिन संगरही मतिहीन मिली ॥ नृपभीमकरी इकसी अरचा ॥ सब भाषतु वा गुणकी चरचा ॥ २९ ॥ **दोहा** ॥ कहा राउ कह रंक सब, सन्माने नृपभीम ॥ यथायोग सब ह्वै मुदित, गहे आपनी सीम ॥ ३० ॥ **नीलस्वरूपक** ॥ राजसमाज सबै नृप मंदिर माँ-हगये ॥ विस्तृत भौन सुपासन संकटलेश लये ॥ ज्यों मुनिको करसंगत सागर आनि लसै ॥ ज्यों हरिके प्रतिरोम अनेक त्रिलोक बसै ॥ ३१ ॥ **दोहा** ॥ द्वार द्वार उत्सव लगै, चित्रित करे अपार ॥ नभौ भयो भूषित मनौ, नृप भूषण संभार ॥ ३२॥ **सवैया** ॥ बोल विशाल विभूषण सुन्दर हैं जिनके सब चाकर ठाढ़े ॥ जानतहैं अबला जन बालक मा-नहु ये नृप हैं द्युति बाढ़े॥ चामर पौन प्रस्वेद चलै नाहिं देखि समाज रहे लिखि काढ़े॥ छत्रनिसों कुम्हिलात न फूल यों देव नृदेव गये मिलि गाढ़े ॥ ३३ ॥ **संयुत** ॥ निशि माँह सोचाति देखिकै ॥ दमयंतिको अवरेखिकै सब होत पूरण काम हैं ॥ अभिलाषसों अभिराम हैं ॥ ३४ ॥**सोरठा**॥ भोर भये नृप भीम, पठये राज बोलाइ सब ॥ गहैं स्वयंवर सीम, नर भूषण भूषित भये ॥ ३५ ॥ **दोहा** ॥ बैठतही नल राजके, भये राज छबि छीन ॥ सकल कलानिधिके उदै, ज्यों तारा द्युति दीन ॥ ३६ ॥ **सवैया** ॥ राज समाज किदीठि परी नलके पहिलेइ उछाह भरी ॥ बानके देखि अचानकही पुनि भ्यानक भोंह मरोरि करी ॥ इन्दु उयो प-हिले पुहुमी महँ मूरति दूसरी काम धरी ॥ दस्र भयो तिसरो निहचै छ-लकी महिमा बहु भाँति भरी ॥ ३७ ॥ **दोधक** ॥ बोलि उठे उर बुद्धि कुचाली ॥ राजति ह्याँ कैतिकौ द्युति शाली ॥ रोष भरे हँसि बाँह उठाई॥ आस अलीक नली दिखराई ॥ ३८ ॥ **सोरठा** ॥ गुणको दोष बखान

करत औरकी और नित ॥ खेलत सहज सुजान, निज गुण दोष विचार नाहि ॥ ३९ ॥ **तारक** ॥ नित गावत है जेहिको यश वानी ॥ तडितायुत अम्बुज ज्यों सिय रानी ॥ नभ देखत ठाढ स्वयंवर साजे ॥ हरि जू चढि कै खगराज विराजे ॥ ४० ॥ **सेनिका** ॥ आठ ओर आठदीठि दै रह्यो॥लोकनाथ आश्चर्य वै रह्यो॥भूलि विश्वकर्म हूँ सुचातुरी ॥ राजथान देखि चित्त आतुरी ॥४१॥ **चौपाई** ॥ मूरति एक करी हरि लोचन ॥ दूजी उदयाचल मन रोचन ॥ द्वादश तनु रविदश तनु धारी ॥ दशहूं दिशि नृप भीर निहारी ॥ ४२ ॥ **सोरठा** ॥ सुर गिरिकी रजनीश, नितप्रति करति प्रदक्षिणा ॥ तहूं लख्यो विस वीश, हरके बाँये नयन हूं ॥ ४३ ॥ **दोहा** ॥ सबनभते टंटी परे, छूटी वेणी छोर॥ अमर वधूटीरि सभरी, निरखि राज चहुँओर ॥ ४४ ॥ **चर्चरी** ॥ यक्ष लक्षनि सों लसैं सतलक्ष सिद्धनसों भरी ॥ भीर किन्नर कोटि कोटि महर्ष हर्षन विस्तरी ॥ वाल्मीकि बखानहीं निज आदिही कविताकरी ॥ गीरवान-निसाँचरेस गुरुनिहूं महिमा धरी ॥ ४५ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ ये जुरेआइ जे हैं भुआल॥ नहिं भीम बुलाये भूमिपाल॥ निज देखत कौतुक विधिअ-पार ॥ रचना सुचारु त्रैलोक सार ॥ ४६ ॥ विधि धरतुआनि प्रतिमास जोरि ॥ जघटत सुधाधर तोरि तोरि ॥ तिन मेलि रचतु इनके शरीर ॥ ज्यों झलझलात तन हेम हीर ॥ ४७ ॥ **सोरठा** ॥ इन भूपनमें आनि, मिलै दीजिये दस्रजो ॥ परैं न द्वै पहिंचानि, आपसमें किन पचिमरै ४८॥ **दोहा** ॥ ये जे राजतहैं युवा, परम रूपकी खानि ॥ एक मयनके जरिगये, कहा होत जगहानि ॥ ४९ ॥ उच्चमंच शिखरन सुथित, किये भीम करजोरि ॥ मेरुशृंग बैठे लसत, मनौ देवशत केरि ॥ ५० ॥ **चौ-पाई** ॥ देखी राज भीर बहु धाहीं॥ भीम भूप सोच्यो मनमाहीं ॥ ये सब भूपति देवसरीखे ॥ कौनकहै इनके गुणसीखे ॥ ५१ ॥ **दोहा** ॥ कौन सुतहि समुझाइहै, गुण कीरति कुल गोत ॥ कीजैकहा उपाइ अब, भयो विषाद उदोत ॥ ५२ ॥ **तोटक** ॥ तिन ध्यानधरयो हरिको जबहीं ॥ हरिजू परसन्न भये तबहीं ॥ कमलैक्षनि वाणिहिं बोलिकह्यो ॥ उनहूं मनमें अति मोद लह्यो ॥ ५३ ॥ **हरिजू ॥ तो०** ॥ यह राजसमाज सुहावत

है ॥ गुणगोत तुम्हैं कहिआवतहै ॥ इनके तुम जाइ चरित्र कहौ ॥ जगती कंबि कौतुक मोदलहौ ॥५४॥ प्रद्धटिका॥ तब चली वाणि करिके प्रणाम ॥ अवतरीसभा बिच ब्रह्मबाम ॥ शुभ उदरलसत बलि त्रयीरूप ॥ साहित्य लखत लोचन अनूप ॥ ५५ ॥ मुख धरत सोम सिद्धांत चारु ॥ अरु उदर शून्यता बाद सारु ॥ है वर्ण मात्रा दोइ भाँति ॥ सब छंद मनो भुज युगलकाँति ॥ ५६ ॥ सोरठा ॥ जाके चरित अपार, सब शिक्षाके ग्रंथ हैं॥रचना सहज शृँगार, कल्प ग्रंथ आकलप विधि ॥ ५७ ॥ गुण दीरघके भाव, मधुर नदत शब्दावली ॥ सुवरणरूप बनाव, रसना रचि व्याकर्णसों ॥ ५८ ॥ दोहा ॥ ज्योतिर्मय तारा रसमि, भई दंत द्युति मूल ॥ पूरब उत्तर पंथमत, द्विरद छद अनुकूल ॥५९॥सोरठा॥ ब्रह्म कर्मके भेद, द्वै विधि श्रुति विद्याकरी॥ उत्तर जानि अखेद, पर सन उत्तर चरण द्वै ॥ ६० ॥ प्रद्धटिका ॥ करलसत विपंचीसितवेश ॥ निरदै नरची गहिकै गणेश ॥ उरराजत मुक्तामाल लोल ॥ जनु वेदनके आखर अमोल ॥ ६१ ॥ तेहि कह्यो भीम नृपसों पुकारि ॥ मन माँह मोद करिये विचारि ॥ कुल शील दान साहस चरित्र॥ हौं कहि हौं राजनके पवित्र ॥६२॥ सुनि मुदित भयो मन भूमिनाथ ॥ उठि दौरि लग्यो पगनाइ माथ ॥ करि पूजन वाको उचितरूप ॥ अति उच्च दयो आसन अनूप॥६३॥गीत॥तब भीम भूप बुलाइकै हमलीनसों तुरतै कह्यो ॥ इत लाइये दमयंतिको उन शीशपै आयसु गह्यो॥सब देश देशनते महीपन ऐचिबे कहँ जाल है॥ गुणराशि रूप रसाल मंजुल काम चंपक माल है ॥ ६४ ॥ सब भाँति भाँति शृंगार अंबर साजिकै सखिकै चलीं ॥ सुखपालकी असवारकै चहुँ ओरते किरणै रलीं॥ बाजि ताल बीन मृदंग मंगल गीत गावहिँ किन्नरी ॥ जयजीव विप्रबधू पढ़ैं बरविर्द वंदिन उच्चरी ॥ ६५ ॥ दोहा ॥ लागे मग आगे चले, बनिदासिनके यूह ॥ करसुंदर हाटक छरी, टारत लोग समूह॥ ६६ ॥ तारक॥ पहिले सत लाख लखी जब दासी॥ उमड़ी सब राजनके दृगहाँसी॥ सखियाँ रतिसी जब फेरि निहारी॥ तब तो तनुकी सब शुद्धि विसारी ॥६७॥ दमयंतिहि देखिरहे टकलायो ॥ जनु आनँद सिंधु सुधाहि समायो ॥ चमके अच

अंचलगात घनेरे ॥ रचि चित्रनिमें जनु काम चितेरे ॥ ६८ ॥ तोटक सब ओर सुगंधनकी लहरी ॥ अवली अति भौंरनकी छहरी ॥ जिनसों छिपि नेकु न देखि परै ॥ परभा झर चक्रनि चित्तहरै ॥६९॥तारक॥ सब ओर गुलाबनको छिरकायो ॥ हँसिकै सखियान अबीर उडायो ॥ करकंदुक फूलनकी नवलासी ॥ परिहास करैं सुधरै दृगहाँसी ॥ ७० ॥ दोहा॥ निज लोचनको फल लह्यो, सब भूपन तेहि देखि॥ आसव रस-श्रृंगार छबि, कछु वर्णत सविशेषि ॥ ७१ ॥ देखति टेढी भौंहकै, जहाँ जहाँ नरनाह ॥ सखी ओर कर्पूरयों, कस्तूरी परबाँह ॥ ७२ ॥ गीत ॥ मुस्क्यानिकी द्युतिसों दबावति जोन्ह पूरण धारकी ॥ यह आनि औनि सुऔतरी निजबामसी हरिद्वारकी ॥ सब अंग अंगनमें अभूषण रत्नकांति अपारहैं॥ जनुलोक लोचन येलगे जहँईं तहां सुखसार हैं ॥ ७३ ॥ मनहरण ॥ रदनकी द्युति निदरत द्युति तारनकी बदन की कांति रुचि चंदको करकरी॥ केशनसों कुहूके अँध्यारे निरध्यारे ध्यारे शीशफूल परभा प्रभाकरकी लैधरी॥अभिरत गिरत अलिक श्रम सीकरह्वै अलकनि गूंदी मुक्तानकी महालरी ॥ दोऊ ओर चलत चमर अवदात मानौ आस पास नाचैंहंस बनिता उजागरी ॥ ७४ ॥ गरब सरब वह्यो नाकलोगबासिनके देखि अपसरा अयसी ओर गैर नाहिने ॥ याके अवतरे अवतरे भयो नाकलोक भूरिभाग भूमि जामें ऐसीं निधि चाहने॥ याको जैसो जैसो सुनि सुनिरूप दूरिनते आये हम सब याके गुण अवगाहने वाहूते सहस लाख कोटिगुन्यो रूपयाके लखत बनत पै न बनत सरा-हने ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ रस श्रृंगार जलराश, कहूँ लसत पीयूष मय ॥ ताते भई प्रकाश, यह लक्ष्मी लावण्य निधि ॥ ७६ ॥ मुख शशि मुख्य सुयेहु, शशिनभ मैला छनिक पुनि ॥ भौंह चाप गुणगेहु, फूलनको नहिं कामधनु ॥ ७७ ॥ सवैया ॥ ढारनकी युग कुंडलीकै निहचै विरच्यो निज काम निशानो ॥ ओर दुहूँसो कटाक्षछुटै विचह्वै निकसे सुथरे सरमानो॥ धूरि भरचो घन भौंर धरचो तजि फूल दयो धनु कामपुरानो ॥ याहाकी भौंहनसों वशकै जग जीति लयो पचिकै पहिं-चानो ॥ ७८॥ तोमर ॥ विधिकौलछै हिमिमास॥ गहि खंजरीटप्रकाश ॥

तु आनि पावस जोइ ॥ यह दीठिऋपोषतु सोइ ॥ ७९ ॥ कवित्त ॥ दमयंतीके नयन अरु, कमलन सों कछु होत विशेषसो भौंरन बूझै ॥ जनु जानि यहै विधि आनि लिखी पुतरी मिस भौंरन की द्युति सूझै ॥ राति कामके सौंध रचै कुचपै छबि पुंज छुटै नहिं दीठि अरूझै ॥ जिनकी द्युति देखतही चकिकै चकई चकवा झरि आपुस जूझै ॥८०॥ चौपाई मानुष लोक न ऐसी और॥ लखी नकाहू काहूठौर॥ स्वर्ग उरगके लोग निहारे ॥ तहाँ न ऐसे रूप सँचारे ॥ ८१ ॥ सोरठा ॥ यह ऐसी सु-कुमारि, मनहीं सों विधिना रची ॥ हाथ छुये निरधारि, होतो ऐसो रूप क्यों ॥ ८२ ॥ तोटक ॥ नव फूलनसों सब अंग सची ॥ यह काम विरंचि बनाइ रची॥सुर पंचम कंठ निवास करयो ॥ मुख माँह कपूर सुवास भरयो ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ सब ऐसे वर्णन करत, वासव सुरन समेत ॥ अचल चषनि साखि लखिरहे, लहे सरस सुख चेत ॥ ८४ ॥ सोरठा ॥ कारज हेतु बनाव, निज नलको आदेश करि॥ दुष्ट थानिवर भाव, धरयो इन्द्र व्याकरण कर ॥ ८५ ॥ सवैया ॥ भूमिकी मैनका आइ गई यह मंजु मनोहर भूषण साजे ॥ राज स्वयंवरको अवलोकत मंगलके सब बाजन बाजे ॥ आनँदके अँसुआनि छये नलके दृग देख तही अतिराजे॥ जेजे बखान करैं नरनाहते आपनी ओर निहारत लाजे८६ ॥ दोहा ॥ हंसचढ़ी आगे चली, श्रीभगवती अनूप ॥ दौरि लगे वर्णन चतुर तिहुँ लोकनके भूप ॥ ८७ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडला
खण्डित खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबरखाँ
प्रोत्साहित गुमानमिश्र विरचिते काव्य
कलानिधौ स्वयंबर वर्णनंनाम
एकादशमस्सर्गः ॥ ११ ॥

दोहा—सर्ग बारहेंमें कथा, वर्णतहैं अतिचारु ॥ द्वीप पुरी नरनाह सब, वर्णन करि निरधारु ॥ १ ॥ सोरठा ॥ सभा देवता रूप, लखति नयन अनमिष विमल ॥ लाभ काज बर भूप, दमयंती ताको भजै॥२॥

सवैया ॥ तेहि अंग अभूषणमें प्रतिबिंब परैं सबराजनके बहुतेरे ॥ मानौ समाइ गये बहुअंगनि मोहितह्वै निहचै चितचेरे ॥ गाधिकोनन्द मुनीश्वर और कहूँ रचते सुरओक घनेरे ॥ देखत देव विमानचढ़े चहुँओर लसे नभ यों हठिहेरे ॥ ३ ॥ धूपनके परवाह सुगंध हजारन छूटिरहे सबघांई ॥ रोंकिरही रव रंगभरी शुभ भौंरनकी अवली सबघांई ॥ मंगल तुंग मृदंगनके प्रति शब्द उठैं ध्वज चीर सोहाई ॥ सौधनकी अवली जिमि पातुर चातुर नाचकरैं सुँदराई ॥ ४ ॥ **सोरठा** ॥ तब भगवती सुजान, वाणि वाणि बोली विहँसि ॥ चढ़ी मराल विमान, दमयंतीके दाहिने ॥ ५ ॥ **सरस्वती** ॥ **सोरठा** ॥ आये लखि यहिठौर, कोटि कोटि ये देवता ॥ जित चितकी तुव दौर, मनविचारि करि वाहि पति ॥ ६ ॥ लगत कल्प शतकोटि, एक एकके गुण गनत ॥ मनमें लेह अगोटि, जो सुंदर नीको लगै ॥ ७ ॥ **दोहा** ॥ तुअ दरशनकी टकटकी, सहज टकटकीसंग ॥ अमृतपान तुव बदन रस, त्यों इनको इक रंग ॥ ८ ॥ **तोटक** ॥ इनके गिरि आदिहि भूमि दुही ॥ सुर साखिनकी अवलीन पुही ॥ मुक्ताफल भूरि फले बिलसैं ॥ जनु क्षीर पयोनिधि बिंदु लसैं ॥ ९ ॥ **दमयंती** ॥ कर जोरि दमयंति प्रणाम ठये ॥ जनु कमल मुँदे लखि चंदनये ॥ जियं जानाति यों अपराध भयो ॥ डरि चाहति औरहि ठौर गयो ॥ १० ॥ ॥**सोरठा**॥ मैले मुख सुर देखि, जान्यो चरित कहार गण ॥ मृदुल चले सविशेषि, दमयंतीके हुकुम विन ॥ ११ ॥ **चौपाई** ॥ असुर भयंकरतासों पागे ॥ विद्याधरतो अधरस भागे ॥ सिद्ध प्रसिद्ध विराग विचारे ॥ मुनिगणके पग ओरनिहारे ॥ १२ ॥ **दोहा** ॥ एक गंधरवमें नहीं, नेक गंधरव तास ॥ त्यागि सबनि न्यारे चले, करि कहार भव लास ॥ १३ ॥ **भुजंगप्रयात** ॥ लख्यो बासुकी नागराजा सुहायो ॥ लसै छत्र सिंहासनै साजि आयो ॥ बने वेष रूरे करैं सेव ठाढ़े ॥ फणीफुंकरैं चारु शृंगार बाढ़े ॥ १४ ॥ **सोरठा** ॥ जाको जग विस्तार, लोक वेद वाणी विमल ॥ बोली करि निरधार, चंद्रमुखी दमयंति प्रति ॥ १५ ॥ है हरको उपवीत, गिरिजा कुंकुम मिलि अरुण ॥ पाट सूत्र परतीत, वासुकि सेवक सार यह ॥ १६ ॥ **सवैया** ॥ कंकन याहि करैं कबहूँ मणि सुंदर शीश हजार वखानो ॥ याहीसों बाँधैं जटा-

निके जूटनि औ कबहूँ गुणिकै धनुतानौ ॥ आसन बाँधैं समाधि समय शिव साधत योग महा मन मानौ ॥ प्राण समान प्रधान भयो हरके घर बासुकि एक खजानौ ॥१७॥छप्पय॥ एक जीभ हरशीश इंद्र रसको अनुरागे ॥ और जीभ सौस्वाद अधररस तेरो पागे ॥ जानै यहै विशेष जीभ द्वै जाके सोहै ॥सुन्दर शूर उदार देखि तरुणी मन मोहै॥ जियजानि विषम विष भीतिसों, जनि डराहिं चुंवन समै ॥ विधना विचारि पहिले रचे, अधर रावरे अमृतमै॥१८॥सोरठा॥सुनिकै वचन अपार, और ओर हेरन लगी ॥ फन सकुचात हजार, नील कमल मुद्रितमनौ ॥ १९ ॥ गये कहार तुरंत, जहँ बैठे भूपाल गण ॥ मधुकर निकट बसन्त, वनशोभा ज्यों लैगये ॥ २० ॥ प्रद्धटिका ॥ लोकेश नारि बोली विचारि ॥ सखि चन्द्रवदनि थिर रहि सम्हारि ॥ लखि तोहिं चोपसों नृप समाज ॥ निज नयन जन्मफल लहहिं आज ॥ २१ ॥ हरि हर विरंचि जिन किये लीन ॥ शृंगार सार रसके अधीन ॥ शर पंच पंच इंद्रियन छोभि ॥ वह कामकरै आनंदसोभि ॥ २२ ॥ दमयंति देखि ये द्वीप नाथ ॥ नवद्वीपनते आये सुगाथ ॥ इनमें विचारि निज व्याहयोग ॥ मैं वर्णतहौं करि भोग भोग ॥२३॥ यह सघन नाम भूपति सुठारु॥ संग्रामशूर सुन्दरउदारु ॥ जल मधुरसमुद याके सुदेश ॥ पुष्करसुद्वीपको है नरेश ॥२४॥ करिजाइ तहां जलकेलि चारु ॥ वन बाग वीच लीला विहारु ॥ सुरलोक सांच याको सुदेश॥तू शची इन्द्र यहहै नरेश ॥२५॥ द्रुतबिलंबित॥ लसति मूरति चारु विरंचिकी ॥ वट सुमंडलके तल संचिकी ॥ लखत तोहिं अनंदित होइ रहैं ॥ सकल शिल्पिनमें पदबी गहैं ॥ २६ ॥ चौपाई ॥ राज हंस यह कीरति याकी ॥ सेत हंसिनी त्रिभुवनताकी ॥ आश्चर्य एकै चित चाहि ॥ नीर क्षीर विलगावति नाहि ॥ २७ ॥दोहा॥ सुंदर शूर सराहनो, सकल कलाकी खानि॥लग्यो न मन दमयंतिको, नाम अना पहिचानि ॥ २८ ॥ सोरठा ॥ चित सों चतुरकहार, और राज ढिग लै चले ॥ लखि मैलो निरधार, वा भूपतिको वदन शशि॥२९॥ चौपाई ॥ वाणी बिहँसि कही जब बानी ॥ अति विचित्र पीयूष निशानी॥ याहि देखि सखि पंकजनयनी ॥ हव्यनाम राजा मतिपैनी ॥ पढ़त

वंदि याके यशभारे ॥ सकल शब्द जूठे करि डारे ॥ मेरे चरण चरणकित धरै ॥ अर्थ आनि पुनरुक्ति न परै ॥ ३० ॥ दोधक ॥ साकल द्वीप सुदेश बखान्यो ॥ जामहँ शाक महातरु मान्यो ॥ पल्लव जूह दिगंतनराजै ॥ जासु हरी हरिता छबिछाजै ॥ ३१ ॥ मोदक ॥ जामहँ क्षीर पयोनिधि सोहत ॥ वक्र तरंगनि सों मनमोहत ॥ भौंहनकी समता मनमें करि ॥ जाइ तहाँ करिलेह बराबरि ॥ ३२ ॥ सोरठा ॥ क्षीर पान करि थूल, भुजगराज शय्या सरस ॥ ह्याँ सोवत सुखमूल, सिया सहित पंकजनयन ॥ ३३ ॥ तोहिं तहाँ लखिपइ, सीयडरै तो रूप सों ॥ राखै अधिक सोवाइ, चरण चापि हरिको चतुर ॥ ३४ ॥ सवैया ॥ उदयाचल शीश विहार सजौ यहि भूपतिके सँग कै सुघराई ॥ तहँ गैरिक राग करौ दुगुनै पग जावककी मिलिकै अरुनाई ॥ दिनहूँमहँ साँझसि जानि परै लखि भाल पै कुंकुमकी अरुनाई ॥ चहुँ ओर चकोरनि भीर भरै शशि पूरण आनन देत दिखाई ॥ ३५ ॥ सोरठा ॥ तेरो विरह कृशानु, तहँ आहुति भूपति भयो ॥ करचो साँच अविधानु, हव्य आपनो जानिकै ॥ ३६ ॥ प्रमाणिका । सुने सुबैन वाणिके ॥ परे न चित्त आनिके ॥ तहीँ सुदोषु योँ दियो ॥ नइंद्र याचनो कियो ॥ ३७ ॥ अधी शक्रौँ चद्वीपको ॥ सुरेशहै वनीपको ॥ कुमारु बैस मारु है ॥ विरंचि सृष्टिसारु है ॥ ३८ ॥ दोहा ॥ दधिको उदधि सोहावनो, मधिजन पदके जासु ॥ जानौ याको यश जम्यो, तीनौ लोक प्रकाशु ॥ ३९ ॥ प्लवंगमछंद ॥ क्रौँच महीधर महा विचारि विहारको ॥ रम्यबगीचनि बिनोद अगारको ॥ ४० ॥ षटमुखके रस छिद्रनि बोलत हंसहै ॥ मानहु तव गुण गान प्रकाश प्रशंस है ॥ ४१ ॥ नीलस्वरूपक ॥ पूजत जाहि मिलैं फल चारौ ॥ सागर संसृति होत उधारो ॥ सो भगवान सदा शिव सोहै ॥ ताकहँ सेवतदेशसजोहै ॥ ४२ ॥ सवैया ॥ तेहि शैल में काम कलोलकला कुलकेलिकरौ पतिके चित चाही ॥ दधिपूर पयोनिधिके तट माह महीपतिके सँघनीषकी छाही ॥ तुव भाल कपोल उरोजनि पै न रहे श्रम सीकर ये बहु धाँही ॥ दधिके कन जाल मिल्यो लगि मारुतह्वै है सुवासु खवास की नाही ॥ ४३ ॥ तोमर ॥ करि भाँति भाँति न भोग ॥

तुव वाम व्याहंनयोग ॥ यहि नामहै द्युतिमन्त, बुधिवंत गावत सन्त॥४४॥ तोटक ॥ यहिको यश हंस समान चरै ॥ परि सागर छोरिनिमाँहतरै ॥ परताप दिवाकरको निदरै ॥ परताप करै अरु पापहरै ॥ ४५ ॥ प्रद्ध-टिका ॥ सुनि सुनि बखान ताके सभाग ॥ मनभयो नेक नहिं सानु राग ॥ लै चले और ढिगको कहार ॥ तब बोली देवी वचओदार ॥ ४६ दोहा ॥ दर्भद्वीप अवनीप यह, नयन कुशेसय आपु ॥ मोहूको उत्तम लग्यो, योगा योग मिलापु ॥ ४७ ॥ तोमर ॥ यहि नाम ज्योतिष मान ॥ महि वैरहै जिमि भान ॥ घृतको पयोनिधिचारु ॥ यहि देशमें विस्तारु ॥ ४८ ॥ बसंततिलक ॥ स्वच्छंद मंदर महीधर कंदरा है ॥ यासों मथ्यो युद्ध सागर यों सराहै ॥ श्री शेषनाग रजु ऐंचनकी नसेनी ॥ तामें विहार सजिये चलिकै प्रवीनी ॥ ४९ ॥ सवैया ॥ रावरे देखि उरोजनको सुमिरै सुर बानर कुंभ सोहाये ॥ हाथनको लखिकै कलपद्रुम पल्लव चित्तलगे छविछाये ॥ आननको लखि पूरणचन्द पियूष मयूष मनौ मनभाये ॥ मंदर देखि तुम्हैं दविहै पुनि सागर मंथनकी सुधि आये ॥ ५० ॥ सोरठा ॥ तासों भई उदास, ज्यों हरिजूसों गिरि सुता ॥ तहां कहार प्रकाश, और राज सन्मुख चले ॥ ५१ ॥ मालिनी ॥ तबहीं वचन बोली दाहिने श्री भवानी ॥ अभिमुख भुज कै कै चारु शृंगार सानी ॥ अय सखि दमयंती शाल्मलि द्वीप वारो ॥ यह नरपति रूरो तोहिंके योग प्यारो ॥ ५२ ॥ चौपाई वपुष्मानयाको है नाम ॥ सुरासिंधुयाके अभिराम ॥ विपति सिंधु मुनि सागर डरे ॥ निडर एकु यहहै छबि धरे ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ तामें निज परिजन सहित, प्राण पियारे संग ॥ करौ केलि मधुपानकी, कला रासरस रंग ॥ ५४ ॥ भुजंगप्रयात ॥ तहाँ द्रोण नामा लसै शैलनीको ॥ मनौ द्वीपको द्वीप प्यारो महीको ॥ महा औषधी काँति वाली प्रकाशै ॥ लगे कज्जलै मेघ मानौ प्रकाशै ॥ ५५ ॥ पृथ्वी छंद ॥ तहाँ शल्मली तरु लसत आकाशसों ॥ झरै मृदुल तूल यों परमसेतस्यौ पारुसों ॥ मनौ गिलम ए बिछी सुभग भाँति देखी परै ॥ विहार जब तू करै चरण कमलिनीके धरै ॥ ५६ ॥ तारक ॥ यहिके गुणको सुनतै अकुलानी ।

शिविका चरबाहन हू यह जानी ॥ तब और नरेश समीप सिधारे ॥ परमेश्वरि हूँ हँसि बैन उचारे ॥ ५७ ॥ सोरठा ॥ मेधा तिथि है नाम प्लच्छ द्वीप शासक यहै ॥ याके उरलागि बाम, ज्यों हरिके कमला लगी॥ ५८ ॥ चौपाई ॥ बड़ो दीह पाकरि तरु हेरे ॥ जीह माहँ होइ है मति तेरे ॥ झूल डारि शाखा अति ऊंची ॥ खेलकेलिकी अवधि पहूँची ॥५८॥ सवैया ॥ इक्षुर सोदय यों निधि राजत या जगतीपतिके अतिनेरे ॥ वासो उदास होइ जाइगो भूपति स्वादकरे अधरामृत तेरे ॥ देशमें भोजन पान करै नहिं कोऊ सुधाकरके बिन हेरे ॥ रावरे आनन औनष है लखि मावस है महँ चंद घनेरे ॥ ६० ॥ उपेंद्रवज्र ॥ नदी विपासा जहँ चारुलीला ॥ महोज्वलासार पियूष शीला ॥ सरोजराजी विकसी तहांहें ॥ मनौ करौ आरति आपु चाहें ॥६१॥सोरठा॥ और ओर मनजानि, हारे चले कहारगण ॥ बोली वाणि सुवानि, ता ऊपर तृणतोरिकै ॥ ६२ ॥ वाणी ॥ प्रद्धटिका ॥ जेहि शीश रत्न उपजी अमोल ॥ सोइ जम्बुद्वीपको नृप अडोल ॥ यहि द्वीपमाहँ युवराज भूरि ॥ सबरहे सुयशभरि पूरि पूरि ॥ ६३ ॥ नवद्वीपनको यह आपु भूप ॥ धरि आतपत्र सुर गिरि अनूप ॥ कैलाश छटा चामर चलंत ॥ अयओर संत सेवत अनंत ॥ ६४ ॥ दोहा ॥ जामुनि जम्बू मेलगी, सिद्धबधू तेहि देखि ॥ ये हाथी कैसे चढ़े, बूझैं तब सविशेषि ६५ तोटक ॥ तेहिके फलकी द्रवरूपभई ॥ यमुना सरिता रवि आपु ठई ॥ जेहिकेतल मृत्तिक स्वर्णमई ॥ उपमा तुव अंगन संघलई ॥ ६६ ॥ सोरठा ॥ यामें कोटि हजार, नरपति संग सुहावने ॥ मैं वर्णों निरधार, आपयोग तू समुझिले ॥ ६७ ॥ सरस्वती ॥ दोहा ॥ अरि युवती शृंगार बर, इन्दीबर तम भान ॥ नृप अवन्तिपुरको अहै, है तेरे मन मान ॥६८॥ सुलक्षण ॥ तहँ लसति अति सिप्रानदी ॥ जनु वरुण बैठकी गदी॥भुज लहरि तोहिं मिलैबसी ॥ नववदन पंकजमें हँसी ॥६९ ॥ सवैया ॥ याकी पवित्र उज्जैनि पुरीमहँ आपु विराजति गौरि गोसाँइनि ॥ बामशरीर विभूषण शंभुकी तीनिहुँ लोकनकी ठकुराइनि ॥ सेवक दीनदयालु सदा तेहिसों सिखिलीजौ पतिव्रत भाइनि ॥ चा-

इनि सों निहचै धरिहो बरदायनिके परिहौ नित पाइनि ॥ ७० ॥ ॥सोरठा॥ करै क्यों न खुटचाल, पतिसों पठै न कटुक तिय ॥ चन्द्रकला हर माल, सदा एक परिवार है ॥ ७१ ॥ ॥ दोहा ॥ भूप ओर हेऱ्योंकुँ अरि, करि रूखे दृग कोर ॥ बिरस देखिबेते भल्यो, नहीं देखनो जोर ॥ ॥ ७२ ॥ प्रद्धटिका ॥ नृप भूषण की मनि शोभ माँह ॥ प्रतिबंब परी दमयंति छाँह ॥ तहँ देखि उदासिल चित कहार ॥ लैचले और नृप ढिग उदार ॥ ७३ ॥ तब वाणि बिहँसि करको उठाइ ॥ दिय गौड़ देश राजा दिखाइ ॥ याहि ओर नेक दमयंति हेरि ॥ मन तोपर दीन्हो वारि फेरि ॥ ७४ ॥ मनहरण ॥ भारे भारे कदअनि दुर दावेदारे याके प्रबल कृपाण मुक्ता झलर मरतहै ॥ दीरघ परिघ याके भुजके प्रताप तपी मानौ राजसीकसेद बिंद पसरत है ॥ जोरिकै सपत तंतु यशके बसन ब्रनबोई सबलोकनिको छाँह बितरत है ॥ चक्रको धरे तु याते कोऊ सरबहकहैं कोऊ नरवरनरहरिकै तरत है ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ दमयंती की जानि, चिंता कछु महिपालपर ॥ गही और ढिग आनि, जानत भाव सुजान सब ॥ ७६ ॥ तोमर ॥ तब वाणि बोलि सुजान ॥ सखिवाणि मोक्रि कान ॥ पृथुराजहै गुणगेह ॥ मथुरा महीपति येह ॥ ७७ ॥ किन अं-कराजतु जोर ॥ कर मूल में सब और ॥ शर चाप धारण योग ॥ यहिको कहैं बुधलोग ॥ ७८ ॥ छप्पय ॥ गोबर्द्धन गिरि माँह मोर बहु सोर मचावें ॥ ताते भयको पाइ साँप कहुँ दीठि न आवें ॥ वृंदावन में निडर केलिकीजै चित चाही ॥ कुंज कुंज प्रति कुसुमलता पुंजनकी छाही ॥ स्रमश्वेत सलिल सीकर सुरत मुक्ता भूषण अंगके ॥ ते हरत चोरलौ चलत थकि धीर समीर सुरंगके ॥ ७९ ॥ तोटक ॥ दमयंति उदासिल भाँति भली । तेहि ते टरि औरै ओर चली ॥ तब वैन गिरासु खपाइ कहै ॥ सब राज सुनै चितलाइ रहै ॥ ८० ॥ सोरठा ॥ राजत मानसुरेश, काशिराज काशीपुरी ॥ याको उत्तमदेश, रजधानी है मुक्तिकर ॥ ८१ ॥ सवैया ॥ पातक पुंज लखे कलिके करुणामयके करुणामय आई ॥ क्यों तरिहैं जगजीव बड़े जडकोटि करै किन दैव सहाई ॥ काशी प्रकाशी करी पुहुमी परदेह तजे सुरलोक बड़ाई ॥ योग विराग विना

जप याग सु जामहँ मुक्ति परी जनु पाई ॥ ८२ ॥ सोरठा ॥ भवसागर जल जंतु, काशी मरि हर रूपको ॥ लहत तोरि जगतंतु, अस्तिधातु भूभाव ज्यों ॥ ८३ ॥ दोहा ॥ गंगा गौरि गिरीश गुरु, गोविंदके गुण गान ॥ गीरवानसे गुणिगने, गावत हैं गुणमान ॥ ८४ ॥ सवैया ॥ रतिसी तुम या नृपके उरमें कुसुमायुध सों यहु तौं मिलि सोहै ॥ जनु आनि लयो अवतार वहोरिकै जोरी बनी रति कामकी जोहै ॥ नख अंक उरोजन केसरि बंक अनूपम रूप बराबरिको है ॥ शिव शीशकी चन्द्रकला लजिहै निहचै भजिहै लखिकै मनमोहै ॥ ८५ ॥ मनहरण ॥ याके दल चलत पहलसी हलतभूमि शेषरु हलत कोल कच्छप हलतहै ॥ धुंधुरिकी धारासों धमकि बिंधि बिंधिजात शूरके तुरंग तुंग पंगुह्वै चलतहै ॥ बिंधिसे झरतमद दुरद विहद कद निनद मचावै नभ शुंडनि बलत है ॥ भारे भार भारेसो सहसफन वारे फूटे रुधिर छँछारे वे पनारेसे लगतहै ॥ ८६ ॥ सोरठा ॥ नेक दीठि नाहिं कीन, दमयंती वा ओरको ॥ वाको वदन मलीन, भयो अनादर सो नयो ॥ ८७ ॥ एक एक ढिग जाइ, छोंड़ि छोंड़ि औरै गहै ॥ परमपुरुष चितलाइ, मनो उपनिषदकी ऋचा ॥ ८८ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित
भूमंडला खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर
खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते
काव्यकलानिधौ द्वीपपति वर्णनं
नाम सप्तमस्सर्गः ॥ ७ ॥

दोहा—सर्ग तेरहें में कथा, देशपती नरनाथ ॥ तिनके गुणगण वर्णिबो, शुभ वाणी शुभ गाथ ॥ १ ॥ सोरठा ॥ निज तरुणीकी लाज, करि बिलम्ब अकुलात नृप ॥ आये सहित समाज, समुद वारहू पारके ॥ २ ॥ ठाढ़े भये कहार, कंध वंश सुखपाललै ॥ दासी सखीहजार, देखि भूप विस्मित भये ॥ ३ ॥ उपेंद्रवज्र ॥ सरस्वतीवैन तबै सु-

नायो ॥ महीपनीको निकटै दिखायो ॥ सुवर्णकी केतकिपर्ण जैसो ॥ सुवर्णराजा ऋतुपर्ण तैसो ॥ ४॥ **दोहा**॥ मिलन तिहारेकी अवधि, मगनभयो नरनाह ॥ निज रजधानी अंवधी की, करत न नेको चाह ॥ ५ ॥ ॥ **तोटक** ॥ यहिके उरमें रसरंग रचौ ॥ जलकेलि विहारन जाइ संचौ ॥ सरयू जल बिंदु निहार लसै ॥ तुव उच्च उरोजनि आनि बसै॥६॥ ॥ **मनहरण** ॥ याके कुल भूपति बनायो पारावार एक दूजे नरनाह भरचो गंगाजल धारसौँ ॥ बाँधोहैगो अर्णवके कुलको कमल राम जोरि वनचर कोरि सघन पहारसौँ ॥ झल झल होत याके सुयश हजार भारे उलघत पारे पार अगम अगारसौँ ॥ मार्तंड वंशको उदंड परभा उहोत एक ते सरस एक चंड अवतारसौँ ॥ ७॥ **मोदक** ॥ यहि भूपति को यश क्षीर पयोनिधि ॥ नहिं पावत पार कवीश्वर की बुधि ॥ यहिके गुणके गण जो गनि आवतु ॥ अरि कीरति की विरती विनशावतु ॥ ८ ॥ **सवैया** ॥ यहि भूपके तेज दिवाकर सोँ विधि दीह ते दीह बड़ो दिन कीन्हो ॥ वड़वानल याहीको है प्रतिबिंब पयोनिधि जारि प्रकाशहि लीन्हो ॥ अरिराजनिको यश तारनिलो कहुँ नैसिक दीठि परै नहिं चीन्हो॥ तम भीतर बाहेरहू नरहै नरहै सुख मारग में मन दीन्हो ॥ ९ ॥ **मनहरण** ॥ याके अरिनतौं अप कीरति अधिक बढ़ी यमुना नदी सी फैलि चली चहुँ ओरसोँ ॥ याके भुजदंडनिसों भई सुरसरि रूप कीरति सुहाई मिलि तासों अति जोरसों ॥ संगरके संगम में ह्वात जे सुभट कोटि कोटि उद्भट तार तू रज के सोरसोँ ॥ रंभाके सघन बननंदन सदंभ मिले रंभा परिरंभन करत साँझ भोरसोँ ॥ १० ॥ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ यहि भाँति परे गुण तासु कान ॥ रहि शिर कँपाय कछु सावधान ॥ तब और नृपति दीन्हो दिखाइ ॥ भगवती वचन बोली बनाइ॥ ११ ॥ यह पाँडु वंश है भूमिपाल ॥ है कीरति रमणी भाललाल ॥ यहि ओर नेक दृगकोरहेरि ॥ जनमैन पीर बाधा निबेरि ॥ १२ ॥ **सोरठा** ॥ क्षितिमें फिरी बनाइ, चढ़ि अकाश नाच्योचहै ॥ बड़ो वंश यहु पाइ, नाचाति कीराति नर्तकी॥ १३ ॥ **दोहा** ॥ याके डर अरिवर फिरैं, वनन वनन करिदौर॥ निज नगरी बनसीबनी, बनी न एकौ

ठौर ॥ १४ ॥ **मनहरण** ॥ संगर सों भाजे अपकीरति सों लाजे अरि तेंदूके सघन वन तहाँ विकसतु है ॥ अनल प्रताप लागे अनिलनराच झूँक ताते चिनगारेनको यूह निकसतु है ॥ जैसो जैसो ईंधन जरत त्यों बढ़त तैसो कबहूँ घटै न ऐसी अवधिकसतु है ॥ मार्तंड मंडल ओ पावक तपत भव भालपै नयन वज्र इंद्र इकसतु है ॥ १५ ॥**तारक**॥ याहिके दलदंति चलैं जब झूमै ॥ कुलपर्वतसे लखिये रणभूमै ॥ सँग देवनके पृथु देखन आयो ॥ फिरि चाहत है क्षिति शैल उठायो॥ १६ ॥ **सोरठा** ॥ बोली दासी टेरि, दमयंतीकी ओर लखि ॥ धरयो चहत सखिहेरि, काकपताकापै चरण ॥ १७ ॥ हँसे सभा सब कोइ, भूप बदन मैलो भयो ॥ जहाँ श्वेतता होइ, टकटकात तहँ श्यामरँग ॥ १८ ॥ **मालिनी** ॥ तबहिं वचन बोली भारती भावलीन्हे ॥ चल नयनि दमयंती ओरको दीठि दीन्हे ॥ यह नरपति नीको इंद्रके शैलको है ॥ कर गहि सखि याको रूपसों तोहिसोहै ॥ १९ ॥ अरि सकल पराने नाम याको सुनेते ॥ विपिन कल न पावैं कीरवाणी गुनेते ॥ गुणगण गनियाके बेपढे सीखि लीन्हे ॥ सुनत भजत आगे भीति मीड़े मलीने ॥ २० ॥ **दोधक** ॥ या डर भूपति वेगि पराहीं॥ छांड़िदेइ तरुणी मगमाहीं ॥ बूझतही निज देश वतावैं॥ शीतल चंदन चंदगनावैं ॥ २१ ॥**सोरठा** ॥ धनुष बाण गुणपाइ, यह भूपति जग वश करत केवल गुण परभाइ, तू वशकरि याते सरस॥२२॥ **मनहरण**॥ यासों जे भजतअरि तिनकी रमनि गिरि बिलनिमें वासर व्यतीत करिबोकरैं ॥ चंद्रके उदोत निकरति शिखरनपर खेलकी बदकजानि बाल अरिबो करैं॥ रोवन लगहिं जंगी विषम उसासिनसों छतियापै चन्द्र प्रतिबिंब करिबो करैं॥ तिनको गहत हर्षित ह्वै रहत सुत अद्भुत दुख सुख भाव भरिबोकरैं२३॥ विजय बजाइ मारू जहां है करत सोइ धरणि सराहै निजभाग सरसाइकै॥ यहै मेरोपति मेरी याहीमें सुरति याते कांपतिहैं थर थर सातुकबनाइकै॥ याके सन्मुखह्वै समरमें शरीर छोडि जैहै सुरलोक अरिगण समुदाइकै ॥ सूरयमें विल अवलोकत प्रबलखल मानो यम साजो दरवाजो चितलाइकै ॥ २४ ॥ **संयुत** ॥ गुणराशिको सुनि तासुकी ॥ रद दाबि अंगुलि

हांसुकी ॥ चुप ह्वैरही तबै ईश्वरी ॥ नृप औरके ढिगको टरी ॥ २५ ॥ **दोहा** ॥ पुरी कांचीको लसै, भूप पुरन्दर येहु ॥ सुन्दर मन्दर सों अ- चल, बल गौरव गुणगेहु ॥ २६ ॥ **मनहरण**॥ सुभट अटूट कोटि कोटि रंण जूझवारे याको जूझ देखि मति कौनकी न भरमै॥ तीर ज्यों कठोर जो लचै न सों दिगन्तजात चाप ज्यों मुठीमें थान पावै आनिनरमै॥ जंगवीर धीर परपीरको करतभंग रंगसों करत कछू आइकै समरमै ॥ बाजत निशान गान जीतको वखानहोत नाचती बजारनमें वैरिनकी हरमै॥२७॥ छप्पय॥भरे भाल सिंदूर उच्चअति शूर सुहांयो॥औररंग सब श्याम तमो- गुण ज्यों छबिछायो ॥ नभमें उदित उदार नखत मुक्तागणराजैं ॥ शोर करत सब ओर भँवर भीरनसों छाजैं ॥ जब हूलकरत गजराजरण मनौ आइ संध्या गई ॥ सब शूर तेज अथवनलगे जोरिपाणि अंजलिठई॥२८॥ **सवैया** ॥हरिको उर छोडिदयो लक्ष्मी मकरी माणिके छल पूरचोजराहै। तजि कौलदयो तबते छतिया छिदि छेदि हजारन कौन सराहै ॥ आपने लायक वास विचारत ढूंढिफिरी तिहुँलोक धराहै ॥ तेजकेपुंज प्रकाशि तदेखि बसीतिय या भुजके पिंजराहै ॥ २९ ॥ **मनहरण** ॥ आंखिन में मोदको सलिल न धरत याके वैन उनहीसों नित सुनत सुहाइकै ॥ तनमें न रोम याते मन्में मुदितहोकै रचत न पल पुलकावलि बनाइकै ॥ याहीते अहीश नेक शीश न कँपावें कहूँ क्षिति गिरिबेके डर हियेमें डरा- इकै॥ कहा धौं करत शेष सुनिकै सुयश याको कौनभांति धावनसों प्रीति प्रगटाइकै ॥३०॥ समरमें अरि गज कुंभिनमें हनौतीर फोंकलौं समात वीर ऐसो तेजधारीहै ॥ रावरे कुचनिकी बराबरि चहत याते शालतहै तिन्हें सेवा करत तिहारीहै ॥ परतहै पांइ तेरे करिकै उपाइ तैहीं ऐसो पति पाइ अहे कहा वैस बारीहै ॥ मोहूँसों दुराइलेहै वातन भुराइ तैंतो आपु चतुराइ भरी विधना सँवारी है ॥ ३१ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ दमयंति लख्यो मुसुक्याइ नेक ॥ तब औरै बतायो भूप एक ॥ सखि लखिनै पाल महिपाल आप ॥ दिनकर समान जाको प्रताप ॥ ३२ ॥छप्पय॥ तरकस मेते लेत धनुष जोरत नहिं जान्यो॥ ऐंचत परचो न जानि का नलौं धौं कब तान्यो॥ छुटत परचो नहिं जानि चलत लागत नहिं देख्यो।

याको आसुग अवनि माँह अद्भुत कारे लेख्यो ॥ रणरंग घोर अंगनि विजय गावतु हैं गुण गानसों ॥ भिदि भिदि अनेक महिमें गिरैं जानत याअनुमानसों ॥ ३३ ॥ **सोरठा** ॥ हँसी सखी यक देखि, दमयंतीकी भोंहचल ॥ यामें गुणगण लेखि, संकटसों कैसे कहै ॥ ३४ ॥ **सुलक्षण** । नृप और ढिग करुणा मई ॥ सुखपालकी सँग लै गई ॥ मिथिला पुरंदरको कह्यो ॥ मनमाहँ मोद वहू लह्यो ॥ ३५ ॥ **चौपाई** ॥ पाहि पाहि यासों नहिं कह्यो ॥ तौ ताको ऐसो फल लह्यो ॥ समर माहँ जाके अरिराज ॥ याते काढ़त ओठ समाज ॥ ३६ ॥ यासों जग याँचत हैं जेते ॥ मन भाये पावत फल तेते ॥ कल्पवृक्ष फल भारनि भरचो ॥ टूटि टूटि डारनिसों परचो ॥ ३७ ॥ **दोहा** ॥ नयनसैन दमयंतिकी देखि गिरा गुण भूरि ॥ कामरूप राजा तबै, दयो दिखाई दूरि ॥ ३८ ॥ **चर्चरी** है सखी रतिरूप तू यह काम रूप महीपहै ॥ व्याह लायक रावरे कुलकौल दीपति दीपु है ॥ रंग संगरमाहँ वैरिनकी बधू शिरको धुनै ॥ जीतिकी लिपिज्यों लिखै निज नाथ को संकटु सनै ॥ ३९ ॥ **सोरठा** ॥ यहि सन्मुख रिपु हारि, बूड़े आसुग धारसों ॥ तरनि टूक कै डारि, तऊ तरे सागर जगत ॥ ४० ॥ **दोहा** ॥ खासदान सों लै दई, बिरी खवासिन चारु ॥ परिहरियै यासों जननि, मुखपरिश्रमको सारु ॥ ४१ ॥ **चौपाई** ॥ उत्कल भूप और करि हाथ ॥ वाणी वर्णत भयो सनाथ ॥ नयन कोर सों नेक कनेखि ॥ गुण अनुराग रूप यहि देखि ॥ ४२ ॥ **गीतिका** ॥ जग माहँ याचक यूह जोरि समूह दाननिसों भरे ॥ सुररूख औ सुर धेनु की ढिग जात हैं न कोऊपरे ॥ निज दूध सींचत धेनु वाहि सुदेतु भोग पतान के ॥ यहि भाँति आपस में करैं उपकार को नित दानके ॥ ४३ ॥ **सोरठा** ॥ या प्रताप डर भान, भ्रमत अग्नि वन में छिप्यो धिक बड़वानल मान, निज अरि जल शरणनि बच्यो ॥ ४४ ॥ **तोमर** ॥ दमयंति की रुचि जानि ॥ हँसिकै कह्यो तब वानि ॥ सखि देशकीटकराज ॥ गुण धीर धर्म समाज ॥ ४५ ॥ **दोहा** ॥ मुख लौ रच्यो विरंचि यह रह्यो न दीपति कोस ॥ अंधकार पुंजनि सज्यो, चिकुरनि कै निर्जोस ४६ ॥

मनहरण ॥ याकी असि साँपिनि कढ़त म्यान सुखिर सों लहलही श्याम महा चपल निहारी है ॥ नेकु न अघात घूट घूटत पियत नित वैरिन की प्राणवात ऐसी भूख भारी है॥ विष की लहरि बढ़ै तिसकी अधिक चढ़ै तिन्है नसतावै जिन सुगति विचारीहै ।बसन गरे में डारि अँगुरीदशन दाबि भागनिसों ऐसी नाग ध्वनि सुधारीहै ॥४७॥छप्पय ॥ पीठदेत जो समर शत्रुकी ओर अनैसो॥ जहांरहै तहँ होइ वक्र ताहीसों तैसो ॥ अंगनि आपु कठोर शोर ज्यों वज्र करेरो ॥ महादोषको धरै मूठिको बंध घनेरो ॥ यहिभाँति दीहको दंडको गहत एक गुण चाइसों॥ यहि सरि न और विधि निर्मयो गुणग्राही परभाइसों ॥ ४८ ॥ याके शर औ शत्रु एकसे दो सोहैंवें॥ रणसन्मुख ह्वै गिरैं कंप मुखशब्द न जोवैं॥ भये दुओ जब मुक्त बहुरि आवत नहिं नीके॥बड़े बडे गुण योग जिन्हैं गावत सबहीके ॥ इमिं कछु विशेषनहिं लखिपरै आश्चर्य एकै तकै॥तहँ एक अमित्रनिको हनै एक भेदि भित्रहिसकै ॥ ४९ ॥ सवैया ॥ फूलत मंजुल कञ्जके पुञ्जनि गुञ्जत भौंर महा सुखपायो॥ हीरनकोटग नीर गही रस तीरवनीरतमालनि छायो ॥मारगको श्रम पारगहो गुणनागर सागर सों बनिआयो ॥ जागत जाग करै अनुराग यही बडभाग तडाग खनायो ॥ ५० ॥ दोहा ॥ याकी कीरतिसों विमल, श्वेत भये जगजाल ॥ अरि अपकीरति द्वीपकी, छायासी तिहुँकाल ॥ ५१ ॥ दमयंतीकी सहचरी, कविता निपुण अपार ॥ याकी अपकीरति वरणि, हौं करिहौं निरधार ॥ ५२ ॥ चौपाई ॥ या भूपतिके अयश निहारे ॥ गने परारधते अतिभारे ॥ गावत हैं गूंगागण खरे । जिनके वचन समझि नहिं परे ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ गावत लै सुर आठयों, बहु बांझनके पूत ॥कूर मरम नीके गहत, सारतंटइकसूत ॥५४॥सोरठा॥हँसी सभा महराइ, सुनिके अद्भुत वचन ये ॥ भैमी चली लुभाइ, द्युति सागर लखि निकटही ॥ ५५ ॥ दोधक ॥ पाँच लखे इक रूप सुहाये ॥ भूषण वेष समान बनाये ॥ चारि अलीक न ता मन भाये॥ एकहि देखत

नयन जुड़ाये ॥ ५६ ॥ **सोरठा** ॥ नल लखि राजकुमारि, सर्वसै अपने चित्तको ॥ सुधासिंधुमधि वारि, बूड़ि रह्यो तन मदन मय ॥ ५७॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबर खाँ प्रोत्साहित गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ देश पतिवर्णनं नाम त्रयो दशस्सर्गः ॥ १३ ॥

दोहा ॥ सर्ग चौदहेँ में कथा, पंचनलीको संग ॥ वर्णनश्लेष-विलास मय, भैमी संशय रंग ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ ज्योँ सुगंध अलि माल, नंदन सो ढिग कल्पतरु ॥ त्यों भैमी सुखपाल, चलि कहार जहँ पंचनल ॥ २ ॥ कह्यो भगवती टेरि, कछु गाथा अश्लेषकी ॥ वासवनल त्योँ हेरि, लख्यो न काहू भावसो ॥ ३ ॥ **दोहा** ॥ वीरसेनिउद्भव असुर, बलजित पौरुषसार॥ सेनाचर गज मुख सहित, दानवारि विस्तार ॥ ४ ॥ **सवैया** ॥ भूभ्रत शत्रुनके हठि काटत कोटिक यक्ष अगोटि अठाये ॥ देवनि माहँ अवीश यहै गुण रंजित जीव सबै चितलाये ॥ पाइँनमें अनुरागित है शुभ सेवत लेखनिके गण आये ॥ याके सँयोग शची सुखलै विधि एक रची सब अंग सुहाये ॥ ५ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ सुनि गिरा वैन नल हरि समान ॥ निरधार भयो नहिं परत कान ॥ नहिं नयननसोँ पायो विशेसु ॥ ज्योँ वासव त्योँ नैषध नरेशु ॥ ६ ॥ पुनि गिरा गूढ़ बोली विचारि ॥ नल राज अग्नि सोँ एक सारि ॥ लखि यह प्रताप निधि शुचि स्वरूप ॥ शिर दिपत ज्योति ताके अ-नूप ॥ ७ ॥ मुख विबुध सभाको यहै देव ॥ सब याग करत याकी सु-सेव ॥ अति तरल हेति पराथिव तूल ॥ याकी विभूति फैली अतूल॥८॥ ॥ **सोरठा** ॥ सुनि वाणीकी वानि, मिलि समान नल अनल सों ॥ परी न कछु पहिचानि, राजकुँअरि विस्मित भई ॥ ९ ॥ **मनहंस** ॥ तबहीं हँसी परमेश्वरी सुखपाइकै ॥ दमयंति ओर अनूप भौंह चलाइकै ॥ रविनंदके गुण गान तौ वरणै लगी । नलराजके छलसों प्रकाशनमें

पगी ॥ १० ॥ सोरठा॥ धरत दंड सब ठौर, याकी रुचिसों अमरकी॥ धर्मराज शिरमौर, मित्र परमप्रिय चित्रगति ॥ ११ ॥ सकल भूतगण बास, सब याके वशमें रहत॥निकु न होत उदास, तीनिलोकके भोगसों ॥ १२ ॥ दोहा ॥गिरा बोलि ऐसे वचन, नेक डोलि पगमंद॥ नलके छल वरणे लगी, जलनायक मुख चंद ॥ १३ ॥ रहत सर्वतो मुख बनी अनी ग्राह भटजोर ॥ लसति भूरि तरवारि निधि, जासु बाहिनी घोर ॥ १४ ॥ चौपाई॥ रतनाकर याके बहुतेरे॥ समुदै निशिवासर हित हेरे॥ काम धान महिमान खढ़ावे ॥ सदा पूरिघन रस वर्षावे ॥ १५॥दोहा॥ वचन अनेकारथ सलिल, सींचति ज्यों ज्यों वानि ॥ त्यों संशय लतिका बढ़ी, दमयंती उर आनि ॥ १६ ॥ तोटक ॥ नलके गुण गौरवकी रचना॥ मति देबिकरी मतिकी सचना॥ यह राजत है सुररंग सभा॥छबि अक्ष हजारनकी परभा ॥१७॥ वह जारत दारुणको सबहीं ॥ झलकै परिताप लगै जबहीं ॥ घन फूलन भूषितसी तनु है ॥ भुवनेश्वरनाम सोहावनु हैं॥ १८॥ पति दक्षिण और न या सरिको ॥ परमारत चोप बचै टरिको ॥ सुनिकै यह अद्भुत वात नई ॥ पचहूँ नल ओर चकी चितई ॥ १९ ॥ नाहिं पावतहै निरधारकियो ॥ धरको हियरा अति तापलियो ॥ हरिनी जनु चानक जालपरी ॥ जनु सोनचिरी अबहीं पकरी ॥ २० ॥ दोहा ॥इन्द्र अनल यम वरुणसों, नलवर्णन मिलिजात ॥ चारिपक्ष गणिदोष मन, पंचमही ठहरात ॥ २१ ॥ एक एक नल लखिछकी, पंचमपै मनमोज ॥ गनती बाणनअी सफल, मानौ करी मनोज ॥ २२॥ चारिओर हेरै नहीं, लखि पंचम बडभाग ॥ मनअन्तर उपज्यो मनौ, जन्मांतर अनुराग॥ २३ ॥ लीलाछन्द ॥ ह्वैगई अति विकलतनमें छूटिजात सँभार ॥ सुमिरिकै मनमाहँ आनति हेमहंस विचार ॥ देवलोक मरालको इत पाइये किन आज ॥ आइ देइ बताइ तुरतै कौनहै नलराज ॥ २४ ॥ अन्यच्च ॥ लखत चन्द्र अनेक जगजन आंखिमें जबरोग॥ है भयो भ्रम मोहिं अद्भुत कौनरोग सँयोग ॥ कायंव्यूह बनाइकै नल धौं करै परिहास॥ सकल विद्यनिको कलानिधि खानिहै सविलास ॥ २५ ॥ तोमर ॥ इनमाँह है नल एक ॥ पुनि एकराज विवेक ॥ अरु तीसरो तहँ काम ॥ युग

दस्त्रको अभिराम ॥ २६ ॥ **दोहा** ॥ पहिले पेखे विरह में नैल अनेक भ्रमलागि ॥ लखति पांच .आई मनौ, वहै दशाजिय जागि॥ २७ ॥ **तारक**॥ इनमें नल क्योंकरि जानि परैगो॥ नहिं मानुष लक्षणसों उभरैगो ॥ इनमें सुरचिह्न परैं लखि नाहीं॥ अकुलाइ गई कल-पै मन माहीं॥ २८ ॥ **दोहा**॥ मैं कैसे पाऊँ नलै, जड़ मानुष अज्ञान॥ कहि गाथा अश्लेषसों, श्री भगवती सुजान ॥२९॥ **मालिनी** ॥ अमरस देहूजै याचिहौं रावरे सों॥ नल नरपति मोको दीजिये पाधरे सों ॥ मदन अनल लागो सूखि केधौं तिहारो॥ करुन जलधिजीको दोषलाग्यो हमारो ॥ ३० ॥ **चंद्रमाला** ॥ भटकायो नलरूप आपुधरि पेखो पुण्य तिहारो॥ मूरख हाथ परी पोथी ज्यों पर उपकार बिसारो॥जाके करम लिखो ईश्वर जो सोई हो तु सवारे ॥ सूरय तापलगे फूलत हिमिलागत कमल पजारे ॥ ३१ ॥ देवीके कर वरन मालदै जो नलको पहिराऊं ॥ तौ दि-गीश देवी दुख मानै कैसे तिन्हैं लराऊँ॥ जो इनमें साँचो नल सोई वरन माल यह धारै ॥ तो समाज पंचनमें कोऊ कैसे लाज विसारै ॥ ३२ ॥ चारि नलनको एक शेष ह्वै पंचम अचल बखान्यो ॥ सुधा सलिल सीं-चति नयननको मैन रूप मन मान्यो ॥ यासौं रसवश मेरो चित है सरबसु यहै सुहायो ॥ होत कवितके छोर छबीली अनुप्रास छविछायो ॥ ३३ ॥ **पद्धटिका** ॥ इमि करि विकल्प संदेह चित्त ॥ पायो न चिह्न-नेको निमित्त ॥ अति मुदित होत लखि नलरसाल ॥ विनलाभ अधिक अकुलात वाल ॥ ३४ ॥

इति श्रीप्रचंड दोर्दण्ड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडलाखंडल श्रीखाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ पंचनली वर्णनं नाम चतुर्दशस्सर्गः ॥ १४ ॥

दोहा ॥ सर्ग पंद्रहें वार्णिबो, वर्णमालको ठाट॥दै अशीश सब देवता, लौटे सहित उचाट ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ नल मिलिबेके हेत, सेवन देवनको लगी ॥ सुरभी देवनिकेत, सु सेवाहै

नरसुरभिं ॥ २ ॥ धूपत सलिल चढ़ाइ, आल बाल परदक्षिणा ॥ इष्ट मिष्ट फलपाइ, देत देव सब देवतरु ॥ ३ ॥ सवैया ॥ देवनकी मन भावनाके सुमिरे एक एकके नामसुहाये ॥ आठहुसिद्धि नवोनिधिपावत गावत जे इन में चितलाये॥ साधि समाधि धरयो हियध्यान करयो कछु स्यानभये मनभाये ॥ भाजन भाग सभाजनराग भरेरस देखि रहे टक लाये ॥ ४ दोहा ॥ गीतसहित षट पद जुकुत, कुसुम लताके संग ॥ पूजनलागी विनय वहु, सब छंदनके रंग ॥ ५ ॥ वंशस्थ ॥ करीवडी भक्ति दमयंति दीनह्वै॥ रहे सु चारौ सुर आपु लीनह्वै॥ हरयो महामोह दया निकेतहैं ॥ करैं कृपाताहिं सुबुद्धि देतहैं ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ जो जो गाथा गिरा प्रकाश्यो ॥ ताको अर्थ हियेमें भास्यो ॥ सबमें नल नल में सब जोरे ॥ नलकी अधिकाई चित भोरे ॥ ७ सोरठा ॥ व्यंग्य वचनकी खानि, जापर यह किरपा करै ॥ सो मूरति धरिआनि, खरी भारती आपुहै ॥ ८ ॥ संयुत ॥ नहिं पांइ भूतलमें लगे ॥ सुरचारि आनँद सों पगे ॥ नलकेलगे पगमेदिनी ॥ लखिजाति जानि नितंवि-नी ॥ ९ सुरके शरीरनमें कही ॥ कणरेणुके लखिये नहीं ॥ नलदेहपै द्युति पाइकै ॥ जनुभूमि भेंटत चाइकै ॥ १० तोटक ॥ नलके पललोइन माँह लगें ॥ सुर नयननमें न निमेष लगें ॥ सुर शीश न फूल मलीन भये ॥ नलके शिरके कुम्हिलाइ गये ॥ ११ ॥ तारक ॥ इन भेदनसों नलको पहिचान्यो ॥ चित अन्तरसिंधु सुधाहि समा-न्यो ॥ तब काम उतायलकै अकुलावै ॥ जयमाल न लाजनते पहि. रावै ॥ १२ ॥ अन्यच्च ॥ जबहीँ पहिरावन को उमहैरी ॥ तबसा तुक तंभु उठै तनवैरी ॥ दग लाज मनोज हिये डरपावै ॥ दुहुँ ओर बंधी फिरकी सम धावै ॥ १३ ॥ सवैया ॥ नैसिकु हाथ वरयो पिय त्योँ पुनि ऐँचिलयो छतिया धरकानी ॥ चंचल दीठि चली उतको हँसि कोरनि हालसि बीच बिलानी ॥ आवत जात कटाक्षर हैं नल हैं नल हैं जितको अभिमानी ॥ कामकला कुल आकुलह्वै अबला अबलाजहि पै ठहरानी ॥ १४ ॥ दोहा ॥ अर्ध नयन फेरयो हरे, गिरा वदन की ओर ॥ नल मुख कमल लखे दुरे, अरध नयन की ओर ॥ १५ ॥

देवी ॥ दोहा॥ लाज लहरि लीला मई, नई तुहीने आपु ॥ तोहीं तलगाति लै मिलै, कै शीतल कै तापु ॥ १६ ॥ तबं देवीके कान लगि दमयंती परवीन॥ अर्धनाम नलको लियो, हँसि मृदु उत्तर दीन ॥ १७ ॥ लै उतारि सुखपालकी, गहे हाथ सो हाथ ॥ जरी बिछौनानिपै चली गिरा लिये ही साथ ॥ १८ ॥ कवित्त ॥ वाहुलता गलमेलिगिरा दमयंति करी मघवा मगसौहै ॥ नैगइ अंग भई दुगुनी ससवाइ करी कुटिलै पलभौंहै ॥ हाथसों होथ गह्यो हँसिकै मति साथ चली पग द्वै मनमोहै ॥ लाजलता हिय में उलही झहराइ भजी दुलही सरिसौहै ॥ १९ ॥ चित्रय ॥ आवत देखि दमयंती ॥ रीझत इंद्र इकंती ॥ भाजति पेखि डिरानी ॥ वासव दीठि लजानी ॥ २० ॥ दौरि गही पुनि वाही ॥ त्यों झहराइ झुकाही ॥ वासवके ढिग आनी ॥ गूढ़ गिरा मुसुक्यानी ॥ २१ ॥ गीतिका ॥ यह रावरी अरचा करै करजोरिकै चितलाइ कै ॥ नहिं माल मेलिसकै गरे नल-राजसों समुहाइकै ॥ तुम माँह एक वरै तबै जब तीनिको अपकारकै ॥ यह जानिकै सुर अंशमें नलमें चहै सुखसारकै ॥ २२ ॥ निज हाथन सों गहि कंध ग्रीव मिलाइ पाँयन पै दई॥ करिये कृपा सुरनाह यापर रा-वरी शरणै गई॥ मुसुक्याइ नेसुकही सुरेश्वर भौंह सैननिसों कह्यो॥ हरषीं सखी सिगरी गिरा नल ओरको मारग गह्यो ॥ २३ ॥ दोहा ॥ नलसौं हें जब लै चली, वदन हँसौहें वानि ॥ झुके रिसौंहे नयनके, लीन्ही भौंहैं तानि॥ २४ ॥ कवित्त॥ बाजत नेवर नेकु चलै झिझिकै पुनि पीछेहिको फिरि आवै ॥ नेकु लखे तिरछेदृग कोरन जोरिकधा लजि नारि नवावै॥ कबहूँ मुरि पीठि दै ठाढ़ी रहै कर ओटदै मालपियै देखरावै ॥ यह पूरि मनोज रह्यो नलके वह दूरिहिते छलकै ललचावै ॥ २५ ॥ मालकं ॥ चली गज चालि ॥ लगी ढिग आलि ॥ गई नलपास ॥ भरी सु विलास ॥ २६ ॥ सवैया ॥ चौंर पँखा चहुँ ओर सुगंध सजै तिन दासिन त्यों चित लावै ॥ त्यों त्यों भजै कर ठेलि रिसाइ ज्यों ज्यों मति लै नलसों नियरावै ॥ पाँइपरें सखियाँ सिगरी कर जोरि निहोरत बाँह उठावै ॥ ग्रीवनये विहँसै क्षितिपाल खरी नहिं माल पियै पहिरावै ॥ २७ ॥

देखतही उमझ्यो परै वापर तोराति अंगन लेत जम्हाई ॥ लाइरहै टकसी थिरह्वै जनु लेत पिये तियकी सुघराई ॥ वा ढिग घेरि चलैं सखियां पग चारिकलौंकर ऐंचत आई॥अंचल ओट दियेही दिये कर चंचल माल नलै पहिराई॥२८॥दोहा॥ जनु निज प्रीति प्रतीतिकी, बरनावली विशाल ॥ पहिराई नलके गरे, नव मधूककी माल॥ २९॥सोरठा॥ पुही दूबदल श्याम, जन शृंगार रस बेलि यह॥फाँस चलाई काम, भूपतिके गरमें परी३० नल उर संगम पाइ, अंकुरसों पुलकित भई॥देखति भौंह चढ़ाइ, दमयंती वा मालको ॥ ३१ ॥ सवैया ॥ नौबति बाजिउठी इकबारही मंगल वीन मृदंग सुहाये ॥ गाइ उठीं सखियां सुखगीत निछावरि भूषण चीर लुटाये ॥ वन्दिपढ़ैं विरदावलि नन्दित आशिष विप्रबधूनि सुनाये॥ नाचतीहैं चहुँओरनि किंनरी भीमके धाम असीम वधाये ॥ ३२ ॥ तोटक ॥ नलके उर निर्मल माल नई ॥ सब फूलनिसों प्रतिबिंबभई ॥ कछु नाहिं कछूक समाइगई ॥ सरधार मनोज मनौ हतई ॥ ३३ ॥ तोमर ॥ नलमाल सों उरलागि ॥ परसे दुआवत जागि ॥ जनुअर्ध्य साजत काम ॥ तेहि ब्याहको अभिराम॥ ३४ ॥ दोहा ॥ तूल तूल दमयंतिके, कँपतअंग सतिभाइ ॥ आश्चर्य भूभ्रतु कँप्यो, कामबाण वस वाइ ॥ ३५ ॥ भुजंगप्रयात ॥ जहीं मालकी ओर राजा निहारो ॥ गरो पूरिआयो महामोद भारो ॥ भयो रंग पीरो धरो हीय धीरो ॥ कद म्बै कली ज्यों सजोहै शरीरो ॥ ३६ ॥ लखे भाव ऐसे तबै देव चारौ ॥ उदासी भये आपको मानमारौ ॥ धरे आपने रूप शोभा प्रकासी ॥ हँसे जे जुरे आइ राजा विलासी॥ ३७ ॥ तोमर ॥ प्रगटे सुनयनहजार ॥ कर वज्र तीक्ष्णधार ॥ सबराज हेरत नीठि ॥ इमि इन्द्र आवत दीठि ॥ ३८ ॥ चहुँ ओर छूटत ज्वाल ॥ तहँ वैरही छबि-लाल ॥ इमि देखि पावकरूप ॥ विस्मय भये सब भूप ॥ ३९ ॥ कर दण्ड लोचनलाल ॥ सब देह राजतकाल ॥ यमराजरूप निहारि ॥ भजिकैं चलीं सब नारि ॥ ४० ॥ ॥ दोहा ॥ चित्रगुप्त कायस्थगुण, दीठि परचो तेहि ठौर॥ मसी लिखै इक पत्रपै, मसी छिपावत और ॥ ४१ ॥ तारक ॥ करपास धरे जल

नायक नीको ॥ तहँ देखिपरो उजरो जगतीको ॥ परमेश्वरिहू निजरूप प्रकाश्यो ॥ अति अद्भुत तेज तहाँ तब भास्यो ॥४२॥ दोहा ॥ नल दमयंतीं की लखी, जोरी परम रसाल ॥ तब बोल्यो सुरपाल हँसि सुन्दर वैन विशाल ॥४३॥ प्रद्धटिका॥ नल कह्यो हमारो दूत भाउ॥ दमयंति लह्यो ताको प्रभाउ॥ अब मिल्यो तोहिं सरवसु सुचेतु॥ शृंगार सार सुखको निकेतु ॥ ४४ ॥ अग्नि ॥ प्र० ॥ नल करे होम हय मेध याग ॥ बहु दिये लोकपति देव भाग ॥ हम भये मुदित मन पाइभोगु ॥ दमयंति भयो तेरों सँयोगु ॥ ४५ ॥ नलराज तोहिं वरदान देतु ॥ तू सरसरसोई स्वादलेतु ॥ करि सिद्ध शुद्ध परकार भूरि ॥ हम कराहि पाक जिमि अमियमूरि ॥ ४६ ॥ धर्मराज ॥ प्रद्धटिका ॥ हम धर्मराज भाषत पुकारि ॥ नलराज नेकु इतको निहारि ॥ नहिं कष्टदशा तुमको लखाइ ॥ नहिं चित्त धर्मते अंत जाइ ॥४७॥ वरुण॥ छप्पय॥ जहाँ जहाँ तुम चहौ तहाँ निर्जल महसागर ॥ सकल बाहिनी संगरहैं तेरे गुण आगर ॥ करत ताप नहिं तेज भानु पावक डरि जाही ॥ देश देशके गौनरहौ जस मेघन छाही ॥ कुलि फूलत फूल सोहावने ते सुगंध अतिही धरैं ॥ दमयंति संग जलकेलिमें महामोद तुमको करैं ॥ ४८॥ दोहा ॥ मेरी सखि तेरी प्रिया, है प्यारी अति मोहि ॥ मोहि रही हों तोहिं लखि, देतिं तहीं बरुतोहि ॥४९॥ बिन माँगे जो पाइये, ताहि न दीजै छोडि ॥ दैव देइ जो करि कृपा, लीजै ओली ओडि ॥५० ॥छप्पय ॥ नारि पुरुष आकार भेद द्वै भाँति बखान्यो ॥ पारब्रह्मके रूप तेजको पुंज प्रमान्यो ॥ आदि अन्तमें प्रणव वीच हरि बीज विराजै ॥ अनल संग शुभ रंग लता लक्ष्मी छवि छाजै ॥ शिर मुकुट सुधाकरकी कला अमल लसै परकाश सौं ॥ चित सुमिरिं भूप मम मन्त्रको होइ सिद्धि-सविलाससौं ॥ ५१ ॥ जपतु याहि चित लाइ होत सुरगुरुकी वानी ॥ मोहत सुर नर नारि कामकी कान्ति लजानी ॥ जो जो मन अभिलाष तीनि लोकनमा आवै ॥ सुरहू दुर्लभ होइ वस्तु तुरैत सो पावै ॥ यहि भाँति भोग संसारके बाढत ज्ञान सुतंत्रहै ॥ नल भूप सुनै मम रूपमय यह चिन्ता मणि मन्त्रहै ॥ ५२ ॥ धूप दीप युत पुहुप भोग

पूजा जो साजै ॥ हंसवाहिनी मोहिं ध्यान धरि ज्ञान समाजै ॥ वर्ष एक जो जपै मन्त्र चिंतामणि मेरो ॥ पावै मेरो रूप भानु सम परै न हेरो ॥ जेहि ओर कृपा करिकै लखै धरै हाथ जेहि शीशपै ॥ सो रचन लगै कविता तुरत जैसो बनति अहीशपै ॥ ५३ ॥ **सवैया** ॥ पुण्य श्लोक करै कविता तुम पुण्यश्लोक भये जग जाने ॥ कीरति कीरति तीनहु लोक विलोकि तुम्हें जन लेत खजाने ॥ सुन्दरता मणि आकर तेज दिवाकर ते झमकें सरसाने ॥ पाप हरें सुमिरे कलिके तुम श्रीहरिके सरिके मन माने ॥ ५४ ॥ **दोहा** ॥ बोलीं देवी देव सब, कहा देइ तुहि धीर॥ जे तो तिय पतिव्रत हरै, होइ भस्म सो वीर५५॥ **मनहंस** ॥ तब देवता नभको चले सुखपाइकै॥ घनघोर दुंदुभि दीह दीह बजाइकै उठिकै चले नृप झुंडसों अकुलाइकै गयेयक्षकिन्नर दानवादि लजायकै ५६ ॥ **चर्चरी** ॥ और राजनिसों सखीगण व्याहको ठहरा॥ भीम भूपति सों कह्योइकै दमयंति यों चित चाइकै॥ ते सखी सब रूप सुंदरि शील भूषणसों भरी ॥ हेरि हेरि निहाल होत महीप ओरानिको खरी॥५७॥ **चौपाई**॥ इंद्र संग सुर तीनि सिधारे ॥ हंस चढ़ी देवी पग धारे ॥ औसरजानि तबै अति भल्यो ॥ नल डेरनिको चाहत चल्यो ॥ ५८ ॥ ॥ **दोहा** ॥ वरषे फूल अकाशते, शरसे छोड़त मारु ॥ पुंजनि गुंजत ओर चहुँ, भौंरनिको परिवारु ॥ ५९ ॥ **मालिनी** ॥ जहँ जहँ निज डेरा हते तहाँ भूप आये ॥ नल मिलि दमयंती संग बैठे सुहाये ॥ मुदित चितमहाँ ह्व व्याहके साजसाजै ॥ सब सजत बधाई भैटदै भीमराजै ॥ ६० ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडला खण्डित खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबरखाँ प्रोत्साहित गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ देवगमनं नाम पंचदशस्सर्गः ॥ १५ ॥

दोहा ॥ सर्ग सोरहेंमें कथा, नल विवाहको रंग ॥ दमयंती शृंगारिवो, अंग अंग परसंग ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ निषधदेश नरनाह, डेरनको हर्षित चले ॥ वरन माल उर माह, [illegible] भांतिसी॥ २ ॥**दोहा**॥

मारगमें वर्षत चल्यो, अरथिनको धनभार॥करिराखे बहु ढेर उन हिं न सम्हार ॥३॥ भीमराज भीतर गयो, रानी सों बतराइ॥ ज लिनसों सहित, लीन्ही सुता बोलाइ ॥ ४ ॥ राजा रानीसों कह्यो तिहारो भाग ॥ नल सों पायो पाहुनो, जामें जग अनुराग ॥ ५ ॥ साज सब सुंदरी, कुअँरि ब्याहके योग॥ बाहेर आइ बुलाइ लिय, स ज्योतिषी लोग ॥ ६ ॥ प्रद्धटिका ॥ तब ब्याह लगन सोधी बनाइ नाहिं सप्तम अष्टम ग्रह लखाइ ॥ गुनराति रहै छत्तिस अमोल ॥ दशदो दूरि भजि गये लोल ॥ ७ ॥ तब दूत बेगि [illegible] ॥ नल निकट जाइ कहियो अशीश ॥ करिये पवित्र ह[illegible] चर्णोदक सों सफल काम ॥ ८ ॥ शशिवदन ॥ [illegible] नरपति मानी ॥ हँसि नल बोले ॥ वचन अमोले ॥ [illegible]कहो प्रणाम चलि, हौं आवत यहि बेर ॥ बिदा कियो [illegible] वसुढ़ेर ॥ १० ॥ तोमर ॥ सुनि भीम दूत सुवा[illegible] दमानि ॥ रथ वाजि वारण आनि ॥ पठई तहाँ अग[illegible] दोधक ॥ जे लिखनो करि चित्र प्रवीने ॥ ते अति गर्व [illegible] जे पकवान घने करि जानै ॥ ते अपनीसरि और न मानै [illegible] दोहा ॥ करत खुशामादि सबनकी, राजरानि गुणग्रेह॥ पान द[illegible] मान कै, मानति सबन अछेह ॥ १३ ॥ तोटक ॥ सबही मुक्ता [illegible] माल लगी ॥ पुरद्वारन द्वारन रंगरँगी ॥ भरि आनँददीह बिलासतु है ॥ मुख मंजुल हास प्रकाशतु है ॥ १४ ॥ प्रद्धटिका ॥ कुलिक तरीजीके बसन चारु ॥ ते सजे पुहुप कीन्हो शृँगारु॥ निज दै सुगंध रँग रंग गीन ॥ झालरि वितान झौ झलक लीन ॥ १५ ॥ तनसजे जराऊ नग अमोल ॥ पुर प्रजा फिरैं भरि ललक लोल ॥ मणि बँधे खरंजा धाम धाम ॥ प्रतिविम्ब होत तिन माहँ बाम ॥ १६ ॥ नील ॥ बाजत हैं घन बाजनये चहुँ ओर घने ॥ साजतहैं तत्काल तहाँ तरमोदसने ॥ ह्वै सुखिरै मुख उच्च सुधा ध्वानि टीप पढ़ै॥आनँदकी ध्वनि धीर सुनै मन मोद बढ़ै १७॥ सवैया ॥ वीणनकी ध्वनि ये न छपावत वैननकी ध्वनि गीत छपावै ॥ गीतनकी छबि लोपत

झरझर दुंदुभि झर झरको सकुचावै ॥ दुंदुभिके रव दूरि करै जठ कूक निको हनि दीह बजावै ॥ वेऊ न नैसिक जानि परैं जब मर्दल ताल बजावत गावै ॥ १८ ॥ दोहा ॥ ये कोटिन बाजन बजें, मुखर सोर संभार ॥ चीहकरन दिग्गज लगैं, फूटत करन अपार ॥ १९ ॥ चौपाई ॥ सात कुंभके कुंभ सुहाये ॥ ते सुगंध जलसों भरि लाये ॥ उबटि कुँअरि चौकी बैठारि ॥ मंगल न्हान सवाँरै नारि ॥ २० ॥ चर्चरी ॥ एक रावरिको चहै दमयंतिके कुचकी सही ॥ कोपसों हित सखीही घट ग्रीवसौं गहिकै रही ॥ बोरि नवल रसाल पल्लव ओषधी अधिकै परी ॥ न्हान साजै मीत सुंदरि गीत गावैं किन्नरी ॥ २१ ॥ दोहा॥ न्हाइ वसन पहिरे विशद, रही विहद छवि छाइ ॥ शरद चाँदनी सीलसी, निकसी घन विलगाइ ॥ २२ ॥ झहरि झहरि जलकन गिरैं छहरि छबीलीबार ॥ मनौ गिले मुकुता नखत, ते उगिलत तम धार ॥ २३ ॥ बार घने वर्षत सलिल, वसन श्वेत परकाश ॥ मनौ मिली वर्षा शरद, अद्भुत बढत विलास ॥२४॥ अंग अंगौछत बडि चले, सब दीपतिके जाल ॥ सान धरी गुणमान जनु, हेम काम करबाल ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ दौरि सखी समुदाइ, साज्यो रत्न चऊतरा ॥ तहँ बैठारी जाइ, करन लगी शृंगार सब ॥ २६ ॥ मोदक ॥ अंग अभूषितसे सब लागत ॥ भूषण भार कहाँ रस पागत ॥ या तनु में करिये जब मंडित ॥ भूषण पावत ज्योति अखंडित ॥२७॥ सवैया ॥ कुंद कली मिलि केश गुँदे बिच बीच भली मुक्तालरसो है॥ आनिबसे शशिके शिर पै रसहास शृंगार मनौ मनमोहै ॥ धूपित धूप सुगंधनिसों मद अंध मधुव्रतके अवरोहै ॥ ऐंचिलई हलके बलसों यमुना जलकी लहरी कहि टोहै ॥ २८ ॥ प्रद्धटिका ॥ पुनि तिलक भाल में रचि अनूप ॥ तिहिरूप भूप मुद्रा सरूप ॥ रचि करणफूल काननि सुढार ॥ मिलिक रन दिवाकर करत प्यार ॥ २९ ॥ तारक ॥ छहरीं अलकै मुख मोतिन गूँदी ॥ जनु भाँदोके घन धारत बूंदी ॥ गनि चंद विरोध गहे जनु तारा ॥ दुहुँ ओर फिरैं शशिके तम धारा ॥ ३० ॥ सोरठा ॥ अंजन रेख सुढार कोर, काढ़ि नयनन रची॥ पुतरी नीलम सार, तिनकी

साँवल राह जनु ॥ ३१ ॥ कबित्त॥ पीछे खरी इक केश गुँदै अलबेस भरतिकिया लगि सोंहैं ॥ सौंहे खरी इक आरसी लै तेहि ओर तकै बि हँसै मनमोहै ॥ और दुहू सखि चौंर करैं तिन्हैं बोल सुनाइ सुधारस लोहै ॥ नंदित होइ उमगै कविता रुचि वंदि वधूनि सों बूझति दोहै ॥ ३२ ॥ सवैया ॥ नयनन अंजन एक सजै इकतौ मुक्ता नथ लै पहिरावै ॥ एक सँवारत हार हिये इक लाल जरी अँगिया कसि आवै ॥ सूरयकी किरणै जनु ओढ़नी घाँघरे में रसना झनकावै ॥ एक करै पगपायल नेवर एक तिया विछियानि बनावै ॥ ३३ ॥ कोऊ रुमाललै पोंछि कपोल फुलेल तिलौंछाति बार प्रबीनी ॥ केऊ कसैं भुज बंदझवा मणिकंकन चारु चुरी मृगनयनी ॥ अँगुरीनमें छापछला मुदरीन खकोर रचीमेंहदी सुख देनी॥ कर मोराति कोऊ बलाइलैलै तिनु तोराति कोरि फिरै चितचैनी ॥ ३४ ॥ मनहरण ॥ साँवल कमलको गहतु है धनुषकाम पनच करत तहाँ अवली अलीनकी ॥ तीक्षण तरल तामें सायक धरतु करि यतन युगुति कोकनँदकी कलीनकी ॥ याके ये नयन यई करत कटाक्ष नई इनही सों जीती मयन जगती बलीनकी ॥ कमलको न धनुष भँवरकी न पनच कलीनके न बाण कहैं सुमति नलीनकी ॥ ३५ ॥ सवैया ॥ पाँयनमें ठकुरायनिके रचिके शुभजावक बेलि घनेरी॥ चाइनिसों करै कौलनिजोरि गोसांइनि सों कह्यो नाइनि चेरी ॥ पीतमकी पगरी लगिकै सिगरी रचना विगरी यह मेरी ॥ कौलकी ऐंचिदई सखिया हँसिनौल बहू तिरछे दृग हेरी ॥ ३६ ॥ केसरि केसरि अंगनिमें कत लेपनके मिस मैल मिलाई ॥ दीपति दीपककी कलिका दिनरैनि न एकसी देत दिखाई॥कामिनिके गुणही न तपै तनदामिनिमें अतिही तरलाई ॥ दूसरी और रची न गई विधिपै यहसी यहई बनिआई ॥ ३७॥ दोहा॥पंकज केसरसों मिली, ज्यों मिलिंदकी पाँति॥सुंदर दशननिपै दिपै रेखमिसीकी कांति ॥ ३८ ॥ सवैया ॥ नयन बड़े बड़े मोती बड़े नथ बार बड़े छहरे सटकारे ॥ पंकज पाँखुरीसी अँगुरी कुच कुंदन कंचुकीकी अनुहारे ॥ ये रतिसी दुलही उत वे दुलहारति नाहसे सुंदर प्यारे ॥ भौनके भाइनहीमें गये मिलि प्राण दुहूँके दुहूँ परवारे ॥ ३९ ॥

दोहा॥ पैंधी लंबित सतलरी, पुही प्रेम रंगताग ॥ मनौ बिपंची कामकी, रागति पंचमराग ॥ ४० ॥ लगेमेन अधरा मृदुल, भये महा सुकुमार ॥ तापर रँगबीरीन को, नीको लगत अपार ॥ ४१ ॥ सोरठा ॥ दुपहरियाको फूल, ईंगुरके रँगसों रँग्यो ॥ रतिकोकिधौ दुकूल, रँगिकुसुम सोहोकरचो ॥ ४२ ॥ दोहा ॥ भूषणकी किरणै छुटैं, बासव धनु अनुहारि ॥ मनौ शिलीमुख धनुषलै, करतु मैन रखवारि ॥ ४३ ॥ दोधक ॥ अंगनमें सब भाँति शृँगारी ॥ देहिं अशीश पति- व्रतनारी ॥ जीवहु जागत वर्ष करोरी ॥ गौरि गिरीश बनी जिमि जोरी ॥ ४४ दोहा ॥ जलके सरल विलासमय, चातुर खरेखवास ॥ बहु बाजन बाजन लगे, साजत भूषण वास ॥ ४५ ॥ दोधक ॥ पीरीरची शिरपाग विराजै ॥ शीश सुमेर मनौ रवि छाजै ॥ हीरन मोतिन लाल मनीको ॥ मौर दिपै शिरपै अतिनीको ॥ ४६ ॥ तोटक ॥ झमकै पुहुप राजनकी कलँगी ॥ जनु राजशिरी शिर ज्योति जगी ॥ कल हीरनको सरपें चुलसै ॥ शशि सादर पूरण ज्योति बसै ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ जरतारेको झलमल्यो, तुरी द्युति दरशाइ ॥ मुख शशि जीती सूरकी, दई किराणि छिटकाइ ॥४८॥ पाग मिली झूमै विमल, मुक्तावली विशाल ॥ फूल्यो मानौ अमरतरु नवमंजरी रसाल ॥ ४९ ॥ प्रद्धटिका ॥ लखि खौरि लगै नीकी लि- लार ॥ शशिखंड चारु जनु एक सार ॥ परिवेष मनौ विधुको विसाल ॥ गल राजत मुक्ता नखत माल ॥ ५० ॥ मकराकृत कुण्डल मंडिकान ॥ जहँ कढत तरल सुकटाक्ष बान ॥ दिय अंजन नयनन माहँ मोरि ॥ जनु बांधे खंजन श्याम डोरि ॥ ५१ ॥ दोहा ॥ जग जासों लक्ष्मी कढी, परवारनको हेतु ॥ साँचो भयो समुद्रकर, चक्र रत्न संकेतु ॥ ॥ ५२ ॥ दढपद ॥ बाहनिमें नरनाहके नवरत्न विराजै ॥ छूटी किरणै तासुकी सित लाल समाजै ॥ गंगाधौं नदसोंन सों मिलिकै उमही है ॥ केधौं सुयश प्रतापकी तहँ ज्योति जगी है ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ सुधा भरे अधरन मिली, रँग तमोल रस रेख ॥ मनौ लाल तोसक विछी रतिकी सेज सुवेष ॥ ५४ ॥ मनहरण ॥ व्याहके बरन वर बागो झल

झल होत सूरको उदोत ज्यों लखत दीठि हहरै ॥ पनरत अंक अंक पाति अनुराग कैसी ऐसी भाँति रतिकी अनूप रूप लहरै ॥ बाम अंग भूषित तरल करबाल सोहै अन्य दमयंतीसी छबीली छबि छहरै ॥ दूलहु बनो है प्यारो आनंदको मूल द्वारो देखती अतूल झुंड झुंडनि ह्वै थहरै ॥ ५५ ॥ गीत ॥ तब दीह दीह बजे बने सब साज नौबति जोर हैं ॥ नव चंग संग मृदंग मंगल दुंदुभी ध्वनि घोर हैं॥ बनि नाचती सुर अच्छरी जिन भाव मोहत सिद्धहैं॥ द्विजराज गावत वेद देत अशीश देव प्रसिद्धहैं५६ तब ज्योतिषी सँगलै पुरोहित और जे द्विजराज हैं॥ गुरु ज्ञान वृद्ध प्रसिद्ध सिद्ध विधान जानत काज हैं ॥ सब सूत मागध वंदि चारण नेगि यह अनंतहैं ॥ रचि चारुमोतिन चौकमंडल फूलपत्र वसंत हैं ॥ ५७ ॥ जल पूरि हाटक कुंभको धरि थापि गौरि गणेशको॥ दल दूर्बा दधि मेलि कुंकुम बारिदीप सुदेवको ॥ तहँ लाल आसनकी गदी मणिलाल मोतिनसोंलदी॥ चहुँ ओरते उमड़ी परै अनुराग आनँदकी नदी ॥ ५८॥ निज अर्घ्य देत महर्षि हर्षित दूलहै तहँ लाइकै ॥ करवाइ पूजन बाँधि कंकनरीति वा कुलपाइकै ॥ बनिकै बरात गयंद स्यंदन बाजि बाहन साजिकै ॥ फिरि छत्र चौंर पताक सों चढ़िकै चले अति गाजिकै ॥ ५९ ॥ सुनि सोरको सिगरी पुरी नवनागरी अकुलाइकै॥ गृहकाज छोड़ि तुरंत दौरि लगीं गवा-छनि आइकै ॥ रवपूरि भूषणको रह्यो अरु भूरि कूँकंत मोर हैं ॥ अलकैं गुदी मुक्ता गिरैं नभकी घटा जनु जोर हैं ॥ ६० ॥ दोहा ॥ अंजन आँजतते भई, नल दर्शन को लोल ॥ गई भूलि करकंपिकै, साँवल करे कपोल ॥ ६१ ॥ सवैया ॥ पाँयनमें उरझी रसना करदाबि निबी इक दौरति ढीली ॥ घेरिलई तहँ हंसनिके अवतंसनि आनिकै जीलरसीली ॥ ठाढीहँसैं सखियाँ सब दूरि भरीरिस भूरि झकै गरबीली ॥ भाज्यो चहै बँधुवाजिमि छूटि गह्यो रखवारेनदै पगकीली ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ मुख सरोज नख आरसी, हँसनिबैनिपीयूष ॥ नयननकी देखत हरै तलफ प्यास अरु भूख ॥ ६३ ॥ माला गूँदतते चली, बिथुरत मुक्ताजाल ॥ मनौ लाज मोचन करै, याके गौन रसाल ॥ ६४ ॥ उचकै लाये टकटकी, छुवै धराणि नहिं पाँइ ॥ देवनकी रमणी मनौ

जुरित भईं सतिभाइ ॥ ६५ ॥ भूषण गिरत न जानही, देहिं सखी पहिराइ ॥ चकी विलोकै रसछकी, रही टकटकी लाइ ॥ ६६ ॥ कवित्त ॥ काननके पर्यंत लौं नैन पसारि विलोकती चाउभरी है ॥ आवत है सखि सोइ जु वा जेहि ऊपर मोहि रही सिगरी है ॥ बासवको न बरचो दमयंति करचो पन चातुरै चोपधरी है ॥ वासवैको वरणै कविता सब गावत या छबिकी लहरी है ॥ ६७ ॥ दोहा ॥ नखते शिख भूषित भयो, झमकत भूषण भार ॥ चल नयननके उडि लगे मानौ नैन हजार ॥ ६८ ॥ दमयंती तब अवतरचो, पुहुप बाण अवतार॥ सुन्दरताके देशको, भयो भूप सरदार॥ ६९॥ देवनको परसन्नकै, निज चतुराई भाइ॥ लह्यो स्वाद पीयूष खसु, नल संगम को पाइ॥ ७०॥ सोरठा ॥ कहि कहि ऐसी भाँति, रीझि रहीं रस भीजि सब ॥ भीर न नगर समाति, नारी मय संसार जन ॥ ७१॥ छूटत बाण कटाक्ष, कुटिल भ्रुकुटि धनुसों विकट ॥ राते रतन गवाक्ष, काम भूप तरकस भये॥ ७२ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ वरयात्रा वर्णनं नाम षोडसस्सर्गः ॥ १६ ॥

दोहा—सर्ग सत्रहें वार्णि बो, नल विवाह आचार ॥ दीबो दैजो दानको, भोजनं सहित बढार ॥ १ ॥ सोरठा॥ रथ वृन्दनिके ठाट, संगभूप चढ़ि चढ़ि चले ॥ गई रोंकि सब वाट, सुंदर मंदिर भीमके ॥ २ ॥ नीलसरूपक ॥ गौतम नाम पुरोहितरूरे ॥ मंगल साज लिये परिपूरे ॥ लैऋषि वृंद चले चढ़ि आगे ॥ दौरत भूपति पाँयन लागे ॥ ३ ॥ दोहा ॥ लागे पीरे लाल सब, बागे सजे बरात ॥ केसरि मनौ कुसुंम बन, फूलिरह्यो दरशात ॥ ४ ॥ सवैया ॥ हाथिनके हलकानिके ऊपर गुंजत धूह समूह नगारे ॥ कोटि निशान ध्वजा फहरैं नभ ओटि न जानिये भानु निहारे ॥ चातुर चित्त कबित्त पढ़ैं यश चारण वारण पावत

भारे ॥ भार भरी लचकी अचला पचकी परै शेषकी चाँदि दरारे ॥ ५॥ सारावती ॥ भूषण में प्रतिबिंब परै॥ श्वेत छटा तिनमें पसरै ॥ और दुहूँरमणी चतुरै ॥ चामरचंद्र समान ढुरै ॥ ६ ॥ दोहा ॥ सब रँग रेसम कतरिके, तरुता फूल बनाइ॥ तेहीतेही भाँतिकी दई सुगंध मिलाइ७ तखतन बानि पै नाचती, चातुर पातुर पुंज ॥ टूरिपरी बनते मनौ, परी करै रस गुंज ॥ ८ ॥ छप्पय ॥ छूटत कर सम सोम भोम रंग श्वेत सुहाये ॥ गुँदे फूल मखतूल तुंग तरुवर छबिछाये ॥ हरित लाल अरु पीत परम पल्लव लहराहीं ॥ रचे बगीचा चारु हरे छहरैं घन छाहीं ॥ जिमि जोरि कोटि तैंतीस सुर चलतु उषाको कंतु है ॥ इमि सोहत नल दूलहु बन्यो चहुँघा लसत वसंतु है ॥ ९ ॥ दोहा ॥ दमयंती सों कछु बड़्यो, दमन नाम जो भाइ ॥ अगवानी सँगलै मिल्यो, दूरि धरणि शिरनाइ ॥१० ॥ द्वितीयझूलना गति मंद मंद बरात जात विनोद बात बखानि ॥ हथ फूल छूटि अनार चंपक चारखी द्युति खानि॥छुटिकै सितारेनसों हवाइनसों बरयो नभ पूरि॥ भयमानि पावकको भजे सब देवतागणदूरि ॥ ११ ॥ लीला ॥ राजपैंरि समीपलौं पहुँची बरात बजाइ ॥ हाथचीर पताक चंचल लेति ताहि बुलाइ ॥ बांधि वंदनवार पंकज रंभके दलथंभ ॥ रत्नहाटकके भरे घट हैं विवाह अरंभ ॥ १२ ॥ चौपाई ॥ भीमधाम भूपति जे आये ॥ कोटि कोटि जे न्योति बुलाये ॥ उमही भीर न नेकु समात॥ जब द्वारे परगई बरात ॥ १३ ॥दोहा॥ हाँथै हाथ खवास तब, लै उतारि नरनाथ चौकमाहँ ठाढो कियो, देखत लोग सनाथ ॥१४ ॥ उठि उठि सब ठाढ़े भये, भीम भूपके संग ॥ चलि आगे लखि दूलहै, मनमें बढ़त उमंग॥ १५ ॥ मिल्यो भीम भूपति बरै, घरी भाग शुभ शोधि ॥ ज्यों हरको हिमवान औ, हरिको क्षीरपयोधि ॥ १६ ॥ तारक ॥ तब प्रोहित गौरि गणेश पुजाये ॥ द्विज वंदिनको बहुदान दिवाये ॥ मणि माणिक लाल अमोल लगाये ॥ नृप भीम नलै कपरा पहिराये ॥ १७ ॥ जहँ खंभ हजार कहैं कदलीके ॥ बहु वंश प्रशंस लगे अतिनीके ॥ मुक्ता मणि झालरि लेत झुकायो ॥ अहिकी लतिका दलसों सबछायो ॥ १८॥

दोहा ॥ रची सर्वतो भद्र तहँ, मणि कपूर रजचौक ॥ मंडित आँगन मांडयो, जनु रविछबि अवलोक ॥१९॥स्रग्धरा॥ ता पीछे भीमराजा विनय युत वरै माँड़ये मध्य आन्यो॥ गावैं रानी सुवानी सबमिलि हिलिकै आरती कै बखान्यो॥ बैठारचो चारु चौकी कहत नाहिं बनै देखि वाकी निकाई ॥ बैठारीलै दमयंती निकटलै नृपतिके आई लगाई वधाई ॥ २० ॥ राम ॥ गठिजोरो सखियां करें, नल पटुकासों साठि॥ छुटत गाँठि हियकी अरी, परी वसनमें गाँठि ॥२१॥तोमर॥नल जेंइयो मधुपर्क ॥ मन देखि आवत तर्क ॥ दमयंति ओठ समान ॥ पहिरे भयो रसपान ॥ २२ ॥ सरसी ॥ नलके कर सरोजके ऊपर दमयंती कर राखि ॥ पावक चंद्र सूर निशि वासर सुर गुरु द्विज दै साखि ॥ गावैं गीत सखी सब सुन्दरि बजत बाजने यूह ॥ कन्यादान भीम नृप दीन्हो दीन्ही दासि समूह ॥ २३ ॥ दोहा ॥ नलको कर नीचे परचो तियकर ऊपर हेरि ॥ सुधि करि करि विपरीतकी, हँसैं सखी मुख फेरि ॥ २४ ॥ शिव जो दीन्ही भीमको, एक नाम हित पाइ ॥ चिंतामणिकी माल सो, दई नलै पहिराइ ॥ २५ ॥ जासों महिषासुर हत्यो तीक्षण धार कराल ॥ गिरिजासों लहि भीमसो, नलै दई करवाल॥२६॥ शत्रुनके रक्तै पियै, यम जिह्वाके रूप ॥ म्यान जराऊ में छुरी, दई छुरीसो भूप ॥ २७ ॥ अग्नि करचो उपहार रथ, दमयंती हितलागि ॥ भीमदयो नलको वहै, जल थल गति अनुरागि ॥ २८ ॥ उच्चश्रवादि इंद्रको, जलधि छपायो जोइ ॥ वरुणदयो हय भीमको, नलै दयो नृप सोइ॥२९॥सोरठा॥ इंद्र ओरते आइ, विश्वकर्मा भीमै दयो॥ पीकदान सुख पाइ, नलको दीन्हो लालमय ॥३०॥ निज मयूष समुदाइ, पूरि रह्यो सब ओरसों॥ धोवत दास बनाइ, मानौ भरचो तमोल रँग ॥३१॥ मयदानवरचि काढ़ि, दई भीमको नाम हित ॥ रही हरित द्युति बाढ़ि, थारी पन्ननकी दई ॥ ३२ ॥ जामें जेवत भोग, होत न मय विष विषमको ॥ निकट न आवत रोग, सरस अन्न कंठै पचै ॥ ३३ ॥ दुर्वासाके शाप ऐरावत क्षितिमें गिरचो॥ भीमराज परताप, सोसिंदुर नलको दयो॥३४॥ भजि दिगंतको जात, मेरे सन्मुख होत जे ॥ हाथिनको यह बात, करन

चलाचल सो कहै ॥ ३५ ॥ निज नृपकीरति दंड, धरत दशन द्वै श्वेत अति ॥ अरि अपकीरतिखंड, दमकी धारनिसों धरै ॥ ३६ ॥ **गीत ॥** जितनो दयो जेहि भाँति दायज भीम भूपति हेतसों ॥ गणिको सकै रथ बाजि वारण रत्नभाजनचेतसों ॥ बहु दास दासि सुगंध वासन भोग भाग समानसों ॥ सुरभी अनेकन ग्रामके गण धाम दे शुभका जसों ॥ ३७ ॥ **दोहा ॥** बाम हुतो नल ब्याह में, पावक चित लल-चाइ ॥ ताकी करी प्रदक्षिणा, दक्षिण करी बनाइ ॥ ३८ ॥ **सवैया ॥** पाथरकी थिर रेख रहै जिमि त्यों तुम या पतिके संग हूजो ॥ योंकहि प्रोहित राजधरचो शिलपै पगुलै दमयंतिको दूजो ॥ पाथर तूलके तूल उडै करु लाइ छुवै हरिको नहिं जूजो ॥ याकी मनोगति पै न चली हरि हारि गयो करिकै पग पूजो ॥ ३९ ॥ **तारक ॥** ध्रुवको अवलोकत भौंह चढ़ाई ॥ अति सूक्षमरूप न देत देखाई ॥ ध्रुव है अनुराग सुहाग तिहारो ॥ सखियाँ हँसि बैन कह्यो अति प्यारो ॥ ४०· ॥ **तोटक ॥** दमयंति जबै करसों परसे ॥ तब फूलनकी समता सरसे ॥ करते छुटि लाज जबै बिथुरे ॥ मुकुतागणसे सुख देत दुरे ॥ ४१ ॥ मुख पावकके पुनि होमि दिये ॥ तब तौ द्युतिदंत समान किये ॥ नलके सँग भामरि लेत लसै ॥ दृगकोरनिही अलि ओर हँसै ॥ ४२ ॥ घृत आहुति धूम लतानि करैं ॥ लगि भाल मनौ अलकैं छहरैं ॥ छतिया मृगनाभि सुगंधि रली ॥ दृग अंजन कान सरोज कली ॥ ४३ ॥ लखिकै सब दायजु भीम दयो ॥ जनकौन रुमंचित जोन भयो॥ दुलहा दुलही पुलके मिलिके ॥ नहिं जानि परै सबकेरलिके ॥ ४४ ॥ **मृदुगति ॥** यहि भाँति करि विधिब्याह ॥ हरषे पुरोछ उछाह ॥ सब पढ़त विप्र बनाइ॥ श्रुति विविधि मंगल गाइ॥ ॥ ४५ ॥ **दोहा ॥** लै नारी भीतर गईं, अद्भुत साजि समाज ॥ दै अ-शीष बाहेर गये, सब ऋषीश द्विजराज ॥ ४६ ॥ **हरिगीत ॥** सब साजिकै कुलरीति विधि विधि दूलहै मुख चाहिकै । रनिवास सिगरी ना-गरी वहुरूप राशि सराहिकै ॥ तन मन बिसारहिँ प्राण वारहिँ करहिँ न्यो छावरि घनी॥मुख नवल दुलहिनिको विलोकहिँ कमलकी जहँ छबि घ-

नी ॥४७॥ परिहास करहिं अनेक हँसि हँसि दुहुनि मुख दै दै बिरी ॥ चलि झमकि दामिनिसी दिपति चहुँ ओरते कामिनि घिरी ॥ पुनि तीन रजनि बधाव संयुत सेज रुचि मिलये तहाँ ॥ नहिं मिलन भूँख घटी छुटी नहि लाज जनजागत तहाँ ॥ ४८ ॥ सोरठा ॥ दमयंती संयोग, सपनहूँ नृप लहि छकै ॥ सो साँचो करि भोग ॥ मगन भयो सुख सिंधु में ॥ ४९ ॥ प्रद्धटिका ॥ इत भीम भूप जेउनारसाजि ॥ जेहि देखि जाति पीयूष लाजि ॥ बरनेगि पठै बोली बरात ॥ बनि चले हर्ष हिय नहिं समात ॥ ५० ॥ प्रद्धटिका ॥ सब छत्र धारि नरपति कुमार ॥ सजि वसन रत्न भूषण हथ्यार ॥ सँगलै खवास बाजन बजंत ॥ नव मंडफ तर पहुँचे तुरंत ॥ सन्मानि भीम नृप पग पखारि ॥ दिय यथा योग आसन विचारि ॥ ५१ ॥ परसैं विलासमय सुघर नारि ॥ परिहास करैं अरु देइँ गारि ॥ कोउ माँगत होइ सुनै न ठारि ॥ तेहि दयो ऊकको हँसतडारि ॥ ५२ ॥ मम लोचनको तव दरश प्यास ॥ इहि ओर नेक लखिकै विलास ॥ इक कह्यो वराती सुनि सुनारि ॥ भजि गई नैन जल छीट मारि ॥ ५३ ॥ दोहा ॥ इनमेंमेसेल्यो हियो, कह्यो वराती चेति ॥ कहत तुच्छ गल मेलि, गल माल ऐंचि तिय लेति ॥ ५४ ॥ दोधक ॥ एक परूसतिहीं कमलासी जेंवनहार करी तहँ हाँसी ॥ कै छलको विछुवापग छायो ॥ डारि भजी पटसोरु मचायो ॥ ५५ ॥ आसन जे ऋषिकाज बनाये ॥ पूँछ दुरे तिन माहँ लगाये ॥ गोंद समेत रंगे तहँ बैठे ॥ ब्राह्मण वृंद पढें श्रुति जेठे ॥ ५६ ॥ दोहा ॥ और ठौर उठि बैठिये, महाराज द्विजराज ॥ उठे विप्र चपटे पटा, पीछे पूँछ समाज ॥ ५७ ॥ चर्चरी ॥ भाँति भाँति अनेक सुंदरि मोदसों परसैं खरी॥कामकी करतूति मूरति ज्योतिकी विलसैं बनी॥जेवते तब मंद मंद छतीस व्यंजन षट् रसनी ॥ शंख भेरि मृदंग संग तँबूर भीरनिसों घनी॥५८॥ सोरठा॥वार बार नृप भीम, सबनि ओर करजोरि कै विनती करी असीम, जेवत भूप सराहि कै ॥ ५९ ॥ रही थकित होइ मोहि सरस परूसन हार तिय॥रहे वराती सोहि, मनौ दास नृप कामके ॥ ६०॥ हँसी मोरि मुख आन, नईलाज गद गद वचन ॥ सोई भयो जमान, वाके

नेह मिलायको ॥ ६१ ॥ **सवैया** ॥ चंचल नयननिकी गति रोंकति और कह्यो चहै साजाति औरै ॥ जे मृगनैनिके भाव लखे मुसक्यात जुवा-चित वा ढिग दौरै ॥ तोय परोसतही मुखनै इकु चुंबनको ललचै बर जौरै॥ ज्यों झपटचो पगु त्यों रपटचो चपटचो तन भात परचो तेहि ठौरै ॥६२॥ **तोटक** ॥ यक बीजनु ढोरतिही अबला ॥ कुचकोर कढ़ै जिमि चन्द्र-कला ॥ तेहिको लखि एक युवाथरकै ॥ पिंजरा खगडोरि बँध्यो परकै ॥६३॥ नवभाजन पाननके करिकै ॥ छहरी सुहरी किरणै भरिकै ॥ जनु भाजनसों भरिराखत है ॥ करडारत सागन चाखत है ॥ ६४ ॥ **सवैया** ॥ चावर खंडित नेक भये नहिं मंडित शुद्ध सुगंध समाते ॥ एकते एक छुटै छहरै छबिमोतिनकी लहरें सरसाते ॥ कोमलस्वाद सुधाहि मनौ निजदीपति खेत हँसै सरमाते॥ बातनही छबि जात अघात हैं जेंवत भूपति भात बफाते ॥ ६५ ॥ **दोहा** ॥ सुरभि दूधसों निर्मये, क्यों न सुरभि घृत लेहि ॥ पायस परसि थरानमें, पूरि समुदसे देहि ॥ ६६ ॥ सुधास्वादते सौ गुन्यो, खीरखांड़ रसजानि ॥ होमकरत अभिरत तजत, भजत याहि सुर आनि ॥ ६७ ॥ **लक्ष्मीधर** ॥ राइतो स्वादकै मूंदि आँखें हसै ॥ खातकै कैसि-सी यों खटाई रसै ॥ इंदुके बिंबसे हैं पसूसे वरा ॥ तोरिते टूटिआवें रसी-ले गरा ॥ ६८ ॥ **सोरठा**॥ पहिले शीतल होत, पुनि हीतल गरमी करै॥ साँचे चंद उदोत, बरासरा हैं विरहिजन ॥ ६९॥ **सवैया** ॥ एक परूसतही पकवान भये कछु शीतलही कछु ताते ॥ केलिको औसर बूझत ताहि जु वाइ कुले न किये मुसक्याते॥ शीतल ताते बिथोरि दिये इभि दूरि करी दिन रातिकी बाते ॥ साँझ बताइ दई है यही सुधरी अंगुरी अधरा रँग राते ॥ ७० ॥ **तारक** ॥ रचि आमिषके परकार नवीने ॥ नव रंगि-तकै अधरा सम कीने ॥ रस सों मुख चूमति ताहि बराती ॥ अवलोकि परोसति नारि लजाती ॥ ७१ ॥ यहि भांति नये परकार सवारे ॥ जेहि देखत भूतल जेवन हारे ॥ बिन आमिष आमिषसें पहिचाने॥ जहु आमिष तेन परे कछु जाने ॥७२॥ बहु भांति अकालिक वस्तु बनाई ॥ तिनही तिन रंग सुगंधनिछाई ॥ षट हू रसकी रुचिको उपजावैं ॥ चकिकै जेन जेवत जानि न पावैं ॥ ७३ ॥ **मनहंस** ॥ यहि भाँतिते जे मन सजे परबीन है ॥

अतिसै सवाद सुगंध सोँ रस लीन है ॥ तिनको कहाँ लग को सकै सब जेइँ कै ॥ गनती गने नहिं पार पावत सेइ कै ॥ ७४ ॥ दोहा ॥ सोधि फिरायो बरफ मैं, शुचि सुबासुकी खानि ॥ झारिन सोँ नारि न बहुरि, आनि परूसे पानि ॥ ७५ ॥ संयुत ॥ यहि भाँति जेँवत भूप हैं ॥ छबि कंठलौं सुख रूप हैं ॥ वह बार बार सराहि कै ॥ परिवेषि-का मुख चाहि कै ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ भै शिवकें नीके रचे, नीके पय दधिचारु ॥ जम्योँ मनौ पीयूषको, चन्द्रबिंब समसारु॥७७॥ चर्चरी ॥ दूधमें प्रतिबिंबसोँ परिवेषिका मुख देखि कै॥ ताहि चूमत है युवा तेहि और उच्चकनेषि कै॥ थारमें प्रतिबिंब नागरि हेरि एक जुवारस्यो ॥ दाबि दै तेहि गोद मोदक दोइ त्यों उनहूँ हस्यो ॥ ७८ ॥ चौपाई ॥ नाहीँ नाहिं बराती कहैं ॥ ओट हाथ थारनि दैरहैं । सब व्यंजनते मन परकारा ॥ नारि परोसिदेँइ निरधारा ॥ ७९ ॥ गोपाल छंद ॥ लेखि विलास अघाने भूरि ॥ भोजन भार रहे सब दूरि ॥ हाटकके घट भरे हजार ॥ कर पर छालनको तेहि बार ॥ ८० ॥ धोवत कर नख कर सरसात ॥ चन्द्रकला जनु अम्बुज पात॥ सजि सजि सबै बराती लोग ॥ खरे भये तब योगा योग ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ भोजन छरस प्रसिद्ध हैं, यह अद्भुत संचार ॥ भोगत भूपति सात रस, भीम भवन शृंगार ॥ ८२ ॥ भीम भूप बीरादये, लौंग कपूर मिलाइ ॥ क्रमुक खंड एला विमल, मुक्ता चून बनाइ ॥ ८३ ॥ हरिगीतिका ॥ तिनके खवासनिकोदये युग रत्न जाति मँगाइ कै ॥ इकु झूठुतामहँ सकल द्युति निधि साँचु छबि छुटि लाइ कै ॥ तिन गहो झूँठो नग छबीलो किरणि गण परभाइसों ॥ सब हँसन लागे लोग तब नृप सकल दीन्हे चाइसों ॥ ८४ ॥ इमि करत भोग अनेक विधि विधि रैनि औ दिन होत सो ॥ पुनि चलत मृदु जनवास आमहि भीम भूप निकेतसो ॥ भरि रजनि देखत निरतरंग तरंग सुखसागर भरी ॥ परि पूरि ब्याह उछाह निज गृह चलनकी चित मति करी ॥ ८५ ॥ शुभ समय जानि विदा भये पुनि वाजि वारण साजिकै ॥ मिलि मात करहिं विलाप रहि दमयंति नत मुखलाजिकै ॥ मुख चूमि लखि लखि लाइ उर दृग

नीरकी सरिता बढी ॥ मन मोदसों गहि गोद सखि सुखपालकी परलै चली ॥ ८६ ॥ **सोरठा** ॥ वह शोभा अभिराम, लखि न परै कितहूँ कहूँ ॥ भयो भीमको धाम, ज्यों लक्ष्मी बिन क्षीरानिधि ॥ ८७ ॥ **दोहा** ॥ पहुँचावनको भीम नृप, संग चले अति दूरि ॥ नल फेरे पर णाम कै, वर्णत वा गुण भूरि ॥८८ ॥**तोटक** ॥ दमयंति मनै नल मोहि लियो ॥ दुख माइकको सब दूरि कियो ॥ मृदु बातन में मन मोहि गई ॥ तनहूँ मनहूँ पति प्रेम मई ॥ ८९ ॥ पहुँची रस रंग बरात भरी ॥ अभिराम जहाँ नलकी नगरी॥ ध्वज चीरन तोरन यों छलकै ॥ जनु छूटि रहीं अलकैं झलकै ॥ ९० ॥ **मालिनी** ॥ सब सचिव सभागे दूरिही दौरि आये ॥ लचि लचि क्षिति छ्वै छ्वै हाथ माथे बनाये ॥ सजहिं तुरत भेटैं लै खजाने लुटावैं ॥ घर घर सब नारी व्याहके गीत गावैं ॥ ९१ ॥ सब नगर शृँगारो इंद्रकैसो अखारो ॥ नल सँग दम-यंती मंगलै लै सिधारो ॥ कछु सचिव न बूझै देशकी बात रूरी ॥ नि-ज चरित बखानै स्वै कथा पाइ पूरी ॥ ९२ ॥ उठि उठि सब धाई देखिवेको सुनारी ॥ लखि नल दमयंती लोक लाजै विसारी ॥ मगन मगाधि थोरै लाज कै सो नदीसैं ॥ जियहु विधि बरीसौ देहि नीकी अशीशै ॥ ९३ ॥ नरपति गृह आयो मोद सो दान दीन्हे ॥ सकल सुर विलोकै पुष्पकी वृष्टि कीन्हे ॥ जननि मन अनंदे आरतीलै उतारी॥ नत वदन दमयंती मोदसों गोद पारी ॥ ९४ ॥ **दोहा** ॥ पाँइ परी दमयंति तब, सासु अशीशै हेरि ॥ मणिगण न्योछावरि करहि, तेहि परचारि घनेरि ९५॥**सोरठा** ॥ देखत चढे विमान, चारौ सुर सरस्वति सहित ॥ भये मुदित गुण मान, तब चढ़ि सुरपुरको चले ॥ ९६ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबर खाँ प्रोत्साहित गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ नल पुर प्रवेसो नाम सप्तदशस्सर्गः ॥ १७ ॥

दोहा-सर्ग अठारहमें कथा, देव गमन सुरलोक ॥ मारगमें कलिकालसों, ह्वैहै भेट अटोक ॥ १ ॥ सोरठा ॥ अमर चारि गत लोल, करि निष्फल परिश्रम धराणि ॥ ज्यों वारिधि कल्लोल, ज्यों आये त्योहींगये ॥ २ ॥ प्रमाणिका ॥ दमयंतिपै कृपाघनी ॥ न आपनी विथागनी ॥ नलैहदै सुचाइकै ॥ सुभक्ति मोद पाइकै ॥ ३ ॥ रहे विमान सोहिकै ॥ दिनेश ज्योति मोहिकै॥ चहूँ चलैं ध्वजा धरी ॥ नचैं सुगान अच्छरी ॥ ४ ॥ स्वागता ॥ वात वेग साजे रथ जाहीं ॥ मेघ ओघ धारे तहँ छाहीं॥ दीठि नेकु नहिं-आवत जो है॥ सिद्धि एक अति भाजनुसो है ॥५॥ होत मेघ जब बासव संगी ॥ इंद्र चाप विलसै बहुरंगी ॥ धर्मराजकरदंड विराजै ॥ छत्ररूप रवि लागत छाजै ॥ ६ ॥ तोटक ॥ चहुँ ओरन छूटि रहीं लपटैं ॥ लगि वायु बबूलनिसों झपटैं ॥ लखि आवत पावक नाचनचै ॥ दमयंति बरी इनहींनिहचै॥ ७॥ भ्रमहोत हिये सुर लोगनके ॥ मुसक्यात सुने भव भोगनके ॥ यहि भाँति दिगीश चले मगमें ॥ इकसोरसुन्यो अतिहीलगमें ॥ ८ ॥ सुनि घोर अघोरिनके रुतकौं॥चकिकै दृग फेरि करे उतकौ॥ यक साँवल फौज तहाँ झलकी ॥ जनु आवत धार चढ़ी मलकी ॥ ॥ ९ ॥ जनु पातक की नगरी उमही॥ तमराशि मनौ इक ठौर सही ॥ नभ धुंधुरि मूरति आवति है ॥ चहुँ देवनको समुहावतु है ॥ १० ॥ ॥ तोमर ॥ मनमथ्थको भागोलु ॥ कलि कीन्ह जाहि हरोलु॥ पाहिले परचो बहु दीठि॥तब दैरहे सुरपीठि॥ ११ ॥दोहा॥ शूर अगम्या गमनमें, भय न लाज परसंग॥दाता दूतिनके बड़े, राजाके भटसंग॥ १२॥सोरठा॥ धरत लोक जित भाउ मनौ बुद्ध अवतार यहु, ईश्वर तूल बनाउ, साजत सृष्टि-शरीर विन॥चौपाई॥ आवत और लख्यो सरदार ॥ सबको डाटतु कँपत अपार ॥ १३ ॥ ॥ अरुण बदन बहुगारीदेत ॥ क्रोध नाम ताको कहि लेत ॥ १४ ॥ जाके संग सिपाही घोर ॥ पीसत दंत करत मुख सोर ॥ भ्रुकुटी कुटिल नयन करिराते ॥ काटत ओठ भूरि रिसमाते ॥ १५ ॥ सोरठा ॥ जासों काम डेराइ, ताहि क्रोध वशमें करै ॥ हर दुर्वासा पाइ, देखि लेहु इनकीदशा ॥ १६ ॥ करत विराग बनाइ, लाल करेहू

देहको ॥ तमको देत बढ़ाइ, जऊ ज्ञुलित हियमें रहै ॥ १७ ॥ गोपाल ॥ बाये बदन अर्ध मुख गाथ ॥ धनिकनि ओर पसारे हाथ ॥ दीन चेष्टा करे डिरान ॥ लख्यो लोभ देवनि नियरान ॥१८॥ याचक ठग दंभी अरु सूम॥ धूत उपाधि मचाये धूम ॥ निर्धनलै धनिकनके पास ॥ बेंचत है ज्यों अपने दास ॥ १९ ॥ सोरठा ॥ रहत सकल तनमाहि, ये रसनापर प्रीति अति ॥ नाहि गनत है नाहि, तृष्णा रमणीको रमण॥२०॥ मिलि मिलि रोवत दीन, सुनै न गुरु उपदेशको॥ सुत दारनसों लीन, मोह लखत सुर छोहसों ॥ २१ ॥ जानत है नितमीच, तऊ न हरिमें चित धरै॥ कुटिल आसनी नीच, ये चाकर चहुँ ओर हैं ॥ २२ ॥ चंद्रमाला ॥ ब्रह्मचारि बनबास यती जिमि गृही आशरो आनै ॥ त्यों मनोज अरु क्रोध लोभ ये मोह अधीन बखानै॥ जागतकी जो नीद अंधता देखत में जो गाई॥ सुनतहुमें जो कही बधिरइव उजियारे मेंलाई ॥ २३ ॥ पहिचाने लखि चिह्न पाछिले कामादिक निरवारे ॥ बदन श्याम नखते शिखलौं कुलि कलुष कंचुकनिधारे ॥ देखत भये देव दूखित हिय सूखित बदन मलीने ॥ करकस शब्द सुने काननिसों कहत पाप परबीने ॥ २४ ॥ कामादिकनके वचन ॥ छप्पय ॥ वेद धूत संवाद ताहि साँचो जो जानै ॥ बाजीगरके बाग तोरि फलते गहि आनै ॥ अग्नि सत्र तिवेंद भसम धारन आछाली ॥ एक दंड तिदंड चर्म मृग जटा कपाली ॥ यह ठाँठु ठाँठि आजीविका करत धूत जन जगत में॥यहि बुधि न पौरुष होत कछु पंथ चलावत भगत में ॥ २५ ॥ सोरठा ॥ द्वैकुलकी लहि शुद्धि, हर्षि करत संबंध सब॥ जानत नाहिं कुबुद्धि, पछिले कुलके दोष गुण ॥२६॥ तारक ॥ जेहि भाँति करै तियकी रखवारी ॥ नरकी नहिं ओट करै नहिं सारी ॥ उघरै नहिं बात कलंक मई है ॥ जगदंभिनकी यह रीति नई है ॥ २७ ॥ परदाररमे सम पाप न दूजो ॥ तुम क्यों करि वासव पाप न पूजो ॥ गुरुदारनके कलुषै ताजि देहू ॥ द्विजराज कह्यो गुरु दार सनेहू ॥ २८ ॥ पुनि व्यास बराबरि और न मान्यो ॥ सुनिये तिनहूँ यह बैन बखान्यो ॥ जब कामिनिके तनु कामसतावै ॥ नहिँ पा-

तक होत जुवाहि रमावै ॥ २९ ॥ दोहा ॥ जैसी श्रद्धा सुकृत पर, क्यों न सुरन पर सोइ ॥ वेद कहत सो काम करि, जहाँ अंत सुख होइ॥ ॥ ३० ॥ द्वितीय झूलना ॥ बलसों करौ सब पाप तुमको वे न ला-गत फेरि ॥ बलसों करे सब काम निर्फल कहत मनु मुनि टेरि ॥ श्रुति अर्थ सों अरु सुमृति सों बहु भेद अर्थ न होत ॥ बल बुद्धि विवरण करत ता महँ सो भल्यो सुख सोत ॥ ३१ ॥ जेहि देहमें इम बुद्धिही वह देह डारत दाहि ॥ परसाखि जीव जुदो नहीं यह पाप लागत काहि ॥ यहि देहके कृत कर्म लागत और देह न पाइ ॥ जब और जेंवत अन्न है तब और क्यों न अघाइ ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ एक आत्मा सबनिमें, लहत पाप सब ठौर ॥ एकपाप तेरो मिले, कौन भारु तहँ और ॥ ३३ ॥ एक आत्मा सबनिमें कह्यो पुण्य तें एक ॥ क्यों करि सबके पुण्य बिन, ताकी पुण्य विवेक ॥ ३४ ॥ एक आत्मा सबनिमें जो साँची यह बात ॥ पुण्य पाप एकै करै, फल सब में ह्वै जात ॥ ३५॥ भुजंगप्रयात ॥ करौरे करौ काम कैसो सनेही ॥ सबै देव मानै बनैगो करेही ॥ कहैं लोग यों वेद है देव वानी ॥ यहौ विष्णुको पुत्र वेद प्रमानी ॥ ३६ ॥ प्रद्धटिका ॥ नहिं जानि परत परलोकनेक ॥ नहिं आवत वासों पत्र एक ॥ मनु कहे धर्म अपने पुरान ॥ ते सकत कौन करिके निदान ॥ ३७ ॥ कुरुराज सभा कबि व्यास देव ॥ गुणि बर्णेउ उनके उन अभेव ॥ उनकी पसंद अनुसार पाइ ॥ भाषे पुराण बसु दश बनाइ ॥ ३८ ॥ निजबंधु बधू सँग सुरति कीन ॥ पुनि दासी संगति सों मलीन ॥ तिनको प्रमाण केहि भाँति योग ॥ जेहि भूले वैदिक सकल लोग ॥ ३९ दोहा ॥ विप्रन कीन्हे ग्रंथ सब निज जीविका विनोद ॥ बैलनके पाथँन परत, बड़ी बुद्धि आमोद ॥४०॥ जाजक छोड़त सुरत सुख, तिन्है सराहत लोग ॥ चाहत हैं वे स्वर्गमें सुरनायका संयोग ॥ ४१ ॥ स्वागता ॥ पाप पाइ खग औ मृग होंही ॥ वेद बोल सब सांच कहोंही ॥ लेहिं आप जब भोगनितेऊ ॥ भूपरूप निजको कहिबेऊ ॥ ४२ ॥ चौपाई ॥ मुक्ति शिला गौतम ऋषि भाषी ॥ वेद ऋचा दे दे सब साखी ॥ पाथर बुद्धि

कहा बहु जानै ॥ सुरति मुक्तिके सुखै न मानै ॥ ४३ ॥ **सोरठा** ॥ इंद्रादिककी नारि, निज निज पतिव्रतको धरैं ॥ मुक्त नहीं हिँ विचारि, रहैं कामकी क़ैदमें ॥ ४४ ॥ **नीलसरूपक** ॥ कर्म करे फलहोत शुभाशुभ वेद कहै ॥ ईश्वर को व्यवहार अकारण कौन गहै ॥ आपुसमाहँ विवादिनकी मति एक नही ॥ दूषणदै अनुमान प्रमाणन व्यासकही ॥ ४५ ॥ औरनके उपदेश न नेकु न कोपगहौ ॥ आपकरै अतिरोष तिन्हैं तुम सिद्ध कहौ ॥ दान दिये दुख होत सियानहिँ प्रीति करै ॥ दान दिये वलि मूढ़ गयो बँधि भूमि तरै ॥ ४६ ॥ दौलति को ललचाइ सबै युगभाव करै ॥ एक खुशामद होत कोऊ जगदण्डधरै ॥ जो जनु होत सुबुद्धि सोई सुरसोँ नडरै ॥ जोजिय जानत शुद्ध वाहि मग-पाँउ धरै ॥ ४७ ॥ **तिर्भंगी** ॥ सुनि यह दुर्वानी पाप निशानी वासव मानी रोष कियो ॥ बोल्यो तिनसोंहैं वदन रिसौहैं टेढ़ी भौँहैं बरतहियो ॥ श्रुतिके रखवारे त्रिभुवन प्यारे वज्र अधारें हम ठाढ़े॥ तहँ की मतिभंगी वकतु कुढंगी यमपुर रंगी डर डाढ़े ॥ ४८ ॥ **दोहा** ॥ जाति लोप चारी किये, जबै परीक्षालेत ॥ देखिलेह खल श्रुति बचन साधु शुद्ध करिदेत॥४९॥सबको अनल समान ह्वै लेत परीक्षाकाल॥साँचे को जलरूपहै, नेक न करत वेहाल ॥५०॥ ईश्वर की इच्छा विना, कर्म करे फल होत ॥ ऋतु पाति नारी योग सों, सदा न गर्भ उदोत ॥५१ ॥ प्रेतदेह लहि पितर निज, चरित बतावत आइ ॥ गया करावत आपनी, और लोकको पाइ ॥ ५२ ॥ भ्रम सों लै यमदूत इत, फेरि पठावत तासु ॥ सुने कथा परलोककी, क्यों न होत विश्वासु ॥ ५३ ॥ जब तू जान विदेशकोउ, तोँहि मिलत तेहि रीति॥आइ चरित तेरो कहै, कौन करै परतीति ॥५४॥ **प्रद्धटिका**॥ पर ज्वलित भयो पुनि ज्ुलन देव॥ छुटि रही ज्वाल चहुँधा अभेव ॥**अग्नि**॥ शठ कहा बकतु हेरे नृसंश ॥ छिन माहँ भस्म ह्वै है सवंश ॥ ५५ ॥ जे करत पुत्र मष पुत्र हेत ॥ तत्काल ईशफल पुत्र देत ॥ जे देत सकल बलिदेव भाग ॥ अभिलाष भोग पावत सभाग ॥ ५६ ॥ यम-राज उठ्यो कर दंडतानि॥ हठि कहत कौन शठ दुष्ट वानि॥ तुवकंठ ओ-

ठको कुंठ जानि ॥ हौं काटत तेरो मंद मानि ॥ ५७ ॥ जब करचो चहत कंन्या विवाह ॥ तब बूझत हैं सबसों सलाह ॥ परलोक जानको कौन मूढ़ ॥ नहिं बूझै गुरुसों ज्ञान गूढ़ ॥ ५८ ॥ जे करत बहुत मतसों सनेह ॥ ते सब विरोधके भरे गेह ॥ तेहिते विचारि अविरुद्ध थानु॥ मत वेद प्रकाशित सार मानु ॥ ५९ ॥ तब वरुण अरुण मुख उठ्यो बोलि ॥ करुणा विहीन सुनिकान खोलि ॥ परचंड पाप पाखंड मूल ॥ मम पास देख नहिं होति शूल ॥ ६० ॥ **मोदक** ॥ ईश्वरको तुम जो नहिं मानत ॥ शालग्राम शिला पहिंचानत ॥ तामहँ कूरम चक्र विराजत ॥ को नर जाइ तहाँ तेहि साजत ॥ ६१ ॥ जो शत यज्ञनको परि पावत ॥ सो सुर सहितसु इंदु कहावत ॥ क्यों तुमसों पद्वी नहिं पावहु ॥ वेदहि छाँडि वृथा मग धावहु ॥ ६२॥ **सोरठा**॥ चारव कों तिन माह, करि प्रणाम आयो निकरि ॥ द्वै सन्मुख सुरनाह, बोल्यो अंजलि जोरिकै ॥ ६३ ॥ **दोहा** ॥ हम चाकर कलिराजके, वृथा करत हौ दोष ॥ ताकी मरजीको तके, करत रंग औ रोष ॥ ६४ ॥ तौलौं चारौ देवता, देखत भौंह उठाइ ॥ आयो द्वपारसो सहित, रथ ऊपर कलि राइ ॥ ६५ ॥ ज्यों चँडालसों द्विज भजै, विमुख भये दिगपाल ॥ तब बोल्यो कलिकाल हँसि, ऊंचे घोष कराल ॥ ६६ ॥ **कलिकाल** ॥ **तोमर** ॥ सुखसों रहे सुरपाल ॥ लहि अग्नि आनँद माल ॥ यमराज चित्त विनोद ॥ कहि पासि भाषित मोद ॥ ६७ ॥ दमयंतिको सुनि व्याह ॥ हमको बड़ी चित चाह ॥ हम जात हैं तेहि हेत ॥ सुनिये विनोद निकेत ॥ ६८॥ सुनि तासु बैन दिगीश॥ हग ऐंचि झारत शीश ॥ मुख आप माँहँ विलोकि ॥ क्रमसों उठे सब टोकि ॥ ६९ ॥ विधि तोहिं जानत मार ॥ करि द्रोह औ अपकार ॥ विधिको करचो श्रुति सेतु ॥ तुम एक नाघ न हेतु ॥ ७० ॥ **दोहा** ॥ वह तौ बीती बात हम, हुते स्वयंबर ठौर ॥ दमयंती नलको बरचो, जानि राज शिरमौर ॥ ७१ ॥ **चौपाई** ॥ सानुराग नागनिको छोड्यो ॥ देवन ओर न लोचन ओड्यो ॥ दमयंती गुण रूप विशाला ॥ नल उर डारि दई जयमाला ॥ ७२ ॥ सुनतै ऐसे बैन तुरंत ॥ कह्यो कोप अति

ही युग अंत ॥ जो निश्चय कलि नाउँ कहाऊँ ॥ देवनको कारज करि आऊं ॥ ७३ ॥ राज स्वयंवर में दमयंति ॥ नल पाई ज्यों सिय विल संति॥ बढ्यो अनादर भयो तुम्हारो॥ येही ते जिउ जरचो हमारो॥७४॥ हमै देखि तुम रहे बराइ ॥ हम आये तुमसों नियराइ॥असमर्थनके पाइहि भाइ ॥ राजहि देखत रहहि पराइ ॥ ७५ ॥ बड़े वंश तुम देव सभागे॥ सुंदर शूर महा अनुरागे ॥ तिनको छोंड़ि अनादर कीन्हो ॥ नलै ब्याहि गुण गौरव दीन्हो ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ तुम चारौ बैठे रहे, ब्याहो नल निरशंक ॥ शीत भानु में ज्यों लगीं, तुम में क्षमा कलंक ॥ ७७॥ तासों चल्यो न बल कछू, हमपै कहा रिसात ॥ सुने अनादर आपने मनमें क्यों न लजात ॥ ७८ दोधक ॥ ये कलिके सुनि बैन उदासी॥ बोलि गिरा तबही गुणरासी ॥ गिरा ॥ कीरति जाइ नलै इन दीनी ॥ औ दमयंति दई परवीनी ॥ ७९ ॥ वाणिहि नौसिकु ज्वाब नदीनो ॥ देवन ओर चल्यो मतिहीनो ॥ बोलि कही बहुरौ कटु बानी ॥ गर्ब भरी अरु पाप निशानी ॥ ८० ॥ कलि ॥ अन्यच्च ॥ हौं न चहौं निजकै दमयंती ॥ आवति मोमन में केहि गंती ॥ है नलपै करुणा नाहिं मेरी ॥ इंद्र सुनौ निश्चय चित मेरी ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ जो हौं जीवत हौं बली, छली छिद्र कछु पाइ ॥ दमयंती औ भूमिको, नलते देउँ छोड़ाइ ॥ ८२ ॥ द्वापरहूं हुंकारसों, करी बड़ाई सोइ ॥ कान मूँदि तामें दिये, बासव बैन समोइ ॥ ८३ ॥ इंद्र ॥ दोहा ॥ हम चारौ लज्जित बदन, साँच लख्यो कलिराज ॥ थोरो दीजतु बड़ेनको होति बड़ी हियलाज ॥८४ चारौफलके दानि हम, तिनको मनु सकुचात॥ नलकी भक्ति समानकै, हमपै दियो न जात ॥ ८५ ॥ सोरठा ॥ कलि तोको नहिं योग,करतकोप नलपै अतुल॥लोकपाल शुभ भोग, निषध सिंधुको सुधाधर ॥८६॥क्षमावान नलराज, तेरो कलि अवकाशनाहिं॥ निश्चित धर्म समाज, द्वापरहूको उदय कित ॥ ८७ ॥ संयुत ॥ दमयंति रानि विनी तहै ॥ पति प्रेमकी चित चीतहै ॥ तुम सारिखे ताकि क्योंसकै ॥ निज चित्तमें बलकै बकै ॥ ८८ ॥ युग शेष आपु विचारिये ॥ नल ओर को न निहारिये ॥ नाहिं जाइयो तेहि की सभा ॥ घटि जाइगी यह तौ प्र-

भा ॥ ८९॥ दोहा ॥ देवकहैं कलिपै कहै, कलि देवनपै सोइ ॥ वचन बराबरि हीबढ़ी, बडी लराई होइ ॥ ९० ॥ निज निज पक्ष प्रमाणके- सम पौरुष सरसात ॥स्वर्ग गये चढि देवता, कलि नलपुर नियरात॥९१॥ दोधक ॥ वैदिक विप्रपढैं श्रुतिरागे॥ त्योंकलिके श्रुति फूटन लागे॥घोष सुने क्रमकी चरचाको ॥ छूटि गयो पग को क्रमुवाके ॥९२॥ दोहा ॥ नगर सहींतै नाहिं सकै, सुनत सहींतै दीन॥होम सुगंध नसी नसा, आहुति धूममलीन॥९३॥ तारक॥ परसे जहाँ विप्रनके पगपानी॥ रपट्यो नसकै चलिकै अभिमानी ॥ तिलतर्पनमें तिल देखि विथोरे ॥ लखि काँपतु भाजि चल्यो मुखमोरे ॥९४॥ द्विज भालन में तिलकावलि छाई॥ दरकी छतियाँ त वारि अराई ॥ जनु झूंठ बखानत देखत रीझो॥ रमणी प्रति वैन सुने तब खीझो ॥ ९५ ॥ स्वागता ॥ यज्ञरूप बनसे कारि लेखे ॥ धर्म साध जनव्याध विशेषे ॥ ढूँढि ढूँढि तिथ हीसै चाहै ॥ बार बार झुरिकै उर दाहै ९६दोहा॥ जोपराक व्रत करतु तेहिदेखत जरतुबराकु॥मूरखके मुखहू- सुनहि, कलिको एको आँकु ॥९७॥ गायत्री रविधामते,विप्रनलई बुलाइ॥ देखत नहिं दुरतै बन्यो, तुरतै गयो बिलाइ ॥ ९८ ॥ चौपाई ॥ ब्रह्म चारि बैषानस सने ॥ जेंवत यती घरै घर घने ॥ तिन्है देखि हिय में रिस गहै ॥ चरन धरन को थानु नलहै ॥ ९९ ॥ सोम याग सुरभी वृष होम॥ हिंसा देखि चल्यो जिय जोम ॥ सुनत ऋचा श्रुति भाज्यो दूरि ॥ खरकुबुद्धि भरिकै रिस भूरि ॥ १०० ॥ कबित्त ॥ मौन व्रतीनको मो जिय जानतु मोहिं शरापत देत हैं गारी ॥ वंदत देवनको जन जे जनु लातनलै शिरकै हनि मारी ॥ अंजलि देत ऋषीश्वर जे चहुँ ओर छुटी छिटकी निरधारी ॥ तातेइ तेलनकै कै मनो छिरकैं जेहिगात जरै इक सारी ॥ १०१ ॥ प्रद्धटिका ॥ कटि मुंज रंजु कर दंड देखि ॥ इमि ब्रह्मचारि द्विज छल अलेखि ॥ जनु बाँधत जोरीसौं बनाइ ॥ अरु चाहत मारन दंड धाइ ॥ १०२ ॥ दोहा ॥ स्नान कथा तकसे गनै, पातकसे सब वेद ॥ प्यासो पावै अनल ज्यों,लहै न छल औ भेद ॥ १०३ ॥ मं- डल को छोड़्योचहै, पंडिलसाइ निहारि ॥ देखि पवित्री करनि में प- वित्रास निरधारि ॥ १०४ ॥ दुर्जनको ढूंढ़त फिरै, लहै ऋषिन मुनिवा-

स ॥ छपनक चाहै अक्षपन, दीछित घरनि विलास॥ १०५॥ **सोरठा**॥ अच्छ बीजकी माल, सब फेरत जन रैनि दिन ॥ फटत जीव वेहाल मानौ मरि अबहीं गयो ॥ १०६ ॥ **तोटक**॥ सुनिवे कहँ देख नको नलके ॥ चहुँ ओर फिरैं न कहूँ झलके ॥ शुचि वैरिनसों न कहूँ ठहरै ॥ श्रुतिकी ध्वनि अंबरहू थहरै ॥ १०७ ॥ **दोहा** ॥ जहां वीर हंता सबै, कोऊ विरहत नाहिं ॥ रोष युक्त नहिं जीव जहँ, जीवन मुक्त बसाहिं ॥ १०८ ॥ **दोधक** ॥ जेंवत विप्रनको हँसि देखै ॥ आपुस माहँ मिलै सविशेषै ॥ जानत सोम महाक्रतु भोगै ॥ मूँदत आँखिनको गनिरोगै ॥ १०९ ॥ कामुकु विप्र लख्यो सबहीको ॥ मोद भयो मनमें अतिनीको ॥ बामसुदेव उपासक जान्यो त्यों रिसकै वहुतै दुखमान्यों ॥ ११० ॥ ॥ **दोहा** ॥ गो हिंसा देखत हँस्यो, जगी कामकी आगि ॥ देखि याग गोमेधको, हाल चल्यो खलु भागि ॥ १११ ॥ **कबित्त** ॥ विप्रहि देखतही हर्ष्यो जेहि नित्त निमित्तक कर्मनि त्यागे ॥ जानि गयो यजमान जबै तब दोषदै दै करचो रोष अभागे ॥ जज्वनिकी रमणी अरु ऋत्विज आप में गारिनसों अनुरागे ॥ हेरतही हहराइ हँस्यो कहैं वेद विदूषक गावन लागे ॥ ११२ ॥ **पद्धटिका** ॥ कलि लख्यो तबै चलि राज भौन ॥ डरि ससकतु नाहिं करि सकतु गौन ॥ नलराज लखे दमयंति संग ॥ जनु इंदु शची हरि रमा रंग ॥ ११३ ॥ तिनको अछेह हेरचो सनेह ॥ उर उड़्यो शालि अरु बरी देह ॥ तिनके बिलास रस वैन चारु॥सुनि भये मरनको भेदु सारु ॥११४॥कलि जानतु अपने दोष भूरि ॥ गुण रहे दुहूँके देह पूरि ॥ नहिं सक्यो नेकु तिन ओर हेरि ॥ हरवाइ तहाँ ते चल्यो फेरि ॥ ११५ ॥ तहँ एक बगीचाहो नगीच ॥ तेहि माँह गयो कलि बुद्धिनीच ॥ तहँ रहत तपोधनकेन वृंद ॥ कीन्हो अनंदसों तेहि पसन्द ॥ ११६ ॥ **दोहा** ॥ फल दल फूलनसहित तरु, जे पूजत निज देव ॥ तिनकी ओर न लखि सक्यो, सक्यो जानि जिय भेव ॥ ११७ ॥ **दोधक** ॥ एक महातरु हेरि बहेरो ॥ सौंध समीप रहै नल केरो ॥ तापरतौ निज वास विचारो ॥ आपन लायक रूप

निहारो ॥ ११८ ॥ **दोहा** ॥ निज शिरपै कलिको दयो, जबै विभातक ठाम ॥ कल्पद्रुम छबिहू भयो, तौते कलिद्रुम नाम ॥ ११९ ॥ बैठि विभीतकपै रह्यो, डरत लखै नल राज ॥ ज्यों कौआ कारो बदन दहे संक गहि बाज ॥ १२० ॥ **सवैया** ॥ छलसों नलको अपलोकहि चाहत काल व्यतीत गयो अधिकायो ॥ पुनि द्वापर दौरो फिरै पुहुमीपर वाहीके कारजमें चितलायो॥ वाही समै विस्मय रसमें करि काम शरासन कोपि चढायो ॥ संग वसंत लिये हुलस्यो नलराजके सौंध समीप सिधायो ॥ १२१ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडलाखण्डित खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबरखाँ प्रोत्साहित गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ कलिसमागमनो नाम अष्टादशस्सर्गः ॥ १८ ॥

दोहा–सर्ग उनैसेमें कथा, काम विहार विलास ॥ केलि अंग अंगनि सहित, दीपति पुंज प्रकाश ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ दार सार नल पाइ, कामसिंधु तारन तरी ॥ भरी विलास बनाइ, रमत रहैं रस अमिय मय ॥ २ ॥ रमत रहे दिन रैनि दमयंती सँग सर्व वित ॥ विषै न लागत ऐनि, जो ज्ञानी परब्रह्ममय ॥ ३ ॥ **लीला** ॥ राज्य मंत्रिनको दयो सब देश कोष समेत ॥ आपलै दमयंतिको उर हेम सोधनिकेत ॥ भाँति भाँतिनसों रची सब सेव पूजितकाम ॥ वै रहैं मणिकी प्रभा झर मेरुसों अभिराम ॥ ४ ॥ धूप शुद्ध सुगंध साधित काम सर परकार ॥ दीपिका झमकैं हजार न दूरि हो अंध्यार ॥ मणिसों बँधी सब भूमिमे करपूरको छिरकाव ॥ मृगनाभि केसरिसों लिपी सब रत्न माल बनाव ॥ ५ ॥ कहुँ तीनि लोकनके विचित्रित चित्र राजत जोर ॥ कहुँ रत्न जाल. गवाछ गुंजत भौंर ठौरहि ठौर ॥ नल अंग संगमसों सुगंधित सेज फूल सुरंग ॥ तेहि भूमिको सम तिलक सुन्दर है शृंगार प्रसंग ॥ ६ ॥ तट निकट निह कुटसों कढै लहरी भरी सुख वास ॥ मिलि जातहैं रति रंगमें

दमयंतिके सुखवास ॥ गीत ॥ जेहि में लिखे विन जीव जीव सजीवसे लखिकै परें ॥ सब भाँति भाँतिनकी लगी माणि रूप रंगनिसों भरें ॥ जेहि देखि ग्रीवकँपाइ मोहत लोकको करतारहै ॥ जनु रोग वाढत वातको तेहिते भयो विनसारहै ॥ ७ दोधक ॥ भीतिन वीच वने ग्रह रूरे ॥ गावत गीत तहाँ जन पूरे ॥ देखतही विस्मय उपजावै॥ तारबँधी पुतरीन नचावै ॥ ८ ॥ आवतहू जहँ रैनि अँध्यारी ॥ फैलि रहै चहुँ ओर उज्यारी ॥ भीतिनमें मणिकोटिन जेटी॥ छूटि रहें किरणै द्युति भेटी॥९॥ छूटत हैं जल यंत्र फुहारे॥नाचत मोर महा छबि वारे ॥ लोंकत चीर ध्वजा रतनारे ॥ साँवन भादोंके घन वारे ॥ १० ॥ द्रुत विलंबित ॥ मदन तंत्रनकी कुलि कारिका ॥ पढ़ें पंजरमें शुक सारिका ॥शुरतमें नल ओ दमयंतिके॥ रहहिं ये सखिया जिमि अंतिके ॥ ११ ॥ मनहरण ॥ मंत्रनिसों प्रतिमा सजीवरति कामजूकी लखिकै विलास वेऊ सुरत करत हैं॥ तिनके मणितरैनि छूटत कपट ओट कोटि जाल रंध्रनि में ह्वै ह्वै पसरत हैं ॥ उपवन बोलैं पिक डोलैं मतवारे अलि नीचे परवीन वीन गान सतरतहैं ॥ मुख मुख सुख पागे करैं बैन अनुरागे रसमेंविवस तरै कानन परत हैं ॥१२॥छप्पय हाटक अंक विटंकर लखि कबि चाटु सुहाये ॥ वात्स्यायन मुनि कहे कोक ऋषि जे कछु गाये ॥ गौतम तिय सुरराज इन्दु गुरु रमनी लीला ॥ मत्स्योदरी चरित्र लिखे चित्रित शुभ शीला ॥ यहि भाँति भौन मणि भीतिमें सब मन्मथ पौरुष लिखे ॥ विहरत विनोद दोऊ करत सुरत रंग संगम सिखे ॥ १३ ॥ सोरठा ॥ जग उज्ज्वलके हेत बैजयंतु नीचो कियो॥ जाकी कीरति श्वेत, कातिक पून्योकी सुसा ॥१४॥ दोहा ॥ पार पहुँचि भवसिंधुके, भये युवति आधीन ॥ रचे चितेरे चित्र में, ऐसे मुनि परवीन ॥१५ ॥ दोधक ॥ माति करै वर्षाऋतुलासू ॥ आवति मोरनिके दृग आँसू ॥ मोरनिकी वनिता गहि लेही ॥ केलि बिना उपजै सुततेही ॥ १६ ॥ दोहा ॥ याते नाचत मोर जहँ मेही जीत्यो मार ॥ हम जाके बाहन यहौ, ब्रह्मचारि सरदार ॥ १७ ॥ तारक ॥ नल ओ दमयंति जहाँ छबि छाये ॥ रति मन्मथ औरतिसे

बनि आये ।। इनको अवलोकतहीं वह जोरी।।मन लागति है अतिही रुचि थोरी ॥ १८ ॥ **हरिगीत** ॥ तेहि सौंध भूधर हेमके गृहमाह रंगनि सोंरमै ॥ नहिं नागरी तिय करि सकै नहिं बसन वर्णत कबितमै ॥ बहु परम पूरुष योषिता यह स्वामि बहु यह वश परी ॥ बहु युवा यह सुकुमारबयं सुख सुरतसों अतिही डरी ॥ १९ ॥ जब दूत कारजको गयो नल हो तबै बतियां कही ॥ सुधि करतसो निज ढीठ ईश सवाइनै अँखियाँरही ॥ जहँ लाख लोगनिको समागम हठि तहाँ नलको बरचो ॥ तब सुमिरि मन निज चपलता कुल लाजसों जियराजरचो ॥ २० ॥ **सवैया** ॥ सेजपै जाइ जहाँ नल बैठत ताढिग हेरि सकै न लजानी ॥ बूड़ि रही सरिता कुल कानिकी श्रवण सुनै पियकी मृदुवानी ।। केलिके मंदिर आवति नाहि बड़ी विनती करि भीतर आनी ॥ पाँइ परे हू न पौढ़ति है परिकै गाहि पाटी रहै सुरिसानी ॥ २१ ॥ **चौपाई** ॥ गौरी गुणवारी सुकुमारी ।। जे जे भाव करैं पिय प्यारी ॥ तिन भावनिकोप्यो जब चाहै ।। सौ विनतीहू फेरि न गाहै ॥ २२ ॥ ज्यों ज्यों करै रुखाई नारि ।। झुकै हाथ डारै झिझकारि ।। पिय हियमें त्यों त्यों नहिं हानि ।। दूत समै निहचै पहिचानि ।। २३ ॥ **तारक** ॥ पहिले बहु आलिन संग बुलाई ।। इक दोइ प्रतीति भयेपर आई ॥ तेहिको छलसों नल अंत पठायो ॥ निज प्यारिहि पाइ भयो मन भायो ।। २४ ।। नव सौरभ फूलनकी रचनापै ।। सिसकी भरि पौढ़तही कुचकापै ।। गलबाहुलता पिय ऐंचिलतासी ॥ उरहार शृंगार करी नवलासी ॥ २५ ॥ **सवैया** ॥ नै गई नारि गही पहिले पिय चुंबति चोप लिलार रसीले ॥ नेकु उचीत्यो कपोलनिको रस लेति पियै न अघात अमीले ॥ सोहै प्रतीति हसौहै भई पुनि पान करै अधरान रँगीले ॥ मानौ सुधा उदगार लई विहँसै दृग कोरनि छैल छबीले ॥ २६ ॥ **स्वागता** ॥ लाज जाहि नियराज भजावै ॥ नयननिमें डर यों डरपावै ॥ बाल भाव जिमि मैन डरावै ॥ दौरि दौरि वाके ढिग आवै ॥ २७ ॥ **सवैया** ॥ हार विलोकनके मिसकै रस सार भरचो छतियाँ न निहारै ॥ ग्रीवके ऊपर

छै फुदना त्यों दुरी अँगुरी कुचकोर किनारै ॥ ज्यों तुम मोहि दई पहिराइ वहौ रचिहौ तिमि कंठ तिहारै ॥ है हरुये कुचको सहरावत चावनसों पहिरावत हारै ॥ २८ ॥ सोवत पेखि पिया कर कंपत डोरी त्रिवीकी गही खरकौं हे ॥ जानि जगी रिस रंग रँगी भय भूरि पगी सुलगी थरकौंहे ॥ घाँघरे झीन झपी झलकैं लखि जंघन मै ललकै लरकौंहे ॥ जानि लई दुगुने पट झांपि चढी भ्रुकुटी अधरा फरकौंहे ॥ २९ ॥ तोटक ॥ तिनही तिन भाँतिन प्रेम करै ॥ जेहिते तियके तन भीति टरै ॥ निज चापलता तिय चापलता ॥ करि मैन लचाइ दई समता ॥ ३० ॥ मनहरण ॥ सखिनसों कसि कसि नीबी बँधावै ज्यों ज्यों त्यों त्यों मुसक्याति आप आप मुख चाहिकै ॥ उरज उतंग शृंगमें रुपै उदित चन्द्र बंक नख अंक लाल मालनि सराहिकै ॥ कबहुँ पलक ढारि नयन मुकलित करै कौंहूँ विकसित सुखसिंधु अवगाहिकै ॥ कोऊ कमल खिले अधखिले विलसत कोऊ पद्मिनि जीती पदुमिनि यों उमाहि कै ॥ ३१ ॥ नल विनु देखे काम बैठन न देत वाहि देखन न देत लाज ऐसे साँकरे परी ॥ पीतम पियारो लख्यो रूप उजियारो नैन भरि न निहारो अद्भुत रचना करी ॥ रतन भीतिनमें परत प्रतिबिंब त्योंही छतिया मणीनमें रँगीन प्रतिमा अरी ॥ तिन तिन ओर तृणतोराति कराति दीठि नीठि बिहरत पीठि दैरहै खरी खरी ॥३२॥ दोहा॥ व्याकुल बासर विरहसों, रैनिरही चित छाइ ॥ रैनि माहँ बासरचहै, लीला सुरत लजाइ ॥ ३३ ॥ नल ॥ तोमर ॥ मृगनयनि दे तजि भीति॥करि प्रीति लेह प्रतीति॥ हमको सखी समजानु ॥ नल यों करै सनमानु ॥ ३४ ॥ सोरठा ॥ तिय हिय मन्मथ आगि, लाज महोषधिसों दबी ॥ दुगुन उठी अब जागि, पियसनेह रस मंत्रवच ॥ ३५ ॥ पृथ्वी ॥ छुटाइ नलके करै कुच छिपाइ लीन्हेतही ॥ समेटि छतिया लता सरस बाहु दोऊ गही ॥ मनौ डरति है लाजसों निकट लालको त्यागिकै ॥ बसैजु हियमें सदा मिलति ताहिसों पागिकै ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ चन्द्रवदनि तेरे पग लागौं ॥ तोसों एक दान मैं मागौं ॥ तेरो अधर एकही बार ॥ पान

करों पाऊँ सुख सार ॥ ३७ ॥ ऐसो पोटि ओंठु रस लेत ॥ हठसों पर समरद नख देत ॥ बार बार वाके गुण गावें ॥ बार बार तरवा स हरावें ॥ ३८ ॥ **सवैया** ॥ रावरे आनन इंदु सुधारस आसवसों छकि-मत्त भयो है ॥ सवकहों जेहि लायकको वह काम करो मनमोमलयो है ॥ कोमल पल्लवसे मृदुहाथनि चापतु जंघनिको उनयो है ॥ झारतु पाइनिनैननिसों लचि नाइनिके रचिरंग रयो है॥ ३९॥ **चर्चरी**।चुंबनादिकमें तजी तुम लाज तौ बिगरचो कहा॥त्यों तजो अबहूँ विलासिनि पाँइ लागत हों हहा॥चाटु बैन बनाइ सुंदर केलिकी रचनारची॥ वाम कौतुक कंप मैं अभिलाष मर्दनकी सची ॥ ४० ॥ लाज तोहिं भली लगै पहिले समा-गम पाइकै॥ स्वप्न संगम सों बिलज्जित होहु जातुलजाइकै ॥ देत जात उराहने नरनाहयों रससों छकै ॥ लाज छूटि गई नई दमयंतिकी नल केतकै ॥ ४१ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ नाग पाश अरु बाहु बंध ॥ पुनि हंस चरण स्वस्तिक सुगंध ॥ वृक्षाधि रूढ़ जानौ सभाग फिरिलता वेष्टित सा-नुराग ॥ ४२ ॥ इन आदि बंध कीन्हे अपार॥ पुनि सुरति रंग कीनति विचार ॥ अभिलषित सखी लोचन सरोज ॥ दिन देखि तोहि हमलहैं चोज ॥ ४३ ॥ **सोरठा** ॥ करि ऐसे संकेत, भूपरमें दमयंति सँग ॥ मैन विहार निकेत, लसे दोउ रति मयनसे ॥ ४४ ॥ **हरिगीत**॥ रसरंग आलससों भरी परभात जानत चोंकिकै ॥ उठि चलत सुरत निकेत सों-गहि वसनु राखति रोंकि कै ॥ भरि ललक चाखत अधर रस मुख सुरत सुखललचाइकै ॥ क्षितिकी शची सम लसति पद्मिनि भूपसुरपति लाइकै ॥ ४५ ॥ **सोरठा** ॥ हँसी सखी अनुमानि, लहि विलंब आग-मनको॥गई कोकमत जानि, भोरे रस पद्मिनि सुरत ॥ ४६ ॥ **दोहा** ॥ निज निज निधु वन चिह्न युत, लखी सखी परभात॥ आप आपनी चितै गति नलिन नयन नैजात॥ ४७॥ **सवैया** ॥ दमयंति इकंत सखीनके संग पगी रति रंग कथा जहँ भाषै ॥ तहँ देवनके बरसों छिपिकै नल काननिबैन पियूष निचाखै ॥ पास खड़्यो सबिलास हँसै वरषै रस रूप जबै धरि राखै ॥ राजहि देखिदबीं सखियां सब लाजनि नवल बहू शिर नाखै ॥ ४८ ॥ **दोहा** ॥ अवलोकी कोकी डरी, साँझ बिरहभै पाइ ॥ विरह जनायो आगि लो, पि

य हँसिलई बनाइ ॥ ४९ ॥ **मनहरण** ॥ चुंबन करत मुख मोरत न मृगनैनी नारि न नवावै गलबाँही बितरतही ॥ त्यों त्यों पिप हियमें पियूष वर्षत रस रंग सरसतरहे पाँयन परतही ॥ भुज लतिकानिसों छिपावै कुच कलिकानि विनती करेते लेति ऐंचि इतरतही ॥ केसरि कपटकी बनीही पट कंचुकीसमिटि गई अंक पंकरुहके धरतही ॥ ५० ॥ **चंद्रमाला** ॥ परि परि पाँइ प्राणपति माँगत नख छत देति ननीके ॥ बातन मिस करु ऐंचि पियाको नख छतदे निजहीके ॥ अंचल हिय भूषण बाहिरको पीतम सकत छुटायो ॥ लाज बसन भूषण भीतरको सोन दूरिकै आयो ॥ ५१ ॥ **तोमर** ॥ बलवान मन्मथ राज ॥ हठिकै छुटावत लाज ॥ बिन चीर सोहत भूरि ॥ महताबसी द्युति पूरि ॥ ५२ ॥ **सरसी** ॥ हौं मागत रतिदान दीन ह्वै नाहिं करत तू नाहि ॥ मैं जानी तेरी रुचि मीठी सुरत रंग रसमाहि ॥ चाहत सुन्यो वचन वनिताके ऐसे करत उपाइ ॥ नैसिकुरुकं पाइ सकुचानी उत्तर-कयो बताइ ॥ ५३ ॥ **तारक** ॥ पहिले पियके कर ओरन हेरे ॥ बहुरोहरुये झिझकाराति फेरे ॥ परिपूर्ण प्रतीति भई हियमाही ॥ तबने कु करै हँसि वैननु नाही ॥ ५४ ॥ **सवैया** ॥ रूप अभूषण वेष सुगंध नयेई नये करि रोज सिधारैं॥रोज कवित्त न येई नये पढैं रोजनई बतिया विस्तारैं एकसी जानि परै पियको नहिं देवनकी वनिता अनुहारैं ॥ दैसनई अरु हौसनई नित नेहनई छबि रोज सँवारैं ॥ ५५ ॥ भावनसों प्रगटै पियपै निजनेहके सागरकी सरसाई ॥ वातनकी मधुरी महिमा करि देत गहे गुणकी गरुआई ॥ पाँइ पलोटाति वै हरिके हरिलेत हियो शुचि सेवक ताई ॥ मोल लये जनदास हते वश ह्वै प्रियप्राण करी मन भाई ॥ ५६ ॥ मान मनावतिमें नहिं मानाति बातनि जानत लाल रिसाने ॥ नयन चलाइ हरे मुसक्याइकै लीन्हे मनाइ बनाइ लुभाने ॥ कीन्हे हरे हठसों परिरंभन चोपसों चुंबन लेत अघाने ॥ ऐसे छके छबिसों ललके नलके चष फेरि नयों ललचाने ॥ ५७ ॥ **सोरठा** ॥ लपटि गई अरधंग, ज्यों गिरिजा मिली गिरीशसों ॥ कोक कला परसंग, अं-गरीति ज्यों तरुलता ॥ ५८ ॥ **कवित्त** ॥ कोनथली न जलाशयको

नाहिं काननको नहिं शैल सुहायो ॥ लोकनको अरु देशनको नाहिं काम कलाको प्रकार बनायो ॥ रागनको अरु बागनको अनुरागनको सुजहाँ जुरि आयो ॥ पूजि अनंग पिया गहि संग जहाँ रस रंगन भूप मचायो ॥ ५९ ॥ ऐंचत चीर लची दुगुणी झुकि फूँकि हरे दुति दीप बतायो ॥ भूपतिके रस पैंच प्रभाझर छूटि रही सब देत देखायो ॥ श्रवण तरचोननिते गहिके तहँ अंबुज नील मिलाइ दुरायो ॥ मानि मनोभवकी अरचारीत राणि मनौ शिरफूल चढायो॥६०॥**चर्चरी**॥फूलढांकि दुराइ दीप प्रसन्नज्यों मनमें भई॥दीपद्वै दुहुँ ओर औरप्रकाशद्वै दीपति छई॥एक अंचल-सों दुरावतहूँ हरै विस्मय करै॥शुद्ध आवति अग्निको बरु रोषकै पतिसों अरै६१ **सोरठा** ॥ वह्नि बड़ो सुख पाइ, वर दीन्हो नलराजको ॥ चाह रावरी पाइ, प्रगटौं वेगि बुझाउँ पुनि ॥ ६२ ॥ पगत्यो तम चहुँ ओर, नल इच्छाको पाइकै ॥ गहि लीन्ही भरि कोर, मुदित भई अकबारि भरी॥६३॥ **दमयंती॥ मनहरण**॥ चूमत कपोलहौं तिहारे ललकन भरि अलकन-हीके भारसोंहे अलसातहौ॥करज कलित दुर उरसो ललित लाल मिलत तिहारे हार ओझिल रिसातहौ ॥ सेवकिनि जानौ हौं तो कह्योई क रौंगी नेकु अब छोड़ि दीजै गहे अंक अकुलातहौ ॥ करौंगी सुरत चित चाहसौं तिहारी फेरि मैनकीस्यों तुरत मिलौंगी कालिह रातिहौ ॥ ६४ ॥ **दोहा** ॥ दीपक छिन छिन बरि उठै, छिन छिन जाहि बुझाहि ॥ तम घन दामिनि रंगमें, करत केलि चित चाहि ॥६५॥**सोरठा**॥ भौंहै लईं चढ़ाइ, काम चढ़ायो चाव त्यों ॥ नयन मूँदि अलसाइ, छूटन लगे हुँकार सर ॥ ६६ ॥ **दोहा** ॥ अधर दसत सीसी करै, कर झारै झुकि जाइ ॥ रतिको मानौ आपु गुरु, निरत सिखावत गाइ ॥ ६७ ॥ हाटक गेंद स-मान कुच, दये नख छत भूप ॥ सौंध सिवर रति कामके, सेज सुरँग सुखरूप ॥ ६८॥ झलकत जंघन पैलगी, यों नख छतकी माल ॥ हाटक खंभनपै बँधी, मयन ध्वजा जनु लाल॥६९॥**तोटक**॥ नलके कर कमल गहै जबहीं ॥ दमयंति उरोजनको तबहीं ॥ सब ओरन श्वेत छटा छह-रै ॥मिलि हार प्रभा तिज जानि परै॥७०॥अँगभेद सुकुंकुमबेलि मची ॥ छलकंचुकिया सखियानरची ॥ नलके उरलागत शोभसने ॥ जनु

किंशुक बाणन कामहनै ॥७१॥ दुलहा मुखसों मुखलाइ रहै॥ कबि कौन तहाँ उपमानकहै ॥ विधु सागरते कछु ये निकस्यो ॥ अपने प्रतिबिंब समेत लस्यो ॥ ७२ ॥ दोहा ॥ चुंबन करन उरोज पिय, मुख सोहत यहि भाइ ॥ अमृत भरनको कनकघट, शशिसों धरयो मिलाइ ॥ ७३ ॥ देखि देखि देखन लगै, मिलि मिलिकै लपिटात ॥ चूमि चूमि चुम्बन करै, हिये न नेकु अघात ॥ ७४ ॥ सुरत केलि टूटोहरा, छिटकत मुक्ता जाल ॥ परे न कछु पहिचानि मिलि, श्रम सीकरकी माल ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ आप रूपकी खानि, लखत रहै रमणी वदन ॥ अंग अंगमें सानि, पार भई सुखसिंधुके ॥ ७६ ॥ कवित्त ॥ अंगनिमें पुलकावलिको बहु योजन अन्तर मानत है ॥ नयनन माह निमेष लगे विधिकी वरषै सम जानत है ॥ बाहुलता गलमें सिथिलात तहीं विरहै उर आनत है ॥ दोऊ दुहूँन समोवतसे मिलि सोवतमें सुख सानत है ॥ ७७ ॥ मनहरण ॥ सुरत सलिल कन जानत प्रियाके पीउ थंभन करत परिरंभन उपाइकै ॥ मणिकी भितीनमें दिखायो प्रतिबिम्ब कह्यो कौन इत आयो रही प्यारी भय भाइकै ॥ आपनो सुरत रस मुकुत न होन देत सूर चन्दनादिन कबन्धन बनाइ कै ॥ योगकी युगति औ सँयोगकी भुगति रीति कौनकी प्रतीति दूजो नायकुन लाइकै ॥ ७८ ॥ दोहा ॥ एकहि संग दुहूँनके, उपज्यो स्वाद सुगंध ॥ विषम बाण मय विषम रत, गुंजत अलिमद अन्ध ॥ ७९ ॥ हरिगीत ॥ पुनि करत समरत सुरत सुखरस छाकि चुम्बन लेत हैं ॥ भुज मूल औ कचनाभि सुंदर रहसि आनँद देत हैं ॥ सब सिथिल तनु मुकुलित विलोचन पुलक मुख शशिमें सिसी ॥ इभि निखिल निधुवनकी कला पियको हँसी तियको खिसी ॥ ८० ॥ सोरठा ॥ सुरत मोद रसपाइ, सोहत कर रुह दशन छत ॥ ज्यों सर्वत करवाइ, लौंग मिर्च नीकी लगै ॥ ८१ ॥ सवैया ॥ मंदही मंद बयारि करै नल झीन जरी दुपटा मृदु छोरसों ॥ स्वेदके बुंद विराजि रहे मुख इंदु न छत्रनके गन जोरसों ॥ भौंह चला चल नाक सकोरि भरै सिसकी चितवै दृग कोरसों ॥ मोतिनके हरवा निरु-

वारतु प्योतरवा संहरावतु ओरसों ॥ ८२॥ दोहा ॥ प्यारीके तन स्वेदकन, पियत पीयके नैन ॥ नैसिक प्यास बुझाति नहिं, महिमा मानत मैन ॥ ८३ ॥ जया पुहुप अलिपाति पति, अधरन कज्जललीक ॥ सकुचीली छिपयो चहै, चाहत हँसी अलीक ॥ ८४ ॥ सोरठा ॥ आपु हँसी मुख मोरि, त्यों त्यों बूझत भूप हठि ॥ मुकुरुदयो करजोरि, यहै दयो उत्तर तिन्है ॥ ८५ ॥ रथोद्धता ॥ भाल माहँ पतिके निहारिकै ॥ रेख जावक लगी विचारिकै ॥ मोरिकै वदन कमलसों खिल्यो ॥ चंद्र सूर परभातसों मिल्यो ॥ ८६ ॥ द्रुतविलंबित ॥ हुकुमको गहि मयन महीपको ॥ दशनके छत ओठ समीपको ॥ दुखत वेदन जाति है कही, अजहूँलौं यह भाति नही सही ॥ ८७ ॥ लखि उरोजनकी नखरेखको ॥ मदन किंशुक बाण विशेषको ॥ हँसि उठ्यो नरनायक चाइकै ॥ रिस भरी बिझुकै सरसाइकै ॥ ८८ ॥ पहिरिये उरमोतिन हारको ॥ अमृतसीकर विंदु विहारको ॥ करजके छत वेदनको हरै ॥ हम यही सुखको विनती करै ॥ ८९ ॥ कवित्त ॥ शीतल पौन करै छिनमें छिनमें तरवा सहरावन लागै ॥ पीन पयोधर पै परवीन सजै छलकी अँगिया रस पागै ॥ स्वेदके विंदु रुमाललै पोंछाति गूँदतु केश खुले मुख आगे ॥ दीन्ही खवाइ तंबोल विरी मुख बेस बनाइ दये सब बागे ॥ ९० ॥ दोहा ॥ अपराधी सरपेंच यहु, तममें करत प्रकाश ॥ अब तेरे पाँयन परत, कृपा करनकी आश ॥ ९१ ॥ ऐसे कोमल वचन कहि, सजनलग्यो सब साज ॥ प्यारीको पाँउनलग्यो, ह्वै सबको शिरताज ॥ ९२ ॥ सवैया ॥ मानिनि मानु मरूकै तज्यो मनभावन पावनपै शिर नायो ॥ कै नसकै अँखियां समुहे रिस पाछिलीसों चितकै सरमायो ॥ त्यों उमग्यो अतिनेहनयो फरकी भुज औ हियरा ललचायो ॥ लोकिकै आइ गई उरमें लगि मानहु प्यो परदेशते आयो ॥ ९३ ॥ दोहा ॥ बढ़त मनोरथ जाति अति, घटति जाति त्यों रैनि॥ हँसि बोल्यो तब बैन नल, सकुचि सुनै मृगनैनि ॥ ९४ ॥ नल ॥ छप्पय॥ देव दूतके रूपतोहिं निरदै दुख दीन्हे ॥ तीछन वचन बिझाइ तेइ मै पातक कीन्हे ॥ तिनसों चित्तलजात बात कहतै नहिं आवै ॥ तेरे चर्णन माहँ चातुरी

चाह बतावै ॥ अब ताको बदलो देत हौं जब लगि प्राणशरीरमें ॥ बिन मोलदास तेरो भयों माफ भयो तकसीरमें ॥ ९५ ॥ सवैया ॥ सो छनु जामहँ तोहिं लखौं अरु राज गनौं अनुराग तिहारो ॥ सोइ सुधारस पान हमै चख चुंबन जो परिरंभनवारो ॥ ईश्वरकी किरपा वहई जबतैं तिरछे हँसि नेक निहारो ॥ सागरसों सरिता परिरंभन चाहत हौं यहि भाँति विहारो ॥ ९६ ॥ दोहा ॥ कौन भाँति वर्णे परैं, तेरे धीर सुभाइ ॥ तिन समान सुरपति तजो, मोको बरो बचाइ ॥ ९७ ॥ चौपाई ॥ एक द्योस चर्चामैं सुनी ॥ तोसों सखी चतुर दूगुनी ॥ जिन जिनसों जेजे ज्यों डरैं ॥ निजभय हेतु बड़ाई करैं ॥ ९८ ॥ कोऊ सखी ॥ छुये जात जो सिमिटि विशेषि ॥ मै मन डरौं लजाऊँ देखि ॥ और सखी ॥ कच्छपपल चापलता हेरि ॥ मोको लेत तहीं भय घेरि ॥ ९९ ॥ अपर सखी ॥ बहुरंगी सरठा शिर घूमैं ॥ मोहिं देखि लागै डरुझूमै ॥ निज निज भीति सबै कहि देत ॥ तू ठकुरायनि डरत केहि हेत ॥ १०० ॥ दमयंती ॥ गोपाल ॥ तीनि लोकमें जो भय होइ ॥ मोहिं सकै लखि नाहिन सोइ ॥ नलको विरह एक छिन रहै ॥ मरन तूल मोको डरुवहै ॥ ॥ १०१ ॥ दोहा ॥ ताते सेवकके वचन, पर करिये परतीति ॥ जीतब भरि तेरे निकट, रहौं अचल वहि रीति ॥ १०२ ॥ छप्पय ॥ विरह विपतिमें गरल हुते तब मोहिं जिवाये ॥ रैनि स्वप्नमें दुहनि अंकलै दुहनि मिलाये ॥ करत रहे रसरंग अंगकी तपति बुझावैं ॥ जिय मोही अवलंबि रोज मेरे गुण गावैं ॥ भरि रजनि नाम मेरो नहीं लेत दोऊ है मैन में ॥ इहि रोष पाइ मृगनयनि सुनि नींद न आवति नैनमें ॥ १०३ ॥ सोरठा ॥ वचन रसीले जागि, कहति जाति भूपति रसिक ॥ सोइ गई उरलागि, रानी राति आलस भरी ॥ १०४ ॥ सवैया ॥ ओठन ओठ मिलाइ लिये छतियाँ छतियाँ लगि एक करी है ॥ ऊरुनि ऊरुनि सों रसिकै छबि पुंज प्रभा सब कुंज भरी है ॥ भेंटन जानि परै तिल तूल अतूल लई सुख लूटि खरी है ॥ कामही की रति हीकि मनौ सुखसेजपै एक लिखी पुतरी है ॥ १०५ ॥ दोहा ॥

मिलि मिलि चलत दुहूंनिके, शुभ नासिका सुवास ॥ एकै प्राण दुहूंनको कहे देत परकाश ॥ १०६ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यक लानिधौ नल दमयंती संभोग वर्णननाम एकोन विंशतितमः स्सर्गः ॥ १९ ॥

दोहा—सर्ग वीसयेंमें कथा, सूर उदैको रंग ॥ वैतालक मुख वर्णि बो, नल जागन परसंग ॥ १ ॥ सोरठा ॥ भूप जागिवे काज, बोले वन्दी वैन मृदु ॥ वीत्यो रैनि समाज, सोवत प्यारी अंकले ॥ २ ॥ वन्दीजन ॥ प्रद्धटिका ॥ जै जै जनेश जै महाराज ॥ लखिये प्रभात शोभा समाज ॥ लहि प्रथम शकुन दमयंति रूप ॥ मंगल पुनीत प्रिय तनु अनूप ॥ ३ ॥ गीत ॥ यहु जाति पास नितंबिनी दिशको चल्यो सित भानु है ॥ छवि लाज ऐंचि भयो निरंकुश छैल ज्यों हिमवानु है ॥ नव मित्र संगम आशसों सविलास कोकिल जीलसों ॥ मुसक्यात नैन सरोज गावतिबासबीदिशि शीलसों॥ ४ ॥ हरिगीत॥ मुँदिजात खुलि खुलि स-कल तारे दीठि झिलिमिलि होतही ॥ चहुँ ओर केसरिसी खिली दिननाहँ किरणि उदोतही ॥ भरिरजनि जीतिलयो तमोगुण भोर दारिदयों लख्यो ॥ नहिं अमृत दीधितिमें रही इक छबिछटा चखसों चख्यो ॥ ५ ॥ जगमाह तिमिर तरंग तुंग प्रपंच पंक समान है ॥ अतिश्याम छबि मधुकर निकर जनु करत रबिरुचिपान है ॥ तिन अंकुरनि निर ओस बिंदुनिकी विरा-जति माल है ॥ जनु सुघर सूचि न भिदति मुकतनिको अनूपम जाल है ॥ ६ ॥ प्रद्धटिका ॥ रबि किरणिऋचावै प्रणवरूप ॥ विधिनखतलोपि विंदुनि अनूप ॥ तहँ रचत आनि सुरसाधि लेतु ॥ गहि इंदु बिंबसो अंशु देतु ॥ ७ ॥ मनहरण ॥ दुरि चरमाचल में चंदु छिपि छिपि जातु मू-दती है नैन कुमुदिनि मुरझाइकै॥ कागनकी काकली कलित बन बाग रही छाया समतमकी पटल छटा छाइकै ॥ मायामय जाया रघुपतिकी हरीहो

जिमि तिमिरचिकुर ऐंचि रावन उपाइकै॥ अरुण बदन सूर करन पसारे देखौ हरतु सरबरी विहीन पति पाइकै ॥८॥ **प्रद्धटिका** ॥ सुर मिथुन केलि शय्या अकास ॥ उडु गलितहार मुकुता विलास॥ भरि रह्यो श्वेत करतूल तूल ॥ गलसोइ रूप विधुभयो कूल ॥ ९ ॥ रविकिरणि कही दशशत प्रमान ॥ तेइ चारि वेदशाखा बखान॥ तेहि उदैपाइ महिदेव भूरि ॥ परभात देवध्वनि करत पूरि ॥ १० ॥ आयो शिकार दिननाहु भूप ॥ धरि छूटत सरगज किरणि रूप ॥ ते हनत काग सम अंधकार ॥ मिलि करत काग ताते पुकार ॥ ११ ॥ ससमार नडर शशि भजत जातु ॥ उड़ि तारा पारावत विभातु ॥ सुर सुरत हार टूटे अपार ॥ ते दुरके मुक्ता नखत सार ॥ रवि किरणि बुहारीसों बुहारि ॥ करि पुहुप महीमें दिये डारि ॥ १२ ॥ **दोहा** ॥ प्रथम अतिथि रवि जानि नभ, तिमिर दूरवासंग ॥ ओस सलिल आखत नखत, देत अर्घ्य सरबंग ॥ १३ ॥ क्यों न जिवावै असुर गुरु, तम असुरै परभात ॥ संध्या-वृत भ्रत जीविनी, विद्या कही न जात ॥ १४ चेंचु चूँमि चटुके लिपटु पक्ष हलाइ फुलाइ ॥ मिलत कोकरमणी रमन, लीलाकोक उपाइ॥१५॥ **सोरठा** ॥ पढ़ै कोक जो और, लहै सुरति परवीनता॥ आपु कोक शिर मौर, केलि कलाके सारनिधि ॥ १६ ॥ **सवैया**॥ तारा सभा अरु रैनि बहू इनको नहिं योग हती यह ऐसी ॥ देखतही अपने पतिकी यहि भांति विपत्ति कहूँ छिपि वैसी ॥ चंद्रहूकी छतियाँ अति साँवल पाहनते घनपीन अनैसी ॥ क्यों नवटूक भई छिनमें बिछुरी वह प्राणप्रिया जब ऐसी ॥ १७ ॥ **सरसी** ॥ नवत लाज होमति अनुरागी अरुण किरण शिषिमाह ॥ व्याहि लई संध्या सरोज दृग बिगसतही दिननाह ॥ गावत गीत मिलिंद सुघर ध्वनि झरत पुहुप चहुँ ओर ॥ श्रुति सुख पढ़त बैठि शाखा द्विज अरु नाचत हैं मोर ॥ १८ ॥ **हरिगीत** ॥ सुनिये तपोमयराज ऋषि महाराज श्रीनलराजजू ॥ करि वेद विधि संध्या प्रणति अरु राजके शुभ साजजू ॥ इत इंद्रकी दिशि गर्भ संयुत चहतु जन्म्यो बालु है ॥ उत छुटत कंठ कपोतहू कृत वदनराजतुलालु है॥ १९॥ महाराज रानि दमयंतितैं नलराजको हियराहरचो ॥ नहिं मनतु दूषण बेद

विधिके लोपकोयों वसु परचो॥तू परम पण्डित आपु है नहिं दुरित हेतु करै सही॥अपवाद लोगनमें चलै जहँ कामकी चरचानहीं ॥ २० ॥ मालिनी ॥ तट तरु खग जागे, रावके रंग पागे ॥ जगत अधखुलेसे कमलिनी नयन लागे ॥ पियत मधुप माते ओठकी सीधु मानौ ॥ पुहुपरस अमीसे गाइ शृंगार गानौ ॥ २१ ॥ मनहरण ॥ केसरि कुसुम सम फूलि फैलि रही छबि रविकी तरुण झबि झमकत अरुनाई है॥ बीच बीच दौरत जलजमधुपान पुंज गुंजत मधुप मानौ गुंजा द्युति पाई है ॥ साँवल अहार जो करत पीत मात तौही सुलकेसरीनमै होत श्यामताई है॥ तम को पियत सूरुतासों उतपति पाइ यमुना समनमै सरस मलिनाई है ॥ २२ ॥ प्रद्धटिका ॥ पति अस्त समय अनुराग कीन्ह ॥ जेहिं अमर लोकपति बरत लीन्ह ॥ तजि अधर भुवन चलि गई साँझ ॥ सोइ दीपति आई अनल माझ ॥ २३ ॥ अ० ॥ करि कमल मूरछा तिमिर दूरि ॥ सुर वेद सूरकर अमिय मूरि ॥ कल्हार मूँदि अप मिरत देत ॥ तह समन पिता यह जानि हेत ॥ २४ ॥ दोहा ॥ झमझमात रविमणि विमल, रवि किरणनिको पाइ ॥ निजपतिकी सम्पति लखे, कोन काँति सरसाइ ॥ २५ ॥ चंदु कमलिनीको रहै, रविके विरह सताइ ॥ हँसी कमलिनी देखि दिन, चिसिनी वरिह बलाइ ॥ २६ ॥ मालति कालतिका हँसै, झरत पुहुपकल हाँस॥ कोक लोककी देखिकै, दिनको केलि विला-स ॥ २७ ॥ छप्पय ॥ मलै सानसों खस्यो चलत अतिमंद सुहायो ॥ शीतल भयो शरीर सजन अलि सोर मचायो ॥ सरसी जात पराग धूरि धूरालै धूरचो ॥ मान सरोवर सलिल बिंदु कनलै मुख पूरचो ॥ याहि भाँति पौन परभातको आवत सकै वखानिको॥ परसेदु केलिको हरत हठि जैसे पौनु पखानिको ॥ २८ ॥ चंद्रमाला॥ वासर भयो दिवाकर कीरति सो सूरयकर छुरधारै ॥ मुंडतु तिमिर यातिकवरी निशि चोरानिकों जुनि कारै ॥ डारिदये वै केश सँवारे अवनी तलमें नैसे ॥ छायामिस तरु त-रुके तरहरि प्रगट देखिये वैसे ॥ २९ ॥ दोहा ॥ सुयशरावरो शंख सम,जाको द्विजपति भाइ॥ जो याको करछे दुलखि, धरचो कलंकु बनाइ ॥ ३०॥ सोरठा ॥ सूरय करसों भेदि, भयो अरासों अरध बिधु॥ डारै

कमलानि छेदि, अरकोकनिके विरहको ॥ ३१ ॥ **दोहा** ॥ कमला करको पाहरू, कुमुद सदल दृग खोलि॥जगि निशि सोयो दिन उदै, अलिकल खगल बोलि ॥ ३२ ॥ प्रथम पुरुष मध्यम पुरुष, देत प्रशीज सिहाइ ॥ तुहीं तुहीं परगट करै, पर प्रत्ययको पाइ ॥ ३३ ॥ **द्वितीय त्रिभंगी** ॥ अमल कमल दल विमल सकल थल विलतित नल मारग लागे खग आगेही उठि जागे ॥ मधुर मधुर ध्वनि निगम गुनत मुनि मिलि तियकोक सभागे सुखपागेही अनुरागे ॥ अरुणकरनिकर कनक सुरजहर गँगनजु अंगनझारे भुअडारे फूल खितारे ॥ जय जय तमहर जयद्युति धरलखि उदयाचल वारे निशि न्यारे पापपधारे ॥ ३४ ॥ **मोदक** ॥ वंदिबने परभात बखानत ॥ जागि दोउ उर आनँद आनत॥ दानदये नल जू कुल पूषण ॥ रानि उतारि दये निज भूषण ॥३५॥ नंदित पैंधत वंदिनके गन ॥ जात सराहत चोपमहामन ॥ माणिक लाल किये जनु लोचन ॥ चाहत याचक दारिद मोचन ॥ ३६ ॥ **गीत** ॥ सुरबाहिनी अभिषेकको विधिवेद संध्यहि ध्याइकै ॥ करिकै कृतारथ वंदि नयननि सैन वंदन भाइकै॥ रथवात बेगवनाव सुन्दर दाइजे महँ जो लह्यो॥ चढि सोधते निकरचो सुधाधर मेरुको मारग कह्यो ॥ ३७ ॥

इति श्रीप्रचंड दोर्दण्ड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडलाखंडल श्रीखाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ सूर्योदय वर्णनं नाम विंशातित्तमःस्सर्गः ॥ २० ॥

दोहा–सर्ग इकीसेमें कथा, दमयंतीको मान ॥ उत्तर प्रति उत्तर वचन, नल करिहैं सनमान ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ शोधि शिखर मणि धाम, आयो राजा न्हाइ कै ॥ रथ ऊपर विशराम, बात वेगि नभते उतरि ॥ २ ॥ दमयंती भहराइ, उठी देखि आयो नृपति ॥ उदवत शशि नियराइ, सिंधु प्रतीची बीचि ज्यों ॥ ३ ॥ **चौपाई** ॥ दमयंती अति आदर करचो॥ भूपति देखि मोद मन भरचो ॥ मंदाकिनि पंकज छबिजानी ॥ हाथ पाँइ दृग बदन निशानी ॥ ४ ॥ **सवैया** ॥ आनि

दयो पिय हाटक पंकज प्राणप्रिया करसों गहि लीन्हो ॥ पंकज नयनि प्रकाशि रही कमला समलै करकमलन बीनो॥थोरो दयो बहुतै करि मानत पीतमके हितको चितचीनो ॥ चाटकसों अभिलाष भरी सतलाखनिमो लबराटक कीनो ॥ ५ ॥ दोहा ॥ लखि प्रसन्न ठकुरायनी, विहरनिसों अनुमानि ॥ प्राणपियारो चाइसों, तब बोल्यो मृदुबानि॥ ६ ॥ नल ॥ दोधक ॥ मज्जित देव नदी हम कीन्हीं ॥ संध्यहि अंजलि तामहँ दीन्ही ॥ शेष रही करिवे विधि प्यारी ॥ जो नबहै रिसकी उर न्यारी ॥ ७ ॥ लोचन ऐंचि रही अरिसौ है ॥ तानि करी भ्रुकुटी सरिसोहैं ॥ नैसिकुपीय वियोग न भावै ॥ जानियहै नाहिं बोलु सुनावै ॥८॥ दोहा भूपति ढिगते नेकटरि, गई सखीके पास ॥ कुमुदिनि तजि कमलनिमिली, ज्यों कमला सबिलास॥९॥करि किरिया परभातकी,सखी रोंकि निज पानि पाछेसों दमयंतिके, मूँदि लिये दृग आनि॥ १०॥हँसन लगीं सहचरि सबै, देखिहि नयन दुराइ॥मानौ मापति लोयननि, कर परसनि फैलाइ॥११॥ तोटक ॥ जिय जानति हैं यह तो सखिया ॥ कर ऐंचि छुड़ावत हैं अँखिया ॥ परसे सुख सो नल जानि लई ॥ रहि नारि नवावति मौन मई ॥ १२ ॥ नल ॥ तारक ॥ मृगलोचनि योग नहीं तुमको है ॥ निज दासहि ओर लखौ सरिसौ है ॥ जेहिकी किरपा तुमको हम पायो ॥ तपसो तुमको नहिं क्यों मन भायो ॥ १३ ॥ भोररैनि करी हम सेवकताई ॥ नाहिं हाइ करी विनती मनभाई ॥ यहिते अपराध भई रिस तेरे ॥ अब वंदति हैं पद पंकज तेरे ॥ १४ ॥ पियके कर पाँयन ओर निहारे ॥ दमयंतिसो दूरिहिते झिझकारे ॥ शर छोड़ि कटाक्षनके चल पैने ॥ उर पांइ दयो करि नयन तनेने ॥ १५ ॥ हिय भेदि कटाक्षनसों वश ह्वैकै ॥ नल बोलि उठ्यो तियके पगछ्वैकै ॥ नल ॥ तुअ दौरति है अँखिया हरिनीकी ॥ श्रुति कूपनके भयसों उलटीसी१६॥ रिसहू मिसहौ तुममों उर प्यारी ॥ सियरावति कमलन सूर्य उज्यारी ॥ नवमोतिनकी समता द्युतिवारे ॥ सुखदायक आखर बैन तिहारे॥१७॥ सोरठा ॥ तेरी वाणि पियूष, कढ़ी क्षीरनिधिते मिलित ॥ हरति आव रस भूष, दुग्ध बिंदु मुसुक्यात नित ॥ १८ ॥ दोहा ॥ उदया चल

पूरण शशी, उदित चंद्रिका साथ ॥ बैठ्यो नल पर्यंकपै, गहे प्रियाको हाथ ॥ १९ ॥ लक्ष्मीधर ॥ अंगमें अंग वाके समोवै हँसै ॥ दूरिकै वियोगै बढ़ावै रसै ॥ गोदलै बारही बार चूमै मुखै ॥ भानु ज्यों कमल त्यों चित्त पावै सुखै ॥ २० ॥ बोलि लीन्ही कलानाम प्यारी सखी ॥ आप सोहैं खरीकै कृपासों लखी ॥ रूपओ बैसमें अप्सरी यक्षनी ॥ नर्मकी केलिलीला करी साक्षिनी ॥ २१ ॥ नल ॥ सोरठा ॥ सुनहिकले मृगनयनि, रोष भरी तेरी सखी ॥ रँगी खेल रँगऐनि, नाहिं करुणा हमपै करै ॥ २२ ॥ तोटक ॥ रसके परिरंभनदै रजनी ॥ पति मोल लयो हमतौ सजनी ॥ नितहौं तुमसों यह बातक-है ॥ सब झूठ भई न सदा निबहै ॥ २३ ॥ नल छोड़ि न और बसै मनमें॥ रुचि पूरि रही तेहि की तनमें॥ यहिके हियकी परतीतिनई ॥ नव योवनसों विपरीति भई ॥ २४ ॥ मौक्तिक दाम ॥ नयो मुख कमल विलोचन लाल॥ लखै इतको करि दीठि कराल॥ लख्यो तब मोहिं करचो जब दूत ॥ यहौ सुधि भूलि गई इक सूत ॥ २५ ॥ अलीन सु-नावति वैन पुनीत ॥ हमैं लखि ठानति मौन विनीत ॥ सखीन बुला-वति नाम पुकारि ॥ न लेति न लेति हमैं निरधारि ॥२६॥ उरोज रहे उर मंडित पीन ॥ कठोर भई छतियाँ दैहीन ॥ गयो रुकिचित्त रह्यो नहिं ठौर ॥ धरै हमको कितलै शिरमौर ॥ २७ ॥ सोरठा ॥ देत उराहन भूप, नरम केलि लीला नरम ॥ बोली बैन अनूप, कला कला धरकी कला ॥ २८ ॥ कला सखी सवैया ॥ साँच विचारति हौ पुहुमीपति ऐसी दुहूनकी प्रीति नई है ॥ पाछिली प्रीति बड़ी हमसों यहि ते हमही महँ रंगरई है ॥ मयनके तंत्रनि मंत्रनिके मत जानत हौ मति मोद मई है ॥ नवल वहू रतिको पति तीक्षन ज्यों तरवारि कि धार भई है ॥ २९ ॥ प्रद्धटिका॥ ना सत्य वचन तुम सुर समान ॥ तेहि भाँति चतुर रानी सुजान ॥ धरि मन्मथके सो रूप लेत ॥ तुम पूरि रहे हियके निकेत ॥ ३० ॥ तुम माहँ चित्त चिहुर्‍यो निदान ॥ नहिं ऐंचत आवै कढ़त प्रान॥ यह राज धूरि ताते रिसाति॥ दृग मोरि छोरसों लख-ति जाति ॥ ३१ ॥ मनहंस ॥ जब ते लखे तुम मैन चंचल कोरसों॥

पुतरीनमों मिलिकै बसे तुम ओरसों ॥ मम बैनपै परतीति जो नहिं हो ति है ॥ लखिये विलोचन आइ आपुन ज्योति है ॥ ३२ ॥ दोहा ॥ निज कुच कुंकुम रावरे, हिय में देति लगाइ ॥ कहे देत अनुराग निज है तोमें यहि भाइ ॥ ३३ ॥ तोटक ॥ जब ते तुम आनि वसे मनमो ॥ परिपूरि रहे सब ही तनमो ॥ कुच दो हिय मोन समाइ सकै ॥ छतियाँ मग बाहेर को ललकै ॥ ३४ ॥ यहि भाँति कला कल बैन कहे ॥ दृग भूपतिके मुसुक्याइ रहे ॥ रमणी परबूझतु है नि-जुकै॥चिबुकै गहि आनन उन्नतु कै॥३५॥ पियके करसों मुख मोहत है॥ युत पंकजसों शशि सोहत है ॥ बहुरौ नरनाह कह्यो हँसिकै ॥ सखियाँ हरषीं सुनतै रसिकै ॥ ३६ ॥ नल ॥ यहिके मुखको शशि मित्रभयो ॥ अरि बासर ताहि निकारिदयो ॥ लखि कमलनमें समता सिगरी ॥ ति-नमें कमला कुल आनि भरी ॥ ३७ ॥ दोहा ॥ अधर दशत रसरंगमें मोपै योग नरोष ॥ कीर बिंबफल छत करत, ताहि देत कहुँ दोष ॥३८॥ पद अंकुश कुच कुंभकी, लक्ष्मीलई चुराइ ॥ तिन्है पीड़िकै भूपहौं, साजौं क्यों न सजाइ ॥ ३९ ॥ संयुत ॥ मृदुकंद ओठनिको दसै ॥ अपरा-धमों मुखमों बसै ॥ शिरको कहा बलि पापुहै ॥ पगछ्वै सकै नप्रतापुहै ॥ ४० ॥ यह बूझि तैं करुणा भरी ॥ तकसीरको हमसों परी ॥ जेहि ते न बोलति चाइसों ॥ बरभौंह ऐंठति भाइसों ॥ ४१ ॥ सोरठा ॥ कान आपनो लाइ, दमयंतीके वदन ढिग ॥ छलसों सुमुख लगाइ, दमयंतीके कानसों ॥ ४२ ॥ तब बोली मुस्क्याइ, कला मनोज कलावती ॥ तिरछे नयन चलाइ, दमयंतीसों सरिस होइ ॥ ४३ ॥ लीला ॥ मैन मंत्रनकी कला हमहीं पढ़ाई सोधि ॥ भाँति भाँतिनसों सिखाइदई तबै बुधि बोधि ॥ ते सबै दमयंतितैं हियते दई बिसराइ ॥ तैं करचो विपरीति दंपति भाव यों उलटाइ ॥ ४४ ॥ बैन ये सुनिकै कलाके मौन देति हुँकार ॥ ऐंचि कौंलु दयो तहीं सखि सोंझकी बहुवार ॥ ४५ ॥ कलासखी ॥ सोरठा ॥ महाराज नलराज, मैं विनती बहुतै करी ॥ भई अधिक इतराज, दईकोलकी ऐंचिकै ॥ ४६ ॥ लीला ॥ मोहिं बूझति तैं ग-न्यो नलको न चिह्न न पाइ ॥ रूपकै नलको चल्यो छल गेहु है सुर-

राइ ॥ स्वर नदी जल जातलै सुरलोकते इत आइ ॥ मोहि चाहतु है छल्यो करि नेहके सब भाइ ॥ ४७ ॥ होगयो जब काम मोहित है अहल्या तीर ॥ स्वाँगु कुरकुटको करयो तब बुद्धि बंचक बीर ॥ यों भयो दमयंतिके भ्रम इंद्र तुमको जानि ॥ साँच हौ नल देहु तौ परछन्न चिह्न बखानि ॥ ४८ ॥ **शशिबदना** ॥ यह कहि बानी ॥ चुपकि सयानी ॥ नरपतिबोल्यो ॥ अमिरतु खोल्यो ॥ ४९ ॥ **नल॥सोरठा॥** प्रेम पियारी रानि, निज मनमे किन सुधि करै ॥ में वर्णों पहिचानि अपनी तेरी आगिली ॥ ५० ॥ **सवैया** ॥ लाज भरी डरसों थहरी जब वा निशि केलि कला विस्तारी ॥ आधिकही रसरंग समय हम तोहिं दयो तजिकै मनुहारी ॥ नेकु वियोग लह्यो न परै जब मानु करै कबहूँ रुचिवारी ॥ सो सुधि भूलि गई निजकै वह देखतही तसबीर हमारी ॥५१॥ **दोहा** ॥ सदनख छत तो कुचनिके, उपटे मो उर आइ ॥ सुधि करिमैं हँसिके कह्यो, दीन्हे सखिन बनाइ ॥ ५२ ॥ **सवैया** ॥ खेलमही सखियानके संग तहाँ हम ये कछुरोषु कह्यो ॥ याँचत है सबके ढिग हौंरपटचो भिसुकै तुअपाँइ परयो ॥ वादिनहौं जब आइ गयो रति लालचसों ललचातु खरचो ॥ तैं परिहास सज्यो सजनी मुख चूमि भुजागहि अंक भरचो ॥ ५३ ॥ **दोहा** ॥ अधरनिमें अधरनि मिलै दीन्ही बिरी खवाइ ॥ मति भूलै मानिनिजु हो, जाती हो परिपाइ॥५४॥ **सवैया** ॥ लोचन फेरि करचो बदलो निशि लेत करोट रहे मिलिसौं हें ॥ नेकु वियोग सह्यो न गयो गुरु लोग रिसाइ चढ़ावत भौंहें ॥ मांगत मोहिं बिरी करसों कर लागत भाजि गई अलगौंहें ॥ सोइक बार सबै बिसरी जब सों इक बार करी हमसौंहें ॥ ५५ ॥ **चौपाई** ॥ प्रथम सुरत मेही कुम्हिलाइ ॥ वार वार रति सही न जाइ ॥ मैं तब तोहिं उराहनुदयो ॥ सो बलि भूलि भलोपन लयो ॥ ५६ ॥ झूंठ वचनमें रस-सों रूसी ॥ चली सखी न संग कोऊसी ॥ मोहिं देखि आगे रस पगी ॥ सुमिर वहै तृण तारन लगी ॥ ५७ ॥ **सोरठा** ॥ चिबुक साँवरो बिंदु प्रतिबिंबित मुख हारमै ॥ मनौ नखत में इंदु, सुधि करि प्यारी सुरति श्रम ॥ ५८ ॥ **सरसी** ॥ सुधि करि शरद कोकनदलोचनि विलसित

विपिन विहार ॥ चल दलको दलु टूटि परयो महि लागत पवन झुका-र ॥ ५९ ॥ **सोरठा** ॥ ऐसी भाँति वखानि, सकल भेद भूपति कहे ॥ दमयंती सकुचानि, मूँदि रही सखिके श्रवण ॥ ६० ॥ **दोहा** ॥ नयन कमलकी गति हतै, जानि कानकी बानि ॥ ॥ राजरानि मीड़ति तिन्है गहे कोकनद पानि ॥ ६१ ॥ **हरिगीत** ॥ यह लखत केलि विलास तियके हाँससों पिय मुखलसै ॥ जनु सरग नवल प्रवालके दल दुग्धकी लहरी रसै ॥ नहिं रहसि भेदनिसों विदित सखियाँ सबै विहँसैं खरी ॥ जनु पुहुप वर्षें हर्ष हिय महि अवतरी नभसों परी ॥ ६२ ॥ **सोरठा** ॥ नल मुख हाँस उदोत, अली हँसी सोहन लगी ॥ प्रगट सुधाधर होत कुमुद पाँति जैसे खुलै ॥ ६३ ॥ पहिचान्यो सुरहाँस, सखी पक्ष निज पाइकै ॥ अबलालै बलपास, कला विज्ञ बोली कला ॥ ६४ ॥ **कला सखी** ॥ **सोरठा** ॥ अहेरानि गुण खानि, नेक आइ इत हंस गति ॥ पिय मुख मधुरस सानि, सुनि सुंदरि सुंदर वचन ॥ ६५ ॥ **सवैया** ॥ पीछे खरी बहराइ सुनै पियकी बतियाँ छतियां सुख देनी ॥ भूपतिके शिरपेंच मणीन भई प्रतिबिंब सरोरुह नयनी ॥ जानि गई जिय भावक-लाचित चावभरी चितवै करि सैनी ॥ आँखिनके बिन साखिन हू लहिहेत करै अनुमामति पैनी ॥ ६६ ॥ **कलासखी** ॥ **प्रद्धटिका** ॥ मम श्रवण अभूषण मणि कठोर ॥ तुअ हाथनमें सखि गड़तकोर ॥ निज पट्टरानि कर ऐंचिलेह ॥ मैं करत आपसों अर्ज येह ॥ ६७ ॥ नलराज कह्यो सुनि रानि रानि ॥ निर्फल अयासतजि श्रवणपानि ॥ तप तुरत कला करदिये झारि ॥ दमयंति गई तजि सोरुपारि ॥ ६८ ॥ तब कलासखी चलिगई डोलि ॥ दुरिनेह मंजरी लई बोलि ॥ **कला** ॥ सुनि दोउनके सखि रहसबैन ॥ जेहि भाँति भये भरिरैनिसैन ॥ ६९ ॥ **दोहा** ॥ मैं तोसों वर्णन करयो, अपनी जानी बात ॥ तैंहूँ कहि जो कछुलही, सही रही अलसात ॥ ७० ॥ **मौक्तिकदाम** ॥ कही उनहू अनजानत बात ॥ भये तब दंपति कंपित गात ॥ कह्यो तब भूपति बोलि कलाहि ॥ पुनि भूपति नेहलताहि सराहि ॥ ७१ ॥ **नल** ॥ कहौ तुम झूँठ सिख्यो केहि ठाम ॥ दुहून सिखी मति मोहन काम ॥

नेहमंजरी ॥ कहा विनही ठिकदेत कलंक ॥ सखी नहिं झूँठ कहैं यक अंक ॥ ७२ ॥ पिय मिलि आपु ठगौ सब आलि ॥ नयोग हमै तुमसों झुँठ चालि ॥ कहै लगि कानन काननबैन ॥ हँसै करि अद्भुतसों चित चैन ॥ ७३ ॥ **कलासखी** ॥ दमयंति हमै जनिलावहि दोष ॥ करै बिनकाज कहा बलिरोष ॥ कहैं हम बात छिपाइ निदान ॥ सुनै जेहि माह द्वितीय न कान ॥ ७४ ॥ **नल** ॥ लखी मृगलोचनि आलि तुम्हारि ॥ सबै छल साहसकी अनुहारि ॥ करै इनको जनि चित्त विलास ॥ सुनै सखियां कुहकैं कलहाँस ॥ ७५ ॥ **दोहा** ॥ हंस गवनि निज भवनमें, आवन इहै नदेह ॥ दुर विनीत कतमीत है, चरचि चित्त चितलेह ॥ ७६ ॥ **चुलिआला** ॥ दमयंती शिरनाइकै सैनक री सकुचाइ सुलक्षण ॥ जानि गयो भूपाल सब भेद रह्यो मुस्काइ ततक्षण ॥ ७७ ॥ **मालाधर** ॥ वरुण बरसोंतहीं कर समेटि छीटै दई ॥ बसन सबभीजिकै लखत आश्चर्यै भई॥ विघनु नमि दीठिको दद्युति उरोज देखी परै ॥ दीपति जनु दामिनि युगल तोयसों अंबरै ॥ ७८ ॥ **नंदा** ॥ जानतु जग तुवसनको अंबरु नामु ॥ नखत सलिल कन सुंदर नित विशरामु ॥ ७९ ॥ **श्लोक छंद** ॥ देखि देह दशादोऊ लाजसों बहुतै भरी ॥ आइ भीतरते तौही दौरि बाहेर को टरी ॥ ८० ॥ देखिके निकसे दोऊ ओरजे सखियां हुती ॥ ते सबै तुरतै दौरीं बाहरीह्वै इक सुती ॥ ८१ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ दमयंति करी करसैन आइ ॥ तब लई दुवो सखियां बोलाइ ॥ वै बोलीं बाहेरते पुकारि ॥ किनि देहु इन्हें अजहूँ निकारि ॥ ८२ ॥ **दोहा** ॥ भूपदरीची बीचह्वै, बोल्यो आनन खोलि ॥ बाहेरही सब सहचरी, करी दीठि हगडोलि ॥ ८३ ॥ **नल त्रिभंगी** ॥ जे जे हम बातैं रस रस सातैं करी सुहातैं रजनिजगे ॥ ते इन सुनि लीन्ही अब सुधि कीन्ही कहि दीन्ही हिय प्रेमपगे ॥ इनकी रति पतिकी और सुरतिकी गति निज नयननि हम देखी ॥ तेहि पै वै ढीठैं भईं बसीठैं छलईठैं यह मति लेखी ॥ ८४ ॥ **सोरठा** ॥ जिन के चरित पुनीत, कीरतिसों उज्ज्वल दिपै ॥ दूषण देत अमीत, मृषामषी मैले करत ॥ ८५ ॥ **सखी दोऊ** ॥ हम न करैं कछु दोष, कहैं नँ

चर्चारावरी ॥ जालगि आनत रोष, ये इम जाती बाहरीं ॥ ८६ ॥ तोमर ॥ लजिकै रही दमयंति ॥ पिय पेषि ताहि इकंति ॥ मुख चूमिलै उरलाइ ॥ नव नेहसों समुझाइ ॥ ८७ ॥ गहि पीन उच्च उरोज ॥ करनीबि ऐंचत चोज ॥ नख अंक सोहतलाल ॥ शिवशीश किंशुक माल ॥ ८८॥ नल दोहा ॥ कुच नितंब ऊरू विमल, मिलत तिहारो बास ॥ उज्ज्वल गुनमैं शुभदशा, ताको लहत प्रकाश ॥ ८९ ॥ सहि नसकै मन्मथव्यथा, तनु कोमल चल नयनि ॥ हहा पाँइ तेरे परों, तन मन वारों ऐनि ॥ ९० ॥ सोरठा ॥ पतिकी हठ गति जानि, झमकि उठी पर्यंक ते ॥ नेवर झनक सुहानि, चली अलीकी ओरको ॥ ९१ ॥ कुच नितंबके भार, पग आगे नहिं परि सकैं ॥ पाछे बिथुरत बार, टूटी कटि लचकी परै ॥ ९२ ॥ तोटक ॥ नलपै चलि ताहि गह्यो न गयो ॥ लहिसाखि कितंभ समान भयो ॥ दमयंति लजाइ सखी गनमें ॥ नहिं जाइ रहै नससै मनमें ॥ ९३ ॥ गीत ॥ तब वंदि सुंदर द्वारपै नलराजसों विनतीं करी ॥ दिनमध्य आवत जानिकै गुनमान भावनसों भरी ॥ वंदिवधू ॥ जै जीव श्रीनल भूमि वासव मध्य वासर है भयो ॥ जल न्हानके क्षितियान चाहत गऊ पूजनको ठयो ॥ ९४ ॥ जलश्वेत शुद्ध सुगंधि सुंदर केश पुंजनि रावरे ॥ छहरात होत मनौ मिले यमुनातरंगनि साँमरे ॥ जगशीश पै दिननाहतापतु आपको परतापुंजू ॥ शिवपूजि दान विधान संयुत आनिये उरजापुजू ॥ ९५ ॥ सुनि बैन वंदिनके तहीं नल भूमिनायक चाइसों ॥ जेहि ओर प्राणप्रिया गई तेहि ओर हेरत भाइसों गिरिराज जापति जापको हित मानि आनँदसों भर्यो ॥ निजराज भौन गयोचहै पर्यंकते उठिकै खर्यो ॥ ९६ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबर खाँ प्रोत्साहित गुमानमिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ नल विलासो नाम एकाविंशातितमःसर्गः ॥ २१ ॥

दोहा–सर्ग बीस द्वैमें कथा, वर्णन वासर कृत्य ॥ पूजन हरि हर देवको, वंदन परिजन भ्रत्य ॥ १ ॥ सोरठा ॥ उदयत नल महि इंद, खंड सातयें सोंधपै ॥ जोरत करनि नरिंद, साँचे कर दाता भये ॥ २ ॥ सवैया ॥ चीनके चीर नवीननिसों गिलमै गुलजार हजार बिछाई ॥ पैनलके तरवातलके समह्वै न सकै कुलि कोमल ताई ॥ झुंडझुरे सिगरे नरनायक मंडिप नाम करैं बहुधाई ॥ शीश अभूषण माल मिली सुगली जनु कमल कलीनसों छाई ॥ ३ ॥ मनहरण ॥ निज निज देशनिके रतन विशेष वेश करत नरेश भेंट दूरि शिरनाइकै ॥ बोलत पुकार चोबदार हेमछरीवार वारन तुरंग रथराजत बनाइकै ॥ काहू ओर सनै कहूँ विहँसत नयन काहू सों कहत वैन मृदुल सुहाइकै ॥ दौरि दौरि सजत अशीश तसलीम तेई धन्य ह्वै धरामे पावैं भोगभाग भाइकैं ॥ ४ ॥ दोहा ॥ निज निज लायक थान थित, नृप चितवत तेहि ओर ॥ पूजन शारद चंद ज्यों, ऊरध नयन चकोर ॥ ५ ॥ करि करि लोचन भौंहकी सैनभेंट धरणीश ॥ लेत एकसों औरको, वहै करत बकसीस ॥ ६ ॥ चौपाई ॥ तिनसों भूप कुशल हँसि बूझी ॥ देश रीति पुनि प्रेम अरूझी ॥ रागरंग रण चरचाखरी ॥ भैमीपाति तिनसौं ते करी ॥ ७ ॥ ते अति मुदित भये नरनाह ॥ थिति आपनी गनी जगमाह ॥वार वार चर्णनं शिरधारैं ॥ करैं अरज निज भवन सिधारैं ॥ ८ ॥ नल तिनके पूजे अ-भिलाष ॥ झलकति दई खिलति सतलाख ॥ हराषि गये ते भूप अवास ॥ नृप मज्जनको सज्यो विलास ॥ ९ ॥ तोमर ॥ चहुँ ओरते नवनारि ॥ घट पूरि हाटक वारि ॥ छुटि फैलि जात सुबास ॥ अलिपुंज गुंज वि-लास ॥ १० ॥ मृग मेद केसरि सानि ॥ उवटै नृपै मृदुपानि ॥ दाधि और तेल सुगंध ॥ शिरमींजि केश निवंध ॥ ११ ॥ सोरठा ॥ भूभृत घन तप कीन्ह, ताहि न्हवावत सरसशुचि ॥ जलधरघट भरिलीन्ह, तीरथ जल लहरी विमल ॥ १२ ॥ पद्धटिका ॥ रचिस्वर्ण रतन चौकी अनूप ॥ ता ऊपर राजत न्हात भूप ॥ बहु पढ़त गंग वि-नती बनाइ ॥ कर जोरि चित्त थिर माथनाइ ॥ १३ ॥ सवैया ॥ हे सुरबाहिनि दाहिनि दीनानितो पगलीन जो दास कहावे ॥ द्वारदेवे तिहिके

शिषके सब बासव तौ नित जान न पावै ॥ जात पुरी पुरुषोत्तमकी विल सात तहाँ सुकहा कहि आवै ॥ गूँदै शची सियके हरवा तरवा यमलोकनको दिखरावै ॥ १४ कवित्त ॥ औरको कपूत कूर कायर कलंक युत जाकी प्रीति रीति पर दोष चरचाकीसों ॥ कालदंड दानको गुमान जू बुलायो ताहि ताके किंकरनि आनि गह्यो शिरताकीसों ॥ गंगकी तरंगसों कहूँते कोऊ अंग मिल्यो देव अंगननिसों उठायोलै चलाकीसों ॥ सुरपुर जाइ बैठ्यो बोलै सतराइ देखौ पाँयन दबावै दुलहिनि मघवाकीसों ॥ १५ ॥ प्रद्धटिका ॥ कर नरम तऊ विधि करम जानि ॥ तब हरित पवित्रा धरत पानि ॥ जनु प्रिया विरह तन अनल झार ॥ तेहिकी अपार ये धूम धार ॥ १६ ॥ हरिगीत ॥ आचमनीयको जल गंगको करसों लयो ॥ तहँ चुलक निर्मलमें झलक नभ लोक प्रति बिंबित भयो ॥ जनु सकल भूतलके पदारथ दान में नल हैं दयो ॥ १७ ॥ सोरठा ॥ दमयंतिहि अलगाइ, निजपति पायी भूमि तिय॥ अंग अंग लपिटाइ, गई भस्म मिस यज्ञकी॥१८॥साधत प्राणायाम,कटिलो ठाढे सलिलमें ॥ मनौ वरुणके धाम, कमल मुँदे द्वै शशि खुल्यो ॥ १९ अभ्र विशद द्युति तार धोती पहिरी मारछवि ॥ दश दिशि वसन उदार, हरकी कारि जनु ईरषा ॥ २० ॥ संयुत ॥ दमयंतिके ढिगको चलै ॥ चितकी लही गति चंचलै ॥ उर ऊतरी परिधानसों ॥ नृप ताहि रोकत ज्ञानसों ॥ २१ ॥ घट बारिके कुच पीन हैं ॥ शिर दर्भ केशनबीन हैं ॥ सब अंग शीत करै तिया ॥ नलको भजै जलकी सिया ॥ २२ ॥ उपेन्द्रवज्र ॥ करै उपस्थान दिनेशजूके ॥ अखंड धारा जल अर्धहूके ॥ जपै महामंत्रन देव गाये ॥ सरोज श्री खंड मिले चढ़ाये ॥ २३ ॥ दोहा ॥ फटिक माल करमें लसै, झल झलात छबि जास ॥ बीज बरन वश भगति रस, जनु कर करत निवास ॥ २४ ॥ लीला ॥ पाणि पंकज पोरमें जब देव तर्पण युक्ति ॥ पितर तर्पण तिल मिलति तिल हाथमें पुनरुक्ति ॥ धाममें निज त्यों लसै प्रभु अंभुपति सुखधाम ॥ क्षीर सागरमें रमै जनु देव वासव नाम ॥ २५ ॥ दोहा ॥ न्हाइ बिमल धोती पहिरि, छहरि चाँदनी चंदु ॥ पूजा मंदिरमें गयो, आसन लयो

अमंदु ॥ २६ ॥ **द्वितीय झूलना** ॥ दंडी व्रती ऋषिराज राजत चारु आसन साजि ॥ जहँ दिव्य धूप सुगंध बंधित भौंर गुंजत राजि ॥ चहुँ ओर फूलनसों भरीं फल झूमि वंदनवारि ॥ नाशि अंधकार गयो हजारन दीप राखत वारि ॥ २७ ॥ मुकुतानके बिछुरे मनौ निज देह पावक दाहि ॥ धरि घोरि केसरिसों सिसी भरि रूप रूप सराहि ॥ मणि साँवरे चकरेक चोरनि माँह चन्दनपंक ॥ जनु राहुके मुखमें परचो धुरिकें समंक ससंक ॥ २८ ॥ कस्तूरिका चयसों भरे मय रजत सुंदर थार ॥ क्षिति इंदु मंडल अवतरे उर कृष्ण सार अपार ॥ नव मालती कुलमाल पर्वत फूल राजत ढेर ॥ गिरि देव देव निवासको तेहि तूल है बहु फेर ॥ २९ ॥ **चौपाई** ॥ भाँति भाँति नैवेद्य बनाये ॥ उज्ज्वल शुचि चीरनसों छाये ॥ भरी भूमि तिल परै न हेरि ॥ उत्तम कामिनि लाज घनेरि ॥ ३० ॥ प्रथम भूमिपति पूजत भानु ॥ जाको वेद करै गुण गानु ॥ भक्ति भाव देखत संपन्न ॥ सावक्तर रवि भये प्रसन्न ॥ ३१ ॥ माल करी रचि चंदनलाल ॥ तासों जपत भानु मनुजाल ॥ मानौ चहत अधिक अरुणाई ॥ करै तासुकर सेवक ताई ॥ ३२ ॥ **दोहा** ॥ कनक कुसुमसों पूजि शिव, सोहत अति अभिराम ॥ सायक दयो चढ़ाइ जनु, मानि हारि हिय काम ॥ ३३ ॥ **मनहंस** ॥ नव नागकेसरि फूल देव चढ़ाइ कै ॥ भव भाल होत कपाल भूषण भाइकै ॥ पुनि नील नीलज कंठ माल मिलाइकै ॥ तब ह्वै गये शिवनील कंठ बनाइकै ॥ ३४ ॥ **दोहा** ॥ कलुषहरण करिहैं कृपा, मर्दन मयन अनूप ॥ शुभ सौरभ आगे रची, भूपकाम सरधूप ॥ ३५ ॥ **सवैया** ॥ दमयंति तियै बिछुरो न परै न पियेकलनेक परै छतियामै ॥ शिव शीश कलानिधिसों सकुचै निहचै न रहै गति औ मतियामै ॥ मिसुकै उर ध्यान धरो हरको धरको हियरा फरको अतियामै ॥ तब मूँदि रह्यो अँखिया पुहुमीपति पूरि रह्यो बतिया बतियामै ॥ ३६ ॥ **सोरठा** ॥ परचो दंडवत पाँइ, मनौ मदन आयो शरण ॥ दीने बाण चढ़ाइ, कमल कोरि शिव चरणपै ॥ ३७ ॥ **प्रद्धटिका** ॥ नृप जपन लग्यो शत रुद्रजाप ॥ जेहि हीन होत जगतीनिताप ॥ कर लसत अच्छ अवली विशाल ॥ नव पल्लवमे जनु भौंर माल ॥ ३८ ॥ **तारक** ॥ पुरुषो-

त्तमको पुनि पूजन कीन्हो ॥ पढ़ि पूरुष सूकत संयम लीन्हो ॥ जपि द्वादश अक्षर मंत्र नवीनो ॥ हरि द्वादशमूरतिको चित चीनो ॥ ३९ ॥ **लक्ष्मीधर** ॥ मल्लिका फूलकी दीह माला गुदी ॥ आसन स्थानमें छापि दीन्ही जुदी ॥ भक्तिके भावसों विष्णु जूसों रस्यो॥नाग राजा मनौ आइ ह्याँई वस्यो॥४०॥**प्रमाणिका** ॥ सरोज निल जोरिकै ॥ हरा गरे निहोरिकैं॥चढ़ाइ भूप जो दयो॥सिया कटाक्ष सो भयो॥४१॥**गीत**॥सब दिव्य शुद्ध सुगंध लेपित बारि दीप कपूरसों ॥ नव स्वर्ण केतक पुंडरीक चढ़ाइ देत अदूरसों ॥ करि अन्न पक्क पियूष पोषित स्वाद देत निवेद है ॥ बहु भाँति धूपति धूपसों जेहि देखि नाशत खेद है ॥ ४२ ॥ **मौक्तिकदाम** ॥ अमोल मणीन रचे बहु दाम ॥ सबै अँग अंग किये अभिराम ॥ लसैं हरिजू थिर आसनश्वेत ॥ मनौ पयसागर माहँ निकेत ॥ ४३ ॥ करचो परणाम गयो लचिमाथ ॥ गही पुष्पाँजलि श्री नृप हाथ ॥ धरी शिरपै सुख शोभ उमंग ॥ महेश्वर मौलि विराजत गंग ॥ ४४ ॥ **मनमोहन** ॥ जलनिधिसुता हियमें बसति ॥ हरिकी सुरति तेहिमें लसति ॥ तेहि उच्च थल सरस्वति रहति॥अनुराग कंठहिमें बहति ॥ ४५ ॥ **तोटक** ॥ तेहिते घन पूजन योग नहीं ॥ समुझाइ दियो बुध लोगनहीं ॥ मुकुतावलि शीश बदावलिकै ॥ हरिकी विनती विनयी चलिकै ॥ ४६ ॥ **नल** ॥ **लीला** ॥ रावरी महिमा न आवति वैन औ मनमाहि ॥ जो कछू कहिनासुटेरतु योग जानतु नाहि ॥ हौं करौं परलाप या परि पाँय पंकज नयन ॥ सो क्षमा करिये कृपानिधि जानिये जड़ वैन ॥ ४७ ॥ **सोरठा** ॥ हौं जड़ जीव अज्ञान, चहतु बड़ाई रावरी ॥ जैसे भासत भान, तम ताको प्रगटन चहै ॥ ४८ ॥ **चर्चरी** ॥ जो न आवत वैनमें मनमें न लागत ध्यानसों ॥ तौ हमैं सुख लाभ होत विचारि देखत ज्ञानसों॥मेघ ज्यों नियरात है नहिं कोटि चातक टेरसों ॥ देखि जात जुड़ात लोचन प्यास नास सबेरसों ॥४९॥ **सवैया** ॥ मीन स्वरूप धरचो छलको छलको लगि सागर पूछतरारे ॥ क्षीरतरंगनि सों मिलिकै सुरगंग भई अवदात निहारे ॥ मंडित कै क्षिति मंडलको निज पीठि अखंड धरी

निरधारे ॥ मंदरके किन चक्र विराजत साजत कच्छपरूप विचारे ॥ ॥ ५० ॥ मनहरण ॥ चारौ खुर खूँदि खूँदि खनिकै अवनि तल जलधि बनाये चारि अतुल अपार हैं ॥ एक डाढ आई दै उठाई महिकोंल रूप शशिकी कलापे शशि समता विचारहै ॥ दानव गहन सिंह अरध मनुजतनु विकट कुटिल सटा निपट करार है ॥ अंकुश नखन ऐंचि हरिणकशिपु अने डोरि ऐसि छोरि तोरि लीन्ही निरधार है ॥ ५१ ॥ सवैया ॥ आवतही पुरके धुरते सुमिले बहु बालक घेरि लियो ॥ बावन जानि महा मन कौतुक चेरिन भीतर टेरि लयो ॥ बलिराज वधू हुलसी कन दानको चून जबै कर फेरि लयो ॥ पावतही पगतीनिके भूमिहि तीनहु लोकहि नापि लियो ॥ ५२ ॥ जिन बाहनसों उपजे जग क्षत्रिय लोकनकी रचना जब कीनी ॥ तिनहीं सबते तिन तूल हने निर्मूल उखारि सबै क्षिति छीनी ॥ पंसुल भामिनि भूरिनकी नवखंड करी द्विज देव अधींनी ॥ अर्जुनके भुज दंडनि खंडित कीरति राम ऋषीश्वर लीनी ॥ ५३ ॥ मनहरण ॥ लीनो अवतार अज तनुजते महाराज दुखन तुम्हें न खर दूषणके अरि हौ ॥ ज्ञान हों न चहौं मोहु याऊ कहै यासों लखौं रावण चमू ज्यों सब ओर रहे भरि हौ॥ सुयशकी राशि तीनौ भवन प्रकाशिये निकासि दीनी सीता लोक बादनिसों डरिहौ ॥ विश्रवासों भई शूपनेखाकरी ताहि रूप पितर समान ताके काननिकतरिहौ ॥ ५४ ॥ दारिद हरति मेरे वारिदसे बसुदानि चारौ भुजदंड मार्तंड तेज चटके ॥ अलप कलप तरु जरसों उखारयो निज ईर्षासों पागे अनुरागे दान रटके ॥ जीतके निधान उपधान सियरानी जूके वाणी जूके विमल विहारक निकटके ॥ जय अभिराम तन छबि कोटि काम वारौं भादौंकेरे श्याम घन यादव कपटके ॥ ५५ ॥ कर न सकत रण विफल करन काज अर्जुनरथ साजिं सारथी सुहाये हौ॥ पारथ कृतारथकै भारथ जिताये जोर शूर सुत शूरको हराये वेद गाये हौ ॥ वाम विहँसत नयन दाहिनो दुखित ऐन ऐसो अद्भुत गति सुमति बताये हौ ॥ करत हौ शेष बास जगत अशेष वास दैत्यनको त्रास देत देवनको भाये हौ ॥ ५६ ॥ धरत हौ धरणि धर्म हेत धनि धनि धी-

रज धुरंधर सहसफन वारे हौ ॥ माधुरी पियत मधु साधुरीति साधितकै वाधित करत भव वाधानि उधारे हौ ॥ मूशलसों कुशल सजत तीनौ लोकनकी सहल सहल यमुनाके मद गारे हौ ॥ प्रबल प्रचारे दैत्य अबल उबारे देत रोहिणीके प्यारे नीके नन्दके दुलारे हौं ॥ ५७ ॥ **दोहा** ॥ एक रूपद्वै भेद विन; तीनिकाल थिरचारि ॥ गावत पंच अधीश षट,हंता सात सवारि॥५८॥ छप्पय ॥ सुयशरूप तुम विष्णु जन्म जानतसों लीन्हो॥ विष्णु जसा द्विजदेव जगतमें गौरव दीन्हो ॥ सकल मलेक्षन काल हेतु करवाल भयंकर ॥ रुधिर कुंडगहि मुंड झुंड हरषे हिय शंकर ॥ इमि दुःख दशा हरि धरणिकी हरिदश विधि अवतार धरि ॥ कलिकी सुरूप सुर भूप प्रभु, चित मलकी गति पार करि ॥ ५९ ॥ **स्वागता** ॥ राम भानुसुतसों हित मान्यो ॥ इंद्र पूत तुरतै हति आन्यो ॥ कृष्ण इन्द्र सुतके रखवारे ॥ भान सुवनके खंडनवारे ॥ ६० ॥ ज्यों त्रिविक्रम भये तुम रूरे ॥ तीनि लोक पद पंकज पूरे ॥ तीनि वार ताक्यो चित चीन्हो ॥ जाम्बवंत परदक्षिण कीन्हो ॥ ६१ ॥ छप्पय ॥ लसत एक कर शंख शंख निधिको नित दायक ॥ जलज सहस दल कहत बास जल जाके लायक ॥ चक्र सराहत शक्र वक्र शिशुपाल विहंडन ॥ गदा अगद संसार दरत गद दैयत खंडन ॥ उर दिपत ललित वन माल छबि मनौ बालित रुक्मिणि भई ॥ नव नील जलदतनु साँवरी सदा रहौ हिय ओनई ॥ ६२ ॥ बसत चरणतल गंग जलज कर हिय चिंतामनि॥ सागर सोवत तुम्हैं मिले मानौ परिचय गनि ॥ धर्म बीज कर सलिल सरित लंक्ष्मी उर राजै ॥ कामदेव फल फल्यो देत तुम मुक्ति समाजै ॥ पुनि तीनि लोक तुव उदरमें लखत मारकंडेयमुनि ॥ निजरूप और एकु हेरिकै अति अद्भुत गति चित्त चुनि ॥ ६३ ॥ **सोरठा** ॥ नाम रावरो लेत, लीलाहूमे नरकहू ॥ नरक भीति नहिं देत, वे इनके भवसों भजै ॥ ६४ ॥ नाम तिहारो राम, परम पतित पावन विमल ॥ वहै एक अभिराम, लयो तीनि अवतार धरि ॥ ६५ ॥ **दोहा** ॥ भानु नयनसों तम हरौ, देखि दासकी प्रीति ॥ विधु लोचनसों लीजिये, तीनि ताप तन जीति ॥ ६६ ॥ **हरिगीत** ॥ मम चित्त है

अति अल्प तो गुणराशि क्यों गहिकै सकै ॥ जिमि कनक मेरुहि पाइ निर्धन पोट हाटककी तकै ॥ नहिं करत हौ विधि वेद कछु सब भाँति खेदन सोभसों ॥ मन चहत हौं करि कृपा तिहारी निलजह्वै अब पापसों ॥ ६७ ॥ सोरठा ॥ प्रगट भये हरि आय, भक्ति भाव पूजा लई ॥ दै अशीष सुखपाइ, तुरत गये निजधामको ॥ ६८ ॥ दोहा॥ देव पितरके काजसजि, वंदि व्रती ऋषिराज ॥ द्विजन अनेकन दान दै, चल्यो निकेत समाज ॥ ६९ ॥ सोजन परिजन साथलै भान ओज आकार ॥ भोजन मंदिरमें गयो, योजनको विस्तार ॥ ७० ॥ मनहरण ॥ एक ओर किन्नर भरत मतहित गान पंचम भरत तान करत तरेपिकै ॥ ठौर ठौर जगर मगर मणि दीपनिसों अगर सुवास है अगर धूप पेषिकै ॥ केसरि कपूर चूर चन्दन मिलाय चारु चोवालै चतुर चौका चाँदनीसों लेपिकै ॥ भोजन भलूल भारे भाजन जराऊ तहाँ राजत थरा हैं छपाकर छबि छेपिकै ॥ ७१ ॥ सवैया ॥ कोऊ सलोने कोऊ मधुरे तुरसाइनके सुरसाइनराचे ॥ लेत सुवास छकैं सुर किन्नर रंगभरे रसना बसनाचे ॥ कंचन थारनसें परसे सरसें रुचिसों पकवान अजाचे॥ शीतल नीर समेवत जेंवत भूप अमीर अमीरससाँचे ॥७२॥ स्वागता ॥ भूरि भूप मिलि भोजन कीन्हे ॥ पाणि धोइ शुचि पानन दीन्हे ॥ सेज भौन आयो रँग भीनो ॥ रास रंगको कौतुक कीन्हो ॥ ७३ ॥ वसंततिलक ॥ न्हाइ सु पूजि सुर भीमसुता सयानी ॥ पाछेहि भोजन किये नल राज रानी ॥ आइ समीप पतिके अति लाजकीनी ॥ गामैं नचैं अमर अप्सरिया नवीनी ॥ ७४ ॥ चंचु प्रभादलित बिंब फलानुरागी ॥ पन्नामई हरित पच्छन ज्योति जागी॥लीन्हे सरोज शुक पंजर एक आली॥ आई तहाँ ललित चालि मनौ मराली ॥ ७५ ॥ सोरठा ॥ साँवल तनपर भाइ, कुहूँ शब्द साँचे कहत ॥ पिक करकोंलसुहाइ, और अली आई चली ॥७६॥ प्रद्धटिका ।तब निरत कला संगीत चार ॥ गंधर्वतिया उघटैं अपार ॥ सुर मधुर बीन ध्वनि बजत जात ॥ दमयंति गानसों जनु लजात ॥७७॥सोरठा ॥ दमयंतीके गान, मधुर मनोहर जे सुनत॥करि परिवाद प्रमान, वीन भई परिवादिनी ॥ ७८ ॥ दोधक ॥ दम्पति कीरति की-

रति हेरी ॥ शक्र शची समता निरवेरी ॥ कीरु पग्यो म्रतुपे मणि पाग्यो भूप सराहत बोलन लाग्यो ॥ ७९ ॥ कीर ॥ त्रिभंगी ॥ तुम या तिय लायक गुण निधि नायक मन भायक मिलि रजनि जगे चित-प्रेमपगे ॥ भव मैन सुहायो तुम ह्वै आयो रतिपति पायो भागलगे अ-नुराग रँगे ॥ सुरसरि तुअरानी स्वच्छ सयानी पावन मानी सरस लसै तुअ अंक बसै ॥ मुख शशि हुलसावत तुम सुखपावत हरष मँगावत सुमतजसै दशदिशि निकसै ॥ ८० ॥ प्रद्धटिका ॥ दमयंति कपट कंचुकि तिहारि ॥ रतिराज राजधानी विचारि ॥ तुव नयन मीन ध्वजदै सुधा-रि ॥ तहँ भौहैं बाँधी बँदनवारि ॥ ८१ ॥ गीत ॥ रावरी पर प्रीति की लखि कौलरागनिसों रँग्यो ॥ मिलि वारुणी दिशि बामसों सबरैनि चाहत है जग्यो ॥ सखियां सबै टरि जाहिं बाहेर चोज जाहिर चातुरी॥ नख दंतसों रण रंग जीतत मैनके डर आतुरी ॥ ८२ ॥ यहि भाँतिके-लि बिलासको सकुचोजसों तिरिया पढी॥मुसक्याइ नैननही अली इक एक ह्वै बाहिर कढी ॥ पिक कूँकिकूँकि तुहीं तुहीं करि आपु उक्ति विलासकै॥ नृप ओर औ शुक ओर हेरति कमल लोचन लालकै ॥ ८३ ॥ चर्चरी॥ बावली इककेलि सौंध समीप दीपातिसों रची ॥ रत्न हाटक बेलि बूट निसों सिठी सबही सची ॥ नये गये न अकास हेरत त्रास बासरके मुदे ॥ कोक शोक समै भये बरजोर जोरनसों जुदे ॥ ८४ ॥ दोहा॥ बिछुरि रहत नाहि सहत सकि, तकि तिनकी यह रीति ॥ रानी कुम्हिलानी बदन, पियसों कह्यो सप्रीति ॥ ८५ ॥ रानीमोदक ॥ पंकजलोचनि आव यहाँ लग ॥ देखहु ये अबहीं बिछुरे खग ॥ भेदत हैं दुखसों जन मोदर ॥ कौन इन्हैं लखि होतु न आतुर ॥ ८६ ॥ दोहा ॥ काल सहावै जो दशा, सोई सहै निदान ॥ युगल विहंगम जगतके, उदाहरण अनुमान ॥ ८७ ॥ कबित्त ॥ स्नानके समान भानु मंडल बनायो कर चिनगी झरत सबहींसो भयो लालु है ॥ ऐंचत अरुणदाम भामरि परत जात तेजको तरल दंड मंडित बिलासु है ॥ भेदन बहुत रथ चरण युगल खग करत अविधि विधि कुपित करालु है ॥ विरह कृशानु धूम मलिन महा सुधरचो बाढ़ि धरिबेको साँझ काल करबालुहै॥ ८८ ॥ दोहा॥

शशिवदनी मुख सों कढ़े, आसव वचन पियूष ॥ छैलु पियतु श्रवणानि छक्यो, रसकी रही न भूँष ॥ ८९ ॥ राजा ॥ **सोरठा** ॥ यह इनकी सातिभाइ, तैं जैसी देखी दशा ॥ क्यों न सुमुखि बिलखाइ ॥ करुणाकी तस्वीर तू ॥ ९० ॥ **सवैया** ॥ कै बिछुरे रमणी मनभावन चावनसों चित चाहति जीत्यो ॥ चापलता भ्रुकुटी कुटिलै करि रावरी ये सहसों बलचीत्यो ॥ नावककी नलिका सम नासिका श्वासनिको शुभ सोर-भसीत्यो ॥ पौनके अच्छय बाणनिसों रणरंग अनंगरहै नहिंरीत्यो॥९१॥ **दोहा** ॥ तेरे सुबरणसों रह्यो, नहिं सुबरणको नाम ॥ रूपराज राजत भयो, लाजत तनु अभिराम ॥ ९२॥ **छप्पय** ॥ मधुराईकी लता खाँड़के खेत लगावै॥वर्षै घन पीयूष अल्प पल्लव सरसावै॥दाख घोरिकै दूध सींचि कै अधिक बढ़ावै ॥ चंदकलाके फूल फूलि बहुतै मन भावै ॥ तहँ फलै कहूँ जब परम फल, मुक्ति मुक्ति जासों कहत॥तब अधर मधुर ये रावरे छबि वारी उपमालहत ॥ ९३ ॥ **सवैया** ॥ भारती आइ बसी मुखमें अरबिंद मई रसना तव कीनी ॥ ताहीकी बीन बजावनकी उपजी यह रावरी वाणि प्रवीनी ॥ ताहीको रंग विहार कि बैठक ओंठनकी रुचि है रँग भीनी ॥ ताहियकी मुक्तावलि है बलि तो रसना वलिमें उतिदीनी॥ ॥ ९४ ॥ **मनहरण** ॥ मन्मथ तीरथ तिहारी सुरसरि वाणि ताहीको पुलिन खाँड़ मिसिरी बखानीहै ॥ सलिल पियूष पूर पूरण रहत चोज चातुरी छिपत जलचर सरसानीहै ॥ सोहत कनारे रतनारे रद छद दोऊ भौंरनिसों कमल सुवासलैकै सानी है ॥ याहीतें समूह साजि सेवत सकल द्विज जपकी परममंत्र तपकी निशानी है ॥ ९५ ॥ ऊरध अधर जपा पुहुपकी माल ताहि करत शरासन असमसर रावरो ॥ साँवल चिबुक विंदु गुठोकै पनचकैकै रदन शरण आयो शरण उतावरो ॥ वचन तिहारो साँचे निहचै धनुष धरै वेद चातुरीनसाजि सीखै चित चावरो ॥ कोकिल मराल मोर सारिका कपोत भौंर विदित त्रिघार थीव उदित उछावरो ॥ ॥ ९६ ॥ **छप्पय** ॥ सो गँवारु सो चतुर पाति नहि बैठन पावै ॥ काम बाणकी धार नेक तेहि ओर न धावै ॥अधर कहै मधुनाहि कहै तनु स्वरनु न मानै ॥ बदनकहै नहिं इंदु नाम काहि सुधा न जानै ॥ गजगौनिकोक

युग सौकसौं मति उदास मनको करै ॥ हौं जातु जोहि अंजलि विनै राखौं रोंकि दिवाकरै ॥ ८७ ॥ **दोहा** ॥ सरसीरुह लोचनि तुहूँ सखियनके ढिगजाहि ॥ हौं बाहरको जातु हौं, संध्या विधि निरबाहि ॥ ९८ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मण्डित भूमंडला खंडल श्रीखाँसाहब अलीअकबरखाँ प्रोत्साहितगुमान मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ वासर कृत्य वर्णनं नाम द्वाविंशातितमस्सर्गः ॥ २२ ॥

दोहा—कथा सर्ग तेईस में, शशिको उदै बखान ॥ वर्णन भूपति तिय करति, परिपूरण परमान ॥ १ ॥ **सोरठा** ॥ नृप संध्या विधि वंदि, राग वारुणी अधर रुचि ॥ मंदिर गयो अनंदि, खंड सातयें सौंध पर ॥ २ ॥ **चौपाई** ॥ सेज चाँदनी सी छविछाई ॥ बैठि तहाँ नल प्रिया बोलाई ॥ बैठारी तापै सनमानी ॥ संध्या दई विशेष बखानी ॥ ३ ॥ **राजा** ॥ **लीला** ॥ नयनसों करिये कृतारथ पासिकी दिशि-रानि ॥ धोइ यावक रंगसों सब अंग कुंकुमसानि ॥ तुंगशैल अकासते रवि शृंगसों दुरकात ॥ चूर गौरिक सांझह्वै परिपूर धूर उडात ॥ ४ ॥ **द्रूतविलंबित** ॥ चरम भूधर भीलनिसों पल्यो ॥ अरुण चूड दिवा-करहे भल्यो ॥ शिर उठाइ करै रवसांझको ॥ अरुण सजत पश्चिम माझको ॥ ५ ॥ **भुजंगप्रयात** ॥ प्रतिहारिनीसी करै सांझ बासा ॥ गहे शूर शोभा मई हाथ आसा ॥ निकारे दिनै देति है रोष कीन्हे ॥ प्रवेसै भली भाँतिसों राति चीन्हे ॥ ६ ॥ **मनहरण** ॥ महानट नचत निरखिकै सभानु राग साँझ कुनटीसी पार्वती रूप चाहिकै ॥ लसत अकाशतन विमल नखत गण रंग भरि अंगहार सजत सराहिकै ॥ हनत किरात कालु कलित कराल वेष दिवस दुरद पदुमक अवगा हिकै ॥ ताहीकी रुधिर धार करत पसारा साँझ तारागण रहे कुंभ मुक्तानिवाहिकै ॥ ७ ॥ **सोरठा** ॥ रहे साँझ सों फूल दशहू दिशिनि बिभाग सब ॥ मानौ लाल दुकूल, गहे ब्याहको दिग

बसन ॥ ८ ॥ **सवैया** ॥ साँझ सराफ अकास भयो रबि हाटकको गुटिका छबि छायो॥पश्चिम शैल कसौटी करचो तेहिमाह भली बिधिसों कसिलायो ॥ बंचनको निहचै करि ताकहँ तोलन काज अमोल उठायो ॥ तेहीं दये छिटकाइ बटा जनु तारेनको गण देत दिखायो९ **सोरठा** ॥ पाके दाड़िम रबि बिंब, हरी साँझ याकी तुचा ॥ काल चाबि बिधि निंब, उगिलत तारा अस्थिगण ॥ १० ॥ **दोहा** ॥ साँझ समय तंडव करत चंडीपति गतिलोल ॥ नभ अखंड मंडित लसै फटिक चटानि अमोल ॥ ११ ॥ **पद्धटिका** ॥ निज वर्णनके सुनतै लजाइ ॥ जनु सांझ गई तुरतै बराइ ॥ नभ नखत दंत तमरह्यो छाइ ॥ तब कह्यो प्रियासों निषधराइ ॥ १२ ॥ **नल** ॥ **पद्धटि-का** ॥ जब राम बाण संधान कीन ॥ उछरचो उदन्व भयसों अधीन ॥ तब फैलि शंख मुक्ता अपार ॥ सो नाकलोक में चमत्कार ॥ १३ ॥ **दोहा** ॥ सुरसरि कूल कुलाय कुल, कोक बिरह अकुलाइ ॥ आंसुनकी धारातजी, नभतारा समुदाइ ॥ १४ ॥ मंदाकिनके जंतु जल, झलकत नभतलपाइ ॥ झख कुलीर गोधा मकर, मिथुन मोद सरसाइ ॥ १५ ॥ **रानी** ॥ **कबित्त** ॥ फूल्यो अकाश दिखावति है यह योगिनिसी जिय यामिनिजागी ॥ मार मेरेहु जिवावति है अरु कमलनके दृगबंधन पागी ॥ मोहन अंजनि दै कुहकै कुहकै पिक मंत्रनिसों अनुरा-गी ॥ शंखन छत्रनि छत्र धरे पल नील सरोरुह नयननलागी ॥ १६ ॥ **राजा** ॥ **सोरठा** ॥ तम मिससों इत चेतु, शची सौ-ति दिशिते बढ़ी ॥ टूटत वास रसेतु, ऐरावतकी मदनकी ॥ १७ ॥ **दोहा** ॥ राम सेतु रोमावली, दिशिपति वाहन रूप ॥ धावत तम देखत भजे, रविके वाजि अनूप ॥ १८ ॥ **चन्द्रमाला** ॥ कर सहस्र सोंलै उठाइ रवि ऊरध नभकरि राख्यो ॥ याहियते नियराइ गयो तम रवि अथवत मन माख्यो ॥ उलट्यो गगन कराहु करचो विधि इन दीपक अध बारचो ॥ अंधकार छलसों क्षिति ऊपर फैल्यो कज्जल भारचो ॥ १९ ॥ **रानी** ॥ **मनमोहन छंद** ॥ मृग मेद तम तनमें दिपति ॥ दुरि नील अंबरमें छिपति ॥ अभिसारिका गतिसों चलति ॥

यह रैनि त्यों तुमको छलति ॥ २० ॥ **चौपाई** ॥ जग लोचन गो नाम कहा मै ॥ सूर किरणि पुनि गोप दुपामै ॥ मिलै लई हरिकै रवि साँझ ॥ अंधकार छायो जग माँझ ॥ २१ ॥ **राजा** ॥ **दोहा** ॥ तमकै तत्त्व विचारमें, वैशिषिक मत सार ॥ तेहि उलूक दर्शन कहत, लहत साँचु अधिकार ॥ २२ ॥ चलत चोर चाकर चतुर, बोलत विरद उलूक ॥ आवत लखि तमराजको, भाजि भये द्विज मूक ॥ २३ ॥ वासर दोष विचारको, भयो तम नरनाथ ॥ दूतीसी लागी फिरै, छाया सबके साथ ॥ २४ ॥ **आभीर**॥भूपतिमों गुण गान ॥ रोष कर्यो सित भान ॥ आइ उदय तहँ कीन ॥ त्यों नल वर्णन लीन ॥ २५ ॥ **नल** ॥ **सवैया** ॥ मेरु शिखानि कनातनिसों छिपि चन्द्रनयो छलकै छबि छायो ॥ चंचु चकोरनिके चुलकानि भरै निज रूप सुधानि समायो ॥ नील निचोल उतारि चली सजि भाँति भली तियकै मन भायो ॥ चाँदनिसे तन चीर अभूषण हीरानि चित्रपटी रल गायो ॥ ॥ २६ ॥ **चर्चरी** ॥ रावरे मुख सामुहें शशि आरसी परमान है ॥ नीलकंज विशाल लोचन संगद्वै गुणवान है ॥ आपने लघुभाइ वासव वाहनै मिलिकै रह्यो ॥ शीश पूरण पूरि सिंदुर रूप सिंधु- रको गह्यो ॥ २७ ॥ **सोरठा** ॥ मढ़ी किरणि सब ओर, विधि साँचो वि- धना कह्यो ॥ ताइरूप अति गौर, भरि भरि काढ़त बदन शुभ ॥ २८ ॥ **राजा** ॥ **तोमर** ॥ सुरराजकी दिशिरानि ॥ तनुलाल अंबर तानि ॥ मुखचंद चारु उदोत ॥ जन सज्ज वास कहोत ॥ २९ ॥ **राजा** ॥ **हरिगीत** ॥ अभिराम सीतै लखत लाजत लखति हिय मति बंकसो ॥ तब कान नाक विहीन लक्ष्मण कीन श्याम ससंकसों ॥ शुपनखा मुखकी लही सुखमा शशी यह अब जानिये ॥ सब श्रवत रुधिरसो लाल अंबर बलित गति मनु मानिये ॥ ३० ॥ **रानी** ॥ **सरसी** ॥ चन्दरजतको हेम कूटकै साँझ छली छलकीन ॥ दयो रैनिके कर बदलो करि आपुन दिनमणि लीन ॥ वासव सुत चकई गहि फेंकी टूटि अरुण छबिडोरि ॥ गिरत जात मुखसों वह चंचल छुटत छपाकर छोरि ॥ ३१ ॥ **राजा** ॥ **साल्हरा** ॥ जे अछिर नखतनि लिखत तिमिरतति सुयश सरस नि-

सि कलम धरे ॥ कै व्योम असित सिल मसित कुसिक गन लसित सिलि पिवर समय परे ॥ तेलोपि जरद रँग विबुध सिसिर कर पढ़त असम सर मत पसरे ॥ दैमेटि रमनि मन पिय जन दिसिरिस भुक्ति मुक्ति करि युगाति तरे ॥ ३२ ॥ **रानी** ॥ **सवैया** ॥ पूर पयोधि बढ़ावनको शशि लै अपनी मणिसों जलमेलै ॥ कोकनकी वनिता विलपैं दृग आँसुनके परवाह सकेलै ॥ रैनि कलिंदसुता लहरी तम सूखतही छहरी छबि लैलै ॥ ताहीकी रेतनकी सिकता सन देत अनंदनि चांदनि फैलै ॥ ३३ ॥ **सोरठा** ॥ एक कुमुद कुल हाँस, करत साँच सबसों तुजगु॥दिन ये होत उदास, इतो न शशि उज्ज्वल करै ॥३४॥**लीला**॥ ईश शीश जटानिमें बसिकै शशी तपकीन ॥ एक सो सु उदोत होत न नीच मीच अधीन॥पान पाइ पियूष जीवत, राहकी शिरमाल ॥ देखिकै भव भालपै भयसों बढ़ै न बिसाल ॥ ३५ ॥ **तारक** ॥ निजकांति चकोरनको अँचवाई ॥ अपनी कलिका शिव शीश चढ़ाई ॥ सब देवन दिव्य सुधा भुगुताई ॥ शशि सोच सुरद्रुमको लघु भाई ॥ ३६ ॥ **छप्पय** ॥ मृगमद अंकित इंदु गरल गत अंकित शंकर ॥ सुधा धवल तनु इंदु भसम युत शंभु भयंकर॥नखत अभूषण इंदु अस्ति भूषण शिव सोहै॥गायो द्विजपति इंदु उग्र पशुपति मनमोहै॥निज भाल मल्लि कलिका करचो जटा बल्लिमैं मिलित शशि ॥ महि लहत कला हरसों रही रहत तहीं संसार हँसि ॥ ३७ ॥ **दोहा** ॥ काम अस्तिलै अधजरे, श्वेत श्याम शशिकीन ॥ वहै जानि भूषित करचो, शिरपै शंभु प्रबीन ॥३८॥ **चौपाई** ॥ मृग आमिष रुचिसों शशि तोरै ॥ दौरि सिंहिका सुअनस जोरै ॥ साधनको पाछो जे गहैं ॥ निज त्यों दै ताको निरबहैं ॥ ३९ ॥ **राजा**॥**तोमर** ॥ सुरकै सुधारस पान ॥ किय चन्दु तुच्छ निदान ॥ पुरिखानकी परसस्ति ॥ लिय सिंधु शोकि अगस्ति ॥ ४०॥ **दोधक** ॥ जोन्ह कलानिधिकी पटरानी ॥ सागरकी बढ़ती सनमानी ॥ मीत चकोरनकी मन भाई ॥ पै कुमुदै हित कौमदि गाई ॥ ४१ ॥ **स्वागता** ॥ हानि बृद्धि अपने पितु तूलै॥क्यों न चंद्र सरसै अनुकूलै॥ शीतल आप पिये शशिमें परहीतलकी तब ताप बुझानी ॥ ५४ ॥

सोरठा॥ है आदर शशरूप, दर्शन देत न दरशको ॥ अत्रिनेत्र अनुरूप शशि त्रिनेत्र शिरपै चढ़्यो ॥ ४३ ॥ करत सकल सुरभोग, सुधा किरणि मखरूप लखि ॥ वामै हिंसा योग, यामें मलिन कलंकु है ॥ ४४ ॥ मनहंस ॥ रथते छुट्यो मृग प्याससों ललचाइकै ॥ जलहीन अंबरमे रह्यो अकुलाइकै ॥ तब दौरिके निशिनाहके उरमें लग्यो ॥ रस पान पोषि पियूष पंकिलमें पग्यो ॥ ४५ ॥ रानी ॥ मोदक ॥ बालक चंद न रंक विराजत ॥ होत युवा छतियां छबि छाजत ॥मानहु भामिनि ओषधिको गन ॥ है पठयो कहि नेह सँदेशन ॥ ४६ ॥ नाराच ॥ महेश बाणसों डिरात ऐनतार जानिकै ॥ रह्यो निशीश आसरो महेश प्यार मानिकै ॥ संसार है जहाँ तहाँ शशी कहै सबै भले ॥ मृगीकहै नताहि क्यों पद प्रयोग बावले ॥ ४७ ॥ हरिगीत ॥ पूरि पूर पियूषके रस सारसों थकिकै रह्यो ॥ चन्द बिम्ब रसाल फल जिमि काल चाखनको गह्यो ॥ राहके मुख यंत्रमें धरि पैरिकै रसलै लियो ॥ नभ छुटत पीन छता भयो जनु देखते मन भसि लियो॥४८॥प्रमाणिका ॥ शशी सखा अनंगको ॥ नयोगुजाानि अंगको ॥ कपूर काम मित्तु है ॥ जरे बढ़ातु वित्तु है ॥ ४९ ॥ तारक ॥ अथवा यहि भाँति सुहाति मिताई ॥ शिवके दृगमें तनु मैन जराई ॥ विधुहू हियमावसनेह विचारचो॥ हरिके दृग सूरयमें तनु जारचो ॥५०॥ राजा ॥ मोदक ॥ चन्द भयो पर पूरुष लोचन ॥ अंबुज जाहि कहैं दुखमोचन ॥ साँवल अंक मिलिंद मनोहर ॥ है पुतरी सुथरी अति सुन्दर ॥ ५१ ॥ सोरठा ॥ विधु औ गरुड़ उदार, द्विजपति दोऊ पक्षधर ॥ हरि नायक आधार, नयन क्रिया इनसोंउचित ॥ ५२ ॥ द्रुत विलंबित ॥ शिशिर में लखि पंकज छारको ॥ गनत पावक रूप तुषारको ॥ उठत धूम तहाँ अति साँवल्यो ॥ ससक अंक कहै शशिमें भल्यो ॥ ५३ ॥ रानी ॥ सवैया ॥ देश प्रवाहनकी सरिता सब ओर बहैं बहुतै सरसानी ॥ कानन कोठि अकोठि कुलाचल भार भरी धरणी अकुलानी ॥ सूच्छम छाँह स्वरूप भई चितचाह नई निहचै बियरानी ॥ शीतल आप पिये शशिमें परछीतलकी तब ताप बुझानी ॥ ५४ ॥

समानिका ॥ अंक में ससा बसै ॥ कौन चन्दको हँसै ॥ बापके शरिरमें ॥ बाजि औ करीरमें ॥ ५५॥ **रानी** ॥ **कमला** ॥ असितरु सित रजनी ॥ शशि ग्रह युग रमनी ॥ तिनहि मिलतु मनुकै ॥ असित सुकुल तनुकै ॥ ५६ ॥ **मनहरण** ॥ दिनको अथोत समै बूड़त तरणि रहि तमकी विपति नदी नैननिलैां आइकै॥पूरबके पुण्य परसादते उडूप पायो भयो मन सुमन सुगंध पार पाइकै ॥ ओषधिनपतिको सुरसकै निरुज करै क्षय होत द्विजन बचामै मंत्र भाइकै ॥ समुदन सुतकोसमुद्र करै रत्ननानि सुधा जतननि क्यों न सींचत बनाइकै॥ ५७ ॥ **बिंबा** ॥ शशिकर पीयूषनाही ॥ हरि भिरतु नोजराही ॥ निशि निशि चकोर पीवै ॥ युग युग हु क्यों न जीवै ॥ ५८ ॥ **मालिनी** ॥ सरस वचन भैमी पीवसों बोलिनीके ॥ नयन विकसि आये मोद सों प्राण पीके ॥ धनि धनि पिकबैनी चोजकी उक्ति तेरी ॥ चिबुक गहि उठाई चूमि लीन्ही घनेरी ॥ ५९ ॥ **दमयंती** ॥ **मालिनी**॥ निज मुख नहिं सोहै आप नी जो बडाई ॥ बदन शशि तिहारो मै तहीं काँति गाई ॥ **नल** ॥ शाशि वदनि न जानै आपने दिव्य रूपै ॥ वर्णतु अब हों हौं तो मुखै दिव्य भूपै ॥ ६० ॥ **संयुत** ॥ तुअगीत सों वश होइ रह्यो ॥ मुख रावरो निहचै गह्यो ॥ यहि लोभते मृग नेकहूं ॥ महि चंद्र छोड़ि टरै कहूँ ॥ ६१ ॥ **सवैया** ॥ चंद्र सुधारस पान करै तम पाननकी घन छांह छयो है ॥ बासरको न चल्यो परै तापर तापर है तन धाम छयो है ॥ बेठा कढै अधरा मगसों पगसों परसै न सनेह नयो है ॥ बोलु चलाकु उलारतसों तेहिते निशिमें चलि दूरि गयो है ॥ ६२ ॥ **नीलस्व-रूपक** ॥ देखि परै न बनाइ छुटाइ ॥ अंबर माहँ चढ़ी मलिनाइ ॥ धोवत ताहि सुधा जल लैलै ॥ यों रजनी रजकी हति मैलै ॥ ६३ ॥ **चित्रपद** ॥ मेघनकी मलिनाइ ॥ शारद मास छुड़ाइ ॥ शारदहूं शाशि भेट्यो ॥ जात कलंक न मेट्यो ॥ ६४ ॥ **सरसी** ॥ एकादश रुद्रनके शिर इक इक कला बांटि शशिदीन ॥ कलापांच सौपंच बाण शर पैनी गासी कीन ॥ कूटि कूटि तारागण लाखन और चन्द जब होइ ॥ अकलंकित तब वदन रावरे करै बराबरि सोइ ॥ ६५ ॥ वदन शरद

अंकम संस धरता अधर पियूष समान॥चाहिं रह्यो वासव सब छल करि बल करि रह्यो न पान ॥ गगन भयो यह उदित शीतकर मुदित भयो चित चाहि ॥ सुधादेव जूठनि गनि घिनसों पियतन ताहि सराहि ॥ ६६ ॥ **सोरठा** ॥ औषधीशको पाइ, निरुज भयो विहरत गिरिस ॥ कालकूटको खाइ, अंग लगावै गरल धर ॥ ६७ ॥ **मनहरण** ॥ द्विज पति देव गुरुदारसों सनेह करचो नयननकी तारासम तारा रूप रानी है ॥ अद्भुत गति देखि याकी गजराज गति पतितन भयो यह साँची वेद वानी है ॥ आतम प्रकाशकी युगति ज्योति जानति जे तिनमें लगति नाहिं मुकुति निसानी है ॥ जैसे प्रतिबिम्ब सब ठौरनिमें परत है मैले ऊजरेकी कछू भाँति ना विचारी है ॥ ६८ ॥ **चौपाई** ॥ सुधा बोलि तिल जल सुत देहीं ॥ हर्षित होत पितर ते लेहीं ॥ सुधा रूप तिल साँवल अंक ॥ शशिमें देखि परै निरसंक ॥ ६९ ॥ केलि सौंध कुलपा जल माहीं ॥ शशि मण्डलकी छलकत छाँहीं ॥ हंस जानि हंसिनि नियराति ॥ पाँख झारि झपटत नियराति ॥ ७० ॥ **द्रुतविलंबित** ॥ कुमुदिनी हरिणी वनमें रहै ॥ पुहुप लोचन खोलि उताल है ॥ लखति ऊपरको रसरीति सों ॥ हरिणको विधुमे पति प्रीतिसों ॥ ७१ ॥ अलप पुंषपियूषनिसों रली ॥ मदनकी सरसी विधु मंडली ॥ अमर मीन सुधा ज़ल पानसों॥करत ताहि ध्वजा सन्मानसों ॥ ७२ ॥ **चर्चरी** ॥ यह जो जनु जोन्ह राजत तार अस्तिनसों लसै ॥ लीक जो नभ मध्य सो फणिहारकी छबिसों बसै ॥ अष्ट मूरति शंभुकी इक साँच देखि अकाशहै ॥ अंक फूलि उभारहौ शशिमें वहै परकाश है ॥ ७३ ॥ **स्वागता** ॥ श्वेत गोल रवि चंद्र बनायो ॥ कामराज शिर छत्र सुहायो ॥ जो कहुँ रजनीमें छबि छीनो ॥ छत्रभंग निश्चय तम दीनो ॥ ७४ ॥ **सवैया** ॥ तीनिहु लोकन जीति दशानन नेकहु जाहि न जीतन पायो ॥ रावरे आनन एक वहौ निशिनायक नेसुक हेरि हरायो ॥ सोई लगी शशिके मुख कारिख औ तेहि सारिख कौन बतायो ॥ कोऊ कहौ क्षिति छाँह छई मृग अंक सशंक कहूँ ठहरायो ॥ ७५ ॥ **बंधु** ॥ राम करे सब क्षत्रिय छीने ॥ क्षत्रिय रामकरे मदहीने ॥ त्यों शशि पंकजको निशि जारे ॥ तो मुख

पंकजसों निति हारै ॥ ७६ ॥ दोहा ॥ सागरते मुनि नयनते, उद्भव द्विज यहि नाम ॥ विधु साँचो अब अवतर्‍यो, सब शोभा विशराम॥७७॥ चंद्रमाला ॥तार विहार भूमि मथ हिम मय चंद्र मंडली कीनी॥लसत जहाँ मृगनाभि वाससों है सब द्युति भरि दीनी॥स्वर्ग लोकमें तिलक भयो विधि इन सुकृत न सरसाई ॥ जिन जिन सुनी गुणी साँची तिन जिन मतहू वनि आई ॥ ७८ ॥ मनहरण ॥ हर पतनीसों भयो सिंहके स्वरूप शशि सस औ हरिणको उदर माह आन्यो है ॥ तेरे मुख पद्महूंसों मनमें डरत कहूँ एकसों जगतमें न काहू भय मान्यो है ॥ गगन विपिनमें विहार निशि निशि करै तम गज घंटानि घटावत बखान्योहै ॥ केसर करानि झहरावत निपट याको सिंहिका तनूज दूजो प्रति भट जान्यो है ॥ ७९ ॥ छप्पय ॥ लोचन कमल चढ़ाइ कमल आसन नित पूजै ॥ तो मुख कमल बनाइ वास कमलाको दूजै ॥ वचन न वर्णी जाति जासु रुचि राशि सुहाई ॥ लसत कला चौगुनी कौन गावै सुघराई॥तहँ कहंत कौन समता महत चहत चन्द चित चावरो ॥ शिव शीश जटा तटिनी निकट वनवासी बक बावरो ॥ ८० ॥ नेहमंजरी सखी ॥ सोरठा ॥ यह सखि सोई चन्द, विरह पाइ जेहि हौं दही ॥ मनमोहत मतिमन्द, तौहीं लह्यो कलंक जग॥८१॥दमयंती ॥ मनहरण ॥ साँझहौं अटा पै अन जानत गईहीं मोहि देखतही दौरि चारौं ओर उमडतसी ॥ हौं तौ डरपाइ भाजि भौनमें लुकाई सोऊ पीछे लागी आइ घरहाई हुमडतसी॥ जगर मगर घर बाहेर विवर करि सोरनि चकोरनिकी झुंड झुमडतसी ॥ कैसि नकसैरी विरहिनि वैरी बोरिबेको चाँदनी वहैरी येरी घेरे घुमड़तसी॥८२॥ लीला ॥ वासवः दिशिमें भयो शशि पुंडरीक प्रमान ॥ लैकला अव दात निर्मल आरसी अभिराम ॥ इंदु सिंधुर दान संगत चंचरी कर- साल ॥ हैं लगे उरमाँहबे उड़ि अंक अंकतमाल ॥ ८३ ॥ राजा ॥ छप्पय ॥ शशिको षोड़श अंश कलाकहि वेद बखानै ॥ घटत बढ़तते नित्त असित सित पक्ष प्रमानै ॥ परिवासों इक एक कला पंद्रह तिथि तेई ॥ पूरणमासी होति पूरि आवैं सब तेई ॥ वह एक कला जो सोर- हीं लै उखारि हर शीश धरि ॥ बहु दुखतरहो बहु द्योसलौं गयो ठौर

वह श्याम परि ॥ ८४ ॥ **मनहरण** ॥ रावरे बदन छबि सदनकी समतासों चाहै करचो शशि निज नयन अनिआरे हैं ॥ मानिकै मिताई करी भाई पचिकोरनसों जोन्ह अचवाई जाको देव पचिहारे हैं ॥ अंकसों मयंक कहूँ रंकको न जान देत नील कमलनि धर करै उजियारे हैं ॥ भ्रमि भ्रमि हारचो होत भोर तनु गारचो क्षीर सागरमें पारचो मनही में मान मारे हैं ॥ ८५ ॥ सकल लोनाईकी लहरिसों छहरि छबि बदन तिहारचो विधि रच्यो चितलाइकै ॥ वासवको पोंछि मैल मिलत अगौंछनिसों चिकिनो छपाकरु छपा पटरानी पाइकै ॥ दोउनि सँवारि सुरसरि वारि धोवै हाथ तिनमें लगत कांति कनक बनाइकै ॥ कमलाके वास कमलागै और कीरी द्युति उपजतवेई कुल कमल चलाइकै ॥ ८६ ॥ **सवैया** ॥ आसवसार सुधाधर मंडल है मद कोमल वा छबिछायो ॥ देवबधू तेहि पीवत छीव छकै सब जीव करै चितलायो ॥ छूटत सौरभ शोभ सने तेहि लोपत तारिनबीच बसायो ॥ प्यालो लगो माणि नीलमको उर अंक कलंक नरंक वतायो ॥ ८७ ॥ **सोरठा** ॥ शशिके गुण गाहिलीन तिन सों मुख तेरो रच्यो ॥ दोषाकरु विधि कीन, विधि चातुर चित विविध विधि ॥ ८८ ॥ **मदन माला** ॥ गगन लगत रबिरथहै खुरचय ॥ तहँ बिल परतभरत जल अमिय मय ॥ मिलत सिसिर करसरस सबुद बुद ॥ जलजनयनि नभ नरवत करत मुद ॥ ८९ ॥ **सोरठा** ॥ विधु पापरके रूप, तिल कलंक उड पुहुपयुत ॥ दै नैवेद्य अनूप, करिये काम उपासना ॥ ९० ॥ छप्पय ॥ लगत दशन सुर भानु झीन झांझरि समसोंहैं ॥ झरत अमृत सब ओर झलक झालरि मन मोंहैं ॥ मुक्तानखत अपार हार उपकंठ विराजैं ॥ सुरत हनीकर नवल लाल पल्लव छबिछाजैं ॥ रति मयन भूपके व्याहमें रूप राशि अभिषेक रस ॥ विधुभर त भांवरी शीश जनु सहसधार मंगल कलस ॥ ९१ ॥ **अथ श्रीहर्ष कविराज राजको वर्णन** ॥ छप्पय ॥ कबि कुल मुकुटनिमाह हीर समकीरति राजै ॥ पिता हीर परसिद्ध जासु मति सुरगुरु लाजै ॥ मामल देवी मांय पुण्य पति ब्रत गिरिजासी ॥ सकल मुक्ति की दानि

साधु सेवकको कासी॥ तेहि तनय भयो श्री हर्षकबि हरष भारती तंत्र को ॥ भव भाजन परम प्रसाद मय जो चिंतामणि मंत्रको ॥ ९२ ॥ जपि चिंतामणि मंत्र ब्रह्म सन्मुख जिन कीन्हो ॥ निर्जन साधि समाधि तेज निर्गुण चित दीन्हो ॥ कविता करी अनेक ग्रंथ नवरस रससाने ॥ बहुरि करचो दिग्विजय जीति पण्डित सन्माने ॥ जेहि भवन अवतरी ईश्वरी कला रूप तनया सुछवि ॥ जिन गौड़ पाठ दुर्गा रची ज्ञान वर्ष श्रीहर्ष कवि ॥ ९३ ॥ कनवजपति नरनाह जाहि उठि आसन साजै ॥ सभा माहँ सन्मानि पानदै सुयश समाजै ॥ चर्चा मम्मट भट्ट संघ षट मास सोहाई ॥ जिन बुरिकै बहु भाँति वागदेवी लडवाई ॥ शुचि पुण्य पियूष विचित्र रस व्यासदेव वरणी भली ॥ नलराज कथा नैषध वहै तिहूँ लोक कीरति चली ॥ ९४ ॥ रचे सर्ग बाईस जाहि कविईश सराहै ॥ अति पद व्यञ्जक मंजुरीति गुण गण उतसाहै ॥ पूरुव अर्ध अनूप गणत द्वै सहस सलोने ॥ ईश लोक सैंतीस अधिक पावैं जन टोने ॥ द्वै सहस चारि श्लोकसों उत्तर अरध सँवारिकै ॥ सब सहस चारि इसलोक औ इक तालीस विचारि कै ॥ ९५ ॥ दोहा ॥ खाँ साहेबके सुयश वर, श्रीगुरु चरण सहाइ ॥ सो विचारि अनुसार मति भाषा रच्यो बनाइ ॥ ९६ ॥ रचे अर्थके भँवर बहु, कठिन जोर सब ठौर ॥ खलको जलके भौंर सत, जनन कमलके भौंर ॥ ९७ ॥ सरल देखि हर्षत सुजन, निंदत कुजन अपार ॥ दाख मधुर जुर बावरो, कहत कटुक निरधार ॥ ९८ ॥ साधु सरलसों कटुकको, करत बड़ा सन्मान ॥ शंभु धरचो गलमें गरल, तजो सुधाको पान ॥ ९९ ॥ ताते मैं कर जोरि कै, कहत सबनि शिरनाइ ॥ सुकवि चतुर तिहुँ लोकमें, विनती तिन्हैं सुनाइ ॥ १०० ॥ मेरी तौ सब चूक है, वाको ढक तुम आप ॥ सो सवाँरि करिये कृपा, परगट परम प्रताप ॥ १०१ ॥ गौरिनन्द गिरिजा गिरिश, गुरु गोविंद गुमान ॥ युग

तौ लगि अविचल रहौ, अकबर अली सुजान ॥ १०२ ॥

इति श्री प्रचंड दोर्दंड प्रताप मार्तंड मंडित भूमंडला खंडल श्री खाँ साहब अली अकबर खाँ प्रोत्साहित गुमान मिश्र विरचिते काव्यकलानिधौ चन्द्रोदय वर्णनं नाम त्रयोविंशस्सर्गः समाप्तम् ॥ २३ ॥

माघमासे कृष्णपक्षे तिथौ पञ्चम्यां भौमवासरे सम्वत् १९४५
शुभम् भूयात् ॥

सोरठा ॥

संवत् शर अरु वेद, ग्रह शशि तपसा पंचिमी ॥
यामें नहिं कछु भेद, कृष्णपक्ष कुज बार है ॥ १ ॥

श्लोक ॥

शरवेदाङ्कचन्द्रे द्वे नक्रमासाऽसिते दले ॥
अहि तिथ्याम् भौमसंयोगे ग्रंथीयम् पूर्णतामगात् ॥ १ ॥

इति नैषधकाव्य समाप्त ॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना (मुंबई.)

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण।

संस्कृत मूल और भाषाटीकासहित खुलापत्रा ।

कविकुलतिलक आदिकवि महर्षिवाल्मीकिकृत रामायण समग्र ग्रंथ माहात्म्य और अनुक्रमणिका टिप्पणी शंकासमाधानसहित परमपुष्ट मोटे और चिकने कागजपर सुवाच्य मनोहर अक्षरोंमें छपकर विक्रयार्थ प्रस्तुत है-हिन्दुस्थानमें आजपर्यंत इसका ऐसा भाषानुवाद नहीं हुआथा. इसकी टीका अत्युत्तम बहुत सुगम और ललित मनरंजन शब्दोंमें विद्वद्वरशिरोमणि श्रीयुत पं० ज्वालाप्रसादमिश्रजीने अत्यन्त ही उत्तम की है. पदपदका अर्थ दर्पणवत् झलकायाहै. सकल गुणआगरी नागरीकी पूरी लालित्यता सर्वांगरूपसे दरशायीहै. यह बालसे वृद्धतकको परमोपयोगी है. कथा बांचनेवाले विद्वानोंको इससे बहुत ही लाभ प्राप्त होवेगा. केवल अक्षर मात्रका बोध होनेसेही सज्जनजन इस रामायणका पारायण सहजमें कर सकैंगे और कथा बाँचकर धन यश लक्ष्मीके भागी होंगे. ऐसा सुंदर मनोहर रमणीयग्रंथ होनेपरभी सबके सुगमार्थ समग्र ग्रंथ उनके मकानपर २१ रु० भेजनेपर पहुँचजायगा. ग्रन्थकी अद्भुत छबि और आन्तरिक विद्वत्ता देखकर ग्राहकगण परमप्रसन्न होजायँगे ॥ ग्रंथसंख्या अं. १०००० होगी.

मनुस्मृति ।

पं०केशवप्रसाद प्रोफेसर आगरा काले कृत

भाषाटीकासहित ।

इस उत्तम ग्रंथका सान्वय भाषा अत्युत्तम हुआहै, यह पुस्तक प्राणिमात्रको परमोपयोगीहै, राजा महाराजा भी इसीके अनुसार धर्मपूर्वक शासन करतेहैं यह ग्रंथ देखनेहीके योग्यहै, भाषा अत्यन्त सुगम और रसीली है. कीमत २॥ रु० रफका २ रु० ॥

जाहिरात।

सामुद्रिक शास्त्र बड़ा।

यह पुस्तक प्राणियों के शरीरावयव तथा हस्तरेखाओं के फलाफल कथन में परमोपयोगी है; इसके द्वारा आयुज्ञान, संतानादि, धनी, निर्धनी, पंडित, मूर्ख, कामी, चोर, साधु और असाधुका ज्ञान केवल पठनमात्र से सर्वसाधारण मनुष्य जिसको कुछभी समझ होगी कहनेमें समर्थ होसक्ता है. इसकी भाषा परम मनोहर और सरल है; विशेष रोचकता इस में यह है कि प्रत्येक मूलके श्लोकोंका सान्वय सरल हिन्दीभाषा में टीका कियागया है, जिससे भारीसे भारी पंडित और छोटेसे छोटे अल्पज्ञ अपने नेत्रोंसे अवलोकन कर इसका स्वाद पासकते हैं, विलायती कपड़ेकी जिल्द बँधी है. मूल्य केवल १। रु० है॥

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" छापाखाना—खेतवाड़ी—मुंबई.